ॐ ह्रीँ अर्हं नमः
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः

श्री राजनगर जैन ज्ञानमंजरी

मौखिक/लिखित नूतन अभ्यासक्रम

❋ प्रकाशक ❋

शताधिक वर्ष प्राचीन श्रुततीर्थ सम

श्री राजनगर जैन श्वे. धार्मिक ईनामी परीक्षा ट्रस्ट,

अहमदाबाद

ट्रस्ट रजिस्टर नं. ए/१३८२

❊ पुस्तक का नाम ❊

श्री राजनगर जैन ज्ञानमंजरी

❊ प्रथम आवृत्ति ❊

वि.सं. २०७९, नकल : १०००

❊ दूसरी आवृत्ति ❊

वि.सं. २०८२, नकल : १०००

❊ मूल्य ❊

रू. ७०/ (श्रुत प्रचारार्थे)

❊ प्राप्तिस्थान ❊

पारी वरधीलाल संप्रीतचंद

२२८७/१, गीरीश कोल्ड्रींक्स के सामने,

माणेकचोक, अमदावाद. फोन : ०७९-२२१४२२६९

मो. : ९४२८११६२५१

© सर्व हक्क प्रकाशक के आधीन

टाईप-सेटींग : सिद्धि ग्राफीक्स मो. 9904372172

पुस्तक को जहाँ तहाँ रखकर आशातना न करे।

प्रकाशकीय

जैनों की राजधानी राजनगर (अहमदाबाद) की पुण्यभूमि पर विक्रम संवत् १९७३ में आगमोद्धारक परम पूज्य आचार्य श्री आनंदसागर सूरिश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से 'शेठ सुबाजी रवचंद जेचंद जैन विद्याशाला' में इस संस्था की स्थापना हुई।

जिनशासन की उत्कृष्ट परंपरा के अनुरूप संचालित पाठशालाओं को अधिक गतिशील एवं सुदृढ़ बनाने के मुख्य उद्देश्य से पाठशाला के विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षाएँ प्रारम्भ की गईं, जो आज १०९ वर्षों से निरंतर आयोजित की जा रही हैं। राजनगर के सभी विद्वान पंडितवर्यों के सहयोग एवं मार्गदर्शन से अब तक लगभग ३ लाख विद्यार्थियों ने इन परीक्षाओं में भाग लिया है।

संस्था द्वारा प्रतिवर्ष मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं तथा पाठशाला के शिक्षकों का सम्मान किया जाता है। प्रत्येक वर्ष ५००० से अधिक विद्यार्थी परीक्षा देते हैं। संस्था के साथ लगभग ४०० पाठशालाएँ, ५०० शिक्षक तथा १८००० विद्यार्थी पंजीकृत हैं। देश के अतिरिक्त विदेशों से भी अनेक विद्यार्थी इन परीक्षाओं में सम्मिलित हो रहे हैं।

विद्यार्थी पाठशाला से निरंतर जुड़े रहें, इस उद्देश्य से संस्था द्वारा अनेक ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जैसे – IPL, क्विज़ तथा मासिक गतिविधियाँ। इन समस्त आयोजनों में हमें शासन के अनेक पूज्यश्रीजनों का सान्निध्य एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है।

इस संस्था में ज्ञानप्रेमी श्रेष्ठीवर्य श्री वरधीलाल संप्रीतचंद शाह ने अत्यंत दीर्घकाल तक तन, मन एवं धन से सेवा प्रदान की है, जिसका वर्णन शब्दों में करना संभव नहीं है। संस्था द्वारा विभिन्न पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है। उनमें एक विशिष्ट ग्रंथ के रूप में 'श्री राजनगर जैन ज्ञानमंजरी' की द्वितीय आवृत्ति प्रकाशित करते हुए हमें अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

विक्रम संवत् २०८३ से पाठ्यक्रम में परिवर्तन होने के कारण यह नवीन आवृत्ति नए पाठ्यक्रम के अनुसार प्रकाशित की गई है। पाठ्यक्रम में संशोधन करने हेतु रिद्धिबेन, अर्पिताबेन, पंक्तिबेन, हेताबेन, सेनलबेन, दर्शनाबेन, भाविकाबेन तथा पूनमबेन का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है।

इस पुस्तक के प्रूफ-पठन (प्रूफरीडिंग) कार्य में पू.सा.श्री पद्मवर्षाश्रीजी म.सा., अर्पिताबेन, रिद्धिबेन, सेनलबेन एवं पंक्तिबेन द्वारा प्राप्त अमूल्य सहयोग के लिए हम उनके प्रति हृदय से अत्यंत कृतज्ञ हैं।

पू. आचार्य भगवंत जिनकी निश्रामें ज्ञानवर्धक आयोजन हुए

वि.सं. २०१०	प.पू.आ.भ.श्री विजयमनोहरसूरीश्वरजी म.साहेब
	प.पू.मुनिराज श्री भद्रंकरविजयजी म.साहेब
वि.सं. २०११	प.पू.आ.भ.श्री विजयमनोहरसूरीश्वरजी म.साहेब
	प.पू.मुनिराज श्री भद्रंकरविजयजी म.साहेब
वि.सं. २०१४	प.पू.आ.भ.श्री सिद्धिसूरीश्वरजी म.साहेब.
	प.पू.आ.भ.श्री लब्धिसूरीश्वरजी म.साहेब
	प.पू.आ.भ.श्री रामचंद्रसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०१६	प.पू.आ.भ.श्री रामचंद्रसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०१७	प.पू.आ.भ.श्री विजयअमृतसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०१९	प.पू.आ.भ.श्री रामचंद्रसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०२०	प.पू.आ.भ.श्री भुवनसूरीश्वरजी म.साहेब तथा
	प.पू. यतीन्द्रविजयजी म.साहेब
वि.सं. २०२१	प.पू.पंन्यास श्री भद्रंकरविजयजी म.साहेब तथा
	प.पू.पंन्यास श्री चंद्रोदयसागरजी म.साहेब
वि.सं. २०२९	प.पू.आ.भ.श्री कस्तुरसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०३०	प.पू.आ.भ.श्री भद्रसूरीश्वरजी म.साहेब
	प.पू.आ.भ.श्री ओमकारसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०३१	प.पू.आ.भ.श्री भद्रंकरसूरीश्वरजी म.साहेब
	प.पू.आ.भ.श्री मुक्तिचंद्रसूरीश्वरजी म.साहेब
	प.पू.आ.भ.श्री मानतुंगसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०३२	प.पू.आ.भ.श्री यशोभद्रसूरीश्वरजी म.साहेब
	प.पू.आ.भ.श्री धर्मधुरंधर विजयजी म.साहेब
वि.सं. २०३३	प.पू.मुनिराज श्री मतिधनविजयजी म.साहेब
	प.पू.गणिवर्य श्री जयघोषविजयजी म.साहेब
	प.पू. मुनिराज श्री मित्रानंदविजयजी म.साहेब

वि.सं. २०३४	प.पू.आ.भ.श्री रामचंद्रसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०३५	प.पू.आ.भ.श्री भुवनरत्नसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०३६	प.पू.आ.भ.श्री भद्रंकरसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०३८	प.पू.आ.भ.श्री कुंदकुंदसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०४०	प.पू.मुनिराज श्री बलभद्रविजयजी म.साहेब
	प.पू.मुनिराज श्री गौतमविजयजी म.साहेब
	प.पू.मुनिराज श्री राजचंद्रविजयजी म.साहेब
वि.सं. २०४४	प.पू.आ.भ.श्री रामसूरीश्वरजी म.साहेब (डहेलावाला)
	प.पू.आ.भ.श्री अभयदेवसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०४५	प.पू.आ.भ.श्री प्रेमसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०४६	प.पू.आ.भ.श्री कंचनसागरसूरीश्वरजी म.साहेब
	प.पू.पं.श्री प्रमोदसागरविजयजी म.साहेब
वि.सं. २०४७	प.पू.आ.भ.श्री प्रभाकरसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०४८	प.पू.आ.भ.श्री रामसूरीश्वरजी म.साहेब (डहेलावाला)
वि.सं. २०५१	प.पू.आ.भ.श्री लब्धिसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०५२	प.पू.आ.भ.श्री जयघोषसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०५४	प.पू.आ.भ.श्री विजयदेवसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०५५	प.पू.आ.भ.श्री रत्नाकरसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०७३	प.पू.आ.भ.श्री जिनचंद्रसागरसूरीश्वरजी म. साहेब
(शताब्दी वर्ष)	प.पू.आ.भ.श्री हेमचंद्रसागरसूरीश्वरजी म. साहेब
वि.सं. २०७५	गच्छाधिपति प.पू.आ.भ.श्री दोलतसागरसूरीश्वरजी म.साहेब
	प.पू.आ.भ.श्री नंदिवर्धनसागरसूरीश्वरजी म.साहेब
	प.पू.आ.भ.श्री हर्षसागरसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०७६	प.पू.आ.भ.श्री महाबोधिसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०७७	गच्छाधिपति प.पू.आ.भ.श्री राजयशसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०७८	प.पू.आ.भ.श्री उदयवल्लभसूरीश्वरजी म. साहेब

वि.सं. २०७९	गच्छाधिपति प.पू.आ.भ. श्री कुलचंद्र (K.C.) सूरीश्वरजी म.सा.
वि.सं. २०७९	प.पू.आ.भ.श्री रत्नचंद्रसूरीश्वरजी म.साहेब
(सुरत)	(डहेलावाला)
वि.सं. २०८०	प.पू.आ.भ.श्री योगतिलकसूरीश्वरजी म.साहेब
(सुरत)	प.पू.आ.भ.श्री सागरचंद्रसागरसूरीश्वरजी म.सा.
वि.सं. २०८१	प.पू.आ.भ.श्री जगच्चंद्रसूरीश्वरजी म.सा. (डहेलावाला)
(सुरत)	गच्छा.प.पू.आ.भ.श्री अभयदेवसूरीश्वरजी म.साहेब
वि.सं. २०८२	गच्छा.प.पू.आ.भ.श्री नरदेवसागरसूरीश्वरजी म.सा.
(सुरत)	गच्छा.प.पू.आ.भ.श्री नरदेवसागरसूरीश्वरजी म.सा.

श्री राजनगर जैन ज्ञानमंजरी

अनुक्रमणिका

मौखिक

विषय	पृष्ठ नं.	विषय	पृष्ठ नं.
कक्षा-१	१ से ११	कक्षा-८	१०५ से ११७
कक्षा-२	१२ से २५	कक्षा-९	११८ से १३७
कक्षा-३	२६ से ४०	कक्षा-१०	१३८ से १५९
कक्षा-४	४१ से ५१	कक्षा-११	१६० से १६९
कक्षा-५	५२ से ७२	कक्षा-१२	१७० से १८०
कक्षा-६	७३ से ८७	कक्षा-१३	१८१ से २००
कक्षा-७	८८ से १०४	कक्षा-१४ से १८	२०१

लिखित

विषय	पृष्ठ नं.	विषय	पृष्ठ नं.
कक्षा-१	२०२	कक्षा-११	२२७
कक्षा-२	२०४	कक्षा-१२	२३१
कक्षा-३	२०७	कक्षा-१३	२३६
कक्षा-४	२०९	कक्षा-१४	२४१
कक्षा-५	२११	कक्षा-१५	२४४
कक्षा-६	२१३	कक्षा-१६/१७	२४७
कक्षा-७	२१६	कक्षा-१८	२४८
कक्षा-८	२१८	कक्षा-१९/२०	२५०
कक्षा-९	२२१	कक्षा-२१ से २५	२५१
कक्षा-१०	२२५		

अनुक्रमणिका

✲ सूत्रो ✲

१. नमस्कार महामंत्र सूत्र (पंचमंगल सूत्र) १
२. पंचिंदिय सूत्र (गुरु स्थापना सूत्र) २
३. खमासमण सूत्र (पंचांग प्रणिपात सूत्र) २
४. इच्छकार सूत्र (सुगुरु सुखशाता पृच्छा सूत्र) २
५. अब्भुट्ठिओ सूत्र (गुरुखामणा सूत्र) २
६. इरियावहियं सूत्र (लघु प्रतिक्रमण सूत्र) २
७. तस्सउत्तरी सूत्र (उत्तरीकरण सूत्र) ३
८. अन्नत्थ सूत्र (आगार सूत्र) ३
९. लोगस्स सूत्र (नामस्तव सूत्र) ३
१०. करेमि भंते सूत्र (सामायिक दंडक सूत्र) ४
११. सामाइय-वयजुत्तो सूत्र
(सामायिक पारने का सूत्र) ४
१२. जगचिंतामणि सूत्र (चैत्यवंदन सूत्र) १२
१३. जंकिंचि सूत्र (तीर्थवंदना सूत्र) १३
१४. नमुत्थुणं सूत्र (शक्रस्तव सूत्र) १३
१५. जावंति चेइआइं सूत्र (चैत्यवंदन सूत्र) १४
१६. जावंत के वि साहू सूत्र
(गुरुवंदन/मुनिवंदन सूत्र) १४
१७. नमोऽर्हत् सूत्र
(संक्षिप्त पंचपरमेष्ठि नमस्कार सूत्र) १४
१८. उवसग्गहरं सूत्र (उपसर्गहर स्तोत्र) १४
१९. जय वीयराय ! सूत्र (प्रार्थना सूत्र) १५
२०. अरिहंत-चेइयाणं सूत्र (चैत्यस्तव सूत्र) १५
२१. कल्लाणकंदं सूत्र (पांच जिन की थोय) १५
२२. संसारदावानल सूत्र १६
२३. पुक्खरवरदीवड्ढे (श्रुतस्तव) सूत्र २६
२४. सिद्धाणं बुद्धाणं (सिद्धस्तव) सूत्र २७
२५. वेयावच्चगराणं सूत्र २७
२६. भगवानादि वंदन सूत्र २७
२७. पडिक्कमणे ठाउं? (प्रतिक्रमण बीज सूत्र) २८
२८. इच्छामि ठामि सूत्र (लघु अतिचार सूत्र) २८
२९. नाणंमि सूत्र (पांच आचार के अतिचार
की गाथा) २८
३०. सुगुरु वांदणा सूत्र (द्वादशावर्त्त वंदन सूत्र) २९
३१. देवसिअं आलोउं सूत्र २९
३२. सात लाख सूत्र २९
३३. अढार पापस्थानक सूत्र
(अढार पाप आलोववा का सूत्र) ३०
३४. सव्वस्सवि (प्रतिक्रमण बीजक) सूत्र ३०
३५. इच्छामि पडिक्कमिउं सूत्र ३०
३६. वंदित्तु (श्राद्ध प्रतिक्रमण) सूत्र ४१
३७. आयरिय उवज्झाए सूत्र ५२
३८. नमोऽस्तु वर्द्धमानाय सूत्र
(वीरप्रभुका चैत्यवंदन) ५३
३९. विशाल-लोचन-दलं सूत्र
(सुबह का वीरप्रभु का चैत्यवंदन) ५३
४०. श्रुतदेवता की स्तुति ५३
४१. क्षेत्रदेवता की स्तुति ५३
४२. कमलदल स्तुति ५४
४३. भवनदेवता की स्तुति ५४
४४. क्षेत्रदेवता की स्तुति ५४
४५. अड्ढाइज्जेसु (मुनि वंदन) सूत्र ५४
४६. वरकनक (१७० जिन) स्तुति ५४
४७. लघु शान्ति (श्री शान्तिनाथ) स्तोत्र ५४
४८. चउक्कसाय सूत्र ५६
४९. भरहेसर की सज्झाय ५६
५०. मन्हजिणाणं (श्रावक के कृत्यो)की
सज्झाय ५८
५१. सकलतीर्थ वंदना ५८
५२. श्री सकलार्हत् स्तोत्र ७३
५३. स्नातस्या स्तुति ७६
५४. श्रावक के अतिचार ११८
५५. सागरचंदो (पौषध पारने का सूत्र) २०८
५६. गमणागमणे २३०
५७. स्नात्रपूजा १३८
५८. चार शरणा २४३, २४६

❋ शब्दार्थ ❋

१. श्री नमस्कार महामंत्र सूत्र ३१
२. पंचिंदिय सूत्र (गुरुस्थापना सूत्र) ३१
३. खमासमण सूत्र (पंचांग प्रणिपात सूत्र) ३२
४. इच्छकार सूत्र (सुगुरु सुखशाता पृच्छा सूत्र) ३२
५. अब्भुट्ठिओ सूत्र (गुरु खामणा सूत्र) ४६
६. इरियावहियं सूत्र (लघु प्रतिक्रमण सूत्र) ६०
७. तस्सउत्तरी सूत्र (उत्तरीकरण सूत्र) ६१
८. अन्नत्थ सूत्र ७८
९. लोगस्स सूत्र (नामस्तव सूत्र) ९३
१०. करेमि भंते सूत्र (सामायिक दंडक सूत्र) १०८
११. सामाइय वयजुत्तो सूत्र (सामायिक पारने का सूत्र) १०८
१२. जगचिंतामणि (चैत्यवंदन सूत्र) १४८
१३. जंकिंचि सूत्र (तीर्थवंदना सूत्र) १५०
१४. नमुत्थुणं सूत्र (शक्रस्तव सूत्र) १६४
१५. जावंति चेइआइं सूत्र (चैत्यवंदन सूत्र) १६५
१६. जावंत के वि साहू सूत्र (गुरुवंदना/मुनिवंदन सूत्र) १६६
१७. नमोऽर्हत् सूत्र (संक्षिप्त पंचपरमेष्ठि नमस्कार सूत्र) १६६
१८. उवसग्गहरं सूत्र (उपसर्गहर स्तोत्र) १७३
१९. जय वीयराय सूत्र (प्रार्थना सूत्र) १७५
२०. अरिहंत-चेइयाणं सूत्र (चैत्यस्तव सूत्र) १७६
२१. वंदित्तु (श्राद्ध प्रतिक्रमण) सूत्र १८५

❋ नवस्मरण ❋

१. नमस्कार महामंगल (पंचमंगल सूत्र) १
२. उवसग्गहरं सूत्र (उपसर्गहर स्तोत्र) १४
३. संतिकरं स्मरणम् ७७
४. तिजयपहुत्त स्तोत्र १७०
५. नमिऊण स्तोत्र १७१
६. श्री अजितशांति स्तवन ८८
७. भक्तामर स्तोत्र १६०
८. कल्याणमंदिर स्तोत्र १८१
९. बडी शान्ति (बृहच्छांति) स्तोत्रम् १०५

❋ दोहे ❋

१. प्रभुदर्शन के दोहे ५
२. ज्ञानना ५ खमासमणा ६
३. अष्टप्रकारी पूजा के दोहे १९
४. नव अंग पूजा के दोहे २०
५. प्रदक्षिणा के दोहे ३२
६. श्री सीमंधरस्वामी के दोहे ८०
७. श्री शत्रुंजय के दोहे ९५

❋ स्तुति ❋

१. देखी मूर्ति ४
२. आव्यो शरणे ५
३. रत्नाकर पच्चीसी १०,२०६,२०७,२१०,२१२
४. अर्हन्तो भगवंत ४७
५. अरिहंत वंदनावली (१ से ५ गाथा) ४९
६. आरती/मंगलदीवो ६-७

❋ नाम ❋

१. चोबीस भगवान के नाम-लंछन-वर्ण ७
२. नवपद के नाम ८
३. मास के नाम ९
४. तिथि के नाम ९

❋ चैत्यवंदन ❋

१. सकलकुशलवल्ली १७
२. श्री पार्श्वनाथ भगवान का चैत्यवंदन १७
३. चोबीसजिन के शरीर के वर्ण का चैत्यवंदन ४७
४. श्री महावीरस्वामी भगवान का चैत्यवंदन ३३
५. श्री शान्तिनाथ भगवान का चैत्यवंदन ६१
६. श्री सीमंधरस्वामी का चैत्यवंदन ८०
७. श्री शत्रुंजय का चैत्यवंदन ९५
८. पर्युषणपर्व का चैत्यवंदन १०९
९. पर्युषणपर्व का चैत्यवंदन २०९

१०. श्री आदीश्वर भगवान का चैत्यवंदन २०३
११. श्री पार्श्वनाथ भगवान का चैत्यवंदन २२७
१२. श्री नेमिनाथ भगवान का चैत्यवंदन २३२
१३. श्री शान्तिनाथ भगवान का चैत्यवंदन २३६
१४. श्री नवपदजी का चैत्यवंदन २४१
१५. सामान्य जिन चैत्यवंदन २४४
१६. श्री आदीश्वर भगवान का चैत्यवंदन २२१

✵ स्तवन ✵

१. श्री पार्श्वनाथ भगवान का स्तवन १७
२. श्री महावीरस्वामी भगवान का स्तवन ३३
३. श्री शान्तिनाथ भगवान का स्तवन ६१
४. श्री सीमंधरस्वामी का स्तवन ८१
५. श्री शत्रुंजय का स्तवन ९६
६. पर्युषणपर्व का स्तवन १०९
७. श्री महावीरप्रभु के २७ भव का स्तवन २१३,२१६,२१८,२२२
८. श्री महावीरस्वामी भगवान का हालरडा १३०
९. श्री महावीरस्वामी पंचकल्याणक का स्तवन २२८,२३२,२३७
१०. श्री आदीश्वर भगवान का स्तवन २०३
११. श्री पार्श्वनाथ भगवान का स्तवन २२८
१२. श्री नेमिनाथ भगवान का स्तवन २३१
१३. श्री शान्तिनाथ भगवान का स्तवन २३७
१४. श्री नवपदजी का स्तवन २४२
१५. सामान्य जिन स्तवन २४५

✵ थोय ✵

१. श्री पार्श्वनाथ भगवान की थोय १८
२. श्री महावीरस्वामी भगवान की थोय ३३
३. अध्यात्म की थोय ४७
४. श्री शान्तिनाथ भगवान की थोय ६२
५. श्री सीमंधरस्वामी की थोय ८२
६. श्री आदीश्वर भगवान की थोय ८२,२२४
७. श्री शत्रुंजय की थोय ९६
८. पर्युषणपर्व की थोय ११०
९. श्री महावीरस्वामी भगवान की थोय २१४
१०. नवतत्त्व की थोय २१९
११. श्री नेमिनाथ भगवान की थोय २३५
१२. श्री शान्तिनाथ भगवान की थोय २४०
१३. श्री नवपदजी की थोय २४२
१४. दस (१०) त्रिक की थोय २३०
१५. षड् अतिशय की थोय २४५

✵ सज्झाय ✵

१. श्री प्रसन्नचंद्र राजर्षि की सज्झाय ८२
२. वैराग्य की सज्झाय २१७
३. श्री अईमुत्ता मुनि की सज्झाय ४८
४. धर्मदृढता की सज्झाय २१५
५. बुढापे की सज्झाय (जोइतु नथी...) २२०
६. अमृतवेल की सज्झाय २४८

✵ विधि ✵

१. गुरुवंदन की विधि ९
२. चैत्यवंदन विधि १८
३. सामायिक लेने की विधि ३४
४. सामायिक पारने की विधि ३५
५. राइ प्रतिक्रमण की विधि ९७
६. देवसिअ प्रतिक्रमण की विधि ११२
७. पाक्षिक (पक्खि) प्रतिक्रमण की विधि १५१
८. चउमासी प्रतिक्रमण की विधि १५३
९. संवत्सरी प्रतिक्रमण की विधि २११
१०. पक्खि, चउमासी और संवत्सरी प्रतिक्रमण में छींक आए तो २११
११. छींक के काउस्सग्ग की विधि २१२
१२. देववंदन की विधि २०२
१३. संथारापोरिसी की विधि २२५
१४. १४ नियम धारने की विधि १७६
१५. वांदणा के २५ आवश्यक ८३
१६. मुहपत्ति पडिलेहण के ५० बोल ६३
१७. सत्तरह संडासा (प्रमार्जना) विधि ८४
१८. वज्रपंजर स्तोत्र ६४
१९. सकलीकरण मंत्र ६६
२०. तपचिंतवणी काउस्सग्ग २०४

❋ पच्चक्खाण ❋

१. नवकारशी १११
२. पोरिसि/साड्ढपोरिसि १११
३. चौविहार, तिविहार, दुविहार १११
४. पाणहार ११२
५. आयंबिल, नीवि, एकासणा, बियासणा १३३
६. तिविहार उपवास, चौविहार उपवास १३३-१३४
७. धारणा अभिग्रह १९६
८. मुट्ठिसहिअं १९७
९. श्री राजनगर प्रश्नोत्तरी
* १ से १० १०
* ११ से २५ २१
* २६ से ३५ ३६
* ३६ से ५० ६७
* ५१ से ६०/१ ८५
* ६१ से ८० १००
* ८१ से ९० ११६

❋ कहानी ❋

१. भगवान महावीर और चंडकौशिक २४
२. मेघकुमार की कहानी ३९
३. वज्रस्वामी की कहानी ५०
४. जंबूस्वामी की कहानी ७१
५. चंदनबाला की कहानी १०३

❋ पदार्थ ❋

१. भक्ष्याभक्ष्य भाग-१ १७८
२. भक्ष्याभक्ष्य भाग-२ १९८
३. जैन धर्म की मोनोपोली १५५
४. काउसग्ग के १६ आगार ७९
५. काउस्सग्ग के १९ दोष ८०

❋ कर्म समजाये ❋

१. ज्ञानावरणीय कर्म १३४
२. दर्शनावरणीय कर्म १३६
३. वेदनीय कर्म १५३
४. मोहनीय कर्म १५३
५. आयुष्य कर्म १६६
६. नाम कर्म १६७
७. गोत्र कर्म १६७
८. अंतराय कर्म १६८

❋ अन्य ❋

१. नियमावली २५२

Connect with us

Instagram

@RAJNAGARPARIKSHA_COM

You Tube

वोट्सअप ग्रुप मे जोईन होने के लिए
इस नंबर पर मेसेज करे.
+91 94093 54583

अन्य जानकारी के लिए संपर्क
+91 94093 54583

मौखिक कक्षा १

सूत्र	:	नवकार महामंत्र से सामाइय-वयजुत्तो तक (१ से ११)	३०
काव्य	:	स्तुतिः देखी मूर्ति, आव्यो शरणे	१५
		प्रभु दर्शन के दोहे	
		ज्ञान के ५ खमासमणा, आरती तथा मंगलदीवा	१५
नाम	:	चौबीस तीर्थंकरों के नाम, नवपद के नाम,	१५
		मास के नाम और तिथि	
विधि	:	गुरुवंदन की विधि (प्रेक्टिकल के साथ)	५
स्तुति	:	रत्नाकर पच्चीसीः गाथा १ से ५	१०
		राजनगर प्रश्नोत्तरी : १ से १०	१०
			१००

(१) नमस्कार महामंत्र सूत्र (पंचमंगल सूत्र)

नमो अरिहंताणं ॥१॥

नमो सिद्धाणं ॥२॥

नमो आयरियाणं ॥३॥

नमो उवज्झायाणं ॥४॥

नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥

एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥

सव्वपावप्पणासणो ॥७॥

मंगलाणं च सव्वेसिं,

पढमं हवइ मंगलं ॥८॥

(२) पंचिंदिय सूत्र (गुरु स्थापना सूत्र)

पंचिंदिय-संवरणो, तह नव-विह-बंभचेर-गुत्तिधरो.
चउविह-कसाय-मुक्को, इअ अट्ठारस-गुणेहिं संजुत्तो ॥१॥

पंच-महव्वय-जुत्तो, पंच-विहायार-पालण-समत्थो.
पंच-समिओ तिगुत्तो, छत्तीस-गुणो गुरू मज्झ ॥२॥

(३) खमासमण सूत्र (पंचांग प्रणिपात सूत्र)

इच्छामि खमा-समणो! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि...१.

(४) इच्छकार ! सूत्र (सुगुरु सुखशाता पृच्छा सूत्र)

इच्छकार सुह-राइ? (सुह-देवसि?) सुख-तप? शरीर-निराबाध? सुख-संजम-जात्रा-निर्वहो छो जी? स्वामी! शाता छे जी? भात-पानी नो लाभ देजो जी...१.

(५) अब्भुट्ठिओ सूत्र (गुरुखामणा सूत्र)

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि, अब्भिंतर-देवसिअं [राइअं] खामेउं? इच्छं, खामेमि देवसिअं. [राइअं]

जं किंचि अपत्तिअं, पर-पत्तिअं; भत्ते, पाणे; विणए, वेयावच्चे; आलावे, संलावे; उच्चासणे, समासणे; अंतर-भासाए, उवरि-भासाए; जं किंचि मज्झ विणय-परिहीणं, सुहुमं वा, बायरं वा; तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ..१.

(६) इरियावहियं सूत्र (लघु प्रतिक्रमण सूत्र)

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि? (गुरुः पडिक्कमेह) इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं ॥१॥ इरियावहियाए, विराहणाए ॥२॥ गमणागमणे ॥३॥

पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडा-संताणा-संकमणे ॥४॥ जे मे जीवा विराहिया ॥५॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ॥६॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥७॥

(७) तस्स उत्तरी सूत्र (उत्तरीकरण सूत्र)

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्ली-करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं...१

(८) अन्नत्थ सूत्र (आगार सूत्र)

अन्नत्थ-ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अ-भग्गो अ-विराहियो, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(९) लोगस्स सूत्र (नामस्तव सूत्र)

लोगस्स उज्जोअ-गरे, धम्म-तित्थ-यरे जिणे
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥

उसभ-मजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च
पउम-प्पहं सुपासं, जिणं च चंद-प्पहं वंदे ॥२॥

सुविहिं च पुप्फ-दंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥

कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च
वंदामि रिट्ठ-नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥

एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण-जर-मरणा
चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थ-यरा मे पसीयंतु ॥५॥

कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा
आरुग्ग-बोहि-लाभं, समाहि-वर-मुत्तमं-दिंतु ॥६॥

चंदेसु निम्मल-यरा, आइच्चेसु अहियं पयास-यरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(१०) करेमि भंते सूत्र (सामायिक दंडक सूत्र)

करेमि भंते! सामाईयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं, ति-विहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि. ॥१॥

(११) सामाइय-वयजुत्तो सूत्र (सामायिक पारनेका सूत्र)

सामाइय-वय-जुत्तो, जाव मणे होइ नियम-संजुत्तो
छिन्नइ असुहं कम्मं, समाइय जत्तिया वारा ॥१॥

सामाइअम्मि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥२॥

सामायिक विधि से लिया, विधि से पूर्ण किया,
विधि करने में जो कोई अविधि हुई हो,
उन सबका मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ॥३॥

दस मन के, दस वचन के, बारह काया के
कुल बत्तीस दोषों में से कोई दोष लगा हो,
उन सबका मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ॥४॥

काव्य विभाग - स्तुति

देखी मूर्ति श्री पार्श्वजिननी, नेत्र मारां ठरे छे,
ने हैयुं आ फरी फरी प्रभु, ध्यान तारुं धरे छे;

आत्मा मारो प्रभु तुज कने, आववा उल्लसे छे,
आपो एवुं बल हृदयमां, माहरी आश ए छे! १

आव्यो शरणे तमारा, जिनवर करजो आश पूरी अमारी,
नाव्यो भव पार मारो, तुम विण जगमां सार ले कोण मारी?
गायो जिनराज आजे, हरख अधिकथी, परम आनंदकारी,
पायो तुम दर्शनार्थे भव भय भ्रमणा नाथ सर्वे अमारी. २

प्रभु दर्शन के दोहे

प्रभु दरिशन सुख संपदा, प्रभु दरिशन नवनिध;
प्रभु दरिशनथी पामीए सकल पदारथ सिद्ध. १

भावे जिनवर पूजीए, भावे दीजे दान;
भावे भावना भावीए, भावे केवलज्ञान. २

जीवडा जिनवर पूजीए, पूजानां फल होय;
राजा नमे प्रजा नमे, आण न लोपे कोय. ३

फूलडां केरा बागमां, बेठा श्री जिनराज;
जेम तारामां चंद्रमां, तेम शोभे महाराज. ४

वाडी चंपो मोरियो, सोवन पांखडीए,
पार्श्व जिनेश्वर पूजीए, पांचे आंगलीए. ५

त्रिभुवन नायक तुं धणी, मही म्होटो महाराज,
म्होटे पुण्ये पामीयो, तुम दरिशन हुं आज. ६

आज मनोरथ सवि फल्या, प्रगट्या पुण्य कल्लोल,
पाप करम दूरे टल्यां, नाठां दुःख दंदोल. ७

पंचम काले पामवो, दुल्हो प्रभु देदार,
तो पण त्हारा नामनो, छे म्होटो आधार. ८

ज्ञान के ५ खमासमणा

मतिज्ञान : समकित श्रद्धावंतने उपन्युं ज्ञान प्रकाश,
प्रणमुं पदकज तेहना भाव धरी उल्लास । १

श्रुतज्ञान : पवयण श्रुत सिद्धांत ते आगम समय वखाण,
पूजो बहुविध रागथी, चरणकमल चित्त आण । २

अवधिज्ञान : उपन्यो अवधिज्ञाननो, गुण जेहने अविकार,
वंदना तेहने माहरी, श्वास मांहे सो वार । ३

मन:पर्यवज्ञान : ए गुण जेहने उपन्यो, सर्वविरति गुणठाण,
प्रणमुं हितथी तेहना, चरणकमल चित्त आण । ४

केवलज्ञान : केवल दंसण नाणनो, चिदानंदघन तेज,
ज्ञानपंचमी दिन पूजीये, विजयलक्ष्मी शुभ हेज । ५

आरती

जय जय आरती आदि जिणंदा, नाभिराया मरुदेवीको नंदा;
पहेली आरती पूजा कीजे, नरभव पामीने लाहो लीजे ॥१॥

दूसरी आरती दीनदयाला, धूलेवा मंडपमां जग अजवाला ॥२॥

तीसरी आरती त्रिभुवन देवा, सुरनर इन्द्र करे तोरी सेवा ॥३॥

चोथी आरती चउगति चूरे, मनवांछित फल शिवसुख पूरे ॥४॥

पंचमी आरती पुण्य उपाया; मूलचंदे ऋषभ गुण गाया ॥५॥

मंगलदीवो

दीवो रे दीवो प्रभु मंगलिक दीवो,
आरती उतारण बहु चिरंजीवो. दीवो०॥१॥

सोहमने घेर पर्व दिवाली; अंबर खेले अमराबाली दीवो०॥२॥

दीपाल भणे एणे कुल अजवाली;
भावे भगते विघन निवारी. दीवो०॥३॥

दीपाल भणे एणे ए कलिकाले;
आरती उतारी राजा कुमारपाले.०॥४॥

अम घेर मंगलिक तुम घेर मंगलिक;
मंगलिक चतुर्विध संघने होजो. दीवो०॥५॥

चोबीस भगवान के नाम - लंछन - वर्ण

	नाम	लंछन	वर्ण
१.	ऋषभदेव (आदिनाथ)	वृषभ (बैल)	कंचन जैसा पीला
२.	अजितनाथ	हाथी	कंचन जैसा पीला
३.	संभवनाथ	अश्व	कंचन जैसा पीला
४.	अभिनंदनस्वामी	बंदर	कंचन जैसा पीला
५.	सुमतिनाथ	क्रौंचपक्षी (क्रौंच)	कंचन जैसा पीला
६.	पद्मप्रभस्वामी	पद्म (कमल)	रातो (लाल)
७.	सुपार्श्वनाथ	स्वस्तिक (साथियो)	कंचन जैसा पीला
८.	चन्द्रप्रभस्वामी	चंद्र	उज्जवल (श्वेत)
९.	सुविधिनाथ (पुष्पदंत)	मगर	उज्जवल (श्वेत)

१०. शीतलनाथ	श्रीवत्स	कंचन जैसा पीला
११. श्रेयांसनाथ	गेंडा	कंचन जैसा पीला
१२. वासुपूज्यस्वामी	भैंसा	रातो (लाल)
१३. विमलनाथ	वराह	कंचन जैसा पीला
१४. अनंतनाथ	बाज	कंचन जैसा पीला
१५. धर्मनाथ	वज्र	कंचन जैसा पीला
१६. शांतिनाथ	हरण	कंचन जैसा पीला
१७. कुंथुनाथ	बकरा	कंचन जैसा पीला
१८. अरनाथ	नंदावर्त	कंचन जैसा पीला
१९. मल्लिनाथ	कलश	हरा (नीलो)
२०. मुनिसुव्रतस्वामी	कछुआ	श्याम (अंजन)
२१. नमिनाथ	नीलकमल	कंचन जैसा पीला
२२. नेमिनाथ (अरिष्टनेमि)	शंख	श्याम (अंजन)
२३. पार्श्वनाथ	नाग (सर्प)	हरा (नीलो)
२४. महावीरस्वामी (वर्धमानस्वामी)	सिंह	कंचन जैसा पीला

नवपद के नाम

क्रम	नवपद के नाम	गुण	क्रम	नवपद के नाम	गुण
१.	अरिहंत भगवंत	१२	६.	दर्शन	६७
२.	सिद्ध भगवंत	०८	७.	ज्ञान	५१
३.	आचार्य भगवंत	३६	८.	चारित्र	७०
४.	उपाध्याय भगवंत	२५	९.	तप	५०
५.	साधु भगवंत	२७			

मास के नाम

कार्तिक	फाल्गुन	आषाढ
मार्गशीर्ष	चैत्र	श्रावण
पौष	वैशाख	भाद्रपद
माघ	ज्येष्ठ	आसो (अश्वीन)

तिथि

सुद : एकम, बीज, तीज, चौथ, पंचमी, छट्ठ, सातम, आठम, नोम, दशम, अगियारस, बारस, तेरस, चौदस, पूनम

वद : एकम, बीज, तीज, चौथ, पंचमी, छट्ठ, सातम, आठम, नोम, दशम, अगियारस, बारस, तेरस, चौदस, अमावस

गुरुवंदन की विधि (प्रेक्टीकल करना)

(१) प्रथम दो हाथ जोडकर दो खमासमणा देना। (पंचांगप्रणिपात देना)

(२) फिर खड़े होकर दो हाथ जोड़कर 'इच्छकार सूत्र' बोलना.

(३) फिर दो हाथ जोड़कर यदि 'पदस्थ' याने आचार्य भगवंत आदि हो तो एक खमासमणा देना और 'अब्भुट्ठिओ' खमाना, पदवीधर न हो तो सीधा 'अब्भुट्ठिओ' खमाना ।

(४) फिर एक खमासमणा देकर शाता पूछना।

नोंध : सवेरे 'राइअं' शब्द और मध्याह्न के बाद 'देवसिअं' शब्द बोलना ! दोनो शब्द साथ में नहीं बोलना ।

श्री रत्नाकर पच्चीसी

मंदिर छो मुक्तितणा, मांगल्य क्रीडाना प्रभु,
ने इन्द्र नर ने देवता, सेवा करे तारी विभु।
सर्वज्ञ छो स्वामी वली, शिरदार अतिशय सर्वना,
घणुं जीव तुं, घणु जीव तुं, भंडार ज्ञान कला तणा... ॥१॥

त्रण जगतना आधार ने, अवतार हे करुणातणा,
वली वैद्य हे दुर्वार आ संसारना दुःखो तणा।
वीतराग वल्लभ विश्वना तुज पास अरजी उच्चरुं,
जाणो छतां पण कही अने, आ हृदय हुँ खाली करुँ... ॥२॥

शुं बालको माँ-बाप पासे, बालक्रीडा नव करे?
ने मुखमांथी जेम आवे, तेम शुं नव उच्चरे?
तेमज तमारी पास तारक, आज भोला भावथी,
जेवुं बन्युं तेवु कहुं, तेमां कशुं खोटुं नथी... ॥३॥

मैं दान तो दीधुं नहि, ने शीयल पण पाल्युं नहीं,
तपथी दमी काया नही, शुभ भाव पण भाव्यो नही,
ए चार भेदे धर्ममांथी, कांई पण प्रभु नव कर्यु,।
म्हारुं भ्रमण भवसागरे, निष्फल गयुं निष्फल गयुं... ॥४॥

हुँ क्रोध अग्निथी बल्यो, वली लोभ सर्प डस्यो मने,
गल्यो मानरूपी अजगरे, हुँ केम करी ध्यावुं तने?
मन मारुं मायाजालमां, मोहन! महा मूंझाय छे,
चडी चार चोरो हाथमां, चेतन घणो चगदाय छे... ॥५॥

राजनगर प्रश्नोत्तरी

*प्र.१　आप कौन है ?
उ.　हम जैन है ।

प्र.२. आप किस धर्म का पालन करते है ?

उ. हम जैन धर्म का पालन करते है ।

प्र.३ जैन किसे कहते है ?

उ. श्री जिनेश्वर भगवान की आज्ञा का पालन करते हैं, वे जैन कहलाते हैं ।

प्र.४. जैन धर्म यानि क्या ?

उ. श्री जिनेश्वर भगवंतो द्वारा बताया हुआ धर्म ।

प्र.५. श्री जिनेश्वर भगवान किसे कहा जाता है ?

उ. राग-द्वेष को जीतने वाले, जिनमें एक भी दोष नही है, जो सर्व गुण संपन्न है वे श्री जिनेश्वर भगवान कहलाते है ।

प्र.६. जैन धर्म के अन्य नाम क्या हैं ?

उ. जैन धर्म के दयाधर्म, स्याद्वादधर्म, आर्हत् धर्म आदि अन्य नाम है ।

प्र.७. श्री जिनेश्वर भगवान कितने है ?

उ. इस अवसर्पिणी काल में २४ जिनेश्वर भगवान हुए है ।

प्र.८. श्री जिनेश्वर भगवान के अन्य नाम बताइए.

उ. अरिहंत, तीर्थंकर, वीतराग, जिनेश्वर, परमात्मा, भगवान्, देवाधिदेव आदि ।

प्र.९. जिनमंदिर में प्रवेश करते समय क्या कहना चाहिए ? और परमात्मा के दर्शन होने पर क्या कहना चाहिए ?

उ. जिनमंदिर में प्रवेश करते समय तीन बार निसीहि और परमात्मा के दर्शन होते ही दो हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर, नमो जिणाणं कहना चाहिये ।

प्र.१०. गुरु महाराज मिले तो क्या कहना चाहिये ?

उ. दो हाथ जोडकर, मस्तक झुकाकर 'मत्थएण वंदामि' कहना चाहिये ।

● ● ●

---

* स. यानि सवाल और ज. यानि जवाब समजना.

● बीज, पांचम, आठम, अग्यारस, चौदस, पूनम सुद और वद दोनोमें हरी सब्जी का त्याग करना.

मौखिक कक्षा २

सूत्र :	जगचिंतामणि से संसारदावानल (१२ से २२)	३०
काव्य :	चैत्यवंदन: (१) सकलकुशलवल्ली,	२०
	(२) आश पूरे प्रभु पासजी	
	स्तवन : अंतरजामी सुण...	
	थोय : शंखेश्वर पासजी पूजीए (४ गाथा)	
विधि :	चैत्यवंदन की विधि (प्रेक्टिकल - मुद्रा के साथ)	१०
	अष्टप्रकारी पूजा और नवांगी पूजा के दोहे	१५
	राजनगर प्रश्नोत्तरी: प्रश्न ११ से २५	१५
कहानी :	भगवान महावीर और चंडकौशिक की कहानी	१०
		१००

(१२) जगचिंतामणि सूत्र (चैत्यवंदन सूत्र)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करुं? इच्छं, जग चिंतामणि! जगनाह! जगगुरु! जगरक्खण! जगबंधव! जगसत्थवाह जगभाव-विअक्खण! अट्ठावय संठविअ रूव! कम्मट्ठ विणासण! चउवीसं पि जिणवर! जयंतु अप्पडिहय सासण!....... १

कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं, पढम संघयणि, उक्कोसय सत्तरिसय, जिणवराण विहरंत लब्भइ, नवकोडिहिं केवलीण, कोडि सहस्स नव साहू गम्मइ, संपइ जिणवर वीस, मुणि बिहुं कोडिहिं वरनाण, समणह कोडि सहस्स दुअ, थुणिज्जइ निच्च विहाणि......... २

जयउ सामिय! जयउ सामिय! रिसह सत्तुंजि, उज्जिंति पहु नेमिजिण! जयउ वीर! सच्चउरिमंडण! भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय! महुरिपास! दुह दुरिअखंडण! अवर विदेहिं तित्थयरा, चिंहु दिसि विदिसि जिं के वि, तीआणागय संपईअ, वंदुं जिण सव्वे वि...... ३

सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ, बत्तीस-सय बासिआईं, तिअलोए चेइए वंदे..... ४

पन्नरस कोडिसयाइं, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना, छत्तीस सहस असिईं सासय बिंबाइं पणमामि....... ५

(१३) जं किंचि सूत्र (तीर्थवंदना सूत्र)

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए,
जाइं जिण बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि... ॥१॥

(१४) नमुत्थुणं सूत्र (शक्रस्तव सूत्र)

नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं ॥१॥

आइ-गराणं, तित्थ-यराणं, सयं-संबुद्धाणं ॥२॥

पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं,
पुरिस-वर-पुंडरीआणं, पुरिस-वर-गंध-हत्थीणं ॥३॥

लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं, लोग-हियाणं,
लोग-पईवाणं, लोग-पज्जोअ-गराणं ॥४॥

अभय-दयाणं, चक्खु-दयाणं, मग्ग-दयाणं,
सरण-दयाणं, बोहि-दयाणं ॥५॥

धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं, धम्म-नायगाणं,
धम्म-सारहीणं, धम्म-वर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ॥६॥

अप्पडिहय-वर-नाण-दंसण-धराणं, वियट्ट-छउमाणं ॥७॥

जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं,
बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥८॥

सव्वन्नूणं, सव्व-दरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-
मपुणराविति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअ-भयाणं ॥९॥

जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति-
णागए काले संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे ति-विहेण वंदामि ॥१०॥

(१५) जावंति चेइआइं सूत्र (चैत्यवंदन सूत्र)

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ,
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

(१६) जावंत के वि साहू सूत्र (गुरुवंदन/मुनिवंदन सूत्र)

जावंत के वि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ,
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥

(१७) नमोऽर्हत् सूत्र (संक्षिप्त पंचपरमेष्ठि नमस्कार सूत्र)

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्यो-पाध्याय सर्वसाधुभ्यः...।

(१८) उवसग्गहरं सूत्र (उपसर्गहर स्तोत्र)

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण-मुक्कं;
विसहर-विस-निन्नासं मंगल कल्लाण आवासं ॥१॥

विसहर-फुलिंगमंतं कंठे धारेइ जो सया मणुओ;
तस्स गह रोग मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥२॥

चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ;
नर तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥३॥

तुह सम्मत्ते लद्धे चिंतामणि कप्प-पायवब्भहिए,
पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥

इअ संथुओ महायस भत्तिब्भर निब्भरेण हियएण,
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे-भवे पास जिणचंद ! ॥५॥

(१९) जय वीयराय ! सूत्र (प्रार्थना सूत्र)

जय वीयराय ! जग गुरु !
होउ ममं तुह पभावओ भयवं!
भव-निव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल-सिद्धी ॥१॥

लोग-विरुद्ध-च्चाओ गुरु-जण-पूआ परत्थ-करणं च;
सुह-गुरु-जोगो तव्वयण-सेवणा आ-भवमखंडा ॥२॥

वारिज्जइ जइ वि नियाण-बंधणं वीयराय! तुह समये;
तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥

दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहि-मरणं च बोहि-लाभो अ
संपज्जउ मह एअं, तुह नाह! पणाम-करणेणं ॥४॥

सर्व-मंगल-मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम्।
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥५॥

(२०) अरिहंत-चेइयाणं सूत्र (चैत्यस्तव सूत्र)

अरिहंत-चेइयाणं, करेमि काउस्सग्गं ॥१॥

वंदण-वत्तियाए, पूअण-वत्तियाए, सक्कार-वत्तियाए, सम्माण-वत्तियाए,
बोहि-लाभ-वत्तियाए, निरुवसग्ग-वत्तियाए ॥२॥

सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि
काउस्सग्गं. ॥३॥

(२१) कल्लाणकंदं सूत्र (पांच जिन की थोय)

कल्लाणकंदं पढमं जिणिंदं संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं,
पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं, भत्तीइ वंदे सिरि-वद्धमाणं ॥१॥

अपार संसार समुद्दपारं, पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं,
सव्वे जिणिंदा सुरविंदवंदा, कल्लाण-वल्लीण-विसाल-कंदा ॥२॥

निव्वाण-मग्गे वर-जाण-कप्पं, पणासिया सेस कुवाइ-दप्पं;
मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥३॥

कुंदिंदु-गोक्खीर-तुसार-वन्ना, सरोज-हत्था-कमले-निसन्ना,
वाएसिरी पुत्थय-वग्ग-हत्था, सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥४॥

(२२) संसारदावानल सूत्र

(उपजाति छंद)

संसार-दावा-नल-दाह-नीरं, संमोह-धूली-हरणे समीरं.
माया-रसा-दारण-सार-सीरं, नमामि वीरं गिरि-सार-धीरं ॥१॥

(वसंत तिलका छंद)

भावावनाम-सुर-दानव-मानवेन,
चूला-विलोल-कमला-वलि-मालितानि.
संपूरिता-भिनत-लोक-समीहितानि,
कामं नमामि जिनराज-पदानि तानि ॥२॥

(मन्दाक्रान्ता छंद)

बोधागाधं सुपद-पदवी-नीर-पूराभिरामं,
जीवा-हिंसा-विरल-लहरी-संगमा-गाह-देहं.
चूला-वेलं गुरु-गम-मणी-संकुलं दूर-पारं,
सारं-वीरा-गम-जल-निधिं सादरं साधु सेवे. ॥३॥

(स्रग्धरा छन्द)

आमूला-लोल-धूली-बहुल-परि-मला-लीढ-लोलालि-माला-,
झंकाराराव-सारा-मल-दल-कमला-गार-भूमि-निवासे!.
छाया-संभार-सारे! वर-कमल-करे! तार-हाराभिरामे!,
वाणी-संदोह-देहे! भव-विरह-वरं, देहि मे देवि! सारं. ॥४॥

काव्य विभाग - सकल कुशलवल्ली

सकल कुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेघो,
दुरित तिमिर भानुः, कल्पवृक्षोपमानः;
भवजलनिधिपोतः, सर्व संपत्ति हेतुः;
स भवतु सततं वः, श्रेयसे शान्तिनाथः श्रेयसे पार्श्वनाथः।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का चैत्यवंदन

आश पूरे प्रभु पासजी, तोडे भव पास;
वामा माता जनमीया, अहि लंछन जास. १

अश्वसेन सुत सुखकरुं, नव हाथनी काय;
काशी देश वाराणसी, पुण्ये प्रभु आया. २

एकसो वरसनुं आउखु, ए पाली पार्श्वकुमार;
पद्म कहे मुगते गया, नमतां सुख निरधार. ३

श्री पार्श्वनाथ भगवान का स्तवन

अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो;
सांभलीने आव्यो हुं तीरे, जन्म मरण दुःख वारो,
सेवक अरज करे छे राज! अमने शिवसुख आपो १

सहुकोनां मनवांछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो;
एहवुं बिरूद छे राज! तमारुं, केम राखो छो दूरे? सेवक० २

सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो;
करूणासागर केम कहेवाशो? जो उपगार न करशो. सेवक० ३

लटपटनुं हवे काम नहि छे, प्रत्यक्ष दरिशन दीजे;
धुमाडे धीजुं नहि साहिब, पेट पड्या पतीजे. सेवक० ४

श्री शंखेश्वरमंडन साहिब, विनतडी अवधारो;
कहे 'जिनहर्ष' मया करी मुजने, भवसागरथी तारो. सेवक० ५

श्री पार्श्वनाथ भगवान की थोय

शंखेश्वर पासजी पूजीए, नरभवनो लाहो लीजीए;
मनवांछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत अलवेसरु. १

दोय राता जिनवर अतिभला, दोय धोला जिनवर गुणनीला;
दोय नीला दोय शामल कह्या, सोले जिन कंचन वर्ण लह्या. २

आगम ते जिनवर भाखीयो, गणधर ते हैडे राखीयो;
तेहनो रस जेणे चाखीयो, ते हुवो शिवसुख साखीयो. ३

धरणेन्द्र राय पद्मावती, प्रभु पार्श्वतणा गुण गावती;
सहु संघना संकट चूरती, नयविमलना वांछित पूरती. ४

चैत्यवंदन विधि (प्रेक्टीकल)

सबसे पहले एक खमासमण देना । उसके बाद 'इरियावहियं, तस्स उत्तरी, अन्नत्थसूत्र' बोलना, फिर एक 'लोगस्स' 'चंदेसु निम्मलयरा' तक (आता न हो तो चार नवकार) का काउसग्ग (कायोत्सर्ग) करना । 'नमो अरिहंताणं' कहकर काउसग्ग पारकर प्रगट 'लोगस्स' कहना।

तत्पश्चात् तीन खमासमण देना, उसके बाद बायां घुटना ऊठाकर - 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, चैत्यवंदन करुं ?' 'इच्छं' कहकर

योगमुद्रा में 'सकलकुशलवल्ली' बोलना। उसके बाद कोई भी एक चैत्यवंदन बोलना।

फिर योगमुद्रा में 'जं किंचि', 'नमुत्थुणं', बोलना, (मुक्ताशुक्ति में) जावंति चेइयाइं, एक खमासमण जावतं के वि-साहु (मुक्ताशुक्ति में) बोलना।

फिर नमोऽर्हत् बोल के स्तवन बोलना, स्तवन नहीं आता हो तो उवसग्गहरं बोलना।

फिर 'जयवीयराय' सूत्र बोलना, अर्ध जयवीयराय (आभवमखंडा तक) 'मुक्ताशुक्ति' मुद्रा रखना, उसके बाद योगमुद्रा में सूत्र पूर्ण करना ।

फिर खड़े होकर 'अरिहंत चेइआणं' और 'अन्नत्थ' कहकर एक नवकार का काउसग्ग करना । 'नमो अरिहंताणं' से पारकर नमोऽर्हत् बोलकर थोय कहना ।

फिर एक खमासमणा देकर दायां हाथ जमीन पर रखकर 'अविधि' 'आशातना' का 'मिच्छामि दुक्कडम्' मांगना ।

अष्टप्रकारी पूजा के दोहे

हर पूजा के दोहे से पहले भाईओ नमोऽर्हत् बोले।

जल पूजा : जल पूजा जुगते करो, मेल अनादि विनाश;
जल पूजा फल मुज होजो, मांगो एम प्रभु पास.

हर दोहे के बाद नीचे दिया गया मंत्र बोले

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय, परमेश्वराय, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेन्द्राय, जलं (चंदनं, पुष्पं वगेरे जो पूजा हो उस प्रकार नाम बोले) यजामहे स्वाहा. (२७ डंके बजाऐ.)

चंदन पूजा : शीतल गुण जेहमां रह्यो, शीतल प्रभु मुख रंग;
आत्म शीतल करवा भणी, पूजो अरिहा अंग.

पुष्प पूजा : सुरभि अखंड कुसुम ग्रही, पूजो गत संताप;
सुम जंतु भव्य ज परे, करीये समकित छाप.

धूप पूजा : ध्यान घटा प्रगटावीए, वाम नयन जिन धूप;
मिच्छत्त दुर्गंध दूरे टले, प्रगटे आत्म स्वरूप.

दीपक पूजा : द्रव्यदीपक सुविवेकथी, करतां दु:ख होय फोक;
भाव प्रदीप प्रगट हुए, भासित लोकालोक.

अक्षत पूजा : शुद्ध अखंड अक्षत ग्रही, नंदावर्त विशाल;
पूरी प्रभु सन्मुख रहो, टाली सकल जंजाल.

नैवेद्य पूजा: अणाहारी पद में कर्या, विग्गह गई अनंत;
दूर करी ते दीजिये, अणाहारी शिव संत.

फल पूजा : इंद्रादिक पूजा भणी, फल लावे धरी राग;
पुरुषोत्तम पूजी करी, मांगे शिव फल त्याग.

नव अंग पूजा के दोहे

१. अंगूठे : जल भरी संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत;
ऋषभ चरण अंगुठडे, दायक भव जल अंत.

२. घूंटणे : जानु बले काउस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश;
खडां खडां केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश.

३. कांडे : लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसीदान;
करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान.

४. खभे : मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनंत;
भुजाबले भव जल तर्या, पूजो खंध महंत.

५. मस्तके : सिद्धशिला गुण उजली, लोकांते भगवंत;
वसिया तेणे कारण भवि! शिर शिखा पूजंत.

६. कपाले : तीर्थंकर पद पुण्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत;
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत.

७. गले : सोल प्रहर प्रभु देशना, कंठे विवर वर्तुल;
मधुर ध्वनि सुर नर सुणे, तिणे गले तिलक अमूल.

८. हृदये : हृदय कमल उपशम बले, बाल्या राग ने रोष;
हिम दहे वन खंडने, हृदय तिलक संतोष.

९. नाभिए : रत्नत्रयी गुण उजली, सकल सुगुण विश्राम;
नाभि कमलनी पूजना, करतां अविचल धाम.
उपदेशक नवतत्त्वना, तिणे नव अंग जिणंद;
पूजो बहुविध रागशुं, कहे शुभवीर मुणींद.

नोंध : (पूजा के दोहे गभारे में ऊँची आवाज में नही बोलने चाहिए, परंतु मनमे उसका चिंतन करे)

राजनगर प्रश्नोत्तरी

प्र.११. वर्तमान में किसका शासन चल रहा है ?

उ. वर्तमान में २४ वें तीर्थंकर श्री महावीर परमात्मा का शासन चल रहा है ।

प्र.१२. तत्व कितने है ? और वे कौन-से है ?

उ. तत्व तीन है (१) देव (२) गुरु (३) धर्म ।

प्र.१३. देव यानि क्या है ?

उ. देव वो है जो सर्व गुण संपन्न हैं और जिनमें एक भी दोष नहीं है ।

प्र.१४. गुरू यानि क्या है ?

उ. गुरू वे हैं जो पांच महाव्रतों का पालन करते हैं ।

प्र.१५. महाव्रत यानि क्या है ? वे कितने है ? और कौन से है ?

उ. महाव्रत यानि कठोर (कठिन) व्रत । वे पाँच है ।

१. जीवदया (जीवो की हिंसा न करना) का पालन करना ।

२. सत्य बोलना (झूठ न बोलना)

३. चोरी नहीं करना।

४. शीलव्रत का पालन करना।

५. पैसा (अर्थ) आदि संपत्ति नहीं रखना।

प्र.१६. धर्म यानि क्या है ?

उ. जीव को दुर्गति में जाने से रोक कर सद्गति की तरफ ले जाता है और परंपरा से मोक्षसुख की प्राप्ति करवाता है।

प्र.१७. श्रावक यानि क्या है ?

उ. जो श्री जिनेश्वर भगवान के वचनों पर श्रद्धा रखता है, विनय-विवेक करता है, दर्शन, पूजा, सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषध तथा देव-गुरु की भक्ति करता है उसे श्रावक कहते है।

प्र.१८. श्रावक शब्द का अर्थ बताए।

उ. 'श्र' – अक्षर से श्रद्धा रखे

'व' – अक्षर से विवेक करे

'क' – अक्षर से क्रिया करे ।

प्र.१९. नवकार मंत्र में कुल कितने अक्षर है ? उसमें सात अक्षर, पांच अक्षर, आठ अक्षर और नौ अक्षर कौनसे पद में है ?

उ. नवकार मंत्र में ६८ (अड़सठ) अक्षर है। उसमें – पहले, तीसरे और चौथे पदमें सात अक्षर, दूसरे पद में पांच अक्षर, पाँचवे और नोंवे पद में नौ अक्षर तथा छट्ठे, सातवे और आठवें पद में आठ अक्षर है।

प्र.२०. श्री नवकार मंत्र का स्मरण कब/किस समय करना चाहिए ?

उ. श्री नवकार महामंत्र का स्मरण उपद्रव शांति के लिए साथ-साथ मांगलिक के लिए भी किया जाता है। उत्तम मनुष्य सोते उठते-बैठते, चलते-फिरते तथा कोई भी कार्य करते समय रात में या दिन में नवकार मंत्र का स्मरण करते हैं।

प्र.२१. सामायिक यानि क्या है ?

उ. सामायिक यानि समता का लाभ। श्री जिनेश्वर भगवान ने बताई हुई ऐसी क्रिया जिससे पुराने कर्मो का नाश होता है और नए कर्म बंधने से रूकते हैं ।

प्र.२२. सामायिक का समय कितना ?

उ. ४८ मिनिट : पोना घंटा और तीन मिनट अथवा दो घडी ।

प्र.२३. श्री जिनपूजा प्रभुके कौन-कौन से नौ अंगो पर की जाती है ?

उ. १. दाँएं और बाँएं पैर के अंगूठे पर

२. दाँएं और बाँएं घुटने पर

३. दाँई और बाँइ कलाई पर

४. दाँएं और बाँएं कंधे पर

५. मस्तक (शिखा) पर

६. ललाट पर

७. कंठ (गला) पर

८. हृदय पर

९. नाभि पर

प्र.२४ प्रभु पूजा नव-अंग पर करने का क्या कारण है ? प्रभु की नव-अंगी पूजा क्यों करनी चाहिए ?

उ. प्रभु (परमात्मा) नव तत्व के उपदेशक है और नव तत्वों में संसार के सभी तत्व शामिल है इसलिए प्रभुकी नव-अंगी पूजा करनी चाहिए ।

प्र.२५. प्रभु दर्शन कैसे करें ?

उ. सांसारिक विचारों का त्याग करके दोनों हाथ जोडकर मस्तक (सिर) झुकाकर, प्रभु के सामने दृष्टि (नजर) रखकर, प्रभु के गुणों को याद करते हुए प्रभुदर्शन करना चाहिए ।

भगवान महावीर और चंडकौशिक की कहानी

बहुत समय पहले की बात है। पूर्व भव का एक तपस्वी जैन साधु मृत्यु के समय तीव्र क्रोध के भाव आने के कारण अपने चौथे भव में 'चावाल' गाँव के पास एक जंगल में कनकखल नाम के तापसों के आश्रम में 'चंडकौशिक' नाम के एक अत्यंत भयानक और विषैले (दृष्टिविष) सर्प के रूप में पैदा हुआ । वह सर्प इतना अधिक जहरीला था कि यदि वह गुस्से में किसी की तरफ देख लेता या फुफकार मार देता, तो वह पशु या पक्षी वहीं तड़पकर मर जाता था । इस भयानक साँप के डर से लोगों ने उस जंगल के रास्ते का उपयोग करना ही बंद कर दिया था ।

एक बार प्रभु महावीर विहार करते हुए श्वेताम्बी नगरी जाने के लिए इसी रास्ते से गुजर रहे थे । गाँव के लोगों ने प्रभु को रोका और कहा:

"हे भगवान! आगे मत जाइए, वहाँ एक कालमुख साँप रहता है । वह किसी को भी जीवित नहीं छोड़ता इसलिए आप दूसरे लंबे रास्ते से होकर श्वेताम्बी नगरी जाइए ।"

लेकिन अनंत करुणा के सागर प्रभु महावीरने सोचा की इस जीव को प्रतिबोध देना चाहिए, और वे उसी भयानक रास्ते पर आगे बढ़ गए । जंगल में पहुंचकर अत्यंत शांत भाव से ध्यान में खड़े हो गए ।

कुछ समय बाद जब चंडकौशिक ने भगवान को देखा तो वह क्रोध से आगबबूला हो गया । उसने सोचा-मेरी अनुमति के बिना यहाँ आने का साहस किसने किया? उसने भगवान की तरफ जोर से फुफकार की लेकिन प्रभु अडिग और शांत रहे। अंत में अत्यंत क्रोधित होकर उस सर्प ने भगवान के पैर के अंगूठे पर अपना जहरीला डंक मार दिया!

तभी एक महान चमत्कार हुआ! भगवान के अंगूठे से खून के स्थान पर दूध जैसा सफेद रस निकला। यह देखकर वह सर्प दंग रह गया! उसे अहसास हुआ कि यह कोई सामान्य मनुष्य नहीं हैं। वह गहरे आश्चर्य में डूब गया और प्रभु की अत्यंत शांत मुद्रा को देखते ही उसका गुस्सा शांत होने लगा। उसी समय भगवान ने मधुर और गंभीर स्वर में कहा: "बुज्झ चंडकौशिया बुज्झ... हे

चंडकौशिक! तू बोध पा और शांत हो ।"

भगवान के इन करुणा भीगे शब्दों को सुनते ही सर्प को जातिस्मरण ज्ञान हो गया । उसे समझ आ गया कि-अरेरे! मैंने पिछले जन्मों में कितना अधिक क्रोध किया था जिसके कारण मैं एक साधु से सर्प बन गया हूँ । उसे अपने किए पर बहुत पश्चाताप हुआ । उसने मन ही मन भगवान से क्षमा माँगी और निश्चय किया कि अब वह कभी किसी भी जीव को नुकसान नहीं पहुँचाएगा। उसने हिंसा का पूरी तरह त्याग कर दिया और मन से अनशन का संकल्प ले लिया।

प्रभु महावीर ने सर्प के बदलते भावों को जाना और अपनी करुणामयी दृष्टि से उस पर कृपा की। वह सर्प अब पूरी तरह शांत हो चुका था। वह किसी को काट न ले इसलिए उसने अपना मुँह दर में छुपा लिया और वहीं शांत पड़ा रहा। जब लोगों ने देखा कि अब वह भयानक साँप बिल्कुल शांत हो गया है तो वे आकर उसकी पूजा करने लगे और भक्तिभाव से उसके शरीर पर घी चढ़ाने लगे। घी की महक से वहाँ हजारों चींटियाँ आ गईं और सर्प के कोमल शरीर को काटने लगीं। सर्प को असहनीय पीड़ा हो रही थी लेकिन उसने मन में विचार किया कि- यदि मैं थोड़ा भी हिला तो ये नन्हीं-नन्हीं चींटियाँ मर जाएँगी। ऐसी परम दया और धैर्य रखकर वह शांति से कष्ट सहता रहा । अंत में, इस प्रकार के उच्च करुणा भावों के साथ और भगवान की दयारूपी अमृत-दृष्टि की कृपा से वह सर्प पंद्रह दिन के बाद मृत्यु प्राप्त कर सहस्रार देवलोक में देवता के रूप में उत्पन्न हुआ।

बोध : यह कहानी क्रोध के सामने क्षमा और हिंसा के सामने अहिंसा की भव्य विजय का एक ज्वलंत उदाहरण है। क्रोध आत्मा का सबसे बड़ा शत्रु है। यह कथा हमें सीखाती है कि हम चाहे कितनी भी भक्ति या तपस्या करते हो लेकिन यदि क्रोध पर नियंत्रण न हो तो सब कुछ व्यर्थ चला जाता है। इसके विपरीत, सच्चे हृदय से किया गया पश्चाताप जीव को भयानक पापों के बंधन से भी मुक्ति दिला सकता है।

● ● ●

मौखिक कक्षा ३

सूत्र	:	पुक्खरवरदीवड्ढे से इच्छामि पडिक्कमिउं (सूत्र २३ से ३५)	३०
अर्थ	:	नवकार, पंचिंदिय, खमासमण, इच्छाकार सूत्र (शब्दार्थ)	२०
काव्य	:	दोहा : काल अनादि... (प्रदक्षिणा का)	२०
		चैत्यवंदन : सिद्धारथ सुत वंदीए...	
		स्तवन : गिरुआ रे गुण...	
		थोय : जय जय भवि हितकर (४ गाथा)	
विधि	:	सामायिक लेने - पारने की विधि (प्रेक्टिकल)	१०
		राजनगर प्रश्नोत्तरी : २६ से ३५	१०
कहानी	:	मेघकुमार की कहानी	१०
			१००

(२३) पुक्खरवरदीवड्ढे (श्रुतस्तव) सूत्र

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायईसंडे अ जंबूदीवे अ; भरहेरवयविदेहे, धम्माईगरे नमंसामि. ॥१॥

तमतिमिरपडलविद्धं-सणस्स, सुरगणनरिन्दमहिअस्स; सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिय-मोहजालस्स. ॥२॥

(वसंततिलका छन्द)

जाइजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्खलविसाल सुहावहस्स, को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं? ॥३॥

(शार्दुलविक्रीडितम् वृतम्)

सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे; देवंनाग-सुवन्नकिन्नरगण, सब्भूअ-भावच्चिए, लोगोजत्थ पइट्ठिओ जगमिणं, तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ, धम्मुत्तरं वड्ढउ. ॥४॥

सुअस्स भगवओ, करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तियाए०

(२४) सिद्धाणं बुद्धाणं (सिद्धस्तव) सूत्र

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं, परंपरगयाणं;
लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं. ॥१॥

जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति;
तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं. ॥२॥

इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स;
संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा. ॥३॥

उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स;
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि. ॥४॥

चत्तारि अट्ठ दस दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं;
परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु. ॥५॥

(२५) वेयावच्चगराणं सूत्र
(समकिती देवो को संभारने का सूत्र)

[सम्यगदृष्टि देव की स्तुति]

वेयावच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मद्दिट्ठि समाहिगराणं, करेमि काउस्सग्गं. अन्नत्थ०

(२६) भगवानादि वंदनसूत्र

(भगवान्हं) भगवान्हं, आचार्यहं, उपाध्यायहं, सर्वसाधुहं,

(२७) पडिक्कमणे ठाउं? सूत्र (प्रतिक्रमण बीज सूत्र)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअ (राईअ) पडिक्कमणे ठाउं? इच्छं, सव्वस्सवि देवसिअ, (राईअ) दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ मिच्छा मि दुक्कडं.

(२८) इच्छामि ठामि सूत्र (लघु अतिचार सूत्र)

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ (राईओ) अईआरो कओ, काईओ, वाईओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते, सुए सामाईए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह-मणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं-सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं.

(२९) नाणंमि सूत्र (पांच आचार के अतिचार की गाथा)

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य वीरियंमि,
आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ. ॥१॥

काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिन्हवणे;
वंजण-अत्थ-तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो. ॥२॥

निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ;
उववूह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ. ॥३॥

पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिइहिं तीहिं गुत्तीहिं;
एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो. ॥४॥

बारसविहंमिवितवे, सब्भिंतर-बाहिरे कुसलदिट्ठे;
अगिलाई अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो. ॥५॥

पौषध अर्थात् श्रावक के गुणों को पुष्ट करनेवाला अनुष्ठान.

अणसणमूणोअरिआ, वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ;
कायकिलेसो संलीणया य, बज्झो तवो होइ. ॥६॥

पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ;
झाणं उस्सग्गो विअ, अब्भिंतरओ तवो होइ. ॥७॥

अणिगूहिअ बलवीरिओ, परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो;
जुंजइ अ जहाथामं, नायव्वो वीरिआयारो. ॥८॥

(३०) सुगुरु वांदणा सूत्र (द्वादशावर्त्त वंदन सूत्र)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अ-हो, का-यं, का-य संफासं, खमणिज्जो भे! किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो (राईअ वइक्कंता) वइक्कंतो? ज-त्ता भे! ज-व-णिज्जं चभे? खामेमि खमासमणो! देवसिअं (राईअं) वइक्कमं, आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए (राईए) आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए; मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए, सव्वमिच्छोवयाराए; सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि.

(३१) देवसिअं आलोउं सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअं (राईअं) आलोउं? इच्छं, आलोएमि जो मे देवसिओ० (राईओ)

(३२) सात लाख सूत्र
[चौर्यासी लाख जीवयोनि से माफी मांगने का सूत्र]

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौद लाख साधारण

वनस्पतिकाय, बे लाख बेइंद्रिय, बे लाख तेइंद्रिय, बे लाख चउरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौद लाख मनुष्य एवंकारे चौर्याशी लाख जीवयोनिमांहि म्हारे जीवे जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सवि हु मन, वचन, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं।

(३३) अढार पापस्थानक सूत्र (अढार पाप आलोचना का सूत्र)

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दशमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पंदरमे रति अरति, सोलमे पर परिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद अढारमे मिथ्यात्वशल्य. ए अढार पापस्थानकमांहि म्हारे जीवे जे कोइ पाप सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवतां प्रत्ये अनुमोद्यु होय, ते सवि हु मन, वचन, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं.

(३४) सव्वस्सवि (प्रतिक्रमण बीज) सूत्र

सव्वस्सवि देवसिअ (राईअ), दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ; इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इच्छं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं.

(३५) इच्छामि पडिक्कमिउं सूत्र

इच्छामि पडिक्कमिउं? जो मे देवसिओ (राइओ) अइयारो कओ०

श्री नमस्कार महामंत्र सूत्र - शब्दार्थ

नमो - नमस्कार करता हूँ
अरिहंताणं - अरिहंत भगवंतों को
सिद्धाणं - सिद्ध भगवंतों को
आयरियाणं - आचार्य महाराजाओंको
उवज्झायाणं - उपाध्याय महाराजाओं को
लोए - लोक में (संसार में)
सव्वसाहूणं - सर्व साधुओंको
एसो - यह
पंच नमुक्कारो - पाँच नमस्कार
सव्वपाव - सभी पापों का
प्पणासणो - नाश करने वाला
मंगलाणं - मंगलों में
च - और
सव्वेसिं - सर्व में
पढमं - प्रथम
हवइ - है
मंगलं - मंगलरूप

पंचिंदिय सूत्र - शब्दार्थ

पंचिंदिय - पाँच इंद्रियों को (विषयों में जाने से)
संवरणो - रोकने वाले
तह – तथा
नवविह - नौ प्रकार की
बंभचेर - ब्रह्मचर्य की
गुत्तिधरो - बाड़ (गुप्ति) को धारण करने वाले
चउविह - चार प्रकार के
कसाय - कषायों से
मुक्को - मुक्त (रहित)
इअ - इस प्रकार / यह
अट्ठारसगुणेहिं - अठारह गुणों से
संजुत्तो - युक्त (सहित)
पंचमहव्वय - पाँच महाव्रतों से
जुत्तो - युक्त (सहित)
पंचविहायार - पाँच प्रकार के आचार को
पालण - पालने में
समत्थो - समर्थ
पंचसमिओ - पाँच प्रकार की समिति से युक्त
तिगुत्तो - तीन गुप्ति से सहित
छत्तीसगुणो - छत्तीस गुणो से युक्त
गुरु - गुरु महाराज
मज्झ - मेरे (हैं)

खमासमण सूत्र - शब्दार्थ

इच्छामि - मैं इच्छा करता हूँ

खमासमणो - हे क्षमाश्रमण (साधु भगवंत)!

वंदिउं - वंदन करने की

जावणिज्जाए - अपनी शक्ति के अनुसार

निसीहिआए - पाप प्रवृत्तियों का त्याग किए हुए शरीर द्वारा।

मत्थएण - मस्तक से

वंदामि - मैं वंदन करता हूँ

इच्छकार सूत्र - शब्दार्थ

इच्छकार - मैं इच्छा करता हूँ

सुहराई - सुखपूर्वक रात्रि

सुहदेवसि - सुखपूर्वक दिन

सुखतप - सुखपूर्वक तपश्चर्या में

शरीरनिराबाध - रोग-रहित शरीर से

सुखसंजमजात्रा - सुखपूर्वक संयम-यात्रा में

निर्वहो छो जी - प्रवृत्त हो रहे हैं जी

काव्य विभाग - प्रदक्षिणा के दोहे

काल अनादि अनंतथी, भव भ्रमणनो नहि पार;
ते भव भ्रमण निवारवा, प्रदक्षिणा दउं त्रण वार. १

भमतीमां भमतां थकां, भव भावठ दूर पलाय,
दर्शन ज्ञान चारित्र रूप, प्रदक्षिणा त्रण देवाय. २

जन्म मरणादि सवि भय टले, सीझे जो दर्शन काज,
रत्नत्रयी प्राप्ति भणी, दर्शन करुं जिनराज. ३

ज्ञान वडुं संसारमां, ज्ञान परम सुख हेत;
ज्ञान विना जग जीवडा, न लहे तत्त्व संकेत. ४

चय ते संचय कर्मनो, रिक्त करे वली जेह;
चारित्र निर्युक्ते कह्युं, वंदो ते गुणगेह. ५

दर्शन ज्ञान चारित्र ए, रत्नत्रयी शिवद्वार;
त्रण प्रदक्षिणा ते कारणे, भवदुःख भंजनहार. ६

श्री महावीरस्वामी भगवान का चैत्यवंदन

सिद्धारथ सुत वंदीए, त्रिशलानो जायो,
क्षत्रियकुंडमां अवतर्यो, सुरनरपति गायो. १

मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काय,
बहोंतेर वर्षनुं आउखुं, वीरजिनेश्वर राय. २

'खीमाविजय' जिनराजनो, ए उत्तम गुण अवदात,
सात बोलथी वर्णव्यो पद्मविजय विख्यात. ३

श्री महावीरस्वामी भगवान का स्तवन

गिरूआरे गुण तुम तणा, श्री वर्धमान जिनराया रे,
सुणतां श्रवणे अमी झरे, म्हारी निर्मल थाये काया रे. गि० १

तुम गुणगण गंगा जले, हुं झीलीने निर्मल थाउ रे,
अवर न धंधो आदरूं, निश दिन तोरा गुण गाउं रे. गि० २

झील्या जे गंगा जल, ते छिल्लर जल नवि पेसे रे,
जे मालती फूले मोहीया, ते बावल जई नवि बेसे रे गि० ३

एम अमे तुम गुण गोठशुं, रंगे राच्या ने वली माच्या रे,
ते केम परसुर आदरे? जे परनारी वश राच्या रे. गि० ४

तुं गति तुं मति आशरो, तुं आलंबन मुज प्यारो रे,
वाचक 'यश' कहे माहरे, तुं जीव जीवन आधारो रे. गि० ५

श्री महावीरस्वामी भगवान की थोय

जय जय भवि हितकर, वीर जिनेश्वर देव,
सुर नरना नायक, जेहनी सारे सेव;

करुणारसकंदो, वंदो आनंद आणी,
त्रिशला सुत सुंदर, गुण मणि केरो खाणी. १

जस पंच कल्याणक, दिवस विशेष सुहावे,
पण थावर नारक, तेहने पण सुख थावे;
ते च्यवन, जन्म व्रत, नाण अने निर्वाण,
सवि जिनवर केरां, ए पांचे अहिठाण. २

जिहां पंचसमिति युत, पंचमहाव्रत सार,
जेहमां प्रकाश्या, वली पांचे व्यवहार,
परमेष्ठि, अरिहंत, नाथ, सर्वज्ञ ने पार,
एह पंचपदे लह्यो, आगम अर्थ उदार. ३

मातंग सिद्धाई, देवी जिनपद सेवी,
दुःख दुरित उपद्रव, जे टाले नितमेवी;
शासन सुखदायी, आई सुणो अरदास,
श्री ज्ञानविमल गुण, पूरो वांछित आश. ४

सामायिक लेने की विधि (प्रेक्टीकल)

(१) प्रथम शुद्ध वस्त्र पहनकर चरवले से जमीन पूंजकर भूमि शुद्ध करना । ऊँचे आसनपर स्थापनाचार्यजी स्थापित करना अथवा सापडे पर पुस्तक रखना ।

(२) फिर बांये हाथ से मुहपत्ति (मुखवस्त्रिका) मुख के सामने रखना । शक्य हो तो पूर्व या उत्तरदिशा की तरफ मुँह रखकर दाँया हाथ स्थापनाजी की ओर रखकर 'नवकार' और 'पंचिंदिय' कहकर स्थापनाजी स्थापित करना ।

(३) फिर एक खमासमणा देकर खड़े होकर 'इरियावहियं' 'तस्सउत्तरी' और 'अन्नत्थ' कहकर एक लोगस्स 'चंदेसु निम्मलयरा' तक (आता न हो तो चार नवकार) काउसग्ग करना । फिर 'नमो अरिहंताणं' कहकर काउसग्ग पारकर प्रगट लोगस्स बोलना ।

(४) फिर एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !' 'सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुँ ?' ऐसी आज्ञा मांगकर, गुरु के आदेश देने पर फिर 'इच्छं' कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करना ।

(५) पश्चात् एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाहुँ ?' गुरु के आदेश देनेपर 'इच्छं' बोलना ।

(६) फिर एक खमासमणा देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक ठाउं ?' ऐसा पूछना, गुरु के आदेश पर 'इच्छं' कहकर दो हाथ जोड़कर एक 'नवकार' बोलना ।

(७) फिर दो हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर 'इच्छकारी भगवन् पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी' ऐसा कहकर गुरु भगवंत से, गुरु भगवंत न हो तो बुजुर्ग (वडील) व्यक्ति से 'करेमि भंते' सूत्र उच्चराना यदि कोई आसपास न हो तो खुद बोलना ।

(८) फिर एक खमासमणा देकर, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे संदिसाहुँ ?' (गुरु के आदेश देने पर) 'इच्छं' कहना ।

(९) पश्चात् एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणे ठाउं ?' (गुरु आदेश दे उसके पश्चात् 'इच्छं' कहना ।)

(१०) फिर एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुँ ?' गुरु के आदेश के पश्चात् 'इच्छं' कहना ।

(११) फिर एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करुं ?' (गुरु के आदेश पर) 'इच्छं' कहना ।

(१२) फिर हाथ जोड़कर पुरुषो को उभडक (उठे हुए) पैरों पर बैठकर एवं महिलाओं को खडे खडे 'तीन नवकार' गिनना ।

(१३) तत्पश्चात् दो घडी (४८ मिनिट) स्थिर आसन पर बैठकर स्वाध्याय - धर्मध्यान आदि करना ।

सामायिक पारने की विधि (प्रेक्टीकल)

(१) प्रथम एक खमासमण देना । 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं' इस तरह आज्ञा लेकर इरियावहियं, तस्सउत्तरी एवं

अन्नत्थ कहकर एक लोगस्स 'चंदेसु निम्मलयरा' तक बोलना (न आता हो तो चार नवकार) काउसग्ग होने के बाद नमो अरिहंताणं बोलकर काउसग्ग पारना और प्रगट लोगस्स बोलना ।

(२) फिर एक खमासमण देकर, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, मुहपत्ति पडिलेहुं ?' गुरु के आदेश के पश्चात् 'इच्छं' कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करें।

(३) पश्चात् एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारुं ?' गुरु के आदेश पर 'यथाशक्ति' बोलना ।

(४) फिर एक खमासमण देकर, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !' सामायिक पार्युं ! गुरु आदेश दे फिर 'तहत्ति' बोलना ।

(५) दाहिने हाथ को चरवले पर स्थापित कर एक नवकार बोलना और 'सामाइय वयजुत्तो' सूत्र बोलना ।

(६) स्थापनाचार्यजी न हो तो सामायिक लेते वक्त स्थापनाचार्यजी की स्थापना की थी उनके सामने दाहिना हाथ अपनी तरफ सीधा रखकर एक नवकार बोलकर स्थापनाचार्यजी का उत्थापन कर योग्य स्थान पर विराजमान करना चाहिए।

राजनगर प्रश्नोत्तरी

प्र.२६. जैन को पहचानने के प्रकट चिन्ह क्या है ?

उ. केसर का तिलक, रात्रिभोजन का त्याग और कंदमूल का त्याग ।

प्र.२७. तिलक क्यों करना चाहिए ?

उ. यह इंगित [सूचित] करने के लिए कि, मैं श्री जिनेश्वर भगवान की आज्ञा शिरोमान्य कर रहा हूँ।

इंगित – जिसकी ओर इशारा या संकेत किया गया हो ।

प्र.२८. परमात्मा को तीन प्रदक्षिणा [परिक्रमा] क्यों देनी चाहिए ?

उ. दर्शन, ज्ञान और चारित्र इन तीनों की प्राप्ति के लिए – एवं चौरासी लाख जीवयोनि में जन्म-मरण के परिभ्रमण को मिटाने के लिए परमात्मा को तीन प्रदक्षिणा देनी चाहिए ।

प्र.२९. हमारे तीर्थों के नाम बताइए ?

उ. श्री शत्रुंजय, गिरनार, आबु, अष्टापद, अचलगढ, सम्मेतशिखर, शंखेश्वर, कुंभारीयाजी, मक्षीजी, अंतरिक्ष पार्श्वनाथ, तारंगाजी, राणकपुर, भोयणी, पावापुरी, चंपापुरी, केशरीयाजी, पानसर, शेरीसा, आदि.

प्र.३०. हमारे पर्व के नाम बताईये ? और वे कब कब आते है ?

(१) कार्तिक सुद-५	ज्ञान-पांचम
(२) कार्तिक सुद-१४	चउमासी चौदस
(३) कार्तिक सुद-१५	श्री शंत्रुजय महातीर्थ की यात्रा करना, अथवा श्री शत्रुंजय महातीर्थ के पट के दर्शन करना
(४) मार्गशीर्ष सुद-११	मौन एकादशी
(५) पौष वद-१० (पौष दशम)	श्री पार्श्वनाथ प्रभु का जन्म कल्याणक
(६) माघ वद-१३ (मेरुतेरस)	श्रीऋषभदेव प्रभुका मोक्ष कल्याणक
(७) फाल्गुन सुद-१३	श्री शत्रुंजय तीर्थकी छ-गाउ यात्रा
(८) फाल्गुन सुद-१४	चउमासी चौदस
(९) चैत्र सुद ७ से १५ (९ दिन)	आंयबिल की शाश्वती ओली
(१०) चैत्र सुद-१३	श्री महावीर प्रभुका जन्म कल्याणक
(११) चैत्र सुद-१५	श्री ऋषभदेव प्रभुके गणधर श्री पुंडरिक स्वामी पांच क्रोड साधुओं के साथ मोक्ष गये
(१२) वैशाख सुद-३ (अखात्रीज)	श्री ऋषभदेव प्रभुको श्रेयांस कुमारने गन्ने के रस से पारणा कराया. दूसरा नाम अक्षय तृतीया.
(१३) आषाढ सुद-१४	चउमासी चौदस
(१४) श्रावण वद १२ से भाद्रपद सुद ४	पजुसण (पर्युषण) संवत्सरी क्षमापना पर्व
(१५) आसो सुद-७ से १५ (९ दिन)	आंयबिल की शाश्वती ओली

लक्ष्मी की सार्थकता दूसरे के दुःख को मिटाने में है.

(१६) आसो वद ०)) श्री महावीर प्रभुका निर्वाण
(अमावस) कल्याणक (दिवाली)

प्र.३१. प्रतिक्रमण यानि क्या है ?

उ. प्रतिक्रमण का अर्थ है पाप से पीछे हटना । जिसमें पाप धुल जाते है, पाप नष्ट होते है ऐसी ज्ञानी भगवंतो की बताई हुई महान क्रिया यानि प्रतिक्रमण ।

प्र.३२. प्रतिक्रमण क्यों करना चाहिए ?

उ. दिवस संबंधी एवं रात्रि संबंधी पापों का नाश करने के लिए प्रतिक्रमण करना चाहिए ।

प्र.३३. प्रतिक्रमण कितने है ? और कौन कौन से ?

उ. प्रतिक्रमण पांच है – १. देवसी २. राई ३. पक्खी ४. चउमासी ५. सांवत्सरीक ।

प्र.३४. पांच प्रतिक्रमण वर्ष में कितनी बार होते है ?

उ. संवत्सरी प्रतिक्रमण वर्ष में एकबार भाद्रपद सुद ४ के दिन होता है । चउमासी प्रतिक्रमण वर्ष मे (३) बार – कार्तिक सुद १४, फाल्गुन सुद १४ और आषाढ सुद १४ के दिन होता है । पक्खी प्रतिक्रमण वर्ष में इक्कीस [२१] बार चउमासी अलावा हर सुद चौदस और सभी वद चौदस को होता है, देवसी प्रतिक्रमण उपर के २५ दिनों के अलावा बाकी सभी दिनों में रोज शाम को और राई प्रतिक्रमण वर्ष के सभी दिनों में रोज सुबह किया जाता है ।

प्र.३५. रात्रिभोजन करने से क्या नुकसान होता है ?

उ. रात्रिभोजन करने से जिनाज्ञा [प्रभु आज्ञा] भंग का महान दोष लगता है और शुभ भावों का नाश होता है और परभव में कौआ, उल्लु, गीध, बिल्ली, लोमडी, साप, बिच्छु और छिपकली जैसे दुष्ट भव की प्राप्ति होती है । ये तो परभव की बात हुई । इस भव में भी भोजन में चींटी आ जाने से बुद्धि का नाश होता है, जूँ से जलोदर का रोग होता है, मक्खी से उलटी होती है, मकड़ी से कोढ रोग होता है तथा दूसरे बहुत रोग होते हैं, इसलिए रात्रिभोजन का त्याग करना चाहिए ।

मेघकुमार की कहानी

राजगृही नगरी के राजा श्रेणिक की धारिणी रानी के 'मेघकुमार' पुत्र थे । उनका विवाह आठ राजाओं की कन्याओं के साथ हुआ था । एक दिन वे प्रभु महावीर देव को वंदन करने गए । वहाँ प्रभु की देशना सुनकर मेघकुमार को वैराग्य हो गया और वे दीक्षा लेकर मुनि मेघकुमार बन गए । दीक्षा देने के बाद प्रभु ने उन्हें ज्ञान और संयम की शिक्षा (ग्रहण-आसेवन शिक्षा) सीखाने के लिए स्थविर मुनियों को सौंप दिया ।

विहार करते हुए स्थविर मुनि दूसरे गाँव जाकर रात्रि विश्राम के लिए रुके । नवदीक्षित होने के कारण मेघकुमार का संथारा सबसे अंत में द्वार के पास आया । रात में लघुशंका-दीर्घशंका (मातरू करने) के लिए आते-जाते साधुओं के पैर स्पर्श होने से और संथारे पर धूल गिरने के कारण मेघकुमार को रातभर नींद नहीं आई । राजकुमार होने के कारण वे इस असुविधा से परेशान हो गए और मन में विचार किया कि- "मैं सुबह होते ही प्रभु को यह सब सौंपकर वापस अपने घर चला जाऊँगा।"

सुबह स्थविर भगवंत गाँव से विहार कर प्रभु महावीर के पास वापस आए । उनके साथ मेघकुमार भी थे। अंतर्यामी प्रभु मेघकुमार के मन की बात जानते थे इसलिए उन्होंने कहा, "हे मेघमुनि! आज तुम्हें जो कष्ट हुआ है, वह तो तुम्हारे पूर्वभव के दुखों के आगे कुछ भी नहीं है । सुनो- इस जन्म से तीसरे भव पहले तुम वैताढ्य पर्वत पर छह दाँतों वाले और एक हजार हथिनियों के परिवार के स्वामी 'सुमेरुप्रभ' नाम के एक श्वेत (सफेद) हाथी थे । एक बार प्यास के कारण जब तुम तालाब में पानी पीने गए तो वहाँ की कीचड़ में फँस गए । तब तुम्हारे शत्रु हाथियों ने तुम्हें बहुत पीड़ा पहुँचाई । वहाँ से मरकर तुम विंध्याचल के जंगलों में चार दाँतों वाले और सात सौ हथिनियों के स्वामी 'मेरुप्रभ' नाम के सफेद हाथी बने । वहाँ एक बार भयंकर जंगल की आग को देखकर तुम्हें जातिस्मरण ज्ञान हुआ । तब तुमने अपने परिवार की रक्षा के लिए अपनी सूंड से लताएँ, घास आदि उखाड़कर एक योजन जितनी साफ-सुथरी भूमि का एक सुरक्षित मंडल बनाया । जब दोबारा दावानल भड़का तब तुम अपने परिवार को लेकर उस सुरक्षित मंडल में चले गए । तुम्हें देखकर जंगल के अन्य अनेक छोटे-बड़े पशु भी अपनी जान

बचाने के लिए उसी घेरे में आकर बैठ गए । जगह कम होने के कारण तुम भी बहुत तंग जगह पर खड़े रहे ।

उस समय खुजली मिटाने के लिए तुमने जैसे ही अपना एक पैर ऊपर उठाया, वैसे ही जगह की कमी से घबराया हुआ एक छोटा सा खरगोश (ससला) तुम्हारे पैर के नीचे आकर बैठ गया। जब तुम खुजली कर पैर वापस नीचे रखने ही वाले थे तब तुम्हारी दृष्टि उस खरगोश पर पड़ी । यदि तुम्हारा पैर नीचे आता तो वह खरगोश तुरंत कुचलकर मर जाता लेकिन दया भावना के कारण तुमने अपना वह भारी पैर हवा में ऊपर ही रोके रखा । दो दिन बाद जब दावानल शांत हुआ, तब सभी जानवर वहाँ से चले गए और वह खरगोश भी सुरक्षित निकल गया । दो दिनों तक लगातार एक पैर ऊपर रखने के कारण तुम्हारा शरीर पूरी तरह अकड़ चुका था इसलिए जैसे ही तुमने पैर नीचे रखना चाहा, तुम धड़ाम से नीचे गिर पड़े । दया की पावन भावना में लीन रहते हुए तुमने अपने प्राण त्याग दिए।

वहाँ से तुम 'मेघकुमार' के रूप में उत्पन्न हुए हो । हे मेघकुमार! अब तुम स्वयं सोचो कि तुम्हें इन पवित्र मुनियों के पैरों की धूल से अधिक दुख हुआ या उस पूर्वभव में सहे गए कष्टों में अधिक दुख था? यह सुनकर मेघकुमार को जातिस्मरण ज्ञान हो गया । प्रभु के सम्मुख अपने मानसिक भटकाव के लिए अंतरात्मा से क्षमा याचना करते हुए, उन्होंने केवल नेत्रों को छोड़कर अपने पूरे शरीर को वोसिरा दिया और संयम में पूरी तरह दृढ़ हो गए । लंबे समय तक पवित्र दीक्षा का पालन कर वे 'विजय विमान' नामक स्वर्ग में देव बने। वहाँ से आयुष्य पूर्ण कर वे मोक्ष प्राप्त करेंगे।

बोध : जैन धर्म की नींव "अहिंसा" है, जिसका अर्थ है- किसी भी जीव की हिंसा नहीं करना । यदि आप भी छोटे से छोटे जीव जैसे चींटी, मकोड़े, मच्छर आदि की रक्षा करेंगे और मांसाहार (नॉन-वेजिटेरियन) तथा जिलेटिन जैसे अशुद्ध पदार्थों से मिली हुई चीजों का त्याग करेंगे तो आप भी मेघकुमार की तरह आत्म-कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ सकेंगे।

● ● ●

मौखिक कक्षा ४

सूत्र	:	नवकार से इच्छामि पडिक्कमिउं सूत्र (सूत्र १ से ३५ पुनरावर्तन) वंदित्तु (सूत्र ३६)	५०
अर्थ	:	अब्भुट्ठिओ सूत्र (शब्दार्थ)	१०
काव्य	:	स्तुति: अर्हन्तो भगवंत चैत्यवंदन: सामान्य जिन चैत्यवंदन (पद्मप्रभ और वासुपूज्य) थोय: अध्यात्म की थोय सज्झाय: अइमुत्ता मुनि की सज्झाय	२०
स्तुति	:	अरिहंत वंदनावली : १ से ५ गाथा	१०
कहानी	:	वज्रस्वामी की कहानी	१०
			१००

(३६) वंदित्तु (श्राद्ध प्रतिक्रमण) सूत्र

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ;
इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स. ॥१॥

जो मे वयाइयारो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ;
सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि. ॥२॥

दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे;
कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥३॥

जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं;
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि. ॥४॥

इन्द्रियाँ स्वतंत्र नहीं हैं, किन्तु आत्मा स्वतंत्र है.

आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे;
अभिओगे अ निओगे; पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥५॥

संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु;
सम्मत्तस्सइयारे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥६॥

छक्काय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा;
अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे. ॥७॥

पंचण्ह-मणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे;
सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥८॥

पढमे अणुव्वयम्मि, थूलग पाणाइवाय विरईओ;
आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं. ॥९॥

वह-बंध-छविच्छेए, अइभारे भत्त-पाणवुच्छेए;
पढमवयस्स-इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥१०॥

बीए अणुव्वयम्मि, परिथूलग-अलिअ-वयणविरईओ;
आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं. ॥११॥

सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ;
बीयवयस्स इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥१२॥

तईए अणुव्वयम्मि, थूलगपरदव्वहरण विरईओ;
आयरिअ-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं. ॥१३॥

तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ;
कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥१४॥

चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदारगमण-विरईओ;
आयरिअ-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं. ॥१५॥

अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग विवाह तिव्व-अणुरागे;
चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥१६॥

इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरिअमप्पसत्थम्मि;
परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं. ॥१७॥

धण धन्न खित्तवत्थू, रूप्पसुवन्ने अ कुविअ-परिमाणे;
दुपए चउप्पयम्मि य, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥१८॥

गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च;
वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे. ॥१९॥

मज्जंमि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंध मल्ले अ;
उवभोगपरिभोगे, बीयम्मि गुणव्वए निंदे. ॥२०॥

सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलिअं च आहारे;
तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥२१॥

इंगाली वण साडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं;
वाणिज्जं चेव दंत, लक्ख रस केस विस विसयं. ॥२२॥

एवं खु जंतपिल्लण कम्मं, निल्लंछणं च दव दाणं;
सर-दह-तलाय-सोसं, असई-पोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥

सत्थग्गि-मुसल-जंतग, तण-कट्ठे-मंतमूल-भेसज्जे;
दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥२४॥

न्हाणु-व्वट्टण-वन्नग, विलेवणे सद्द रूव-रस-गंधे;
वत्थासण-आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥२५॥

कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते;
दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे. ॥२६॥

तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे;
सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे. ॥२७॥

आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे;
देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए निंदे. ॥२८॥

संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणाभोए;
पोसहविहि-विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे. ॥२९॥

सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव;
कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे. ॥३०॥

सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा;
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि. ॥३१॥

साहूसु संविभागो, न कओ तवचरण करण-जुत्तेसु;
संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि. ॥३२॥

इहलोए परलोए, जीविअ-मरणे अ आसंस पओगे;
पंचविहो अइयारो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते. ॥३३॥

काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए;
मणसा माणसिअस्स, सव्वस्सवयाइआरस्स. ॥३४॥

वंदण वय सिक्खा-गारवेसु, सन्ना कसाय दंडेसु;
गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे. ॥३५॥

सम्मद्दिट्ठीजीवो, जइ वि हु पावं समायरे किंचि;
अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ. ॥३६॥

तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तर गुणं च;
खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो. ॥३७॥

जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया;
विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं. ॥३८॥

जगत के त्रिकाल अवस्था का मनन-चिन्तन जो करे वह मुनि.

एवं अट्ठ विहं कम्मं, राग दोस समज्जिअं;
आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ. ॥३९॥

कयपावो वि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरु सगासे;
होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअभरुव्व भारवहो. ॥४०॥

आवस्सएण एएण, सावओ जइवि बहुरओ होइ;
दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण. ॥४१॥

आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमण काले;
मूलगुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि. ॥४२॥

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए,
विरओमि विराहणाए, तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं. ॥४३॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ;
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं. ॥४४॥

जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ;
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं. ॥४५॥

चिरसंचिय पावपणासणीइ, भवसयसहस्स महणीए;
चउवीस जिण विणिग्गय कहाइ, वोलंतु मे दिअहा. ॥४६॥

मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ;
सम्मद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च. ॥४७॥

पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं;
असद्दहणे अ तहा, विवरीअ परूवणाए अ. ॥४८॥

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे;
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई. ॥४९॥

एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं;
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं. ॥५०॥

अब्भुट्ठिओ सूत्र – शब्दार्थ

इच्छाकारेण - इच्छापूर्वक

संदिसह - अनुमति दें जी

भगवन् - हे पूज्य / हे गुरुदेव

अब्भुट्ठिओ - खड़ा हुआ हूँ

मि - मैं

अब्भिंतर - भीतर

देवसिअं - दिन के अपराध की

खामेउं - क्षमा मांगता हूँ

जं किंचि - जो कोई

अपत्तिअं - अप्रीतिभाव

परपत्तिअं - विशेष अप्रीतिभाव

भत्ते - भोजन के विषय में

पाणे - पानी के विषय में

विणए - विनय के विषय में

वेयावच्चे - वैयावृत्य के विषय में

आलावे - एक बार बोलने के विषय में

संलावे - बार-बार बोलने के विषय में

उच्चासणे - गुरु से ऊँचे आसन पर बैठने के विषय में

समासणे - गुरु के समान आसन पर बैठने के विषय में

अंतरभासाए - गुरु जब बोल रहे हों, तब बीच में बोलने के विषय में

उवरिभासाए - गुरु द्वारा कही गई बात को काटकर अपनी बात ऊपर रखने या विशेष रूप से जताने के विषय में

जं किंचि - जो कुछ भी

मज्झ - मैंने

विणय-परिहीणं - विनय रहित आचरण किया हो

सुहुमं - सूक्ष्म

बायरं - बादर - स्थूल

तुब्भे - आप

जाणह - जानते हैं

अहं - मैं

न जाणामि - नहीं जानता हूँ

तस्स - उस संबंधी

मिच्छा - मिथ्या (निष्फल)

मि - मेरा

दुक्कडं - दुष्कृत, पाप, दोष

काव्य विभाग - स्तुति

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः, सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः ॥
श्री सिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा, रत्नत्रयाराधकाः,
पञ्चैः ते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥

चोबीस जिनके शरीर के वर्ण का चैत्यवंदन

पद्मप्रभ ने वासुपूज्य, दोय राता कहीए;
चंद्रप्रभ ने सुविधिनाथ, दो उज्जवल लहीये. १

मल्लिनाथ ने पार्श्वनाथ, दो नीला नीरख्या;
मुनिसुव्रत ने नेमनाथ, दो अंजन सरीखा. २

सोले जिन कंचन समा, एहवा जिन चोवीश;
धीरविमलपंडित तणो, ज्ञान विमल कहे शिष्य. ३

अध्यात्म की थोय

सोवनवाडी फूलडे छाई, छाब भरी हुं लावुंजी,
फूल ज लावुं ने हार गुंथावुं , प्रभुजीने कंठे सोहावुंजी,
उपवास करू तो भूख ज लागे, उनुं पाणी नवि भावेजी,
आंबिल करू तो लुखुं न भावे, नीवी ए डूचा आवेजी.. (१)

एकासणुं करू तो भूखे न रही शकुं, सुखे खाउं त्रण टंकजी,
सामयिक करू तो बेसी न शकुं, निंद्रा करू सारी रातजी,
देहरे जाउं तो खोटी ज थाउं, घरनो धंधो चुकुजी,
दान दउं तो हाथज ध्रूजे, हैयेकंपारी छूटेजी.. (२)

जीवने जमडानु तेडुं आव्युं, सर्व मेलीने चालोजी,
रहो जमडाजी आजनो दहाडो, शत्रुंजे जईने आवुंजी,

शत्रुंजे जईने द्रव्य ज खर्चुं, मोक्ष मार्ग हुं मांगुजी,
घेला रे जीवडा घेलुं शुं बोले? आटला दिवस शुं कीधुं जी.. (३)

जाते जे जीवे पाछल भातुं, शुं शुं आवे साथेजी,
काचीकुलेरने खोखरी हांडी, काष्टना भारा साथेजी,
"ज्ञानविमल" गुरु एणि पेरे भाखे, ध्यावो अध्यात्म ध्यानजी,
भाव भक्ति शुं जिनजीने पूजो, समकित ने अजवालोजी.. (४)

श्री अईमुत्ता मुनि की सज्झाय

संयम रंगे रंग्यु जीवन, नानो बालकुमार वंदो अइमुत्ता अणगार. १
गौतम स्वामी गोचरी जावे, नाना बालकने मन भावे,
प्रेम थकी निज घेर बोलावे, भाव धरी मोदक वहोरावे.
मारे पण गौतम सम थावुं, एम करे विचार. वंदो. २
मननी इच्छा पुरण कीधी, मातपितानी आज्ञा लीधी,
राज्यतणी ऋद्धिने छोडी, गौतम पासे दीक्षा लीधी,
रहे उमंगे गुरुने संगे वहेता संयम भार. वंदो. ३
तलावडी जलनी एक आवी, बालमुनिने मन बहु भावी,
पात्र तणी नौका खेलावी, गुरुने देखी लज्जा आवी,
अणघटतुं कारज कीधुं ते, पाम्या क्षोभ अपार. वंदो.४
समवसरणमां प्रभुजी सामे, इरियावही पडिक्कमी प्रमाणे,
चार कर्मनी गति विरामे, केवल ज्ञान तिहां मुनि पामे,
देव देवी सहु उत्सव करता, वर्त्यो जयजयकार. वंदो.५
क्षणमां सघला कर्म खपाव्यां, एवा अइमुत्ता मुनिराया,
भव्यजीवोने बोध पमाडी, अंते मुक्तिपुरी सीधाया
ज्ञान विमल कहे मुनिने वंदे, थाये बेडो पार. वंदो.६

अरिहंत वंदनावली

जे चौद महास्वप्नों थकी निज मातने हरखावता,
ने गर्भमांही ज्ञान त्रयने गोपवी अवधारता;
ने जन्मतां पहेला ज चोसठ इंद्र जेने वंदता,
एवा प्रभु अरिहंतने पंचांग भावे हुं नमुं.। ।१॥

महायोगना साम्राज्यमां जे गर्भमां उल्लासता,
ने जन्मता त्रण लोकमां महासूर्य सम प्रकाशता,
जे जन्मकल्याणक वडे सहु जीवोने सुख अर्पता,
एवा प्रभु अरिहंतने पंचांग भावे हुं नमुं... ॥२॥

छप्पन दिक्कुमारी तणी सेवा सुभावे पामता,
देवेन्द्र करसंपुट महीं धारी जगत हरखावता,
मेरु शिखर सिंहासने जे नाथ जगना शोभता,
एवा प्रभु अरिहंतने पंचांग भावे हुं नमुं... ॥३॥

कुसुमांजलिथी सुरअसुर जे भव्य जिनने पूजता,
क्षीरोदधिना न्हवणजलथी देव जेने सिंचता,
वली देवदुंदुभि नाद गजवी देवताओ रीझता,
एवा प्रभु अरिहंतने पंचांग भावे हुं नमुं.. ॥४॥

मघमघ थता गोशीर्ष चंदनथी विलेपन पामता,
देवेन्द्र दैवी पुष्पनी माला गले आरोपता,
कुंडल-कडां मणिमय चमकता, हार मुकुटे शोभता,
एवा प्रभु अरिहंतने पंचांग भावे हुं नमुं... ॥५॥

वज्रस्वामी की कहानी

अवंती देश के तुंगवन नाम के एक सुंदर कस्बे में धनपाल सेठ की पुत्री सुनंदा रहती थी। उसका विवाह धनगिरि नाम के ऐसे युवा व्यापारी से हुआ, जिसके दिल में वैराग्य के दीप जल रहे थे । जब सुनंदा गर्भवती थी तभी धनगिरि ने संसार का त्याग कर सिंहगिरि महाराज के पास दीक्षा ले ली। मुनि धनगिरि संयम के मार्ग पर आगे बढ़े और सुनंदा के घर पर एक पुत्र का जन्म हुआ । पुत्र का मुख देखकर सखियाँ बोलीं, "तुम्हारे पिता ने दीक्षा ले ली वो होते तो कितना सुंदर जन्मोत्सव मनाया जाता!" मात्र 'दीक्षा' शब्द सुनते ही उस नवजात शिशु को जातिस्मरण ज्ञान हो गया । वह बालक पूर्वभव में अष्टापद पर्वत पर पुंडरीक अध्ययन सुनकर आया हुआ जृंभकदेव का जीव था। उसे समझ आ गया कि संसार असार है और उसी क्षण उसके भीतर दीक्षा लेने की तीव्र इच्छा जाग उठी । लेकिन एक अबोध बच्चा अपनी इच्छा कैसे व्यक्त करे? उसने रोना शुरू कर दिया । माता सुनंदा और सखियों ने उसे चुप कराने के बहुत प्रयास किए लेकिन सब निष्फल रहे । छह महीने बीत गए पर बच्चे का रोना बंद नहीं हुआ।, सुनंदा इस से तंग आ गई । वह बार-बार कहती, "यदि इसके पिता आएँ, तो मैं अभी यह बच्चा उन्हें सौंप दूँ ।"

संयोगवश, सिंहगिरि गुरुमहाराज अपने शिष्य समुदाय के साथ उसी नगर में पधारे। जब मुनि धनगिरि और आर्य समित गोचरी के लिए निकले तब गुरुदेव ने अपने ज्ञानबल से आशीर्वाद दिया। गुरु बोले, "आज महान लाभ होगा, जो भी मिले उसे व्होर कर आना, सचित्त-अचित्त का विचार मत करना ।" मुनि घूमते-घूमते सुनंदा के घर पहुँचे सुनंदा दुःखी और आवेश में थी । लो यह आपका बेटा, इसने मुझे बहुत परेशान किया है अब तो यह काल जैसा लगता है, ले जाओ! सुनंदा के ये वचन सुनकर मुनि धनगिरि ने चेतावनी दी की बाद में पछताना मत, यह वापस नहीं मिलेगा । सखियों की गवाही (साक्षी) के साथ सुनंदा ने बालक सौंप दिया और मुनि ने उसे अपनी झोली में ले लिया । गुरु महाराज ने देखा कि झोली अत्यंत भारी है इसलिए बालक का नाम 'वज्र' (वज्र जैसा भारी) रखा। जैसे ही गुरुदेव ने वज्रकुमार को गोद में लिया, बालक का

रोना गायब हो गया और वह खिलखिलाकर हँस पड़ा। बालक के पालन-पोषण की जिम्मेदारी श्राविकाओं और साध्वीजी महाराज को सौंपी गई। साध्वीजी जब ग्यारह अंगों का वाचन करती थीं, तब पालने में लेटे वज्रकुमार उसे सुनते थे। अद्भुत बुद्धि-प्रतिभा के कारण तीन वर्ष की आयु में ही वे ग्यारह अंगों के मुखपाठी बन गए!

तीन वर्ष बाद सुनंदा के हृदय में मातृत्व जागा और उसने अपने पुत्र को वापस पाने की माँग की। मुनियों ने मना कर दिया, बात बढ़ी और मामला राजा की अदालत (कचहरी) तक पहुँच गया। राजा ने न्याय करते हुए कहा, “बालक स्वयं जिसके पास जाएगा, उसे ही सौंपा जाएगा।” सबके बीच एक परीक्षा आयोजित की गई, माता सुनंदा ने सुंदर खिलौने, मिठाइयाँ और गहने सामने रखे । उसने बड़े प्यार भरी आवाज़ में वज्र को पुकारा लेकिन बालक की नज़र संसार के साधनो पर नहीं थी । दूसरी तरफ, मुनि धनगिरि ने केवल अपना रजोहरण (ओघा) हवा में लहराया। मात्र तीन वर्ष का वज्रकुमार नाचता-कूदता हुआ सारे वैभवों को त्यागकर अपने पिता की गोद में जाकर बैठ गया। यह दृश्य देखकर पूरा नगर स्तब्ध रह गया और सुनंदा के हृदय में भी वैराग्य की लहर जाग उठी।

पुत्र के त्याग से प्रेरित होकर सुनंदा ने भी संसार छोड़ दिया और सिंहगिरि महाराज के पास दीक्षा अंगीकार कर ली । साढ़े तीन (छह वर्ष) की छोटी उम्र में वज्रकुमार ने दीक्षा ली और आर्य वज्रस्वामी के रूप में विख्यात हुए। वे जैन शासन के अंतिम ‘दशपूर्वी’ आचार्य बने और अनेक जीवों का कल्याण किया।

बोध : यह कथा हमें समझाती है कि संस्कार और वैराग्य का उम्र से कोई संबंध नहीं होता। वज्रस्वामी ने पालने में रहकर भी ज्ञान प्राप्त किया, जो यह दिखाता है कि जिज्ञासा कहीं भी फलित हो सकती है। माता सुनंदा की कहानी सीखाती है कि मोह और आसक्ति दुःख का कारण हैं जबकि त्याग शांति देता है। बाल वज्रकुमार की तरह यदि हम भी सच्चा ‘ओघा’ (संयम का मार्ग) ले लें तो कोई भी भौतिक आकर्षण हमें मुक्ति के मार्ग पर जाने से नहीं रोक सकता।

• • •

मौखिक कक्षा ५

सूत्र	:	‘आयरिय उवज्झाए’ से ‘सकलतीर्थ’ तक (सूत्र ३७ से ५१)	३०
अर्थ	:	इरियावहियं सूत्र, तस्स उत्तरी सूत्र (शब्दार्थ)	१०
काव्य	:	चैत्यवंदन: शांति जिनेश्वर सोलमा...	१५
		स्तवन: शांति जिनेश्वर साचो साहिब...	
		थोय: शांति सुहंकर... (४ गाथा)	
विधि	:	मुहपत्ति पडिलेहण के ५० बोल (प्रेक्टिकल सहित)	१०
		वज्रपंजर स्तोत्र और सकलीकरण मंत्र (प्रेक्टिकल सहित)	१०
		राजनगरी प्रश्नोत्तरी : ३६ से ५०	१५
कहानी	:	जंबूस्वामी की कहानी	१०
			१००

(३७) आयरिय उवज्झाए सूत्र

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल गणे अ;
जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि. ॥१॥

सव्वस्स समण-संघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे;
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि. ॥२॥

सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्म निहिअ-नियचित्तो;
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि. ॥३॥

(३८) नमोऽस्तु वर्द्धमानाय सूत्र (वीरप्रभु का चैत्यवंदन)

इच्छामो अणुसट्ठिं, नमो खमासमणाणं,
नमोऽर्हत्० नमोऽस्तु वर्द्धमानाय.
स्पर्द्धमानाय कर्मणा; तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम्. ॥१॥

येषां विकचारविंदराज्या, ज्याय: क्रम-कमलावलिं दधत्या;
सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्रा: ॥२॥

कषायतापार्दित-जन्तुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गत:,
स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम्. ॥३॥

(३९) विशाल-लोचन-दलं सूत्र (सुबह का वीरप्रभु का चैत्यवंदन)

विशाल-लोचन-दलं, प्रोद्यद्दंतांशु केसरम्;
प्रातर्वीरजिनेन्द्रस्य, मुखपद्मं पुनातु व:. ॥१॥

येषामभिषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्ष-भरात् सुखं सुरेन्द्रा:;
तृणमपि, गणयन्ति नैव नाकं, प्रात: सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्रा:. ॥२॥

कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्क-राहुग्रसनं सदोदयम्;
अपूर्वचन्द्रं जिनचन्द्रभाषितं, दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतम्. ॥३॥

(४०) श्रुतदेवता की स्तुति

सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ०

सुअदेवया भगवई, नाणावरणीय कम्मसंघायं;
तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअसायरे भत्ती. ॥१॥

(४१) क्षेत्रदेवता की स्तुति

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ०

जिसे खित्ते साहू, दंसण-नाणेहिं, चरण-सहिएहिं;
साहंति मुक्खमग्गं, सा देवी हरउ दुरिआइं. ॥१॥

(४२) कमलदल स्तुति

कमल-दल-विपुल-नयना, कमलमुखी कमलगर्भ-समगौरी,
कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सिद्धिम्. ॥१॥

(४३) भवनदेवता की स्तुति

भवणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ०

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्याय संयमरतानाम्;
विदधातु भवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम्. ॥१॥

(४४) क्षेत्रदेवता की स्तुति

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया;
सा क्षेत्र देवता नित्यं, भूयान्नः सुख दायिनी. ॥१॥

(४५) अड्ढाइज्जेसु (मुनि वंदन) सूत्र

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पन्नरससु कम्मभूमीसु, जावंत के वि साहू, रयहरणगुच्छ-पडिग्गहधारा, पंचमहव्वयधारा, अट्ठारससहस्स- सीलंगधारा, अक्खुयायार चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि. ॥१॥

(४६) वरकनक (१७० जिन) स्तुति

वरकनक शंख विद्रुम, मरकत घनसन्निभं विगतमोहम्;
सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामर पूजितं वन्दे. ॥१॥

(४७) लघु शान्ति (श्री शान्तिनाथ) स्तोत्र

शान्तिं शान्ति निशान्तं, शान्तं शान्ताशिवं नमस्कृत्य;
स्तोतुः शान्तिनिमित्तं, मंत्रपदैः शान्तये स्तौमि. ॥१॥

ओमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम्;
शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम्. ॥२॥

सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्याय;
त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शान्तिदेवाय. ॥३॥

सर्वामरसुसमूह-स्वामिकसंपूजिताय न(नि)जिताय;
भुवनजनपालनोद्यत-तमाय सततं नमस्तस्मै. ॥४॥

सर्व दुरितौघनाशन कराय सर्वाऽशिवप्रशमनाय;
दुष्टग्रहभूतपिशाच शाकिनीनां प्रमथनाय. ॥५॥

यस्येति नाममंत्र प्रधानवाक्योपयोग कृततोषा;
विजया कुरुते जनहित मिति च नुता नमत तं शान्तिम् ॥६॥

भवतु नमस्ते भगवति! विजये सुजये परापरैरजिते!
अपराजिते! जगत्यां, जयतीति जयावहे भवति! ॥७॥

सर्वस्यापि च संघस्य, भद्रकल्याण मंगलप्रददे;
साधूनां च सदा शिव सुतुष्टि पुष्टिप्रदे! जीयाः. ॥८॥

भव्यानां कृतसिद्धे! निर्वृतिनिर्वाणजननि! सत्त्वानाम्;
अभयप्रदाननिरते! नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम्. ॥९॥

भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे! नित्यमुद्यते! देवि!
सम्यग्दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदानाय. ॥१०॥

जिनशासन निरतानां, शान्तिनतानां च जगति जनतानाम्;
श्री-संपत्कीर्ति यशोवर्द्धनि! जयदेवि! विजयस्व. ॥११॥

सलिलानल विषविषधर दुष्टग्रह-राज-रोग-रणभयतः;
राक्षसरिपुगणमारी चौरेतिश्वापदादिभ्यः! ॥१२॥

अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्तिं च कुरु कुरु सदेति;
तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वम्. ॥१३॥

भगवति! गुणवति! शिवशान्ति तुष्टि पुष्टि
स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम्,
ओमिति नमो नमो ह्राँ ह्रीँ हुँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फट् फट् स्वाहा. ॥१४॥

एवं यन्नामाक्षर पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी;
कुरुते शान्तिं नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै. ॥१५॥

इति पूर्वसूरिदर्शित मंत्रपद-विदर्भितः स्तवः शान्तेः;
सलिलादि भयविनाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम्. ॥१६॥

यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथा योगम्;
स हि शान्तिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च. ॥१७॥

उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः;
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे. ॥१८॥

सर्व-मंगल-मांगल्यं, सर्व-कल्याण-कारणम्;
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम्. ॥१९॥

(४८) चउक्कसाय सूत्र

चउक्कसाय-पडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जय-मयण-बाण-मुसुमूरणु;
सरसपियंगु-वन्नु-गय-गामिउ, जयउ पासु भुवणत्तय-सामिउ. ॥१॥

जसु तणु-कंति-कडप्प सिणिद्धउ, सोहइ फणि-मणि-किरणालिद्धउ;
नं नवजलहर-तडिल्लय-लंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ. ॥२॥

(४९) भरहेसर की सज्झाय

भरहेसर बाहुबली, अभयकुमारो अ, ढंढणकुमारो;
सिरिओ अणिआउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ. ॥१॥

मेअज्ज, थूलिभद्दो, वयररिसी नंदिसेण सिंहगिरी;
कयवन्नो अ सुकोसल, पुंडरिओ केसि करकंडू. ॥२॥

हल्ल, विहल्ल, सुदंसण, साल, महासाल, सालिभद्दो अ;
भद्दो, दसन्नभद्दो, पसन्नचंदो अ जसभद्दो. ॥३॥

जंबुपहु, वंकचूलो, गयसुकुमालो, अवंतिसुकुमालो;
धन्नो इलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी. ॥४॥

अज्जगिरी, अज्जरक्खिअ, अज्जसुहत्थी, उदायगो, मणगो;
कालयसूरी, संबो, पज्जुन्नो मूलदेवो अ. ॥५॥

पभवो, विण्हुकुमारो, अद्दकुमारो, दढप्पहारी अ;
सिज्जंस कूरगडू अ, सिज्जं-भव मेहकुमारो अ. ॥६॥

एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता;
जेसिं नामग्गहणे, पावप्पबंधा विलयंजंति. ॥७॥

सुलसा, चंदनबाला, मणोरमा, मयणरेहा, दमयंती;
नमयासुंदरी, सीया, नंदा, भद्दा, सुभद्दा य. ॥८॥

राइमई, रिसिदत्ता, पउमावइ, अंजणा, सिरीदेवी;
जिट्ठ, सुजिट्ठ, मिगावइ, पभावई, चिल्लणादेवी. ॥९॥

बंभी, सुंदरी, रुप्पिणी, रेवइ, कुंती, सिवा, जयंती य;
देवइ, दोवइ, धारणी, कलावई पुप्फचूला य. ॥१०॥

पउमावई अ गोरी, गंधारी, लक्खमणा, सुसीमा य;
जंबुवई, सच्चभामा, रुप्पिणी, कण्हट्ठ महिसीओ. ॥११॥

जक्खा य जक्खदिन्ना भूआ तह चेव भूअदिन्ना य;
सेणा, वेणा, रेणा, भइणीओ थूलभद्दस्स. ॥१२॥

इच्चाइ महासइओ, जयंति अकलंक-सील-कलिआओ;
अज्ज वि वज्जइ जासिं, जस-पडहो तिहुअणे सयले. ॥१३॥

(५०) मन्हजिणाणं (श्रावक के कृत्यो)की सज्झाय

मन्हजिणाणं आणं(मन्नह जिणाणमाणं), मिच्छं परिहरह, धरह सम्मत्तं;
छव्विह आवस्सयम्मि, उज्जुत्तो होइ (उजजुत्ता होह) पइदिवसं. ॥१॥

पव्वेसु पोसहवयं, दाणं, सीलं, तवो अ भावो अ;
सज्झाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ. ॥२॥

जिणपूआ, जिणथुणणं, गुरुथुअ, साहम्मिआण वच्छल्लं;
ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता, तित्थजत्ता य. ॥३॥

उवसम विवेग संवर, भासासमिइ, छजीवकरुणा य;
धम्मिअ-जण-संसग्गो, करण-दमो चरण-परिणामो. ॥४॥

संघोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिहणं पभावणा तित्थे;
सड्ढाणकिच्च-मेअं, निच्चं सुगुरूवएसेणं. ॥५॥

(५१) सकलतीर्थ वंदना

सकलतीर्थ वंदुं करजोड, जिनवर नामे मंगल कोड;
पहेले स्वर्गे लाख बत्रीस, जिनवर चैत्य नमुं निशदिश. ॥१॥

बीजे लाख अट्ठावीश कह्यां, त्रीजे बार लाख सद्दह्यां;
चोथे स्वर्गे अडलख धार, पांचमे वंदुं लाख ज चार. ॥२॥

छट्ठे स्वर्गे सहस पचास, सातमे चालीश सहस प्रासाद;
आठमे स्वर्गे छ हजार, नव दशमे वंदुं शत चार. ॥३॥

अग्यार बारमे त्रणसें सार, नवग्रैवेयके त्रणसें अढार;
पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोराशी अधिकां वली. ॥४॥

सहस सत्ताणुं त्रेवीश सार, जिनवर भवनतणो अधिकार;
लांबा सो जोजन विस्तार, पचास ऊंचा बहोंत्तेर धार. ॥५॥

एकसो एंशी बिंब प्रमाण, सभासहित एक चैत्ये जाण;
सो कोड बावन कोड संभाल, लाख चोराणुं सहस चौंआल. ॥६॥

सातसें उपर साठ विशाल, सवि बिंब प्रणमुं त्रण काल;
सात कोड ने बहोंतेर लाख, भवनपतिमां देवल भाख. ॥७॥

एकसो एंशी बिंब प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या जाण;
तेरसें कोड नेव्याशी कोड, साठ लाख वंदुं कर जोड. ॥८॥

बत्रीसें ने ओगणसाठ, तिर्च्छा लोकमां चैत्यनो पाठ;
त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणसें वीस ते बिंब जुहार. ॥९॥

व्यंतर जयोतिषीमां वली जेह, शाश्वता जिन वंदुं तेह;
ऋषभ चन्द्रानन वारिषेण, वर्धमान नामे गुणसेण. ॥१०॥

समेतशिखर वंदुं जिन वीश, अष्टापद वंदुं चोवीश;
विमलाचल ने गढ गिरनार, आबु उपर जिनवर जुहार. ॥११॥

शंखेश्वर केसरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार;
अंतरिक्ख वरकाणो पास, जीराउलो ने थंभण पास. ॥१२॥

गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवरचैत्य नमुं गुणगेह;
विहरमान वंदुं जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशदिश. ॥१३॥

अढीद्वीपमां जे अणगार, अढार सहस शीलांगना धार;
पंच महाव्रत समिति सार, पाले पलावे पंचाचार. ॥१४॥

बाह्य अभ्यंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदुं गुणमणिमाल;
नित नित ऊठी कीर्ति करुं, "जीव" कहे भवसायर तरुं. ॥१५॥

इरियावहियं सूत्र (लघु प्रतिक्रमण सूत्र) के अर्थ

इच्छाकारेण - इच्छापूर्वक
संदिसह - आज्ञा दीजिए ।
भगवन् - हे भगवंत! / हे पूज्य!
इरियावहियं - मार्ग में चलने-फिरने से जो पाप क्रिया या जीवों की विराधना हुई हो
पडिक्कमामि - मैं उससे पीछे हटता हूँ (उस पाप का प्रतिक्रमण करता हूँ)
इच्छं - (आपकी आज्ञा) प्रमाण है सहर्ष स्वीकार है
इच्छामि पडिक्कमिउं - मैं प्रतिक्रमण करने की इच्छा करता हूँ
इरियावहियाए - मार्ग में आने-जाने की क्रिया के कारण
विराहणाए - जीवों की जो विराधना (कष्ट या हिंसा) हुई हो
गमणागमणे - आते और जाते समय
पाणक्कमणे - छोटे-बड़े प्राणियों को दबाया या कुचला हो
बीयक्कमणे - वनस्पति के बीजों को दबाया या कुचला हो
हरियक्कमणे - हरी वनस्पति को दबाया या कुचला हो
ओसा - ओस की बूंदों
उत्तिंग - चींटियों के बिलों या बांबी (उत्तिंगा)
पणगदग - शैवाल तथा कच्चे पानी
मट्टी - सचित्त मिट्टी
मक्कडासंताणा - मकड़ी के जालों
संकमणे - इन सभी के ऊपर से गुजरने या इन्हें दबाने से
जे - जो
मे - मुझसे / मैंने
जीवा - जीव
विराहिया - विराधना (हिंसा/कष्ट) की हो
एगिंदिया - एकेन्द्रिय जीव
बेइंदिया - बेइन्द्रिय जीव
तेइंदिया - तेइन्द्रिय जीव
चउरिंदिया - चतुरिन्द्रिय जीव
पंचिंदिया - पंचेन्द्रिय जीव
अभिहया - पैर से लात या धक्के से मारे हों
वत्तिया - धूल या मिट्टी से ढके हों
लेसिया - जमीन (भूमि) के साथ घसीटे या पीसे हों
संघाइया - इकट्ठा (एकत्र) किए हों
संघट्टिया - आपस में स्पर्श किए (टकराए) हों
परियाविया - परिताप (दुख और संताप) पहुँचाया हो
किलामिया - खेद (कष्ट या थकावट) पहुँचाया हो
उद्दविया - डराया या भयभीत किया हो (त्रास पहुँचाया हो)
ठाणाओ ठाणं - एक स्थान से दूसरे स्थान पर
संकामिया - हटाया हो या भेजा हो

जीवियाओ ववरोविया - जीवित रहने के अधिकार से मुक्त किया हो (अर्थात प्राण हरे हों)
तस्स - वह (उस संबंधी)
मिच्छा - मिथ्या (निष्फल और नष्ट) हो
मि - मेरा
दुक्कडं - दुष्कृत (पाप या दोष)

तस्स उत्तरी सूत्र (उत्तरीकरण सूत्र) के अर्थ

तस्स - उसकी (उस पाप की)
उत्तरीकरणेणं - पुनः शुद्धि करने के लिए
पायच्छित्तकरणेणं - प्रायश्चित्त करने के द्वारा
विसोहीकरणेणं - विशेष रूप से पवित्र (शुद्ध) करने के लिए
विसल्लीकरणेणं - शल्य रहित होने के लिए
पावाणं कम्माणं - पाप कर्मों को
निग्घायणट्ठाए - नष्ट करने के उद्देश्य से
ठामि - मैं करता हूँ
काउस्सग्गं - कायोत्सर्ग

काव्य विभाग

श्री शान्तिनाथ भगवान का चैत्यवंदन

शान्ति जिनेश्वर सोलमा, अचिरासुत वंदो;
विश्वसेन कुल नभोमणि, भविजन सुख कंदो. १

मृगलंछन जिन आउखुं, लाख वरस प्रमाण;
हत्थिणाउर नयरी धणी, प्रभुजी गुणमणि खाण. २

चालीश धनुषनी देहडीए, समचउरस संठाण;
वदन पद्म ज्युं चंदलो, दीठे परम कल्याण. ३

श्री शान्तिनाथ भगवान का स्तवन

शान्ति जिनेश्वर साचो साहिब,
शान्तिकरण इन कलि में हो जिनजी० १

तुं मेरा मनमें तुं मेरा दिलमें, ध्यान धरूं पलपल में हो० २

भवमां भमतां में दरिशन पायो, आशा पूरो एक पल में हो० ३

निर्मलज्योत वदन पर सोहे, निकस्यो ज्युं चंद बादल में हो० ४

मेरो मन तुम साथे लीनो, मीन वसे ज्युं जल में हो० ५

जिनरंग कहे प्रभु शान्ति जिनेश्वर, दीठोजी देव सकल में हो० ६

श्री शान्तिनाथ भगवान की थोय

शान्ति सुहंकर साहिबो, संयम अवधारे,
सुमित्रने घेर पारणुं, भवपार उतारे;
विचरंता अवनीतले, तप उग्र विहारे,
ज्ञान ध्यान एकतानथी, तिर्यंचने तारे. १

पास वीर वासुपूज्यजी, नेम मल्लिकुमारी,
राज्यविहुणा ए थया, आपे व्रतधारी;
शान्तिनाथ प्रमुखा सवि, लही राज्य निवारी,
मल्ली नेम परण्या नहि, बीजा घरबारी. २

कनक कमल पगलां ठवे, जग शान्ति करीजे,
रयण सिंहासन बेसीने, भली देशना दीजे;
योगावंचक प्राणीया, फल लेतां रीझे,
पुष्करावर्तना मेघमां, मगशेल न भींजे. ३

क्रोडवदन शूकरारूढो, श्याम रूपे चार,
हाथ बीजोरूं कमल छे, दक्षिण कर सार;
जक्ष गरूड वाम पाणिए नकुलाक्ष वखाणे,
निर्वाणीनी वात तो, कवि वीर ते जाणे. ४

मुहपत्ति पडिलेहण के ५० बोल
(भाईओ के ५० बोल,
बहनो के ४०)

बोल	संख्या	स्थान
सूत्र, अर्थ, तत्त्व करी सद्दहुं.	१	दृष्टिपडिलेहण
सम्यक्त्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय, मिथ्यात्वमोहनीय परिहरुं	३	पुरिम
कामराग, स्नेहराग, दृष्टिराग परिहरुं	३	पुरिम
सुदेव, सुगुरु, सुधर्म आदरुं.	३	अक्खोडा
कुदेव, कुगुरु, कुधर्म परिहरुं.	३	पक्खोडा
ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदरुं.	३	अक्खोडा
ज्ञान विराधना, दर्शन विराधना, चारित्र विराधना परिहरुं.	३	पक्खोडा
मनगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति आदरुं.	३	अक्खोडा
मनदंड, वचनदंड, कायदंड परिहरुं.	३	पक्खोडा
	२५	
हास्य, रति, अरति परिहरुं.	३	बाएँ हाथ का पीछे का और दोनों बाजू का भाग
भय, शोक, जुगुप्सा परिहरुं	३	दाहिने हाथके पीछेका और दोनो बाजू का भाग
कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या परिहरुं.	३	मस्तक

रसगारव, ऋद्धिगारव, सातागारव परिहरुं	३	मुख
मायाशल्य, नियाणशल्य, मिथ्यात्वशल्य परिहरुं	३	छाती
क्रोध, मान परिहरुं	२	दाहिना कन्धा
माया, लोभ परिहरुं	२	बाँया कन्धा
पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकायनी जयणा करुं.	३	बाँया पैर
वाउकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकायनी रक्षा करुं.	३	दाहिना पैर
	५०	

पुरिम = हाथ से मुहपत्ति खंखेरना.

अक्खोडा पक्खोडा = हाथ की अंगुली के तीन अंतर में मुहपत्ति को पकड़ हथेली पर और हथेली से कोहनी तक की प्रमार्जना को अक्खोडा कहते है और एसे ही कोहनी से हथेली तक की प्रमार्जना को पक्खोड़ा कहते है।

नोंध - हमेशा वस्त्र से आवृत्त होने के कारण बहनो को मस्तक की-३, हृदय की-३ और कन्धे की-४ - कुल-१० पडिलेहणा नही होती ।

वज्रपंजर स्तोत्र

दोनों हाथ जोड़कर -

ॐ परमेष्ठी नमस्कारं, सारं नवपदात्मकम्।
आत्मरक्षाकरं वज्र, पंजराभं स्मराम्यहम् ॥१॥

हाथ मस्तक पर रखकर -

ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कम् शिरसि स्थितम् ॥२॥

हाथ मुख पर रखकर -

ॐ नमो सव्व सिद्धाणं, मुखे मुखपटं वरम् ॥३॥

हाथ शरीर के चारों ओर (ऊपर) फेरते हुए -

ॐ नमो आयरियाणं, अंगरक्षाति शायिनी ॥४॥

दोनों मुट्ठियाँ बंद करके -

ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्द्दढम् ॥५॥

पैरों पर हाथ फेरते हुए -

ॐ नमो लोए सव्व साहूणं, मोचके पादयोः शुभे ॥६॥

जमीन पर हाथ फेरते हुए -

एसो पंच नमुक्कारो, शिलावज्रमयि तले ॥७॥

चारों ओर उंगली घुमाते हुए -

सव्व पावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहिः ॥८॥

उंगली नीचे की ओर घुमाते हुए –

मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिरांगार खातिका ॥९॥

सिर के ऊपर हाथ फेरकर -

स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं ॥१०॥

वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं देह रक्षणे।
महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रव नाशिनी।
परमेष्टी पदोद्भूता, कथिता पूर्व सूरिभिः।
यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठि पदैः सदा ॥११॥

तस्य न स्याद् भयं व्याधि-राधिश्चापि कदाचन ॥१२॥

सकलीकरण मंत्र

सकलीकरण का अर्थ: सकलीकरण का अर्थ होता है 'शरीर को मंत्रों से पवित्र और सुरक्षित करना' । यह विधि विशेष रूप से पूजा, साधना या सामायिक की शुरुआत में की जाती है ताकि बाहरी बाधाओं या अशुभ तत्वों से रक्षा हो सके।

विधि: इस मंत्र के पांच अक्षर शरीर के पांच केंद्रों (भागों) से जुड़े हुए हैं:

- क्षि (Kshi) : घुटना
- प (Pa) : नाभि
- ॐ (ओम) (Om) : हृदय
- स्वा (Sva) : मुख
- हा (Ha) : मस्तक (ललाट)

प्रक्रिया : आरोह (चढ़ता क्रम): घुटने से शुरुआत करके मस्तक तक मंत्र बोलते हुए शरीर को स्पर्श करना। (क्षि → प → ॐ → स्वा → हा)

अवरोह (उतरता क्रम): मस्तक से शुरुआत करके दोबारा घुटने तक मंत्र बोलते हुए नीचे की ओर आना। (हा → स्वा → ॐ → प → क्षि)

(यह विधि तीन बार करनी चाहिए।)

महत्व:

1. **रक्षा:** ऐसी दृढ़ श्रद्धा है कि इस विधि को करने से दुर्घटनाओं और अशुभ घटनाओं से बचा जा सकता है।
2. **एकाग्रता:** इससे मन और शरीर स्थिर होते हैं तथा ध्यान लगाने की शक्ति बढ़ती है।

ज्ञानी श्वासोश्वास द्वारा कठिन कर्मों को नष्ट करते हैं.

राजनगर प्रश्नोत्तरी

प्र.३६. अट्ठाई यानि क्या ? वे कितनी है ? कौन-कौन सी है ?

उ. धर्म की विशेष आराधना करने के दिनों को अट्ठाई कहते है । वे छः [६] है । वे इस प्रकार है –

१) कार्तिक सुद ७ से कार्तिक सुद १५ तक – कार्तिक चउमासी

२) फाल्गुन सुद ७ से फाल्गुन सुद १५ तक – फाल्गुन चउमासी

३) चैत्र सुद ७ से चैत्र सुद १५ तक – आयंबिल की ओली

४) आषाढ सुद ७ से आषाढ सुद १५ तक – आषाढ चउमासी

५) श्रावण वद १२ से भाद्रपद सुद ४ तक – पर्युषण की

६) आसो सुद ७ से आसो सुद १५ तक – आयंबिल की ओली ।

प्र.३७. पांच परमेष्ठि के नाम बताइए ।

उ. पांच परमेष्ठि – १. अरिहंत, २. सिद्ध, ३. आचार्य, ४. उपाध्याय, ५. साधु.

प्र.३८. नवपद के नाम, गुण और रंग बताइए –

१. अरिहंत	–	१२ गुण	–	सफेद
२. सिद्ध	–	८ गुण	–	लाल
३. आचार्य	–	३६ गुण	–	पीला
४. उपाध्याय	–	२५ गुण	–	हरा
५. साधु	–	२७ गुण	–	काला
६. दर्शन	–	६७ गुण	–	सफेद
७. ज्ञान	–	५१ गुण	–	सफेद
८. चारित्र	–	७० गुण	–	सफेद
९. तप	–	५० गुण	–	सफेद

प्र.३९. नवपद का समावेश किन किन तत्वों में होता है ?

उ. पहले दो पदोका समावेश देव तत्व में होता है बाद के तीन पदों का समावेश गुरू तत्व में होता है और बाकी [आखरी] चार पदों का धर्मतत्त्व में समावेश होता है ।

प्र.४०. नवकारवली में १०८ मणके रखने का क्या कारण है ?

उ. पंच परमेष्ठी के गुण १०८ हैं। उनका स्मरण करने के लिए १०८ मणके रखे गए हैं।

प्र.४१. विहरमान तीर्थंकर यानि क्या ? वह कितने है ? कहाँ विचरते है ?

उ. विहरमान तीर्थंकर यानि वर्तमान में विचरते हुए तीर्थंकर वे बीस हैं । वे महाविदेह क्षेत्र में विचरण कर रहे हैं ।

प्र.४२. संघ यानि क्या ? वे कितने प्रकार के हैं ? और कहाँ-कहाँ है ?

उ. संघ यानि जिनेश्वर भगवान की आज्ञा माननेवाले और पालन करने वालो का समूह, वे चार प्रकार के है – १. साधु भगवंत, २. साध्वीजी भगवंत, ३. श्रावक, ४. श्राविका ।

प्र.४३. क्षेत्र यानि क्या ? और वे कितने है ? उनके नाम दो ?

उ. क्षेत्र याने जहाँ धन-धान्य-वस्त्र-पात्र वगेरेह उपयोग करने से बहुत लाभ मिलता है ऐसे उत्तम स्थान, जो सात है –

१. जिनमंदिर, २. जिनप्रतिमा, ३. जिनागम, ४. साधु भगवंत, ५. साध्वीजी भगवंत, ६. श्रावक, ७. श्राविका ।

प्र.४४. व्यसन यानि क्या ? वह कितने हैं और कौन कौन से ?

उ. व्यसन यानि जीवको इस भव और परभव में दुःख देनेवाली भयंकर बुरी आदतें । वे सात है ।

(१) जुआ खेलना, (२) मांसाहार करना, (३) शराब पीना, (४) परस्त्री का संग करना, (५) वेश्या का संग करना, (६) चोरी करना, (७) शिकार करना ।

ज्ञान और ज्ञानी की भक्ति करनी चाहिए.

प्र.४५. श्री महावीर प्रभु का जीवनचरित्र संक्षिप्त में लिखो ।

उ. श्री महावीर प्रभु का जन्म क्षत्रियकुंड नगर मे हुआ था । उनके पिता का नाम सिद्धार्थ राजा और माता का नाम त्रिशलादेवी था । उनके भाई का नाम नंदीवर्धन, बहन का नाम सुदर्शना, पत्नि का नाम यशोदा, पुत्री का नाम प्रियदर्शना और जमाई का नाम जमाली था । ३० वर्ष की वय में उन्होंने दीक्षा (चारित्र) ली थी । चारित्र लेने के बाद उन्हें साडे बार वर्ष बाद केवलज्ञान हुआ । उसके बाद चतुर्विध संघ की स्थापना की, वे ३० वर्ष तक भरतक्षेत्र में विचरते रहे, धर्म के उपदेश देते रहे । ७२ साल का आयुष्य पूर्ण कर विक्रम संवत से ४७० वर्ष पहेले दिवाली की रात्री को मोक्ष गये।

प्र.४६. चोबीसवें भगवान का नाम माता-पिता ने वर्धमान और देवताओने महावीर क्यों रखा ?

उ. श्री महावीर प्रभु के माता के गर्भ में आने के बाद धन, धान्य, संपत्ति आदि बढने लगी. सारे राजा आज्ञा में रहने लगे। प्रभु का ऐसा प्रभाव देख माता-पिताने प्रभु का नाम वर्धमान रखा। बचपन में आंबली-पिपली खेल में देवताको मुट्ठीसे मारकर हराया था। इससे देवताओने उनका नाम महावीर रखा।

प्र.४७. निसीहि यानि क्या ? वे कितनी है ? कब-कब बोली जाती है ? और क्यों ?

उ. निसीहि यानि सावद्य क्रियाओं का त्याग करना, वे तीन है –

१. मंदिर के मुख्य द्वार पर पहुँचते ही.. इस निसीहि से घर संबंधी कार्यों का त्याग होता है ।

२. मंदिरजी के मुख्य गभारे के सामने – दूसरी निसीहि से मंदिर संबंधी कार्यों का त्याग होता है ।

३. चैत्यवंदन करने से पहले – तीसरी निसीहि से द्रव्यपूजा का त्याग होता है ।

प्र.४८. आरती और मंगलदीवा क्यों उतारना ?

उ. आरती उतारने से शरीर की और मन की पीडा दूर होती है, और मनको शांति मिलती है । मंगलदीवा उतारने से अपना मंगल होता है और सुख प्राप्त होता है ।

प्र.४९. आरती और मंगलदीवा कैसे उतारना ?

उ. आरती को बांयी तरफ से ऊँची ले जाकर दांई तरफ से नीचे उतारना एवं नाभि से ऊपर और ललाट से नीचे ही रहनी चाहिए । विपरीत रीति से उतारने पर आशातना होती है ।

प्र.५०. आवश्यक यानि क्या ? वे कितने है ? और कौन से है ?

उ. आवश्यक यानि अवश्य करने योग्य, वे छः है – १. सामायिक, २. चउवीसत्थो, ३. वांदणा, ४. पडिक्कमणु, ५. काउस्सग्ग, ६. पच्चक्खाण ।

जंबूस्वामी की कहानी

आज से लगभग २५०० वर्ष पुरानी यह कहानी है । मगध देश के सुग्राम नगर में भवदत्त और भवदेव नाम के दो भाई रहते थे । उनमें से भवदत्त ने जैन दीक्षा ली हुई थी । उन्होंने नागिला नाम की स्त्री से विवाहित अपने भाई भवदेव को भी दीक्षा लेने की प्रेरणा दी । भवदेव ने अपने भाई के संकोच और लिहाज में आकर दीक्षा तो ले ली लेकिन उनका मन नागिला में ही अटका हुआ था ।

समय बीतने पर भवदत्त मुनि अपनी आयु पूर्ण कर स्वर्ग सिधा गए । इसके बाद भवदेव अपनी पूर्व पत्नी नागिला से मिलने आए लेकिन नागिला अत्यंत धर्मनिष्ठ और पवित्र विचारों वाली स्त्री थी, उसने भवदेव को बहुत ही सुंदर वैराग्यपूर्ण उपदेश दिया । नागिला के इस बोध से जागृत होकर मुनि पुनः अपने गुरु भगवंत के पास लौट गए और उसके बाद दोषरहित संयम धर्म का पालन करके देवलोक में गए ।

देवलोक से च्यवन होकर भवदेव का जीव आगे चलकर 'शिवकुमार' के रूप में उत्पन्न हुआ । एक बार उन्हें संसार से वैराग्य हुआ, किंतु माता-पिता ने दीक्षा की अनुमति नहीं दी इसलिए उन्होंने गृहस्थ जीवन में ही रहकर छठ के पारणे में छठ का तप और पारणे के दिन आयंबिल करके धर्म की उग्र आराधना की । आजीवन इस प्रकार धर्म का पालन करके वे ब्रह्म देवलोक में 'विद्युन्माली' देव बने ।

एक बार राजगृही नगरी के ऋषभदत्त सेठ अपनी पत्नी धारिणी के साथ श्री सुधर्मा स्वामी को वंदन करने वैभारगिरी पर्वत पर गए । वहाँ धारिणी माता ने गणधर भगवंत से पूछा कि उन्हें पुत्र की प्राप्ति होगी या नहीं । गणधर भगवंत ने कहा: "हम ऐसे सांसारिक प्रश्नों के उत्तर नहीं देते । तो भी आपको महापुण्य का लाभ होने वाला है और इसका परिणाम पवित्र होने के कारण हम कहते हैं कि- आपको एक सौ आठ आयंबिल की तपश्चर्या करने से जंबूवृक्ष के स्वप्न से सूचित पुत्र रत्न प्राप्त होगा ।" इसके बाद धारिणी देवी ने भावपूर्ण तरीके से आयंबिल तप किया और दूसरी ओर विद्युन्माली देव का आयुष्य पूर्ण होने पर

वे स्वर्ग से च्यवन होकर धारिणी माता के गर्भ में उत्पन्न हुए । माता ने जंबुवृक्ष का स्वप्न देखा, जन्म के पश्चात माता-पिता ने उनका नाम 'जंबूकुमार' रखा ।

युवावस्था में श्री सुधर्मास्वामी का वैराग्य से भरा उपदेश सुनकर जंबूकुमार घर आए और माता-पिता से दीक्षा लेने की अनुमति मांगी लेकिन माता-पिता के अत्यधिक आग्रह के वश होकर उन्हें आठ कन्याओं के साथ विवाह करना पड़ा । विवाह की पहली ही रात को उन्होंने अपनी आठों पत्नियों को संसार की असारता का ऐसा सुंदर बोध दिया कि वे सब भी दीक्षा लेने के लिए तैयार हो गईं । उनके विवाह की उसी रात घर में 'प्रभव' नाम का चोर अपने ५०० चोरों की टोली के साथ चोरी करने आया हुआ था । जंबूकुमार का अपनी पत्नियों के साथ आध्यात्मिक संवाद सुनकर प्रभव चोर और उसके साथियों का हृदय परिवर्तन हो गया । जंबूकुमार ने उन सभी को भी प्रतिबोधित किया । इस प्रकार दूसरे ही दिन जंबूकुमार, उनके माता-पिता, ८ पत्नियाँ, पत्नियों के माता-पिता और ५०० चोर- इन सबने मिलकर कुल ५२७ (पाँच सौ सत्ताईस) लोगों ने श्री सुधर्मा गणधर भगवंत के पास दीक्षा अंगीकार की ।

श्री सुधर्मा स्वामी गणधर भगवंत ने भगवान महावीर के मुख से सुने हुए सभी आगमों की रचना श्री जंबूस्वामी को ही संबोधित करके की है । दीक्षा लेने के बीसवें वर्ष में जंबूकुमार को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। अंत में, वे इस जैन शासन के अंतिम केवली हुए और प्रभवस्वामी को अपनी गादी (पाट) सौंपकर, प्रभु महावीर परमात्मा के निर्वाण के ६४वें वर्ष में मोक्ष पधारे।

बोध : जिस प्रकार अग्नि सोने को तपाकर शुद्ध करती है, उसी प्रकार सच्चा तप आत्मा पर लगे हुए पुराने कर्मों को नष्ट कर देता है । जिस प्रकार जंबूस्वामी ने संसार के सभी सुखों का त्याग कर, दृढ़ मनोबल और शुद्ध भावों के साथ तपस्या की और 'केवलज्ञान' प्राप्त किया, वैसा ही हमारा भी लक्ष्य होना चाहिए । सच्चे हृदय से और शुद्ध भाव से की गई छोटी सी भक्ति भी आत्मा के लिए मोक्ष के द्वार खोल सकती है ।

● ● ●

मौखिक कक्षा ६

सूत्र	:	सकलार्हत्, स्नातस्या, संतिकरम् (सूत्र ५२ से ५४)	३०
अर्थ	:	अन्नत्थ सूत्र (शब्दार्थ)	१०
		कायोत्सर्ग के १६ आगार + १९ दोष	१०
काव्य	:	दोहे: अनंत चउवीसी जिन नमुं...	२५
		चैत्यवंदन: श्री सीमंधर जगधणी...	
		स्तवन: सुणो चंदाजी...	
		थोय: सीमंधर जिनवर... (१ गाथा),	
		आदि जिनवर राया... (१ गाथा)	
		सज्झाय: प्रसन्नचंद्र राजर्षि की सज्झाय	
विधि	:	२५ आवश्यक + सत्रह संडासा पूर्वक खमासमणा	१०
		(प्रेक्टिकल सहित)	
		राजनगर प्रश्नोत्तरी : ५१ से ६०	१५
			१००

(५२) श्री सकलार्हत् स्तोत्र

सकलार्हत्प्रतिष्ठान-मधिष्ठानं शिवश्रियः,
भूर्भुवःस्वस्त्रयीशान-मार्हन्त्यं प्रणिदध्महे ॥१॥

नामाकृतिद्रव्यभावैः पुनतस्त्रिजगज्जनम्,
क्षेत्रे काले च सर्वस्मिन्नर्हतः समुपास्महे ॥२॥

प्रतिक्रमण अर्थात् कषायभाव में से आत्मभाव में जुड़ना.

आदिमं पृथिवीनाथ-मादिमं निष्परिग्रहम्,
आदिमं तीर्थनाथं च, ऋषभस्वामिनं स्तुमः ॥३॥

अर्हन्तमजितं विश्व-कमलाकर-भास्करं,
अम्लान-केवलादर्श-संक्रांतजगतं स्तुवे ॥४॥

विश्वभव्यजनाराम, कुल्यातुल्या जयंति ताः,
देशनासमये वाचः, श्री संभव-जगत्पतेः ॥५॥

अनेकांतमतांभोधि, समुल्लासनचंद्रमाः,
दद्यादमंदमानंदं, भगवानभिनंदनः ॥६॥

द्युसत्किरीटशाणाग्रो-त्तेजितांघ्रिनखावलिः,
भगवान् सुमतिस्वामी, तनोत्वभिमतानि वः ॥७॥

पद्मप्रभप्रभोर्देह-भासः पुष्णंतु वः श्रियम्,
अंतरंगारिमथने, कोपाटोपादिवारुणाः ॥८॥

श्रीसुपार्श्वजिनेंद्राय, महेंद्रमहितांघ्रये,
नमश्चतुर्वर्णसंघ-गगनाभोग भास्वते ॥९॥

चन्द्रप्रभप्रभोश्चन्द्र मरीचिनिचयोज्जवला,
मूर्तिर्मूर्तसितध्यान, निर्मितेव श्रियेऽस्तु वः ॥१०॥

करामलकवद्विश्वं, कलयन् केवलश्रिया,
अचिंत्यमाहात्म्यनिधिः, सुविधिर्बोधयेऽस्तु वः ॥११॥

सत्त्वानां परमानंद कंदोद्भेदनवांबुदः,
स्याद्वादामृतनिःस्यंदी, शीतलः पातु वो जिनः ॥१२॥

भवरोगार्त्तजंतूना मगदंकारदर्शनः,
निःश्रेयसश्रीरमणः श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तुवः ॥१३॥

विश्वोपकारकीभूत तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः,
सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु वः ॥१४॥

विमलस्वामिनो वाच:, कतकक्षोदसोदरा:,
जयंति त्रिजगच्चेतो जलनैर्मल्यहेतव: ॥१५॥

स्वयंभूरमणस्पर्द्धी, करुणारसवारिणा,
अनंतजिदनंतां व:, प्रयच्छतु सुखश्रियम् ॥१६॥

कल्पद्रुमसधर्माण-मिष्टप्राप्तौ शरीरिणाम्,
चतुर्द्धाधर्मदेष्टारं, धर्मनाथमुपास्महे ॥१७॥

सुधासोदरवाग्जयोत्स्ना, निर्मलीकृतदिङ्मुख:,
मृगलक्ष्मातम:शान्त्यै, शान्ति नाथजिनोऽस्तु व: ॥१८॥

श्री कुंथुनाथो भगवान्, सनाथोऽतिशयर्द्धिभि:,
सुरासुरनृनाथानामेकनाथोऽस्तु व: श्रिये ॥१९॥

अरनाथस्तु भगवांश्चतुर्थारनभोरवि:,
चतुर्थपुरुषार्थश्री विलासंवितनोतु व: ॥२०॥

सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदम्,
कर्मद्रुन्मूलने हस्ति, मल्लं मल्लिमभिष्टुम: ॥२१॥

जगन्महामोहानिद्रा प्रत्यूषसमयोपमम्,
मुनिसुव्रतनाथस्य, देशनावचनं स्तुम: ॥२२॥

लुठंतो नमतां मूर्ध्नि निर्मलीकारकारणम्,
वारिप्लवा इव नमे:, पान्तु पाद नखांशव: ॥२३॥

यदुवंश समुद्रेन्दु:, कर्मकक्ष हुताशन:,
अरिष्टनेमिर्भगवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशन: ॥२४॥

कमठे-धरणेन्द्रे च, स्वोचितं-कर्म कुर्वति,
प्रभुस्तुल्य-मनोवृत्ति:, पार्श्वनाथ: श्रियेऽस्तु व: ॥२५॥

श्रीमते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया,
महानंदसरोराज मरालायाऽर्हते नम: ॥२६॥

कृतापराधेऽपि जने, कृपामंथरतारयोः,
ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्रं, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥२७॥

जयति विजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्रीमान्,
विमलस्त्रासविरहितस्त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ॥२८॥

वीरः सर्वसुरासुरेंद्र महितो वीरं बुधाः संश्रिताः,
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो वीराय नित्यं नमः,
वीरात्तीर्थमिदं-प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो,
वीरे श्री धृतिकीर्तिकांतिनिचयः श्री वीर! भद्रंदिश ॥२९॥

अवनितल गतानां कृत्रिमाकृत्रिमानां,
वरभवन गतानां दिव्य वैमानिकानाम्,
इह मनुज कृतानां देवराजार्चितानां,
जिनवरभवनानां भावतोऽहं नमामि ॥३०॥

सर्वेषांवेधसामाद्य मादिमं परमेष्ठिनाम्,
देवाधिदेवं सर्वज्ञं, श्री वीरं प्रणिदध्महे ॥३१॥

देवोऽनेकभवार्जितोर्जितमहा पापप्रदीपानलो,
देवः सिद्धिवधू विशालहृदयाऽलंकारहारोपमः,
देवोऽष्टादशदोषसिंधुरघटा निर्भेदपंचाननो,
भव्यानां विदधातु वांछितफलं, श्री वीतरागो जिनः ॥३२॥

ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपदः सम्मेतशैलाभिधः,
श्रीमान् रैवतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुंजयो मंडपः,
वैभारः कनकाचलोऽर्बुदगिरिः श्री चित्रकूटादय,
स्तत्र श्री ऋषभादयो जिनवराः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥३३॥

(५३) स्नातस्या स्तुति

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे,
रूपालोकनविस्मयाहृतरस भ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा,

उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशंकया,
वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति श्री वर्धमानो जिनः ॥१॥

हंसांसाहत-पद्मरेणुकपिश क्षीरार्णवांभोभृतैः,
कुंभैरप्सरसां पयोधरभर-प्रस्पर्द्धिभिः कांचनैः,
येषां मंदररत्नशैलशिखरे जन्माभिषेकः कृतः,
सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ॥२॥

अर्हद् वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं विशालं,
चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः,
मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं,
भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम् ॥३॥

निष्पंकव्योमनील द्युतिमलसदृशं बालचंद्राभदंष्ट्रं,
मत्तं घंटारवेण प्रसृतमदजलं पूरयन्तं समंतात्,
आरूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः कामरूपी,
यक्षः सर्वानुभूतिर्दिशतु मम सदा सर्वकार्येषु सिद्धिम् ॥४॥

(५४) संतिकरं स्मरणम्

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइ दायारं,
समरामि भत्तपालग, निव्वाणी गरुडकयसेवं ॥१॥

ॐ सनमो विप्पोसहि-पत्ताणंसंतिसामिपायाणं,
झ्रौँ स्वाहामंतेणं, सव्वासिव दुरिअ-हरणाणं ॥२॥

ॐ संति नमुक्कारो, खेलोसहिमाइ लद्धि पत्ताणं,
सौँ ह्रीँ नमो सव्वोसहि पत्ताणं च देइ सिरिं ॥३॥

वाणी तिहुअण सामिणि, सिरिदेवी जक्खराय गणिपिडगा,
गह दिसिपाल सुरिंदा, सया वि रक्खंतु जिणभत्ते ॥४॥

रक्खंतु मम रोहिणि, पन्नत्ती वज्जसिंखला य सया,
वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता काली महाकाली ॥५॥

गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा,
अच्छुत्ता माणसिआ, महामाणसिया उ देवीओ ॥६॥

जक्खा गोमुह महजक्ख, तिमुह जक्खेस तुंबरू कुसुमो,
मायंग विजय अजिआ, बंभो मणुओ सुरकुमारो ॥७॥

छम्मुह पयाल किन्नर, गरूडो गंधव्व तहय जक्खिंदो।
कुबेर (कूबर) वरुणो भिउडी, गोमेहो पास मायंगा ॥८॥

देवीओ चक्केसरि, अजिआ दुरिआरि काली महाकाली,
अच्चुअ संता जाला सुतारयासोय सिरिवच्छा ॥९॥

चंडाविजयंकुसि, पन्नइत्ति निव्वाणि अच्चुआ धरणी,
वइरुट्टछुत्त गंधारी, अंब पउमावई सिद्धा ॥१०॥

इअ तित्थरक्खणरया, अन्ने वि सुरासुरी य चउहावि,
वंतर जोइणि पमुहा, कुणंतु रक्खं सया अम्हं ॥११॥

एवं सुदिट्ठि सुरगण, सहिओ संघस्स संति जिणचंदो,
मज्झवि करेउ रक्खं, मुणिसुंदरसूरिथुअ महिमा ॥१२॥

इअ संतिनाह सम्मदिट्ठी, रक्खं सरइ तिकालं जो,
सव्वोवद्दवरहिओ, स लहइ सुहसंपयं परमं ॥१३॥

अन्नत्थ सूत्र के शब्दार्थ

अन्नत्थ - इसके अलावा (नीचे बताई गई १२ बातों को छोड़कर)

ऊससिएणं - ऊँची (लंबी) सांस लेने से

नीससिएणं - नीचे सांस छोड़ने से (सांस बाहर निकालने से)

खासिएणं - खांसने से

छीएणं - छींक आने से

जंभाइएणं - उबासी आने से

उड्डुएणं - डकार आने से

वायनिसग्गेणं - अपान वायु छूटने से

भमलीए - चक्कर आने से

पित्तमुच्छाए - पित्त के प्रकोप के कारण मूर्च्छा (बेहोशी) आने से

सुहुमेहिं - सूक्ष्म

अंगसंचालेहिं - शरीर के अंगों के हिलने-डुलने से

खेलसंचालेहिं - बलगम (थूक) आने से

दिट्ठिसंचालेहिं- दृष्टि के हिलने से या इधर- उधर देखने से

एवमाइ एहिं - इन आदि (इत्यादि)

आगारेहिं - आगारों से (इन दोषों को टालकर)

अभग्गो - अखंडित (बिना टूटे)

अविराहिओ - अविराधित

हुज्ज - हो

मे - मेरा

काउस्सग्गो - कायोत्सर्ग

जाव - जब तक

अरिहंताणं - अरिहंत

भगवंताणं - भगवंतों को

नमुक्कारेणं - नमस्कार करके

न पारेमि - पारणा न करूँ (कायोत्सर्ग न खोलूँ)

ताव - तब तक

कायं - काया को

ठाणेणं - एक स्थान पर स्थिर रखकर

मोणेणं - मौन रहकर

झाणेणं - ध्यान के द्वारा

अप्पाणं - अपनी काया को

वोसिरामि - वोसिराता हूँ

काउस्सग्ग के १६ आगार का स्वरूप

अन्नत्थयाई बारस, आगारा एवमाईया चउरो,
अगणी पणिंदि छिंदण बोहि खोभाई डक्को य. (भा. गा. ५५)

अन्नत्थ उससिएणं वगेरे १२ आगार (१) ऊँचा श्वास लेने से,

(२) श्वास छोडने से, (३) खांसी आने से, (४) छींक आने से, (५) जम्हाई आने से, (६) डकार आने से, (७) अधो वायु निकलने से, (८) चक्कर आने से, (९) पित्त विकार कें कारण मूर्च्छा आने से, (१०) सूक्ष्म अंग संचालन से, (११) सूक्ष्म रूप से कफ और वायु के संचालन से, (१२) सूक्ष्म रूप से दृष्टि के संचालन से।

(१) अग्नि (२) पंचेन्द्रिय की आड (३) चोर अथवा राजा के उपद्रव के कारण (४) सर्प दंश के भय से, ये १६ आगार है।

काउस्सग्ग के १९ दोष

घोडग लय खंभाई, मालुद्धी निअल सबरि खलिण वहू,
लंबुत्तर थण संजई, भमुहंगुलि वायस कविट्ठो. (भा.गा. ५६)

सिरकंप मूअ वारुणि, पेहत्ति चईज्ज दोस उस्सग्गे,
लंबुत्तर थण संजई, न दोस समणीण सवहु सड्ढीणं. (भा.गा. ५७)

(१) घोटक (२) लता (३) स्तंभादि (४) माल (५) उद्धि (६) निगड (७) शबरी (८) खलिण (९) वधू (१०) लंबुत्तर (११) स्तन (१२) संयति (१३) भमुहंगुलि (१४) वायस (१५) कपित्थ (१६) शिर:कंप (१७) मूक (१८) मदिरा दोष (१९) प्रेक्षादोष (इन १९ दोषोका कायोत्सर्गमें त्याग करना चाहिए। साध्वीजी भगवंत को लंबुत्तर दोष, स्तन दोष और संयति दोष के अतिरिक्त १६ दोष और श्राविका को वधु दोष रहित १५ दोष लगते हैं।)

काव्य विभाग - श्री सीमंधरस्वामी के दोहे

अनंत चोवीशी जिन नमुं, सिद्ध अनंती क्रोड;
केवलधर मुगते गया, वंदु बे कर जोड १

बे कोडी केवलधरा, विहरमान जिन वीश;
सहस कोडी युगल नमुं, साधु नमुं निशदिश २

जे चारित्रे निर्मला, जे पंचानन सिंह;
विषय कषाय नागं जीआ, ते प्रणमुं निशदिश ३

श्री सीमंधरस्वामी का चैत्यवंदन

श्री सीमंधर! जगधणी! आ भरते आवो;
करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो. १

सकल भक्त तुमे धणी, जो होवे अम नाथ;
भवोभव हुं छुं ताहरो, नहि मेलुं हवे साथ. २

सयल संग छंडी करी, चारित्र लइशुं;.
पाय तुमारा सेवीने, शिवरमणी वरीशुं. ३

ए अलजो मुजने घणो ए, पूरो सीमंधर देव;
इहां थकी हुं विनवुं, अवधारो मुज सेव. ४

कर जोडीने विनवु, सामो रही ईशान;
भाव जिनेश्वर भाणने, देजो समकित दान. ५

श्री सीमंधरस्वामी का स्तवन

सुणो चंदाजी! सीमंधर परमातम पासे जावजो,
मुज विनतडी, प्रेम धरीने, एणी पेरे तुमे संभलावजो.
जे त्रण भुवननो नायक छे, जस चोसठ इन्द्र पायक छे;
नाण दरिसण जेहने क्षायक छे. सुणो० १

जेनी कंचन वरणी काया छे, जस धोरी लंछन पाया छे;
पुंडरिगिणी नगरीनो राया छे.सुणो० २

बार पर्षदामांही बिराजे छे, जस चोत्रीस अतिशय छाजे छे;
गुण पांत्रीश वाणीए गाजे छे. सुणो० ३

भविजनने जे पडिबोहे छे, तुम अधिक शीतलगुण सोहे छे;
रूप देखी भविजन मोहे छे. सुणो० ४

तुम सेवा करवा रसियो छुं, पण भरतमां दूरे वसियो छुं;
महा मोहराय कर फसियो छुं. सुणो० ५

पण साहिब चित्तमां धरीयो छे, तुम आणा खडग कर ग्रहीओ छे;
तो कांईक मुजथी डरियो छे. सुणो० ६

जिन उत्तम पूंठ हवे पूरो, कहे पद्मविजय थाउं शूरो;
तो वाधे मुज मन अति नूरो. सुणो० ७

श्री सीमंधरस्वामी की थोय

श्रीसीमंधर जिनवर, सुखकर साहिब देव,
अरिहंत सकलनी, भावधरी करुं सेव,
सकलागम पारग, गणधर भाषित वाणी,
जयवंती आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी. १

श्री आदीश्वर भगवान की थोय

आदिजिनवर राया जास सोवन्न काया,
मरूदेवी माया धोरी लंछन पाया,
जगतस्थिति निपाया शुद्धचारित्र पाया,
केवलसिरिराया मोक्षनगरे सिधाया. १

श्री प्रसन्नचंद्र राजर्षि की सज्झाय

प्रणमुं तुमारा पाय, प्रसन्नचंद्र प्रणमुं तुमारा पाय;
राज छोडी रलीयामणुं रे, जाणी अथिर संसार
वैरागे मन वालीयुं रे, लीधो संयम भार. प्रसन्न०१

स्मशाने काउस्सग्ग रह्या रे, पग उपर पग चढाय;
बाहु बे उंचा करी ने, सूरज सामी दृष्टि लगाय. प्रसन्न०२

दुर्मुख दुत वचन सुणी ने, कोप चढ्यो तत्काल;
मनशुं संग्राम मांडीयो रे, जीव पड्यो जंजाल. प्रसन्न०३

श्रेणिक प्रश्न पूछे ते समे रे, स्वामी एहनी कुण गति थाय;?
भगवंत कहे हमणां मरे तो, सातमी नरके जाय. प्रसन्न०४

क्षण एक आंतरे पूछीयुं रे, सर्वार्थसिद्ध विमान;
वागी देवनी दुंदुभि रे, ऋषि पाम्या केवलज्ञान. प्रसन्न०५

प्रसन्नचंद्र ऋषि मुगते गया रे, श्री महावीरना शिष्य:
रूपविजय कहे धन्य धन्य, दीठा सूत्र मांहे ए प्रत्यक्ष. प्रसन्न०६

वांदणा के २५ आवश्यक

आवश्यक किसे कहते हैं? जो अवश्य ही पालन करने योग्य हों, उन्हें आवश्यक कहते हैं । वांदणा के २५ आवश्यक इस प्रकार हैं:

(१) २ अवनत (२) १ यथाजात (३) १२ आवर्त्त (४) ४ शीर्षनमन (५) ३ गुप्ति (६) २ प्रवेश (७) १ निष्क्रमण

नोट: परीक्षा में ये २५ आवश्यक और १७ संडासा प्रेक्टिकल करके दिखाने होंगे। नीचे दी गई जानकारी केवल समझने के उद्देश्य से है:

- २ अवनत: वंदना करते समय शरीर के ऊपरी भाग को दो बार झुकाना। पहला वंदन करने के लिए गुरु महाराज के क्षेत्र (अवग्रह) में प्रवेश करने की आज्ञा मांगते हुए जब "अणुजाणह मे मिउग्गहं" पद बोला जाता है, तब शरीर का ऊपरी हिस्सा झुकाया जाता है। यह पहला 'अवनत' हुआ। दूसरी बार वंदना के दौरान दूसरा अवनत होता है। इस प्रकार २ अवनत रूपी दो आवश्यक हुए।
- १ यथाजात: जिस प्रकार जन्म लेते समय बच्चे के दोनों हाथ जुड़े होते हैं, उसी प्रकार संपुट किए हुए (जुड़े हुए) हाथों को मस्तक (ललाट) से लगाना 'यथाजात' आवश्यक कहलाता है।
- १२ आवर्त्त: एक वंदना में ६ आवर्त्त आते हैं, तो दो वंदना मिलाकर कुल १२ आवर्त्त होते हैं, जो इस प्रकार हैं: पहले ३ आवर्त "अहो कायं काय" बोलते समय होते हैं। इसमें 'अ' बोलते समय दोनों हाथों की दसों उंगलियों को नाखूनों के स्पर्श के बिना गुरु के चरणों में छुआया जाता है, और 'हो' बोलते समय सीधे हाथ से अपने मस्तक का स्पर्श किया जाता है। इस प्रकार दो-दो अक्षरों के तीन पद बोलते हुए ३ आवर्त्त हुए । इसके बाद हाथ जोड़कर "वइक्कंतो" तक बोला जाता है । वहाँ से आगे तीन-तीन अक्षरों के "जत्ता भे, जवणि ज्जं च भे" के रूप में दूसरे ३ आवर्त्त जानने चाहिए। इसमें पहला अक्षर 'ज' बोलते समय गुरु चरणों में उल्टे हाथ से स्पर्श किया जाता है; 'त्ता' बोलते समय दोनों सीधे हाथों को बीच में विश्राम रूप में रखा जाता है; और तीसरे अक्षर 'भे' पर हाथों को मस्तक से

स्पर्श कराया जाता है। यह एक आवर्त्त हुआ। इसी तरह "जवणिज्" और "जं च भे" के ३-३ अक्षरों पर ऊपर बताई गई विधि के अनुसार ३ आवर्त्त होते हैं । इस प्रकार पहली वंदना में ६ आवर्त्त और उसी तरह दूसरी वंदना में ६ आवर्त्त मिलकर कुल १२ आवर्त्त होते हैं।

- ४ शीर्षनमन: शीर्षनमन का अर्थ है ४ बार सिर झुकाना । इसमें पहले ३ आवर्त्त होने के बाद 'संफासं' बोलते समय पहली बार, और दूसरे ३ आवर्त्त होने के बाद 'खामेमि' बोलते समय दूसरी बार सिर झुकाया जाता है । इस प्रकार एक वंदना में २ बार और दो वंदना मिलाकर कुल ४ शीर्षनमन होते हैं।
- ३ गुप्ति: वंदना करते समय मन, वचन और काया की गुप्ति (संयम) रखना। (अर्थात शरीर को स्थिर और एकाग्र रखना)।
- २ प्रवेश और १ निष्क्रमण: प्रवेश यानी दो बार गुरु महाराज की आज्ञा लेकर उनके क्षेत्र (अवग्रह) में जाना। और निष्क्रमण यानी अवग्रह से बाहर आना। इस विधि में पहली वंदना के समय आज्ञा मांगकर 'निसीहि' कहकर संडासा (सांधा) और जमीन को पूंजकर अवग्रह में प्रवेश किया जाता है। वंदना पूरी होने पर "आवस्सिआए" कहकर पीछे की ओर पूंजते हुए अवग्रह से बाहर निकला जाता है । इसके बाद दूसरी वंदना के लिए दोबारा प्रवेश किया जाता है लेकिन इस बार बाहर नहीं निकला जाता, इसलिए "आवस्सिआए" नहीं कहा जाता । इस तरह २ बार प्रवेश और १ बार निष्क्रमण (बाहर निकलना) होता है ।

इस प्रकार वांदणा के दौरान कुल २५ आवश्यकों का ध्यान रखना चाहिए।

सत्रह संडासा (प्रमार्जना) की विधि

१७ संडासा: संडासा का अर्थ 'साणसी' (चिमटा) होता है। पंचांग प्रणिपात करते समय शरीर के जो-जो अंग चिमटे या जोड़ की तरह मुड़ते हैं, उन स्थानों पर जीवों की विराधना को रोकने के लिए १७ स्थानों पर प्रमार्जना करनी चाहिए । इसीलिए इसका पूरा नाम '१७ संडासा प्रमार्जना' है ।

स्थान और विधि:

- ३ बार पीछे, दाएँ पैर पर-बीच में और बाएँ पैर पर।
- ३ बार आगे, दाएँ पैर पर-बीच में और बाएँ पैर पर।
- ३ बार अवग्रह में प्रवेश करने की भूमि (जमीन) पर।
- १ बार दाएँ मस्तक (सिर) से शुरू करके बाएँ हाथ के ऊपर से उसकी कोहनी तक।
- १ बार बाएँ मस्तक से शुरू करके दाएँ हाथ के ऊपर से उसकी कोहनी तक।
- ३ बार चरवले के ऊपर - मस्तक (सिर) झुकाने के स्थान पर।
- ३ बार खड़े होने से पहले पैर रखने के स्थान पर।

विशेष नोट: पहले ९ प्रमार्जना चरवले से, उसके बाद की ५ मुहपत्ति से और आखिरी ३ प्रमार्जना चरवले से करनी होती हैं।

राजनगर प्रश्नोत्तरी

प्र.५१. छह आवश्यक का अर्थ समझाओ. प्रतिक्रमण में वे कहाँ से कहाँ तक गिने जाते है ?

उ. (१) सामायिक : जिससे समता का लाभ होता है वह पहला आवश्यक। वह देवसि प्रतिक्रमण ठाणे के बाद "करेमि भंते" से लेकर पंचाचार की आठ गाथाओं का काउस्सग्ग करते है वहाँ तक गिना जाता है।

(२) चउवीसत्थो-लोगस्स : जिसमें चौबीस भगवान के नामों का स्मरण होता है वह दूसरा आवश्यक। पंचाचार के आठ गाथाओं का काउस्सग्ग करने के बाद लोगस्स बोलते है उसे गिना जाता है ।

(३) वांदणा : जिसमें गुरुमहाराज को वंदन किया जाता है वह तीसरा आवश्यक है । तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहण के बाद वांदणा दिये जाते है ।

(४) प्रतिक्रमण : जिसमें लगे हुए पापों का प्रायश्चित कर माफी मांगी जाती है वह चौथा आवश्यक है । "इच्छा० देवसिअं आलोउ" से 'आयरिय उवज्झाए' तक गिना जाता है ।

(५) काउस्सग्ग : जिसमें मन-वचन एवं काया की एकाग्रता होती है वह पांचवा आवश्यक है । वह 'आयरिय उवज्झाए' के बाद जो दो लोगस्स और एक लोगस्स का काउस्सग्ग करते है उन्हें इस आवश्यक में गिना जाता है ।

(६) पच्चक्खाण : अविरति का त्याग जिसमें किया जाता है ऐसा पच्चक्खाण छठ्ठे आवश्यक मे है ।

प्र.५२. शीयल (ब्रह्मचर्य) व्रत की नव-वाड कौनसी है ?

उ. १. स्त्री-पशु-नपुंसक न रहते हो ऐसे स्थान में रहना ।

२. स्त्री के साथ राग से बात नहीं करना ।

३. स्त्री जिस आसनपर बैठी हों उस आसन पर पुरुष के दो घडी तक बैठना नहीं और पुरुष बैठे हो उस आसनपर स्त्रीयों को (तीन) प्रहर तक नहीं बैठना ।

४. स्त्री के आंगोपांग राग से नहीं देखना ।

५. जहाँ स्त्री-पुरुष सोये हो अथवा कामक्रीडा की बाते करते हो वहाँ एक दीवाल के अंतर से रहना नहीं ।

६. स्त्री के साथ पहले भोगे हुए भोग याद नहीं करना ।

७. विकार उत्पन्न करें ऐसे घी, दूध इत्यादि रसवाले आहार नही करना ।

८. भूख शांत हो जाये उससे ज्यादा और भारी आहार नहीं करना ।

९. शरीर को सजाना नहीं ।

प्र.५३. स्वस्तिक क्यों करना चाहिये ?

उ. चार गति का नाश करने के लिए स्वस्तिक करना चाहिऐ ।

प्र.५४. गतियाँ कितनी है ? कौन कौनसी है ?

उ. गति चार है । (१) देवगति (२) मनुष्यगति (३) तिर्यंचगति (४) नरकगति ।

प्र.५५. स्वस्तिक के उपरकी तीन ढगलियाँ किसका प्रतीक है ?

उ. रत्नत्रयी का प्रतीक है ।

प्र.५६. रत्नत्रयी के नाम बताओ ?

उ. (१) सम्यग्ज्ञान (२) सम्यग्दर्शन (३) सम्यग्चारित्र ।

प्र.५७. स्वस्तिक के उपर तीन ढगलियाँ और उसके उपर अर्धचंद्र अंकित करते है वह क्या कहलाता है ?

उ. उसे सिद्धशिला कहते है ।

प्र.५८. स्वस्तिक करने के बाद क्या बोलना चाहिये ?

उ. हे प्रभु ! चार गतियों में से छूटने के लिए ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना कर सिद्धशिला पर पहुँचने के लिये समर्थ बनाना ।

प्र.५९. श्री महावीर प्रभु के अन्य नाम बताओ ?

उ. वीर, वर्धमान, चरमजिन, सिद्धार्थ नंदन, ज्ञातपुत्र आदि ।

प्र.६०. गुरुमहाराज के अन्य नाम बताओ ?

उ. साधु, मुनि, श्रमण, निर्ग्रंथ, अणगार, तपस्वी, संयमी आदि ।

प्र.६०(१). आठ कर्मों के नाम और उनके भेद बताइए।

उ. आठ कर्मों के नाम और उनके भेद निम्नलिखित हैं:

	कर्म का नाम	भेद
(१)	ज्ञानावरणीय कर्म	५
(२)	दर्शनावरणीय कर्म	९
(३)	वेदनीय कर्म	२
(४)	मोहनीय कर्म	२८
(५)	आयुष्य कर्म	४
(६)	नाम कर्म	१०३
(७)	गोत्र कर्म	२
(८)	अंतराय कर्म	५

• • •

मौखिक कक्षा ७

सूत्र	: अजितशांति स्तवन (सूत्र ५५)	२५
अर्थ	: लोगस्स सूत्र (शब्दार्थ)	१०
काव्य	: दोहे : श्री सिद्धाचल के नौ	२०
	चैत्यवंदन - श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र	
	स्तवन - विमलाचल नितु वंदिए...	
	थोय - शत्रुंजय मण्डण.... (४ गाथा)	
विधि	: राईअ प्रतिक्रमण की विधि	२०
	राजनगर प्रश्नोत्तरी : ६१ से ८०	१५
कहानी	: चंदनबाला की कहानी	१०
		१००

(५५) श्री अजितशांति स्तवन

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंत सव्वगयपावं, जय गुरु संतिगुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि. ॥१॥ (गाहा.)

ववगयमंगुलभावे, ते हं विउलतवनिम्मलसहावे, निरुवम महप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे. ॥२॥ (गाहा.)

सव्वदुक्खप्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतीणं, सया अजिअसंतीणं, नमो अजिअसंतीणं. ॥३॥ (सिलोगो.)

अजिअजिण! सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम! नामकित्तणं, तह य धिइमईप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम! संति! कित्तणं. ॥४॥ (मागहिआ.)

किरिआविहि संचिअ कम्म किलेस विमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं, अजिअस्स य संति महामुणिणो वि य संतिकरं, सययं मम निव्वुईकारणयं च नमंसणयं. ॥५॥ (आलिंगणयं)

पुरिसा! जई दुक्खवारणं, जइ अ विमग्गह सुक्खकारणं, अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा. ॥६॥ (मागहिआ.)

अरइ रइ तिमिरविरहिअ मुवरय जरमरणं, सुरअसुर-गरुलभुयगवईपयय पणिवइअं, अजिअमहमवि अ सुनय नय-निउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुविदिविजमहिअं सययमुवणमे. ॥७॥ (संगययं.)

तं च जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दव खंति विमुत्ति समाहिनिहिं, संतिकरं पणमामि दमुत्तम तित्थयरं, संति मुणी! मम संति समाहिवरं दिसउ. ॥८॥ (सोवाणयं.)

सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि मत्थयपसत्थ विच्छिन्नसंथियं थिरसरिच्छवच्छं, मयगललीलायमाण वरगंधहत्थि पत्थाणपत्थियं संथवारिहं, हत्थिहत्थबाहुं धंतकणग रुअग निरुवहयपिंजरं, पवरलक्खणोवचिअ सोम चारुरूवं, सुइसुहमणाऽभिराम परमरमणिज्ज वरदेवदुंदुहि निनाय महुरयर सुहगिरं. ॥९॥ (वेड्ढओ.)

अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवोहरिउं, पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं. ॥१०॥ (रासालुद्धओ.)

कुरुजणवय हत्थिणाउर नरीसरो पढमं, तओ महाचक्क वट्टिभोए महप्पभावो, जो बावत्तरि पुरवरसहस्स वरनगर निगमजणवयवइ बत्तीसारायवरसहस्साऽणुयायमग्गो, चउदस वररयण नवमहानिहिचउसट्ठिसहस्सपवरजुवईण सुंदरवई, चुलसी हयगयरह सयसहस्ससामी छन्नवइगामकोडि सामी आसी जो भारहम्मि भयवं. ॥११॥ (वेड्ढओ.)

तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया, संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे. ॥१२॥ (रासानंदिअयं.)

इक्खाग! विदेहनरीसर! नरवसहा! मुणिवसहा! नवसारय ससिसकलाणण! विगयतमा! विहुअरया! अजिउत्तमतेअ गुणेहिं

महामुणि! अमिअबला! विउलकुला! पणमामि ते भवभयमूरण! जगसरणा! मम सरणं. ॥१३॥ (चित्तलेहा.)

देवदाणविंदचंदसुरवंद! हट्ठ तुट्ठ जिट्ठ परम लट्ठरूव! धंतरुप्पपट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल दंत पंति संति! सत्ति-कित्ति-मुत्ति-जुत्ति-गुत्ति-पवर!, दित्त तेअ! वंद! धेय! सव्वलोअ भाविअप्पभावणेअ! पइस मे समाहिं.

॥१४॥ (नारायओ.)

विमलससि कलाइरेअसोमं, वितिमिर सूरकराइरेअतेअं, तिअसवइगणाइरेअ रूवं, धरणि धरप्पवराइरेअसारं. ॥१५॥(कुसुमलया.)

सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं तव संजमे अ अजिअं एस थुणामि जिणं अजिअं. ॥१६॥ (भुअग परिरिंगिअं.)

सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी, तेअगुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी, रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई, सारगुणेहिं पावई न तं धरणिधरवई.

॥१७॥ (खिज्जिअयं.)

तित्थवरपवत्तयं, तमरयरहिअं, धीरजणथुअच्चिअं चुअकलिकलुसं, संतिसुहप्पवत्तयं, तिगरणपयओ, संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे.

॥१८॥ (ललिअयं.)

विणओणय सिररइअंजलि रिसिगणसंथुअं थिमिअं, विबुहाहिवधणवइ नरवइ थुअमहिअच्चिअं बहुसो, अईरूग्गय सरयदिवायर समहिअसप्पभं तवसा, गयणं गणवियरण समुइअ चारणवंदिअं सिरसा.

॥१९॥ (किसलयमाला)

असुर-गरूल-परिवंदिअं, किन्नरोरगनमंसिअं, देवकोडि सयसंथुअं, समणसंघपरिवंदिअं. ॥२०॥ (सुमुहं.)

अभयं अणहं, अरयं अरुयं, अजिअं अजिअं, पयओ पणमे.

॥२१॥ (विज्जुविलसिअं.)

आगया वरविमाण दिव्वकणग-रहतुरय-पहकर-सएहिं हुलिअं, ससंभमोअरण-खुभिअ-लुलिय-चल-कुंडलंगय-तिरीड-सोहंत मउलिमाला.

॥२२॥ (वेड्ढओ.)

जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ता भत्तिसुजुत्ता, आयरभूसिअ-संभमपिंडिअ सुट्ठुसुविम्हिय-सव्वबलोघा, उत्तमकंचणरयण-परूवियभासुर-भूसण-भासुरि-अंगा, गाय-समोणय-भत्ति वसा-गय-पंजलि-पेसिय-सीसपणामा.

॥२३॥ (रयणमाला)

वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं, पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया. ॥२४॥ (खित्तयं.)

तं महामुणिमहंपि पंजली, रागदोस-भय-मोहवज्जिअं, देवदाणव-नरिंद-वंदिअं, संति-मुत्तमं महातवं नमे. ॥२५॥ (खित्तयं.)

अंबरंतर-विआरणिआहिं, ललिअहंसवहु-गामिणिआहिं, पीणसोणिथण-सालिणिआहिं, सकल-कमलदल-लोअणिआहिं. ॥२६॥ (दीवयं.)

पीण-निरंतर-थणभर-विणमिय-गायलयाहिं, मणिकंचणपसिढिल मेहल-सोहिअ-सोणितडाहिं, वरखिंखिणि नेउर-सतिलय-वलय-विभूसणिआहिं, रइकर-चउर मणोहर-सुंदरदंसणिआहिं. ॥२७॥ (चित्तक्खरा.)

देवसुंदरीहिं पायवंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डणप्पगारएहिं केहि केहिं वि, अवंगतिलय पत्तलेहनामएहिं चिल्लएहिं संगयं-गयाहिं, भत्तिसन्नि विट्ठवंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो. ॥२८॥ (नारायओ.)

तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं, धुयसव्वकिलेसं, पयओ पणमामि.
॥२९॥ (नंदिअयं.)

थुअ-वंदिअयस्सा रिसिगण-देवगणेहिं, तो देववहूहिं पयओ पणमिअस्सा, जस्स जगुत्तमसासणअस्सा, भत्तिवसागय पिंडिअयाहिं, देववरच्छरसाबहुआहिं, सुरवर-रइगुण-पंडिअयाहिं. ॥३०॥ (भासुरयं.)

वंससद्द-तंति-ताल-मेलिए, तिउक्खराभिराम-सद्दमीसए कए अ, सुइसमाण-णेअ सुद्ध-सज्ज गीय-पाय-जाल-घंटिआहिं, वलय मेहला कलाव नेउराभिराम सद्दमीसए कए अ, देवनट्टिआहिं, हावभाव विब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंगहारएहिं, वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, तयं तिलोय-सव्वसत्तसंतिकारयं, पसंत-सव्व-पाव-दोसमेसहं, नमामि संति-मुत्तमं जिणं.
॥३१॥ (नारायओ.)

छत्त चामर पडाग जुअ जव मंडिआ, झयवर मगर तुरय सिरिवच्छ सुलंछणा, दीव समुद्द मंदर दिसागय सोहिया, सत्थिअ वसहसीह रह चक्कवरंकिया. ॥३२॥ (ललिअयं)

सहावलट्ठा, समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा, पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा. ॥३३॥ (वाणवासिआ.)

ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअमूलपावया, संथुआ अजिअ संति-पायया, हुंतु मे सिवसुहाण दायया. ॥३४॥ (अपरांतिका.)

एवंतव-बल-विउलं, थुअंमए अजिअ-संति-जिण-जुअलं, ववगय-कम्म-रयमलं, गइं गयं सासयं विउलं. ॥३५॥ (गाहा.)

तं बहुगुणप्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण अविसायं, नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अ प्पसायं. ॥३६॥ (गाहा.)

तं मोएउअ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं, परिसावि अ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं. ॥३७॥ (गाहा.)

पक्खिअ चाउम्मासिअ संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो, सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो. ॥३८॥

जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालंपि अजिअसंतिथयं, न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना वि नासंति. ॥३९॥

जइ इच्छह परमपयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे, ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह. ॥४०॥

लोगस्स सूत्र (नामस्तव सूत्र) अर्थ

लोगस्स - लोक को / लोक में

उज्जोअगरे - उद्योत करने वाले

धम्मतित्थयरे - धर्मरूपी तीर्थ की स्थापना करने वाले

जिणे - जिनों को

अरिहंते - अरिहंत भगवंतों को

कित्तइस्सं - मैं कीर्तन करूँगा / स्तुति करूँगा

चउवीसंपि - चौबीस

केवली - केवलज्ञानी भगवंतों को

उसभमजिअं - श्री ऋषभदेव और श्री अजितनाथ को

च – और

वंदे - मैं वंदना करता हूँ

संभवमभिणंदणंच - श्री संभवनाथ तथा श्री अभिनंदन स्वामी को

सुमइँ - श्री सुमतिनाथ को

पउमप्पहं - श्री पद्मप्रभ प्रभु को

सुपासं - श्री सुपार्श्वनाथ को

चंदप्पहं - श्री चंद्रप्रभ प्रभु को

सुविहिं - श्री सुविधिनाथ को

पुप्फदंतं(दूसरा नाम) - श्री पुष्पदंत को

सीयल सिज्जंस - श्री शीतलनाथ तथा श्री श्रेयांसनाथ को

वासुपुज्जं - श्री वासुपूज्य स्वामी को

विमलमणंतं - श्री विमलनाथ तथा श्री अनंतनाथ को

जिणं - जिन को

धम्मं - श्री धर्मनाथ को

संतिं - श्री शांतिनाथ को

कुंथुं - श्री कुंथुनाथ को

अरं - श्री अरनाथ को

मल्लिं - श्री मल्लिनाथ को

मुणिसुव्वयं - श्री मुनिसुव्रत स्वामी को

नमिजिणं - श्री नमि जिन (नमिनाथ) को

वंदामि - मैं वंदन करता हूँ

रिट्ठनेमिं - श्री अरिष्टनेमि (नेमिनाथ) को

पासं - श्री पार्श्वनाथ को

तह - तथा

वद्धमाणं - श्री वर्धमान स्वामी (महावीर स्वामी) को

एवं - इस प्रकार

मए - मैंने

अभिथुआ - स्तुति किए गए

विहुय - विशेष रूप से क्षय (नष्ट) किए हैं

रयमला - कर्मरूपी रज (धूल) और मैल को जिन्होंने

पहीण - विशेष रूप से नष्ट किए हैं

जरमरणा - बुढ़ापा और मृत्यु को जिन्होंने

जिणवरा - सामान्य केवलियों में श्रेष्ठ

तित्थयरा - तीर्थंकर देव

मे - मुझ पर

पसीयंतु - प्रसन्न होवें

कित्तिय - कीर्तन किए गए (स्तुति किए गए)

वंदिय - वंदन किए गए

महिया - पूजे गए

जे ए - जो ये

लोगस्स - लोक में

उत्तमा - उत्तम हैं

सिद्धा - सिद्ध हुए हैं

आरुग्ग - आरोग्य

बोहिलाभं - सम्यग्दर्शन का लाभ

समाहिवरं - प्रधान समाधि

उत्तमं - उत्तम

दिंतु - प्रदान करें (दें)

चंदेसु - चंद्रमाओं के समूह से भी

निम्मलयरा- अत्यंत निर्मल

आइच्चेसु - सूर्यों के समूह से भी

अहियं - अधिक

पयासयरा - प्रकाश करने वाले

सागरवरगंभीरा - स्वयंभूरमण समुद्र की तरह, अत्यंत गंभीर ऐसे

सिद्धा - सिद्ध भगवंत

सिद्धिं - सिद्धि (मोक्ष)

मम – मुझे

दिसंतु - प्रदान करें

श्री शत्रुंजय के दोहे

सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठ देश मोझार;
मनुष्य जन्म पामी करी, वंदु वार हजार. १

सोरठ देशमां संचर्यो, न चढ्यो गढ गिरनार;
शेत्रुंजी नदीए नाह्यो नहीं, एनो एले गयो अवतार. २

शेत्रुंजी नदीए नाहीने, मुखबांधी मुखकोश;
देव युगादि पूजीए, आणी मन संतोष. ३

एकेकुं डगलुं भरे, शत्रुंजय समो जेह;
ऋषभ कहे भव क्रोडनां, कर्मखपावे तेह. ४

शत्रुंजय समो तीरथ नहि, ऋषभ समो नहि देव;
गौतम सरिखा गुरु नहि, वली वली वंदु तेह. ५

जगमां तीरथ दो वडा, शत्रुंजय गिरनार;
एक गढ ऋषभ समोसर्या एक गढ नेमकुमार. ६

सिद्धाचल सिद्धि वर्या, मुनिवर कोडी अनंत;
आगे अनंता सिद्धशे, पूजो भवि भगवंत. ७

शत्रुंजयगिरि मंडणो, मरूदेवानो नंद;
युगलाधर्म निवारणो, नमो युगादि जिणंद. ८

तन मन धन सुत वल्लभा, स्वर्गादि सुख भोग;
वली वली ए गिरिवंदता, शिवरमणी संयोग. ९

श्री शत्रुंजय का चैत्यवंदन

श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे,
भाव धरीने जे चढे, तेने भव पार उतारे. १

अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीर्थनो राय,
पूर्व नवाणुं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय. २

सूरजकुंड सोहामणो, कवड जक्ष अभिराम,
नाभिरायाकुल मंडणो, जिनवर करुं प्रणाम. ३

श्री शत्रुंजय का स्तवन

विमलाचल नितु वंदीए, कीजे एहनी सेवा,
मानुं हाथ ए धर्मनो, शिवतरू फल लेवा. विमला० १.

उज्जवल जिनगृह मंडली, तिहां दीपे उत्तंगा;
मानुं हिमगिरि विभ्रमे, आई अंबर गंगा. विमला० २.

कोई अनेरुं जग नहि, ए तीरथ तोले;
एम श्रीमुख हरि आगले, श्री सीमंधर बोले विमला० ३.

जे सघलां तीरथ कह्यां, यात्रा फल कहिए;
तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगणुं फल लहिए. विमला० ४.

जन्म सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे;
सुजसविजय संपद लहे, ते नर चिर नंदे. विमला० ५.

श्री शत्रुंजय की थोय

श्री शत्रुंजयमंडण, ऋषभ जिणंद दयाल,
मरूदेवानंदन, वंदन करूं त्रण काल;
ए तीरथ जाणी, पूर्व नव्वाणुं वार,
आदीश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार. १

त्रेवीश तीर्थंकर, चढीया इण गिरिराय,
ए तीरथना गुण,सुर असुरादिक गाय;
ए पावन तीरथ, त्रिभुवन नहि तस तोले,
ए तीरथना गुण, सीमंधर मुख बोले. २

पुंडरिकगिरि महिमा, आगममां प्रसिद्ध,
विमलाचल भेटी, लहीए अविचल रिद्ध;
पंचमी गति पहोंच्या, मुनिवर क्रोडाक्रोड,
इण तीरथे आवी, कर्म विपाक विछोड. ३

श्री शत्रुंजय केरी, अहोनिश रक्षाकारी,
श्री आदि जिनेश्वर, आण हृदयमां धारी;
श्री संघ विघनहर, कवडजक्ष गण भूर,
श्री रविबुधसागर, संघना संकट चूर. ४

राइ प्रतिक्रमण की विधि

१. प्रथम सामायिक लें.

२. फिर खमा... इच्छा... कुसुमिण-दुसुमिण-उड्डावणी राइअ-पायच्छित्त-विसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं? इच्छं, कुसुमिण-दुसुमिण-उड्डावणी राइअ-पायच्छित्त-विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ सूत्र कहकर, चार लोगस्स (काम-भोगादि का स्वप्न आया हो तो सागर-वर-गंभीरा तक) का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, लोगस्स सूत्र कहें.

३. फिर खमा..., जग-चिंतामणि, जं किंचि, नमुत्थुणं, जावंति चेइ, खमा..., जावंत के वि, नमोऽर्हत्, उवसग्ग-हरं एवं जय वीयराय सूत्र कहें.

४. फिर खमा... पूर्वक भगवान्हं आदि कहें.

५. फिर खमा... इच्छा... सज्झाय संदिसाहुं? इच्छं कहें.

६. फिर खमा... इच्छा... सज्झाय करूं? इच्छं कहकर नवकार, भरहेसर सज्झाय एवं नवकार कहें.

७. फिर इच्छकार सूत्र कहें.

८. फिर इच्छा... राइअ पडिक्कमणे ठाउं? इच्छं कहकर, दायां हाथ चरवले / कटासणे के उपर रखकर, सव्वस्स वि राइअ... कहें.

९. फिर नमुत्थुणं, करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्स-उत्तरी, अन्नत्थ सूत्र कहकर, एक लोगस्स का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, लोगस्स सूत्र कहें.

१०. फिर सव्व-लोए अरिहंत-चेइआणं सूत्र (शुरुआत में सव्व-लोए शब्द के साथ अरिहंत-चेइआणं सूत्र) कहकर, एक लोगस्स का काउसग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर-

११. पुक्खरवरदीवड्ढे सूत्र कहकर, पंचाचार के अतिचार (न आता हो तो आठ नवकार) का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र कहें.

१२. फिर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति का पडिलेहण करें.

१३. फिर दो बार वांदणा दें.

१४. फिर राइअं आलोउं, सात लाख, अठारह पापस्थानक, सव्वस्स वि सूत्र कहकर-

१५. नवकार, करेमि भंते, इच्छामि पडिक्कमिउं? एवं वंदित्तु सूत्र कहें. (४३वीं गाथा के अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए पद से खड़े होकर बोलें.)

१६. फिर दो बार वांदणा देकर, अब्भुट्ठिओ खमाकर, फिर से दो बार वांदणा दें.

१७. फिर आयरिय-उवज्झाए, करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ सूत्र कहकर, तप-चिन्तन (न आता हो तो सोलह नवकार) का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, लोगस्स सूत्र कहें.

१८. फिर छट्ठे आवश्यक की मुहपत्ति का पडिलेहण करें.

१९. फिर दो बार वांदणा देकर, सकल तीर्थ कहें.

२०. फिर इच्छकारि... पच्चक्खाण का आदेश दो जी कहकर, यथाशक्ति पच्चक्खाण लें.

२१. फिर सामायिक, चउव्वीसत्थो, वंदण, पडिक्कमण, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण कर्यु छे जी; इच्छामो अणुसट्ठिं, नमो खमासमणाणं कहकर, पुरुष नमोऽर्हत् और विशाल-लोचन कहें एवं स्त्रीयाँ संसार-दावानल की तीन गाथाएं कहें.

२२. फिर नमुत्थुणं, अरिहंत-चेइआणं, अन्नत्थ सूत्र कहकर, एक नवकार का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, नमोऽर्हत् एवं कल्लाण-कंदं की प्रथम स्तुति कहें.

२३. फिर लोगस्स, सव्वलोए अरिहंत चेइआणं सूत्र कहकर, एक नवकार का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, द्वितीय स्तुति कहें.

२४. फिर पुक्खरवरदीवड्ढे, अन्नत्थ सूत्र कहकर, एक नवकार का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, तृतीय स्तुति कहें.

२५. फिर सिद्धाणं बुद्धाणं, वेयावच्च-गराणं, अन्नत्थ कहकर, एक नवकार का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, नमोऽर्हत् एवं चतुर्थ स्तुति कहें.

२६. फिर नमुत्थुणं सूत्र कहकर--

२७. खमा... पूर्वक भगवान्हं आदि कहें.

२८. फिर दायां हाथ चरवले / कटासणे पर रखकर, अड्ढाइज्जेसु सूत्र कहें.

२९. फिर खमा... पूर्वक सीमंधरस्वामी दोहे कहकर, चैत्य-वन्दन की विधि के अनुसार श्री सीमंधर स्वामी का चैत्य-वन्दन करें.

३०. फिर खमा... पूर्वक श्री सिद्धाचल तीर्थ के दोहे कहकर, चैत्य-वन्दन

की विधि के अनुसार श्री सिद्धाचल तीर्थ का चैत्य-वन्दन करें.

(यहां पर राइअ प्रतिक्रमण समाप्त होता है.)

३१. फिर समय होने पर विधि पूर्वक सामायिक पारें.

राजनगर प्रश्नोत्तरी

प्र.६१. पूजा के मुख्य कितने भेद है ? कौन कौन से ?

उ. पूजा के दो भेद है – १. द्रव्यपूजा, २. भावपूजा ।

प्र.६२. द्रव्यपूजा और भावपूजा यानि क्या ?

उ. द्रव्यपूजा यानि जल-चंदन-पुष्पादि सामग्री द्वारा प्रभु की पूजा करना और भावपूजा यानि चैत्यवंदन और गुणगान आदि करना ।

प्र.६३. द्रव्यपूजा कितने प्रकार की है ?

उ. द्रव्यपूजा पांच, आठ, सत्रह, एकवीस और एकसो आठ प्रकार की है ।

प्र.६४. भावपूजा कितने प्रकार की होती है ?

उ. चैत्यवंदन करना, स्तुति बोलना, गीत, नृत्य, भावना से भावित होना इत्यादि अनेक प्रकार की होती है ।

प्र.६५. अष्टप्रकारी पूजा के नाम बताओ ?

उ. १. जलपूजा, २. चंदनपूजा, ३. पुष्पपूजा, ४. धूपपूजा, ५. दीपक पूजा, ६. अक्षतपूजा, ७. नैवेद्यपूजा, ८. फलपूजा ।

प्र.६६. द्रव्यपूजा के मुख्य कितने भेद है ? कौन से ?

उ. दो भेद है – १. अंगपूजा, २. अग्रपूजा ।

प्र.६७. अंगपूजा यानि क्या ? कौन कौनसी पूजा अंगपूजा में गिनी जाती है ?

उ. अंगपूजा यानि शुद्ध द्रव्यों द्वारा प्रभुजी की पूजा करना । प्रथम तीन – १. जलपूजा, २. चंदनपूजा, ३. पुष्पपूजा अंगपूजा कहलाती है ।

प्र.६८. अग्रपूजा यानि क्या ? कौन कौन सी पूजा अग्रपूजा में आती है ?

उ. प्रभु के सन्मुख रहकर जो पूजा की जाती है । अंतिम पाँच पूजा अग्रपूजा है। ४. धूपपूजा, ५. दीपकपूजा, ६. अक्षतपूजा, ७. नैवेद्य पूजा, ८. फलपूजा ।

प्र.६९. पंचामृत यानि क्या ?

उ. दूध, दही, शक्कर, घी और पानी ।

प्र.७०. जलपूजा यानि क्या ?

उ. जलपूजा यानि प्रथम पंचामृत से प्रभु का अभिषेक कर फिर पानी से प्रक्षाल करना वह जलपूजा कहलाती है ।

प्र.७१. चंदनपूजा यानि क्या ?

उ. चंदनपूजा यानि केसर, चंदन, बरास, कस्तुरी वगैरह से प्रभु की पूजा करना ।

प्र.७२. पुष्पपूजा यानि क्या ?

उ. पुष्पपूजा यानि सुगंधी रंगबिरंगी विविध उत्तम फुल प्रभु को चढ़ाना ।

प्र.७३. धूपपूजा यानि क्या ?

उ. धूपपूजा यानि प्रभु के सन्मुख खड़े रहकर दशांग, कपूर, अगरबत्ती, चंदन का धूप करना ।

प्र.७४. दीपकपूजा यानि क्या ?

उ. प्रभु के सन्मुख खड़े रहकर आरती-मंगल दीवा उतारना अथवा प्रभु के आगे दीपक उतारना ।

प्र.७५. अक्षतपूजा यानि क्या ?

उ. अक्षतपूजा यानि प्रभु के आगे स्वस्तिक या अष्टमंगल आलेखना ।

प्र.७६. नैवेद्यपूजा यानि क्या ?

उ. नैवेद्यपूजा यानि स्वस्तिक के उपर पतासा, शक्कर, पेड़ा, बरफी आदि रखना ।

प्र.७७. फलपूजा यानि क्या ?

उ. फलपूजा यानि सिद्धशिला पर श्रीफल, बदाम, सुपारी, नारंगी, मोसंबी, आम, जामफल आदि फल रखना ।

प्र.७८. देवगति और मनुष्यगति में कौन जा सकता है ?

उ. जो जीव दान-शील, तप, भावना, जिनपूजा, सामायिक आदि धार्मिक कार्य करता है वह देवगति या मनुष्यगति पाता है ।

प्र.७९. तिर्यंचगति में कौन जाता है ?

उ. हृदय में वक्रता-छल-कपट रखनेवाले, ठगनेवाले, प्रपंची, शल्यवाले तिर्यंचगति में जाते हैं ।

प्र.८०. नरकगति में कौन जाता है ?

उ. मनुष्य अथवा तिर्यंच बहुत भयंकर पाप करते है वे नरकगति में जाते है जैसे कि पंचेन्द्रिय प्राणी का वध करे अथवा मांसाहार आदि करे वह नरकगति में जाता है ।

चंदनबाला की कहानी

जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी जब छद्मस्थ अवस्था (दीक्षा के बाद और केवलज्ञान से पहले की साधना का काल) में थे, तब उन्होंने एक अत्यंत कठिन और असंभव जैसा 'अभिग्रह' धारण किया था । उन्होंने निश्चय किया था कि मेरा सोचा हुआ संकल्प पूर्ण होगा तभी मैं पारणा करूँगा । उनका संकल्प इस प्रकार था कि: गोचरी व्होराने वाली स्त्री राजकुमारी हो, लेकिन वह दासी बनी हो। उसके पैरों में लोहे की बेड़ियाँ (जंजीरें) हों। उसका सिर मुंडाया हुआ हो। वह तीन दिनों की भूखी हो । उसके हाथ में सूपड़े में उड़द के बाकुले (उबले हुए उड़द के दाने) हों । उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह रही हो । उसका एक पैर घर की चौखट के अंदर और दूसरा पैर बाहर हो ।

इस तरफ चंपानगरी की राजकुमारी वसुमती, युद्ध के कारण अनाथ होकर बिक चुकी थी। कौशाम्बी के धनावह सेठ उसे अपनी बेटी मानकर अपने घर लाए और उसका नाम 'चंदना' रखा । चंदना के रूप और सद्गुणों को देखकर सेठ की पत्नी मूला सेठानी ईर्ष्या की आग में जल उठी। झूठी शंका के वश से मूला ने चंदना पर भयानक अत्याचार करने का निश्चय किया । उसने नाई को बुलाकर चंदना का सिर मुंडवा दिया और उसके पैरों में लोहे की बेड़ियाँ डाल दीं । चंदना को एक अंधेरी कोठरी में बंद कर दिया और तीन दिनों तक उसे भूखा-प्यासा रखा ।

तीन दिन बाद जब बाहर से लौटे सेठ को सत्य का पता चला तो उनका हृदय काँप उठा। उन्होंने घर में खाने के लिए कुछ न होने के कारण, रोते हृदय से चंदना को सूपड़े में बचे हुए उड़द के बाकुले दे दिए। चंदना ने सोचा: "भले ही मैं इतने दिनों की भूखी हूँ, लेकिन पहले किसी साधु (मुनिराज) को व्होराने के बाद ही भोजन ग्रहण करूँगी।" उसकी अंतरात्मा की शुद्धि और भक्ति इतनी उच्च कोटि की थी कि स्वयं भगवान महावीर वहाँ पधार गए । प्रभु को देखकर

चंदनबाला भगवान को व्होराने के लिए चौखट की तरफ दौड़ी । भगवान ने देखा कि उनके अभिग्रह की सभी शर्तें पूरी हो रही थीं, लेकिन एक कमी थी-चंदनबाला की आँखों में आँसू नहीं थे। इसलिए जब भगवान जाने के लिए मुड़े, तो यह देखकर चंदनबाला का हृदय भर आया और वह फूट-फूट कर रोने लगी। और भगवान ने देखा-उनका अभिग्रह पूर्ण हो चुका था! भगवान ने चंदनबाला के हाथों से उड़द के बाकुले ग्रहण किए और प्रभु की साढ़े पांच महीने के कठिन तपस्या का पारणा हुआ । उसी क्षण देवों ने आकाश से रत्नों की वर्षा की और देव-दुन्दुभि के नाद गूँज उठे। चंदनबाला के पैरों की बेड़ियाँ सोने के पायल में बदल गईं और उसके बाल फिर से सुंदर हो गए। इस चमत्कार को देखकर राजा शतानीक और रानी मृगावती भी वहाँ दौड़े चले आए। चंदनबाला की पवित्रता को जानकर पूरा नगर उसके चरणों में झुक गया। भगवान महावीर को केवलज्ञान प्राप्त होने के बाद, चंदनबाला उनकी प्रथम शिष्या बनीं। वे 'आर्या चंदनबाला' के नाम से जानी गईं और हजारों साध्वियों की प्रमुखा बनीं।

बोध : यह कथा हमें सीखाती है कि शंका सोने की लंका को भी जलाकर राख कर देती है, जबकि अटूट श्रद्धा और शुद्ध भाव हो तो स्वयं भगवान भी द्वार पर पधारते हैं। चंदनबाला का जीवन तप, शील (पवित्रता) और नि:स्वार्थ भक्ति का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। मूला सेठानी ने केवल झूठी शंका के कारण घोर पाप किया जिसका फल उसे भुगतना पड़ा। शंका इंसान से भयानक आर्तध्यान और रौद्रध्यान करवाती है; जो हमें नरक की ओर ले जाता है। वहीं, चंदनबाला ने अत्यंत कठिन परिस्थितियों में भी अपनी पवित्रता और धैर्य को कभी नहीं खोया।

● ● ●

मौखिक कक्षा ८

सूत्र	:	सकलार्हत्, स्नातस्या, संतिकरम्,	३५
		अजितशांति पुनरावर्तन (सूत्र ५२ से ५५)	
		बडी शान्ति (सूत्र ५६)	
अर्थ	:	करेमि भंते और सामाइय वयजुत्तो सूत्र (शब्दार्थ)	१०
काव्य	:	चैत्यवंदन: कल्पतरुवर कल्पसूत्र...	१५
		स्तवन: सुणजो साजन...	
		थोय: पुण्य का पोषण - ४ गाथा	
पच्चक्खाण	:	नवकारशी, दिवसचरिम, पाणहार	१०
विधि	:	देवसिअ प्रतिक्रमण की विधि	२०
		राजनगर प्रश्नोत्तरी : ८१ से ९०	१०
			१००

(५६) बडी शान्ति (बृहच्छांति) स्तोत्रम्

भो भो भव्या:! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद्, ये यात्रायां त्रिभुवन-
गुरो-रार्हता! भक्तिभाज:! तेषां शांतिर्भवतु भवता मर्हदादि- प्रभावा,
दारोग्यश्रीधृति-मतिकरी क्लेश विध्वंसहेतु:. ॥१॥

भो! भो! भव्यलोका! इह हि भरतैरावत विदेह संभवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासन प्रकम्पानन्तर-मवधिना विज्ञाय, सौधर्माधिपति: सुघोषाघण्टा चालनानन्तरं सकल सुरासुरेन्द्रै: सह समागत्य, सविनय-मर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृङ्गे, विहितजन्माभिषेक: शान्तिमुद्घोषयति यथा, ततोऽहं कृतानुकार-मिति कृत्वा, महाजनो येन गत: स पन्था:, इति भव्यजनै: सह

सभी अरिहंत प्रभु के जीव का जब च्यवन होता है तब नरक के जीवों को भी सुख की प्राप्ति होती है.

समेत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शान्तिमुद्घोषयामि, तत्पूजा-यात्रा-स्नात्रादि महोत्सवानन्तरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा. ॥२॥

ॐ पुण्याहं पुण्याहं, प्रीयन्तां प्रीयन्तां, भगवंतोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिन-स्त्रिलोकनाथा-स्त्रिलोकमहिता-स्त्रिलोकपूज्या-स्त्रिलोकेश्वरा-स्त्रिलोकोद्योतकराः. ॥३॥

ॐ ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन सुमति पद्मप्रभ सुपार्श्व चन्द्रप्रभ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूजय विमल अनन्त धर्म शान्ति कुन्थु अर मल्लि मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व वर्द्धमानान्ता जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा. ॥४॥

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपु-विजय-दुर्भिक्ष-कान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा. ॥५॥

ॐ ह्री श्री धृति मति कीर्ति कान्ति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्यासाधन-प्रवेश-निवेशनेषु सुगृहीत नामानो जयन्तु ते जिनेन्द्राः. ॥६॥

ॐ रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रशृङ्खला वज्राङ्कुशी अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता काली महाकाली गौरी गान्धारी सर्वास्त्रा महाज्वाला मानवी वैरोट्या अच्छुप्ता मानसी महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा. ॥७॥

ॐ आचार्योपाध्याय-प्रभृति-चातुर्वर्णस्य श्री श्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु. ॥८॥

ॐ ग्रहाश्चन्द्र-सूर्याङ्गारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहिताः सलोकपालाः सोम यम वरुण कुबेर वासवादित्य स्कन्द विनायकोपेताः, ये चान्येऽपि ग्राम नगर क्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम् अक्षीण कोश कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा. ॥९॥

ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृत् स्वजन संबन्धि बन्धुवर्ग सहिता नित्यं चामोद प्रमोद कारिणः, अस्मिंश्च भूमण्डल आयतन निवासि साधु साध्वी श्रावक श्राविकाणां रोगोपसर्ग व्याधि दुःख दुर्भिक्ष दौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु. ॥१०॥

सभी अरिहंत प्रभु के जन्म के समय चौदह राजलोक प्रकाशित होता है.

ॐ तुष्टि पुष्टि ऋद्धिवृद्धि मांगल्योत्सवा: सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु दुरितानि, शत्रव: पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा. ॥११॥

श्रीमते शान्तिनाथाय, नम: शान्तिविधायिने,
त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये. ॥१॥

शान्ति: शान्तिकर: श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरु:,
शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहेगृहे. ॥२॥

उन्मृष्ट-रिष्ट-दुष्ट, ग्रहगति दु:स्वप्न-दुर्निमित्तादि,
संपादित हित-संपन्नामग्रहणं जयति शान्ते:. ॥३॥

श्री संघ जगज्जनपद राजाधिप-राजसन्निवेशानाम्,
गोष्ठिक पुरमुख्याणां, व्याहरणै-र्व्याहरेच्छान्तिम्. ॥४॥

श्री श्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु, श्री जनपदानां शान्तिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु, श्री राजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु. श्री गोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु, श्री पौरमुख्याणां शान्तिर्भवतु, श्री पौरजनस्य शान्तिर्भवतु, श्री ब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा.

एषां शान्ति: प्रतिष्ठा यात्रा स्नात्राद्यवसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा कुंकुम चन्दन कर्पूराऽगरु धूपवास कुसुमांजलि समेत: स्नात्रचतुष्किकायां श्री संघ समेत: शुचिशुचिवपु:, पुष्प वस्त्र चन्दना भरणालङ्कृत: पुष्पमालां कण्ठे कृत्वा, शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति.

नृत्यन्ति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मंगलानि, स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके. ॥१॥

शिवमस्तु सर्वजगत:, परहित निरता भवन्तु भूतगणा:,
दोषा: प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवतु लोक: ॥२॥

अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी;
अम्ह सिवं, तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा. ॥३॥

धर्म अर्थात् काम क्रोधादि रोग को नष्ट करनेवाला सर्जन डॉक्टर.

उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः,
मनः प्रसन्नतामेति, पूजयमाने जिनेश्वरे. ॥४॥

सर्व-मंगल-मांगल्यं, सर्वकल्याण-कारणम्,
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम्. ॥५॥

करेमि भंते सूत्र (सामायिक दंडक सूत्र) शब्दार्थ

करेमि - मैं करता हूँ
भंते ! - हे पूज्य भगवंत! / हे गुरुदेव!
सामाइयं - सामायिक
सावज्जं - पापकारी
जोगं - योग का
पच्चक्खामि - पच्चक्खाण करता हूँ
नियमं - नियम को
पज्जुवासामि - पर्युपासना करता हूँ – यानी सेवन करता हूँ।
दुविहं - दो प्रकार से
तिविहेणं - तीन प्रकार से
मणेणं - मन से
वायाए - वचन से
काएणं - काया से
न करेमि - स्वयं न करूँ
न कारवेमि - दूसरों से न करवाऊँ
तस्स - उस (पूर्व में किए गए पाप) से
पडिक्कमामि - पीछे हटता हूँ
निंदामि - आत्म-साक्षी से निंदा करता हूँ
गरिहामि - गुरु-साक्षी से विशेष रूप से निंदा करता हूँ
अप्पाणं - अपनी आत्मा को
वोसिरामि - मैं पाप प्रवृत्तियों से अलग करता हूँ

सामाइय वयजुत्तो सूत्र (सामायिक पारने का सूत्र) अर्थ

सामाइयवय - सामायिक के व्रत से
जुत्तो - सहित / युक्त
जाव - जब तक
मणे - मन में
होइ - हो / होता है
नियमसंजुत्तो - नियम से युक्त
छिन्नइ - छेदा जाता है / नष्ट होता है
असुहं - अशुभ
कम्मं - कर्म
सामाइअ – सामायिक
जत्तिआ वारा - जितनी बार
सामाइअंमि - सामायिक में

उ - और (पुनः)

कए - करने पर / किए जाने पर

समणो इव - साधु की तरह / साधु के समान

सावओ - श्रावक

हवइ - होता है

जम्हा - जिसके लिए

एएण - इस / उस

कारणेणं - कारण से

बहुसो- बहुत बार / बार-बार

कुज्जा - करना चाहिए

काव्य विभाग

पर्युषणपर्व का चैत्यवंदन

कल्पतरूवर (सम) कल्पसूत्र, पूरे मन वंछित;
कल्पधरे (सूत्र) धुरथी सुणो, श्रीमहावीर चरित. १

क्षत्रियकुंडे नरपति (ग्राम्यनगर), सिद्धारथ राय;
राणी त्रिशला तणी कुखे, कंचन समकाय २

पुष्पोत्तरवरथी चव्या ए, उपज्या पुण्य पवित्र;
चतुरा चौद सुपन लहे, उपजे विनय विनीत. ३

पर्युषणपर्व का स्तवन

सुणजो साजन संत पजुसण आव्या रे......
तमे पुण्य करो पुण्यवंत, भविक मन भाव्यां रे....
वीर जिणेसर अति अलवेसर, व्हाला मारा, परमेश्वर एम बोले रे,
पर्वमांहे पजुसण महोटां, अवर न आवे तस तोले. रे पजु० १

चउपदमां जेम केशरी मोटो, व्हाला० खगमां गरूड ते कहीए रे,
नदीमांही जेम गंगा म्होटी, नगमां मेरू लहीए रे. पजु० २

भूपतिमां भरतेश्वर भाख्यो, व्हाला० देव मांहे सुरइन्द्र रे,
तीरथमां शत्रुंजय दाख्यो, ग्रहगणमां जेम चंद्र रे. पजु० ३

दशरा दिवाली ने वली होली, व्हाला० अखात्रीज दिवासो रे,
बलेव प्रमुख बहुलां छे बीजां, पण नहि मुक्तिनो वासो रे. पजु० ४

ते माटे तमे अमर पलावो, व्हाला० अट्ठाई महोत्सव कीजे रे,
अट्ठमतप अधिकाइए करीने, नरभव लाहो लीजे रे. पजु० ५

ढोल ददामा भेरी ने फेरी, व्हाला० कल्पसूत्रने जगावो रे,
झांझरना झमकार करीने, गौरीनी टोली मली आवो रे. पजु० ६

सोना रूपाना फूलडे वधावो, व्हाला० कल्पसूत्रने पूजो रे,
नव वखाण विधिए सांभलता, पाप मेवासी ध्रुजो रे. पजु० ७

एम अट्ठाई महोत्सव करतां, व्हाला० बहुजीव जग उद्धरीया रे,
विबुध विमल वर सेवक नय कहे, नव निधि ऋद्धि सिद्धिवरीया रे. पजु० ८

पर्युषणपर्व की थोय

पुण्यनुं पोषण पापनुं शोषण, पर्व पजुसण पामीजी,
कल्प घरे पधरावो स्वामी, नारी कहे शिर नामीजी;
कुंवर गयवर खंधे चढावी, ढोल निशान वजडावोजी,
सद्गुरु संगे चढते रंगे, वीरचरित्र सुणावोजी. १

प्रथम वखाणे धर्मसारथीपद, बीजे सुपना चारजी,
त्रीजे सुपन पाठक वली चोथे, वीर जनम अधिकारजी;
पांचमे दीक्षा छट्ठे शिवपद, सातमे जिन त्रेवीशजी,
आठमे थिरावली संभलावी, पियूडा पूरो जगीशजी. २

छट्ठ अट्ठम अट्ठाई कीजे, जिनवर चैत्य नमीजे जी,
वरसी पडिक्कमणुं मुनि वंदन, संघ सयल खामीजेजी;
आठ दिवस लगे अमर पलावी, दान सुपात्रे दीजेजी,
भद्रबाहु गुरु वयण सुणीने, ज्ञान सुधारस पीजेजी. ३

तीरथमां विमलाचल गिरिमां, मेरु महीधर जेमजी,
मुनिवरमांहि जिनवर मोटा, पर्व पजुसण तेमजी;
अवसर पामी साहम्मिवच्छल, बहु पकवान्न वडाइजी,
खिमाविजय जिन देवी सिद्धाइ, दिन दिन अधिक वधाइजी. ४

पच्चक्खाण

नवकारशी

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, (पच्चक्खामि) चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ. (वोसिरामि.)

(हमें स्वयं पच्चक्खाण करना हो तो पच्चक्खाइ तथा वोसिरइ की जगह अनुक्रमसे पच्चक्खामि और वोसिरामि बोलना चाहिये।)

(गुरु भगवंत पच्चक्खाण देते हो तब वे (गुरू) पच्चक्खाइ/वोसिरइ बोले तब हमें पच्चक्खामि / वोसिरामि बोलना चाहिये।)

पोरिसि, साड्ढपोरिसि

उग्गए सूरे पोरिसिं साड्ढपोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ (वोसिरामि.)

चोविहार, तिविहार, दुविहार

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) चउव्विहं पि आहारं (तिविहं पि आहारं दुविहं पि आहारं) असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ. (वोसिरामि.) (तिविहार मे असणं, खाइमं, साइमं और दुविहार मे असणं, खाइमं बोलना है ।)

पाणहार

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि), अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ. (वोसिरामि)

देवसिअ प्रतिक्रमण की विधि

१ प्रथम सामायिक लें.

२ फिर (दिन में पानी पीया हो तो) खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं कहकर, मुहपत्ति का पडिलेहण करें.

३ फिर (आहार किया हो तो) दो बार वांदणा दें.

४ फिर इच्छकारी भगवन् पसाय करी पच्चक्खाण का आदेश देनाजी कहकर, गुरु महाराज से (न हो तो सामायिक में स्थित वडील गृहस्थ से या स्वयं) पच्चक्खाण लें.

५ फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्य-वंदन करूं? इच्छं, कहकर, गुरु महाराज (न हो तो सामायिक में स्थित वडील गृहस्थ या स्वयं) सकल-कुशल-वल्ली, चैत्य-वन्दन और जं किंचि कहें.

६ फिर नमुत्थुणं, अरिहंत-चेइआणं, अन्नत्थ कहकर, एक नवकार का काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारकर नमोऽर्हत् कहकर पहली थोय कहें.

७ फिर लोगस्स, सव्व-लोए अरिहंत-चेइआणं अन्नत्थ कहकर, एक नवकार का काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारकर, दूसरी थोय कहें.

८ फिर पुक्खरवरदीवड्ढे, वंदणवत्तियाए, अन्नत्थ कहकर, एक नवकार का काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारकर, तीसरी थोय कहें.

९ फिर सिद्धाणं बुद्धाणं, वेयावच्च-गराणं, अन्नत्थ कहकर एक नवकार का काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारकर, नमोऽर्हत् कहकर, चौथी थोय कहें.

१० फिर नमुत्थुणं कहें.

११ फिर खमा... पूर्वक भगवान्हं आदि चार खमासमण कहें.

१२ फिर इच्छा... देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं? इच्छं कहकर, दायां हाथ चरवले / कटासणे पर रखकर, सव्वस्स-वि... कहें.

१३ फिर करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ कहकर, पंचाचार के अतिचार (न आता हो तो आठ नवकार) का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पार कर, लोगस्स कहें.

१४ फिर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति का पडिलेहण कर, दो बार वांदणा दें.

१५ फिर इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअं आलोउं?, सात लाख, अठारह पापस्थानक, एवं सव्वस्स वि कहें.

१६ फिर नवकार, करेमि भंते, इच्छामि पडिक्कमिउं? एवं वंदित्तु कहें. फिर अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए पद... (गाथा ४३ वीं के) से खड़े होकर कहें.

१७ फिर दो बार वांदणा देकर, अब्भुट्ठिओ खमाकर, फिर से दो बार वांदणा दें.

१८ फिर हाथ जोडकर मस्तक झूकाकर, आयरिय उवज्झाए कहें.

१९ फिर करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्स उत्तरी एवं अन्नत्थ कहकर, दो लोगस्स का काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारकर, लोगस्स कहें.

२० फिर सव्व-लोए अरिहंत-चेइआणं अन्नत्थ कहकर, एक लोगस्स का

काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारकर--

२१ पुक्खरवरदीवड्ढे, वंदणवत्तियाए, अन्नत्थ कहकर, एक लोगस्स का काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारकर, सिद्धाणं बुद्धाणं कहें.

२२ फिर सुअ-देवयाए करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ कहकर, एक नवकार का काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारकर, पुरुष नमोऽर्हत् और सुअदेवया की स्तुति कहें एवं स्त्रीयाँ मात्र कमलदल की स्तुति कहें.

२३ फिर खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ कहकर, एक नवकार का काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारकर, पुरुष नमोऽर्हत् और जिसे खित्ते की स्तुति कहें एवं स्त्रीयाँ मात्र यस्याः क्षेत्रं की स्तुति कहें.

२४ फिर एक नवकार कहकर, छट्ठे आवश्यक की मुहपत्ति का पडिलेहण करके, दो बार वांदणा दें.

२५ फिर सामायिक, चउव्वीसत्थो, वंदन, पडिक्कमण, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण किया है कहें.

२६ फिर बैठकर, इच्छामो अणुसट्ठिं, नमो खमासमणाणं कहकर, पुरुष नमोऽर्हत् और नमोऽस्तु वर्धमानाय स्तुति कहें एवं स्त्रीयाँ संसार-दावा स्तुति की तीन गाथा कहें.

२७ फिर नमुत्थुणं, नमोऽर्हत्, स्तवन कहें. (फिर सिर्फ पुरुष ही वरकनक बोलें.)

२८ फिर खमा... पूर्वक भगवान्हं आदि चार खमासमण कहें.

२९ फिर दायां हाथ चरवले / कटासणे पर रखकर, अड्ढाइज्जेसु कहें.

३० फिर इच्छा... देवसिअ-पायच्छित्त-विसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं? इच्छं, देवसिअ-पायच्छित्त-विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ कहकर, चार

लोगस्स का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, लोगस्स कहें.

३१ फिर खमा... इच्छा... सज्झाय संदिसाहुं? इच्छं कहें.

३२ फिर खमा... इच्छा... सज्झाय करूं? इच्छं कहकर, नवकार, सज्झाय एवं नवकार कहें.

३३ फिर खमा... इच्छा... दुक्ख-क्खय कम्म-क्खय निमित्तं काउस्सग्ग करूं? इच्छं, दुक्ख-क्खय कम्म-क्खय निमित्तं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ कहकर, संपूर्ण चार लोगस्स का काउस्सग्ग कर, काउस्सग्ग पारकर, नमोऽर्हत् एवं लघु-शान्ति बोलकर, लोगस्स कहें. (यदि समूह में प्रतिक्रमण करते हो तो प्रथम एक व्यक्ति काउस्सग्ग पार कर लघु-शान्ति बोले व अन्य कायोत्सर्ग मुद्रा में ही रहकर संपूर्ण लघु-शान्ति सुन लेने के बाद ही काउस्सग्ग पारें.)

(यहां पर देवसिअ प्रतिक्रमण समाप्त होता है. आगे सामायिक पारने के लिए विधि शुरु होती है.)

३४ फिर खमासमण, इरियावहियं, तस्सउत्तरी, अन्नत्थ कहकर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्स बोलना.

३५ फिर चैत्यवंदन मुद्रा मे चउक्कसाय, नमुत्थुणं, जावंति चेइ, खमा..., जावंत के वि, नमोऽर्हत्, उवसग्गहरं एवं जय वीयराय कहें.

३६ फिर सामायिक पारने की विधि के अनुसार आदेश मांगकर, सामायिक पारें.

राजनगर प्रश्नोत्तरी

प्र.८१. श्री जिनेश्वर भगवंत ने धर्म कितने प्रकार के बताये हैं ?

उ. श्री जिनेश्वर भगवंतों ने धर्म दो प्रकार के बताये हैं – १. साधुधर्म, २. श्रावक धर्म ।

प्र.८२. प्रभु के दर्शन करने से क्या लाभ होता है ?

उ. प्रभु अट्ठारह दोषों से रहित और सर्व गुणों सहित है अतः उनके दर्शन करने से हमारी आत्मा उनकी तरफ झुकती है, आकर्षित होती है, इससे हमारे दोष जाते है और गुण प्रगट होते है। संक्षेप में प्रभु के दर्शन से प्रभु जैसे गुण आते है और दोष चले जाते है ।

प्र.८३. कल्याणक यानि क्या ? उनके नाम बताओ –

उ. कल्याणक यानि कल्याण करनेवाले दिन। अर्थात् जिन दिनों में तीर्थंकर परमात्मा देवगति में से अथवा नरकगति में से च्यवन पाकर माता की कुक्षि में आते हैं, जन्म पाते हैं, दीक्षा लेते हैं, केवलज्ञान पाते हैं और मोक्ष जाते हैं वे पवित्र दिन –

१. च्यवन, २. जन्म, ३. दीक्षा, ४. केवलज्ञान, ४. मोक्ष ये पाँच कल्याणक हैं ।

प्र.८४. श्री महावीर प्रभु के पाँच कल्याणक कब कब हुए ?

उ. च्यवन कल्याणक	आषाढ शुक्ल ६
जन्म कल्याणक	चैत्र शुक्ल १३
दीक्षा कल्याणक	कार्तिक वद १०
केवलज्ञान कल्याणक	वैशाख शुक्ल १०
मोक्ष कल्याणक	आसो वद ०)) अमावस

प्र.८५. त्रिषष्ठि (६३) शलाका पुरुष कौन कौन है ?

उ. २४ तीर्थंकर, ९ वासुदेव, ९ बलदेव ९ प्रतिवासुदेव, १२ चक्रवर्ती।

प्र.८६. ज्यादा से ज्यादा और कम से कम तीर्थंकर केवलज्ञानी एवं साधु कितनी संख्या में विचरते है ?

उ. ज्यादा से ज्यादा तीर्थंकर १७०, केवलज्ञानी ९ करोड और साधु ९ हजार करोड..... (९० अरब) विचरते है। कम से कम तीर्थंकर २०, केवलज्ञानी २ क्रोड, और साधु दो हजार क्रोड (२० अरब) विचरते है।

प्र.८७. तीनों लोक में शाश्वत मंदिर कितने है ?

उ. ८,५७,००,२८२ – आठ करोड, सत्तावन लाख, दो सौ बयासी।

प्र.८८. तीनो लोक में शाश्वत प्रतिमाएँ कितनी है ?

उ. १५,४२,५८,३६,०८० – पंदरह अरब, बयालीस करोड, अठ्ठावन लाख, छैंतीस हजार, अस्सी।

प्र.८९. थोय जोडे की गाथाओं में किन किन की स्तुति होती है ?

उ. पहली गाथा में मुख्य भगवान की
दूसरी गाथा में सर्व श्री जिनेश्वर भगवंतो की.
तीसरी गाथा में ज्ञान की
चौथी गाथा में शासन के अधिष्ठायक देव देवियों की स्तुति होती है।

प्र.९०. मुहपत्ति (मुखवस्त्रिका), चरवला, कटासन यानि क्या ? उनका माप क्या है ?

उ. मुहपत्ति यानि सामायिक प्रतिक्रमण में बोलते समय मुख के आगे रखने का उपकरण, जो एक वेंत बिलास अंगूठे से सबसे छोटी अंगुली तक की दूरी और चार अंगुल प्रमाण होता है। चरवला यानि आते-जाते उठते-बैठते जीवरक्षा करने का उपकरण, वह बत्तीस अंगुल प्रमाण होता है। उसमें चौबीस अंगुली की दांडी और आठ अंगुली प्रमाण दशी होती है (ऊन के धागे)।
कटासन यानि बैठने के लिए गरम आसन वह एक गज का होता है।
ये उपकरण जीवरक्षा के लिये रखे जाते है।

● ● ●

मौखिक कक्षा - ९

सूत्र	:	अतिचार संपूर्ण (सूत्र ५७)	५०
काव्य	:	प्रभु वीर का हालरडा / पालना	२०
पच्चक्खाण	:	आयंबिल, नीवि, एकासणा, बियासणा, तिविहार - चउविहार उपवास	१०
कर्म	:	१. ज्ञानावरणीय कर्म २. दर्शनावरणीय कर्म	२०
			१००

श्रावक के अतिचार

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य वीरियंमि,
आयरणं आयारो, इय एसो पंचहा भणिओ ॥१॥

ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, ए पंचविध आचारमांहि अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हुँ मन, वचन, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं. ॥१॥

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार
काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिन्हवणे,
वंजण अत्थ तदुभए अट्ठविहो नाणमायारो ॥२॥

ज्ञान कालवेलाए भण्यो, गण्यो नहीं । अकाले भण्यो विनयहीन, बहुमानहीन, योग उपधानहीन, अनेरा कन्हे भणी अनेरो गुरु कह्यो. देव

गुरु वांदणे पडिक्कमणे, सज्झाय करतां भणतां गणतां, कूडो अक्षर काने मात्राए अधिको ओछो भण्यो सूत्र कूडुं कह्युं, अर्थ कूडो कह्यो, तदुभय कूडां कह्यां, भणीने विसार्यां।

साधुतणे धर्मे काजो अणउद्धर्ये, दांडो अणपडिलेहे, वसति अणशोधे, अणपवेसे, असज्झाय अणोज्झायमांहे श्री दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गण्यो. श्रावकतणे धर्मे स्थविरावलि, पडिक्कमणां, उपदेशमाला प्रमुख सिद्धांत भण्यो गण्यो, कालवेलाए काजो अणउद्धर्ये पढ्यो। ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकारवाली, सापडा, सापडी, दस्तरी, वही, ओलिया प्रमुख प्रत्ये पग लाग्यो, थूंक लाग्युं, थूंके करी अक्षर मांज्यो, ओशीसे धर्यो। कन्हे छतां आहार निहार कीधो। ज्ञानद्रव्य भक्षतां उपेक्षा कीधी, प्रज्ञापराधे विणास्यो, विणसतो उवेख्यो, छती शक्तिए सारसंभाल न कीधी। ज्ञानवंत प्रत्ये द्वेष, मत्सर चिंतव्यो। अवज्ञा आशातना कीधी। कोई प्रत्ये भणतां गणतां अंतराय कीधो, आपणा जाणपणातणो गर्व चिंतव्यो। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, ए पंचविध ज्ञान तणी असद्दहणा कीधी। कोई तोतडो, बोबडो देखी हस्यो, वितर्क्यो अन्यथा प्ररूपणा कीधी. ज्ञानाचार विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥२॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार,
निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठिअ।
उववूह थिरीकरणे, वच्छल्लप्पभावणे अट्ठ ॥३॥

देव, गुरु धर्मतणे विषे निःशंकपणुं न कीधुं. तथा एकांत निश्चय न कीधो, धर्म संबंधीया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नहीं, साधु साध्वीनां मल मलिन गात्र देखी दुगंछा नीपजावी। कुचारित्रीया देखी चारित्रिया उपर अभाव हुओ, मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं, तथा संघमांहे गुणवंततणी अनुपबृंहणा कीधी। अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति,

अभक्ति नीपजावी, अबहुमान कीधुं, तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारणद्रव्य, भक्षित उपेक्षित प्रज्ञापराधे विणास्यां, विणसतां उवेख्यां, छती शक्तिए सार संभाल न कीधी,, तथा साधर्मिक साथे कलह कर्मबंध कीधो। अधोती, अष्टपड मुखकोश पाखे देवपूजा कीधी, बिंबप्रत्ये वासकूंपी, धूपधाणुं कलशतणो ठबको लाग्यो. बिंब हाथ थकी पाड्युं. ऊसास नि:सास लाग्यो। देहरे, उपाश्रये, मल श्लेष्मादिक लोह्युं, देहरामांहे हास्य, खेल, केलि, कुतूहल, आहार, निहार कीधां। पान, सोपारी, निवेदीयां खाधां। ठवणायरिय हाथथकी पाड्या, पडिलेहवा विसार्या. जिनभवने चोराशी आशातना, गुरु गुरुणी प्रत्ये तेत्रीश आशातना कीधी होय, गुरु वचन तहत्ति करी पडिवज्युं नहीं। दर्शनाचार विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥३॥

चारित्राचारे आठ अतिचार,
पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिइहिं तीहिं गुत्तीहिं।
एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥४॥

इर्यासमिति ते अणजोये हिंड्या, भाषासमिति ते सावद्य वचन बोल्या। एषणासमिति ते तृण, डगल, अन्न, पाणी, असूझतुं लीधुं। आदानभंडमत्त निक्खेवणा समिति ते आसन, शयन, उपकरण, मात्रु प्रमुख अणपूंजी जीवाकुल भूमिकाए मूक्युं लीधुं। पारिष्ठापनिका समिति ते मल, मूत्र, श्लेषमादिक अणपूंजी जीवाकुल, भूमिकाए परठव्युं। मनोगुप्ति मनमां आर्तरौद्र ध्यान ध्यायां। वचनगुप्ति सावद्य वचन बोल्यां। कायगुप्ति शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं, अणपूंजे बेठा. ए अष्ट प्रवचनमाता साधुतणे धर्मे सदैव अने श्रावकतणे धर्मे सामायिक पोसह लीधे रूडी पेरे पाल्यां नहीं, खंडणा विराधना हुई, चारित्राचार विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥४॥

विशेषत: श्रावकतणे धर्मे श्रीसम्यक्त्व मूल बार व्रत, सम्यक्त्वतणा पांच अतिचार,

संका कंख विगिच्छा. शंका श्री अरिहंततणां बल, अतिशय, ज्ञानलक्ष्मी, गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रियानां चारित्र, श्री जिन वचनतणो संदेह कीधो.

आकांक्षा ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, विनायक, हनुमंत, सुग्रीव, वाली, नाह, इत्येवमादिक देश, नगर, गाम, गोत्र, नगरी जूजूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोग आतंक कष्ट आवे इहलोक परलोकार्थे पूज्या मान्या, प्रसिद्ध, विनायक, जीराउलाने मान्युं, इच्छ्युं। बौद्ध, सांख्यादिक संन्यासी, भरडा, भगत, लिंगीया, जोगिया, जोगी, दरवेश, अनेरा दर्शनीयातणो कष्ट, मंत्र चमत्कार देखी परमार्थ जाण्या विना भुल्या-व्यामोह्या, कुशास्त्र, शीख्यां, सांभल्या। श्राद्ध, संवच्छरी, होली, बलेव, माहिपूनम, अजापडवो, प्रेतबीज, गौरीत्रीज, विनायकचोथ, नागपंचमी, झीलणाछट्ठी, शीलसातमी, ध्रुवआठमी, नौलीनवमी, अहवादशमी, व्रतअग्यारशी, वच्छबारशी, धनतेरशी, अनंतचउदशी, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायण नैवेद्य कीधां। नवोदक, याग, भोग, उतारणां कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां। पींपले पाणी घाल्यां, घलाव्यां, घर बाहिर क्षेत्रे, खले, कूवे, तलावे, नदीए, द्रहे, वावीए, समुद्रे, कुंडे, पुण्यहेतु स्नान कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां, दान दीधां, ग्रहण, शनैश्चर माहमासे नवरात्रि ए न्हाया। अजाणना थाप्यां. अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां.,

वितिगिच्छा धर्म संबंधिया फलतणे विषे संदेह कीधो. जिन अरिहंत धर्मना आगार, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुण भणी न मान्या, न पूज्या. महासती, महात्मानी इहलोक परलोक संबंधीया भोगवांछित पूजा कीधी, रोग, आतंक, कष्ट आव्ये खीण वचन भोग मान्या. महात्मानां

भात, पाणी, मल शोभा तणी निंदा कीधी, कुचारित्रीया देखी चारित्रीया पर कुभाव हुओ। मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी। प्रीति मांडी. दाक्षिण्य लगे तेहनो धर्म मान्यो, कीधो। श्री सम्यत्त्व विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥५॥

पहेले स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रते पांच अतिचार.

वह बंध छविच्छेए०॥ द्विपद चतुष्पद प्रत्ये रीसवशे गाढो घाव घाल्यो, गाढे बंधने बांध्यो, अधिक भार घाल्यो, निर्लांछन कर्म कीधां, चारा पाणी तणी वेलाए सारसंभाल न कीधी। लेहणे देहणे कीणही प्रत्ये लंघाव्यो। तेणे भूखे आपणे जम्या. कन्हे रही मराव्यो, बंदीखाने घलाव्यो। सल्यां धान्य तावडे नाख्यां, दलाव्यां भरडाव्यां, शोधी न वावर्यां, इंधण छाणां अणशोध्यां बाल्यां. ते मांहि साप, वींछी, खजुरा, सरवला, मांकड, जुआ, गींगोडा साहता मुआ दुहव्या, रूडे स्थानके न मूक्या। कीडी मंकोडीनां इंडां विछोह्यां, लीख फोडी, उदेही, कीडी, मंकोडी, धीमेल, कातरा, चूडेल, पतंगियां, देडका, अलसीयां, इयल, कुंता, डांस, मसा, बगतरां, माखी, तीड प्रमुख जीव विणट्ठा। माला हलावतां चलावतां पंखी, चकलां, काग तणां इंडां फोड्यां. अनेरा एकेंद्रियादिक जीव विणास्या, चांप्या, दुहव्या, कांई हलावतां चलावतां, पाणी छांटतां, अनेरा कांई कामकाज करतां, निर्ध्वंसपणुं कीधुं. जीवरक्षा रूडी न कीधी, संखारो सूकव्यो। रूडुं गलणुं न कीधुं, अणगल पाणी वावर्युं, रूडी जयणा न कीधी। अणगल पाणीए झील्या, लूगडां धोयां. खाटला तावडे नांख्या, झाट्क्या. जीवाकुल भूमि लींपी. वाशी गार राखी. दलणे, खांडणे, लींपणे रूडी जयणा न कीधी, आठम चउदशना नियम भांग्या. धूणी करावी. पहेले स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥१॥

बीजे स्थूलमृषावाद विरमण व्रते पांच अतिचार.

सहसारहस्सदारे०॥ सहसात्कारे कुणही प्रत्ये अजुगतुं आल अभ्याख्यान दीधुं। स्वदारा मंत्रभेद कीधो। अनेरो कुणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो। कुणहीने अनर्थ पाडवा कूडी बुद्धि दीधी. कूडो लेख लख्यो. कूडी साख भरी। थापणमोसो कीधो। कन्या, गौ, ढोर, भूमि संबंधी लेहणे देहणे व्यवसाये वाद वढवाड करतां मोटकुं जूठुं बोल्या। हाथ पग तणी गाल दीधी. कडकडा मोड्या. मर्मवचन बोल्या। बीजे स्थूलमृषावाद विरमण व्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥२॥

त्रीजे स्थूल अदत्तादान विरमण व्रते पांच अतिचार.

तेनाहडप्पओगे०॥ घर, बाहिर, क्षेत्रे, खले पराइ वस्तु अणमोकली लीधी, वावरी. चोराई वस्तु वहोरी, चोर धाड प्रत्ये संकेत कीधो, तेहने संबल दीधुं, तेहनी वस्तु लीधी, विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो। नवा, पुराणा, सरस विरस, सजीव, निर्जीव वस्तुना भेल संभेल कीधा, कूडे काटले तोले, माने, मापे वहोर्यां, दाणचोरी कीधी। कुणहीने लेखे वरांस्यो। साटे लांच लीधी। कूडो करहो काढ्यो. विश्वासघात कीधो। परवंचना कीधी, पासंग कूडां कीधां। दांडी चढावी, लहके त्रहके कूडां काटलां मान मापां कीधां। माता पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र वंची कुणहीने दीधुं। जुदी गांठ कीधी, थापण ओलवी। कुणहीने लेखे पलेखे भूलाव्युं, पडी वस्तु ओलवी लीधी। त्रीजे स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥३॥

चोथे स्वदारासंतोष परस्त्रीगमन विरमण व्रते पांच अतिचार.

अपरिग्गहिया इत्तर ॥ अपरिगृहिता गमन, इत्वरपरिगृहिता गमन कीधुं। विधवा, वेश्या, परस्त्री, कुलांगना स्वदारा शोक तणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्यां। आठम, चउदश, अनेरी पर्वतिथिना नियम लई भांग्या,

---

घरघरणां कीधां, कराव्यां, वरवहू वखाण्यां कुविकल्प चिंतव्यो, अनंगक्रीडा कीधी, स्त्रीनां अंगोपांग निरख्यां। पराया विवाह जोड्या, ढींगला ढींगली परणाव्यां, कामभोगतणे विषे तीव्र अभिलाष कीधो। अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहणे स्वप्नांतरे हुआ, कुस्वप्न लाध्यां, नट, विट, स्त्रीशुं, हांसु कीधुं। चोथे स्वदारा संतोष परस्त्रीगमन विरमण व्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥४॥

पांचमे परिग्रह परिमाण व्रते पांच अतिचार.

धण धन्न खित्त वत्थु०॥ धन धान्य, क्षेत्र वास्तु, रूप्य, सुवर्ण, कुप्य द्विपद, चतुष्पद ए नवविध परिग्रहतणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्च्छा लगे संक्षेप न कीधो। माता, पिता, पुत्र, स्त्री तणे लेखे कीधो, परिग्रह परिमाण लीधुं नहीं, लईने पढ्युं नहि, पढवुं विसार्युं, अलीधुं मेल्युं, नियम विसार्या। पांचमे परिग्रह परिमाण व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥५॥

छट्ठे दिग्परिमाण व्रते पांच अतिचार.

गमणस्स उ परिमाणे०॥ ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशिए जावा आववा तणा नियम लई भांग्या। अनाभोगे विस्मृत लगे अधिक भूमि गया, पाठवणी आघी पाछी मोकली। वहाण व्यवसाय कीधो, वर्षाकाले, गामतरुं कीधुं. भूमिका एक गमा संक्षेपी, बीजी गमा वधारी। छट्ठे दिग्परिमाण व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि. ॥६॥

सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रते भोजन आश्रयी पांच अतिचार अने कर्महुंती पंदर अतिचार एवं वीस अतिचार.

सच्चित्ते पडिबद्धे० सचित्त नियम लीधे अधिक सचित्त लीधुं. अपक्काहार, दुप्पक्काहार, तुच्छौषधितणुं भक्षण कीधुं, ओला, उंबी, पोंक, पापडी खाधां.

सच्चित्त दव्व विगइ, वाणह तंबोल वत्थ कुसुमेसु,

वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसि न्हाण भत्तेसु ॥१॥

ए चौद नियम दिनगत रात्रिगत लीधा नहि, लईने भांग्या, बावीश अभक्ष्य, बत्रीश अनंतकाय मांहि आदु, मूला, गाजर, पिंड, पिंडालु, कचूरो, सूरण, कुणी आंबली, गलो, वाघरडां खाधां। वाशी कठोल, पोली रोटली, त्रण दिवसनुं ओदन लीधुं। मधु, महुडा, माखण, माटी, वेंगण, पीलु, पीचु, पंपोटा, विष, हिम, करहा, घोलवडां, अजाण्यां फल, टींबरुं, गुंदा, महोर, बोल अथाणुं, आंबलबोर, काचुं मीठुं, तिल, खसखस, कोठिंबडां खाधां। रात्रिभोजन कीधां, लगभग वेलाए वालु कीधुं, दिवस विण उगे शीराव्या. तथा कर्मत:पन्नर कर्मादान, इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडिकम्मे, फोडिकम्मे ए पांच कर्म, दंतवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे ए पांच वाणिज्य, जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलायसोसणया, असइपोसणया, ए पांच सामान्य, ए पांच कर्म, पांच वाणिज्य, पांच सामान्य एवं पन्नर कर्मादान बहु सावद्य, महारंभ, रांगण, लीहाला कराव्या, इंट निभाडा पकाव्या। धाणी, चणा, पकवान्न करी वेच्यां। वाशी माखण तवाव्यां, तिल वहोर्या, फागण मास उपरांत राख्या। दलीदो कीधो, अंगीठा कराव्या। श्वान, बिलाडा, सूडा, सालहि पोष्या. अनेरां जे कांई बहु सावद्य खरकर्मादिक समाचर्यां, वाशी गार राखी, लींपणे, गुंपणे महारंभ कीधो। अणशोध्या चूला संधुक्या, घी, तेल, गोल, छाश तणां भाजन उघाडां मूक्यां, ते मांहि माखी, कुंती, उंदर,गरोली पडी, कीडी चडी, तेनी जयणा न कीधी। सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥७॥

आठमे अनर्थदंड विरमण व्रते पांच अतिचार.

कंदप्पे कुक्कुइए० कंदर्प्प लगे विटचेष्टा, हास्य, खेल, कुतूहल कीधां, पुरुष स्त्रीना हावभाव, रूप, श्रृंगार, विषयरस वखाण्यां, राजकथा, भक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधी, पराई तात कीधी, तथा पैशुन्यपणुं कीधुं, आर्तरौद्रध्यान ध्यायां।

खांडा, कटार, कोश, कुहाडा, रथ, उखल, मुशल, अग्नि, घंटी, निसाह, दातरडां प्रमुख अधिकरण मेली दाक्षिण्यलगे माग्यां आप्यां, पापोपदेश कीधो, अष्टमी चतुर्दशीए खांडवा दलवातणा नियम भांग्या, मुखरपणा लगे असंबद्ध वाक्य बोल्या प्रमादाचरण सेव्यां।

अंघोले, न्हाणे, दातणे, पग धोअणे, खेल, पाणी तेल छांट्यां, झीलणे झील्या, जुगटे रम्या, हिंचोले हिंच्या, नाटक प्रेक्षणक जोयां, कण, कुवस्तु, ढोर लेवराव्यां, कर्कश वचन बोल्या, आक्रोश कीधा, अबोला लीधा, करकडा मोड्या, मच्छर धर्यो, संभेडा लगाड्या, श्राप दीधा।

भेंसा, सांढ, हुडु, कूकडा, श्वानादिक झूझार्या, झूझता जोया, खादि लगे अदेखाई चिंतवी, माटी, मीठुं कण, कपासीया काज विण चांप्या, ते उपर बेठा, आली वनस्पति खूंदी, सूई शस्त्रादिक निपजाव्यां। घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष लगे एकने ऋद्धि परिवार वांछी, एकने मृत्यु हानि वांछी। आठमे अनर्थदंड विरमण व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥८॥

नवमे सामायिक व्रते पांच अतिचार.

तिविहे दुप्पणिहाणे० सामायिक लीधे मन आहट्टदोहट्ट चितव्युं, सावद्य वचन बोल्यां, शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं, छती वेलाए सामायिक न लीधुं, सामायिक लेइ उघाडे मुखे बोल्या, ऊंघ आवी, वात विकथा घरतणी चिंता कीधी, वीज दीवातणी उज्जेहि हुइ। कण, कपासीया, माटी मीठुं, खडी, धावडी, अरणेट्टो, पाषाण प्रमुख चांप्या, पाणी, नील, फूल, सेवाल, हरियक्काय, बीयक्काय इत्यादिक आभड्यां, स्त्री तिर्यंच तणा निरंतर परंपर संघट्ट हुआ, मुहपत्ति उत्संघट्टी, सामायिक अणपूग्युं पार्युं, पारवुं विसार्युं. नवमे सामायिक व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥९॥

दशमे देशावगाशिक व्रते पांच अतिचार.

आणवणे पेसवणे० आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, बहिया पुग्गलपक्खेवे नियमित भूमिका मांहि बाहेरथी कांई अणाव्युं, आपण कन्हे थकी बाहिर कांई मोकल्युं, अथवा रूप देखाडी,

कांकरो नाखी, साद करी आपणपणुं छतुं जणाव्युं। दशमे देशावगाशिक व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥१०॥

अग्यारमे पौषधोपवास व्रते पांच अतिचार.

संथारुच्चारविहि० अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सिज्जासंथारए, अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि, पोसह लीधे संथारातणी भूमि न पूंजी। बाहिरलां लहुडां वडां स्थंडिल दिवसे शोध्यां नहि, पडिलेह्यां नहि। मातरु अणपूज्युं हलाव्युं, अणपूंजी भूमिकाए परठव्युं, परठवतां ''अणुजाणह जस्सुग्गहो'' न कह्यो, परठव्या पूंठे वार त्रण ''वोसिरे वोसिरे'' न कह्यो। पोसहशाला मांहि पेसतां ''निसीहि'' निसरतां ''आवस्सहि'' त्रण वार भणी नहि. पुढवी, अप्, तेउ, वाउ, वनस्पति, त्रसकाय तणा संघट्ट परिताप, उपद्रव हुआ, संथारा पोरिसीतणो विधि भणवो विसार्यो, पोरिसिमांहे उंघ्या, अविधे संथारो पाथर्यो। पारणादिकतणी चिंता कीधी। कालवेलाए देव न वांद्या, पडिक्कमणुं न कीधुं, पोसह असूरो लीधो, सवेरो पार्यो, पर्व तिथिए पोसह लीधो नहि। अग्यारमे पौषधोपवास व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥११॥

बारमे अतिथि संविभाग व्रते पांच अतिचार.

सच्चित्ते निक्खिवणे० सचित्त वस्तु हेठ उपर छतां महात्मा महासती प्रत्ये असूझतुं दान दीधुं, देवानी बुद्धिए असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं परायुं फेडी आपणुं कीधुं। अणदेवानी बुद्धिए सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं. आपणुं फेडी परायुं कीधुं। वहोरवा वेला टली रह्या। असूर करी महात्मा तेड्या. मत्सर धरी दान दीधुं, गुणवंत आवे भक्ति न साचवी, छती शक्तिए स्वामीवात्सल्य न कीधुं, अनेरा धर्मक्षेत्र सीदातां छती शक्तिए उद्धर्यां नही, दीन क्षीण प्रत्ये अनुकंपा दान न दीधुं। बारमे अतिथिसंविभागव्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥१२॥

संलेषणा तणा पांच अतिचार.

इहलोए परलोए० इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे,

जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे, इहलोके धर्मना प्रभाव लगे राजऋद्धि, सुख, सौभाग्य, परिवार वांछ्या. परलोके देव, देवेंद्र, विद्याधर, चक्रवर्तितणी पदवी वांछी, सुख आवे जीवितव्य वांछ्युं, दुःख आवे मरण वांछ्युं, काम भोगतणी वांछा कीधी. संलेषणा विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥१३॥

तपाचार बार भेद छ बाह्य, छ अभ्यंतर.

अणसण मूणोअरिया० अणसण भणी उपवास विशेष पर्वतिथिए छती शक्तिए कीधो नही, ऊणोदरी व्रत ते कोलिया पांच सात ऊणा रह्या नहि, वृत्ति संक्षेप ते द्रव्य भणी सर्व वस्तुनो संक्षेप कीधो नहीं, रसत्याग ते विगई त्याग न कीधो. कायक्लेश लोचादिक कष्ट सहन कर्यां नहि, संलीनता ते अंगोपांग संकोची राख्यां नहि। पच्चक्खाण भांग्यां. पाटलो डगडगतो फेड्यो नहीं। गंठसी, पोरिसि, साड्ढपोरिसि, पुरिमड्ढ, एकासणुं, बिआसणुं, नीवि, आंबिल प्रमुख पच्चक्खाण पारवुं विसार्युं, बेसतां नवकार न भण्यो, उठतां पच्चक्खाण करवुं विसार्युं। गंठसीयुं भाग्युं. नीवी, आंबिल, उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पीधुं, वमन हुओ। बाह्य तप विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥१४॥

अभ्यंतर तप.

पायच्छित्तं विणओ० मनशुद्धे गुरुकन्हे आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायश्चित तप लेखा शुद्धे पहोंचाड्यो नहीं। देव, गुरु, संघ, साहम्मी प्रत्ये विनय साचव्यो नहि, बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी प्रमुखनुं वेयावच्च न कीधुं, वाचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा लक्षण पंचविध स्वाध्याय न कीधो, धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्यायां, आर्तध्यान, रौद्रध्यान ध्यायां, कर्मक्षय निमित्ते लोगस्स दश वीशनो काउस्सग्ग न कीधो। अभ्यंतर तप विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांहि०॥१५॥

वीर्याचारना त्रण अतिचार.

अणिगूहिअ बलवीरिओ० पढवे, गुणवे, विनय, वैयावच्च, देवपूजा,

सामायिक, पोसह, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्यने विषे मन, वचन, कायातणुं छतुं बल, छतुं वीर्य गोपव्युं. रूडां पंचांग खमासमण न दीधा, वांदणां तणा आवर्तविधि साचव्या नहीं, अन्यचित्त निरादरपणे बेठा, उतावलुं देववंदन, पडिक्कमणुं कीधुं, वीर्याचार विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥१६॥

नाणाइ अट्ठ पइवय, सम्म संलेहण पण पन्नर कम्मेसु,
बारस तपवीरिअतिगं, चउव्वीससयं अइयारा.

पडिसिद्धाणं करणे० प्रतिषेध अभक्ष्य अनंतकाय बहुबीज भक्षण, महारंभ परिग्रहादिक कीधां, जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार सद्ह्या नहि. आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद मिथ्यात्वशल्य ए अढार पापस्थानक कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां होय। दिनकृत्य प्रतिक्रमण विनय वेयावच्च न कीधां. अनेरुं जे कांई वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध कीधुं, कराव्युं अनुमोद्युं होय. ए चिहुं प्रकारमांहे अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हु मन, वचन, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं. ॥१७॥

एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्री सम्यक्त्व मूल बार व्रत एकसो चोवीस अतिचारमांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुओ होय ते सवि हु मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं.

काव्य विभाग

स्तवन (श्री महावीरस्वामी भगवान का हालरडा)

माता त्रिशला झुलावे पुत्र पारणे,
गावे हालो हालो हालरवाना गीत;
सोना रूपाने वली रत्ने जडीयुं पारणुं,
रेशम दोरी घुघरी वागे छुमछुम रीत,
हालो हालो हालो हालो मारा नंदने रे. हालो० १

जिनजी पास प्रभुथी वरस अढीसे अंतरे,
होशे चोवीशमो तीर्थंकर जिनपरिमाण;
केशीस्वामी मुखथी एहवी वाणी सांभली,
साची साची हुई ते म्हारे अमृतवाण. हालो० २

चौदे स्वप्ने होवे चक्री के जिनराज,
वीत्या बारे चक्री नहि हवे चक्रीराज;
जिनजी पासप्रभुना श्रीकेशी गणधार,
तेहने वचने जाण्या चोवीशमा जिनराज. हालो० ३

म्हारी कुखे आव्या त्रण भुवन शिरताज,
म्हारी कुखे आव्या तारण तरण जहाज;
म्हारी कुखे आव्या संघतीरथनी लाज,
हुं तो पुन्य पनोती इन्द्राणी थई आज. हालो० ४

मुजने दोहलो उपन्यो बेसुं गज अंबाडीए,
सिंहासन पर बेसुं चामर छत्र धराय;
ए सहु लक्षण मुजने नंदन ताहरा तेजना,
ते दिन संभारुं ने आनंद अंग न माय. हालो० ५

करतल पगतल लक्षण एक हजार ने आठ छे;
तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश;
नंदन! जमणी जंघे लंछन सिंह बिराजतो,
में तो पहेले स्वप्ने दीठो विशवावीश. हालो० ६

नंदन! नवला बंधव नंदिवर्धनना तमे,
नंदन! भोजाईओना दीयर छो सुकुमाल;
हसशे भोजाईओ कही दीयर मारा लाडका,
हसशे रमशे ने वली चूंटी खणशे गाल,
हसशे रमशे ने वली ठुंसा देशे गाल. हालो० ७

नंदन! नवला चेडा राजाना भाणेज छो,
नंदन! नवला पांचशे मामीना भाणेज छो;
नंदन! मामलीयाना भाणेजा सुकुमाल,
हसशे हाथ उछाली कहीने न्हाना भाणेजा,
आंखो आंजीने वली टपकुं करशे गाल. हालो० ८

नंदन! मामा मामी लावशे टोपी आंगलां,
रतने जडीआं झालर मोती कसबी कोर,
नीलां पीलां ने वली रातां सर्वे जातिना,
पहेरावशे मामी माहरा नंदकिशोर. हालो० ९

नंदन! मामा मामी सुखलडी बहु लावशे,
नंदन! गजवे भरशे लाडु मोतीचूर,
नंदन! मुखडां जोईने लेशे मामी भामणां,
नंदन! मामी कहेशे जीवो सुख भरपूर. हालो० १०

नंदन! नवला चेडा मामानी साते सती,
म्हारी भत्रीजी ने बहेन तमारी नंद;
ते पण गजवे भरवा लाखणसाई लावशे,
तमने जोई जोई होशे अधिको परमानंद. हालो० ११

रमवा काजे लावशे लाख टकानो घुघरो,
वली सूडा मेना पोपट ने गजराज;
सारस हंस कोयल तीतर ने वली मोरजी,
मामी लावशे रमवा नंद तमारे काज. हालो० १२

छप्पनकुमरी अमरी जलकलशे नवरावीआ,
नंदन! तमने अमने केली घरनी मांही;
फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मांडले,
'बहु चिरंजीवो' आशिष दीधी तुमने त्यांही. हालो० १३

तमने मेरुगिरि पर सुरपतिए नवरावीआ,
निरखी निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय;
मुखडा उपर वारू कोटी कोटी चंद्रमा,
वली तन पर वारू ग्रहगणनो समुदाय. हालो० १४

नंदन! नवला भणवा निशाले पण मूकशुं,
गजपर अंबाडी बेसाडी म्होटे साज;
पसली भरशुं श्रीफल फोफल नागरवेलशुं,
सुखलडी लेशुं निशालीयाने काज. हालो० १५

नंदन! नवला म्होटा थाशो ने परणावशुं,
वहु वर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार;
सरखा वेवाई वेवाणोने पधरावशुं,
वरवहु पोंखी लेशुं जोई जोइने देदार. हालो० १६

पीयर सासर म्हारा बेउ पख नंदन उजला,
मारी कूखे आव्या तात पनोता नंद;
म्हारे आंगणे वुठ्या अमृत दूधे मेहुला,
म्हारे आंगणे फलीआ सुरतरु सुखना कंद. हालो० १७

इणि परे गायुं माता त्रिशलासुतनुं पारणुं.
जे कोई गाशे लेशे पुत्रतणा साम्राज्य,
बीलीमोरा नगरे वर्णव्युं वीरनुं हालरूं,
जय जय मंगल होजो दीपविजय कविराज. हालो० १८

पच्चक्खाण

आयंबिल, नीवि, एकासणा, बियासणा

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, (सूरे उग्गए पुरिमुड्ढ) मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, (पच्चक्खामि), उग्गए सूरे, चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं, आयंबिलं नीव्विगइअं विगईओ पच्चक्खाइ, (पच्चक्खामि,) अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एगासणं, बियासणं, पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि.) तिविहं पि आहारं असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरइ. (वोसिरामि.)

तिविहार उपवास

सूरे उग्गए, अब्भतट्ठं पच्चक्खाइ, तिविहं पि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणहार पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ. (वोसिरामि)

चउविहार उपवास

सूरे उग्गए, अब्भतट्ठं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ. (वोसिरामि)

कर्म की परिभाषा और उसके भेद (कर्म का स्वरूप)

• **कर्म :** चारों गतियों (देव, मनुष्य, तिर्यंच और नर्क) में भटकती हुई यह आत्मा मिथ्यात्व आदि कारणों की वजह से कार्मण वर्गणाओं के जिस समूह को ग्रहण करती है, उसे 'कर्म' कहा जाता है। कर्म के मुख्य दो भेद हैं: घाती कर्म और अघाती कर्म

(१) **घाती कर्म :** जो कर्म आत्मा के मूल गुणों जैसे-ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य और उपयोग पर अपना प्रभाव डालते हैं और इन गुणों को क्षीण (कम या नष्ट) करते हैं, उन्हें घाती कर्म कहा जाता है। घाती कर्म के चार भेद हैं: ज्ञानावरणीय कर्म, दर्शनावरणीय कर्म, मोहनीय कर्म, अंतराय कर्म

(२) **अघाती कर्म :** जो कर्म आत्मा के मूल गुणों को नष्ट नहीं करते बल्कि पुद्गल, शरीर, इन्द्रियों आदि पर अपना प्रभाव डालते हैं, उन्हें अघाती कर्म कहा जाता है। अघाती कर्म के भी चार भेद हैं: नाम कर्म, गोत्र कर्म, वेदनीय कर्म, आयुष्य कर्म.

१. **ज्ञानावरणीय कर्म :** जो कर्म आत्मा के ज्ञानगुण पर आवरण (परदा) डालता है अर्थात् ज्ञानगुण को ढँकता है, उसे ज्ञानावरणीय कर्म कहते हैं। यह आँख की पट्टी के समान है। जिस प्रकार आँख में देखने की शक्ति होने के बावजूद, आँख पर बंधी पट्टी वस्तु को देखने (बोध होने) में बाधा बनती है उसी प्रकार आत्मा में अनंत ज्ञानगुण होने पर भी ज्ञानावरणीय कर्म ज्ञान प्रकट होने में बाधक बनता है। जैसे-जैसे यह

आवरण दूर होता है, वैसे-वैसे आत्मा का ज्ञानगुण प्रकट होता जाता है।

• **कर्म का बंध :** ज्ञान और ज्ञानी की निंदा, द्वेष तथा अपमान करने से; ज्ञानी के उपकारों को भूल जाने से, ज्ञानी पुरुषों के साथ अकारण झगड़ा करने से, साथ ही पढ़ने वाले और पढ़ाने वाले के कार्य में बाधा (अंतराय) डालने से ज्ञानावरणीय कर्म का बंध होता है।

• **कर्म का फल :** ज्ञानावरणीय कर्म के उदय के कारण जीवात्मा बहरा, मूँगा, मंदबुद्धि या कम बुद्धि वाला होता है। उसकी बुद्धि निर्मल नहीं होती और वह आत्म-ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाता-इत्यादि फल उसे भुगतने पड़ते हैं।

• ज्ञानावरणीय कर्म के पाँच (५) भेद हैं :

(१) **मतिज्ञानावरणीय कर्म :** पाँचों इन्द्रियों और मन के माध्यम से हमें जो ज्ञान होता है, उसे 'मतिज्ञान' कहते हैं। इस मतिज्ञान को प्रकट होने से रोकने का काम जो कर्म करता है, उसे मतिज्ञानावरणीय कर्म कहते हैं। पूर्वजन्म की बातें याद आना (जातिस्मरण ज्ञान) भी मतिज्ञान का ही एक प्रकार है।

(२) **श्रुतज्ञानावरणीय कर्म :** शब्दों को सुनने, पढ़ने और लिखने से जो ज्ञान प्राप्त होता है, उसे 'श्रुतज्ञान' कहते हैं। इस श्रुतज्ञान को प्रकट होने से रोकने का काम जो कर्म करता है, उसे श्रुतज्ञानावरणीय कर्म कहते हैं।

(३) **अवधिज्ञानावरणीय कर्म :** एक निश्चित मर्यादा (सीमा) के भीतर रहे हुए रूपी पदार्थों का जो प्रत्यक्ष ज्ञान होता है, उसे 'अवधिज्ञान' कहते हैं। अवधिज्ञान को प्रकट होने से रोकने का कार्य अवधिज्ञानावरणीय कर्म करता है।

(४) **मनःपर्यवज्ञानावरणीय कर्म :** ढ़ाई द्वीप में रहने वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों के मन के भावों/विचारों को जो ज्ञान जानता है, उसे 'मनःपर्यवज्ञान' कहते हैं। मनःपर्यवज्ञान को रोकने का काम मनःपर्यवज्ञानावरणीय कर्म करता है। जब तीर्थंकर दीक्षा लेते हैं, तब देव उनके कंधे पर 'देवदुष्य'

रखते हैं; उसी समय तीर्थंकर भगवंत को मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न होता है।

(५) **केवलज्ञानावरणीय कर्म :** विश्व के सभी कालों (भूत, भविष्य, वर्तमान) के और सभी क्षेत्रों के समस्त पदार्थों को एक ही समय में जिस ज्ञान द्वारा जाना और देखा जा सकता है, उसे 'केवलज्ञान' कहते हैं। केवलज्ञान को प्रकट होने से रोकने वाला कर्म केवलज्ञानावरणीय कर्म कहलाता है।

२. **दर्शनावरणीय कर्म :** जो कर्म आत्मा के दर्शनगुण (सामान्य बोध/देखने की शक्ति) पर आवरण डालता है, अर्थात् दर्शनगुण को ढँकता है उसे दर्शनावरणीय कर्म कहते हैं । यह राजा के द्वारपाल के समान है । जिस प्रकार द्वारपाल राजा के दर्शन करने में बाधक बनता है उसी प्रकार दर्शनावरणीय कर्म पदार्थ के सामान्य दर्शन या बोध में बाधक बनता है । जैन धर्म के अनुसार, आत्मा की श्रद्धा, विश्वास या समकित (सम्यत्त्व) को ढकने वाला और इन्द्रियों तथा आत्मा द्वारा देखे जाने वाले विषयों को रोकने वाला कर्म ही दर्शनावरणीय कर्म है ।

• **कर्म का बंध :** गुणीजनों की निंदा या चुगली करने से; गुणी और ज्ञानी पुरुषों की अवहेलना (अपमान) करने से; कृतघ्न होने से (किसी का उपकार भूल जाने से); भगवान के वचनों में शंका-कुशंका करने से और धर्म साधना में अवरोध खड़ा करने से दर्शनावरणीय कर्म का बंध होता है ।

• **कर्म का फल :** दर्शनावरणीय कर्म के उदय के कारण जीवात्मा को आँखों से कम दिखाई देता है, अंधापन आता है, अनिद्रा का शिकार होना पड़ता है, या फिर बैठे-बैठे और चलते-चलते भी नींद आने लगती है ऐसा जीव आत्मा का सच्चा दर्शन नहीं कर पाता-इत्यादि फल उसे भुगतने पड़ते हैं ।

• दर्शनावरणीय कर्म के कुल ९ भेद हैं:

(जिसमें ४ भेद दर्शन के आवरण के और ५ भेद निद्रा (नींद) के हैं ।)

(१) चक्षु दर्शनावरणीय कर्म: अंधापन, कानापन, मोतियाबिंद, ग्लोकोमा आदि आँख से संबंधित तकलीफें लाने का कार्य यह कर्म करता है ।

(२) अचक्षु दर्शनावरणीय कर्म: आँख के अलावा अन्य इन्द्रियों (जैसे कान, जीभ आदि) में दोष या अक्षमता पैदा करता है, जिससे जीव बहरा या मूँगा बनता है ।

(३) अवधि दर्शनावरणीय कर्म: अवधिज्ञान के साथ जो अवधिदर्शन प्रकट होता है, उसे प्रकट होने से रोकने का काम यह कर्म करता है ।

(४) केवल दर्शनावरणीय कर्म: केवलज्ञान के साथ प्रकट होने वाले केवलदर्शन को प्रकट होने से रोकने का कार्य यह कर्म करता है ।

(५) निद्रा: हल्की आवाज़ या खटपट होते ही तुरंत नींद खुल जाए, वैसी अल्प नींद लाने वाला कर्म ।

(६) निद्रा-निद्रा: झकझोरने (ज़ोर से हिलाने) पर ही जाग पाए वैसी बहुत गहरी नींद लाने वाला कर्म ।

(७) प्रचला: बैठे-बैठे या खड़े-खड़े ही झोंके खिलाए और नींद ला दे, वैसा कर्म ।

(८) प्रचला-प्रचला: घोड़े या बैल की तरह चलते-चलते भी सुला दे, वैसा कर्म ।

(९) थिणद्धि : इस कर्म के उदय से मनुष्य दिन में सोचे हुए कार्य को रात में नींद में ही कर डालता है । इस अवस्था में उस व्यक्ति की शारीरिक शक्ति अत्यधिक बढ़ जाती है ।

• • •

मौखिक कक्षा - १०

सूत्र	: स्नात्र पूजा संपूर्ण	३०
अर्थ	: जगचिंतामणि सूत्र, जं किंचि सूत्र (शब्दार्थ)	१०
विधि	: पाक्षिक, चउमासी प्रतिक्रमण विधि	२०
कर्म	: ३. वेदनीय कर्म	२०
	४. मोहनीय कर्म	
	* जैन धर्म की मोनोपोली (एकाधिकार)	२०
		१००

स्नात्रपूजा

(पंडित श्री वीरविजयजी कृत)

स्नात्र विधि

१ प्रथम पूर्व दिशा या उत्तर दिशा अथवा मूल प्रतिमा सन्मुख तीन सुंदर पाट रखकर उस पर सिंहासन रखे।

२ नीचे के पाट(बाजोट) पर बीच में केसर का या चावल का स्वस्तिक करे और उस पर श्रीफल चढाएँ।

३ फिर उस पाट के सामने पाटले के ऊपर चार साथिये करके उसके ऊपर चार कलश नाडाछडी बांधकर पंचामृत(दूध, दही, घी, जल और शक्कर का मिश्रण करकर) भरकर रखे।

४ सिंहासन के बीच में केसर का स्वस्तिक करें और उस पर चावल की ढगली और रूपये का सिक्का रखकर, तीन नवकार गिनकर उस पर धातु की प्रतिमाजी बिराजमान करे।

५ प्रतिमाजी के आगे साथिया कर उसके उपर श्री सिद्धचक्रजी स्थापित करे।

६ प्रतिमाजी के दाहिनी ओर, प्रतिमाजी की नाक की ऊँचाई तक घी का दीप रखें।

७ बाद में स्नात्र पूजा करनेवाले नाडाछडी (लच्छा) बाँधकर हाथ में पंचामृत भरा हुआ कलश लेकर तीन नवकार गिन शुरूआत करे।

८ फिर वालाकुंची करके पानी का प्रक्षाल कर तीन अंग लूछना करके केसर से पुजा करे।

९ बाद में हाथ धोकर खुद के दाहिने हाथ की हथेली में केसर का स्वस्तिक करे।

१० पश्चात् स्नात्र करने वाले कुसुमांजलि का थाल लेकर खडे रहें।

स्नात्र पूजा में जरुरी वस्तुओ की यादी

१. तीन बाजोठ २. सिंहासन ३. कलश ४. थाल ५. चामर ६. दर्पण ७. घंट ८. आरती ९. मंगल दीवो १०. वालाकुंची ११. केसर १२. पाणी १३. अंग लुंछणा १४. दूध १५. दहीं १६. घी १७. मिश्री १८. लच्छा १९. कंकु २०. चावल २१. खड़ा नमक २२. माटी २३. श्रीफल २४. कपूर २५. रुपये-पैसे २६. धूप २७. पूंठियु २८. चंदरवो २९. कटोरियाँ ३०. पंखा ३१. अग्नि ३२. दीपक ३३. फानूस.

(पहले कलश लेकर खडे रहना)

काव्यम् द्रुतविलंबितवृत्तम्

सरसशान्तिसुधारससागरं शुचितरं गुणरत्नमहागरम्;
भविकपंकजबोधदिवाकरं, प्रतिदिनं प्रणमामि जिनेश्वरम्. १

दोहा कुसुमाभरण उतारीने, पडिमा धरिय विवेक,
मज्जनपीठे थापीने, करीए जल अभिषेक. २

(दाहिने अंगुठे पर प्रक्षाल कर अंगलूछणा करके कुसुमांजलि की थाली लेकर खडे रहना)

गाथा आर्या गीति

जिण जन्म समये मेरुसिहरे, रयण कणय कलसेहिं;
देवासुरेहिं ण्हविओ, ते धन्ना जेहिं दिट्ठोसि. ३

(जहाँ जहाँ "कुसुमांजलि मेलो हो" वहाँ-वहाँ प्रभु के दाहिने अंगुठे पर कुसुमांजलि चढाएँ)

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्यो-पाध्याय सर्वसाधुभ्यः...।

कुसुमांजलि ढाल

निर्मल जलकलशे न्हवरावे, वस्त्र अमूलक अंग धरावे;
कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा,
सिद्धस्वरूपी अंग पखाली, आतम निर्मल हुइ सुकुमाली, कुसुमां० ४

गाथा आर्या गीति

मचकुंद चंप मालइ; कमलाइं पुप्फ पंचवण्णाइं;
जगनाह न्हवण समये, देवा कुसुमांजलि दिंति. ५

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्यो-पाध्याय सर्वसाधुभ्यः...।

कुसुमांजलि ढाल

रयण सिंहासन जिन थापीजे, कुसुमांजलि प्रभु चरणे दीजे,
कुसुमांजलि मेलो शान्ति जिणंदा. ६

दोहा

जिण तिहुं कालय सिद्धनी, पडिमा गुणभंडार;
तसु चरणे कुसुमांजलि, भविक दुरित हरनार. ७

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्यो-पाध्याय सर्वसाधुभ्यः...।

कुसुमांजलि ढाल

कृष्णागरु वर धूप धरीजे, सुगंधकर कुसुमांजलि दीजे;
कुसुमांजलि मेलो नेमि जिणंदा. ८

गाथा आर्यागीति

जसु परिमल बल दह दिसि, महुकरझंकार सद्दसंगीया;
जिणचरणोवरि मुक्का, सुरनर कुसुमांजलि सिद्धा. ९

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्यो-पाध्याय सर्वसाधुभ्यः...।

कुसुमांजलि ढाल

पास जिणेसर जग जयकारी, जलथल फूल उदक कर धारी;
कुसुमांजलि मेलो पार्श्व जिणंदा. १०

दोहा

मूके कुसुमांजलि सुरा, वीरचरण सुकुमाल;
ते कुसुमांजलि भविकनां, पाप हरे त्रण काल. ११

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्यो-पाध्याय सर्वसाधुभ्यः...।

कुसुमांजलि ढाल

विविध कुसुम वर जाति गहेवी, जिनचरणे पणमंत ठवेवी;
कुसुमांजलि मेलो वीर जिणंदा. १२

वस्तु छंद

न्हवणकाले न्हवणकाले, देवदाणव समुच्चिय,
कुसुमांजलि तहि संठविय, पसरंत दिसि परिमल सुगंधिय;
जिणपयकमले निवडेहिं, विग्घहर जस नाम मंतो,
अनंत चउवीस जिन, वासव मलीय असेस;
सा कुसुमांजलि सुहकरो, चउविह संघ विशेष. १३

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्यो-पाध्याय सर्वसाधुभ्यः...।

कुसुमांजलि ढाल

अनंत चउवीसी जिनजी जुहारुं, वर्तमान चउवीसी संभारुं;
कुसुमांजलि मेलो चोवीस जिणंदा. १४

दोहा

महाविदेहे संप्रति, विहरमान जिन वीस;
भक्ति भरे ते पूजिया, करो संघ सुजगीश. १५

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्यो-पाध्याय सर्वसाधुभ्यः...।

कुसुमांजलि ढाल

अपच्छरमंडली गीत उच्चारा, श्री शुभवीरविजय जयकारा;
कुसुमांजलि मेलो सर्व जिणंदा. १६

(स्नात्रपूजा करने वाले प्रभुजी के दाहिने अंगूठे पर कुसुमांजलि चढ़ाकर फिर तीन प्रदक्षिणा देते हुए नीचे के दोहे बोले। प्रत्येक दोहे बोलते हुए सिंहासन को प्रदक्षिणा दे कर प्रभु सन्मुख खमासमण दे.)

प्रदक्षिणा के दोहे

(१) सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठ देश मोझार;
मनुष्य जन्म पामी करी, वंदु वार हजार. १

सोरठ देशमां संचर्यो, न चढ्यो गढ गिरनार;
शेत्रुंजी नदीए नाह्यो नहीं, एनो एले गयो अवतार. २

(२) शेत्रुंजी नदीए नाहीने, मुखबांधी मुखकोश;
देव युगादि पूजीए, आणी मन संतोष. ३

एकेकुं डगलुं भरे, शेत्रुंजा सामुं जेह;
ऋषभ कहे भव क्रोडनां, कर्मखपावे तेह. ४

(३) शेत्रुंजा समो तीरथ नहि, ऋषभ समो नहि देव;
गौतम सरिखा गुरु नहि, वली वली वंदु तेह. ५

जगमां तीरथ दो वडा, शत्रुंजय गिरनार;
एक गढ ऋषभ समोसर्या एक गढ नेमकुमार. ६

(फिर, स्नात्र करने वाले तीन खमासमण देकर जगचिंतामणि का चैत्यवंदन करके 'नमुत्थुणं' से 'जयवीयराय' तक कहे फिर हाथ धोकर मुखकोश बांधकर कलश लेकर खडे रहे.)

दोहा सयल जिणेसर पाय नमी, कल्याणक विधि तास;
वर्णवतां सुणतां थकां, संघनी पूरे आश. १.

ढाल

समकित गुणठाणे परिणम्या, वली व्रतधर संयमसुख रम्या;
वीशस्थानकविधिए तप करी, एसी भावदया दिलमां धरी. १

जो होवे मुज शक्ति इसी, सवि जीव करुं शासनरसी;
शुचिरस ढलते तिहां बांधता, तीर्थंकर नाम निकाचतां. २

सरागथी संयम आचरी, वचमां एक देवनो भव करी;
च्यवी पन्नर क्षेत्रे अवतरे, मध्यखंडे पण राजवीकुले. ३

पटराणी कुखे गुणनीलो, जेम मानसरोवर हंसलो;
सुखशय्याए रजनीशेषे, उतरतां चौद सुपन देखे. ४

ढाल चौद स्वप्ननी

पहेले गजवर दीठो, बीजे वृषभ पइठ्ठो;
त्रीजे केसरीसिंह, चोथे लक्ष्मी अबीह. १

पांचमे फूलनी माला, छठ्ठे चन्द्र विशाला;
रवि रातो ध्वज म्होटो, पूरण कलश नहि छोटो. २

दशमे पद्म सरोवर, अगियारमे रत्नाकर;
भवन विमान रत्नगंजी, अग्निशिखा धूमवर्जि. ३

स्वप्न लइ जइ रायने भासे, राजा अर्थ प्रकाशे;
पुत्र तीर्थंकर त्रिभुवन नमशे, सकल मनोरथ फलशे. ४

वस्तु छंद

अवधिनाणे अवधिनाणे, उपन्या जिनराज,
जगत जस परमाणुआ, विस्तर्या विश्वजंतु सुखकार;
मिथ्यात्व तारा निर्बला, धर्मउदय परभात सुंदर,
माता पण आणंदिया, जागती धर्म विधान;
जाणंती जगतिलक समो, होशे पुत्र प्रधान. १.

दोहा

शुभलग्ने जिन जनमीया, नारकीमां सुखजयोत;
सुख पाम्या त्रिभुवनजना, हुओ जगत उद्योत. १.

ढाल कडखानी देशी

सांभलो कलश जिन महोत्सवनो ईहां,
छप्पन कुमरी दिशि विदिशि आवे तिहां;
माय सुत नमीय, आनंद अधिको धरे,
अष्ट संवर्त्त वायुथी कचरो हरे. १

वृष्टि गंधोदके, अष्ट कुमरी करे,
अष्ट कलशा भरी, अष्ट दर्पण धरे;
अष्ट चामर धरे, अष्ट पंखा लही,
चार रक्षा करी, चार दीपक ग्रही. २

घर करी केलना, माय सुत लावती,
करण शुचिकर्म जल कलशे न्हवरावती;
कुसुम पूजी, अलंकार पहेरावती;
राखडी बांधी जई, शयन पधरावती. ३

नमीय कहे माय तुज बाल लीलावती,
मेरु रवि चन्द्र लगे, जीवजो जगपति;
स्वामी गुण गावती, निज घर जावती,
तेणे समे इन्द्रसिंहासन कंपती. ४

ढाल एकवीशानी देशी

जिन जन्म्याजी, जिण वेला जननी घरे,
तिण वेलाजी, ईन्द्र सिंहासन थरहरे;
दाहिणोत्तरजी, जेता जिन जनमे यदा,
दिशिनायकजी, सोहम इशान बिहुं तदा. १

त्रोटक छंद

तदा चिंते इन्द्र मनमां कोण अवसर ए बन्यो,
जिनजन्म अवधिनाणे जाणी हर्ष आनंद उपन्यो;
सुघोष आदे घंटनादे घोषणा सुरमें करे,
सवि देवी देवा जन्म महोत्सवे आवजो सुरगिरिवरे. २

(यहाँ घंट बजाए)

ढाल

एम सांभलीजी, सुरवर कोडी आवी मले,
जन्म महोत्सवजी, करवा मेरु उपर चले;
सोहमपतिजी, बहु परिवारे आवीया,
माय जिननेजी, वांदी प्रभुने वधावीया. ३

(यहा प्रभु को अक्षत से बधाएँ)

त्रोटक छंद

वधावी बोले हे रत्नकुक्षी धारिणी तुज सुततणो,
हुं शक्र सोहम नामे करशुं, जन्म महोत्सव अति घणो;

एम कही जिनप्रतिबिंब थापी, पंचरूपे प्रभु ग्रही,
देवदेवी नाचे हर्ष साथे, सुरगिरि आव्या वही. ४

ढाल

मेरु उपरजी, पांडुकवन में चिहुं दिशे,
शिला उपरजी, सिंहासन मन उल्लसे;
तिहां बेसीजी, शक्रे जिन खोले धर्या,
हरि त्रेसठजी, बीजा तिहां आवी मल्या. ५

त्रोटक छंद

मल्या चोसठ सुरपति तिहां, करे कलश अड जातिना,
मागधादि जलतीर्थ औषधि, धूप वली बहु भातिना;
अच्युतपतिए हुकम कीनो, सांभलो देवा सवे,
खीरजलधि गंगा नीर लावो, झटिति जिन जन्म महोत्सवे. ६

ढाल विवाहलानी देशी

सुर सांभलीने संचरीया, मागध वरदामे चलीया;
पद्मद्रह गंगा आवे, निर्मल जलकलशा भरावे. १

तीरथजल औषधि लेता, वली खीरसमुद्रे जाता;
जलकलशा बहुल भरावे, फूल चंगेरी थाला लावे. २

सिंहासन चामर धारी, धूपधाणां रकेबी सारी;
सिद्धांते भाख्या जेह, उपकरण मिलावे तेह. ३

ते देवा सुरगिरि आवे, प्रभु देखी आनंद पावे;
कलशादिक सहु तिहां ठावे, भक्ते प्रभुना गुण गावे. ४

ढाल राग धन्याश्री

आतमभक्ति मल्या केई देवा, केता मित्तनुजाई,
नारीप्रेर्या वली निज कुलवट, धर्मी धर्मसखाई;

जोईस व्यंतर भवनपतिना, वैमानिक सुर आवे,
अच्युतपति हुकमे धरी कलशा, अरिहाने नवरावे. १

अडजाति कलशा प्रत्येके, आठ आठ सहस प्रमाणो,
चउसठ सहस हुआ अभिषेके, अढीसे गुणा करी जाणो;
साठ लाख उपर एक कोडी, कलशानो अधिकार,
बासठ इन्द्र तणा तिहां बासठ, लोकपालना चार. २

चन्द्रनी पंक्ति छासठ छासठ, रविश्रेणि नरलोको,
गुरुस्थानक सुर केरो एकज, सामानिकनो एको;
सोहमपति ईशानपतिनी, इन्द्राणीना सोल,
असुरनी दश इन्द्राणी, नागनी बार करे कल्लोल. ३

ज्योतिष व्यंतर इन्द्रनी चउ चउ, पर्षदा त्रणनो एको,
कटकपति अंगरक्षक केरो, एक एक सुविवेको;
परचूरण सुरनो एक छेल्लो, ए अढीसे अभिषेको,
इशान इन्द्र कहे मुज आपो, प्रभुने क्षण अतिरेको. ४

तव तस खोले ठवी अरिहाने, सोहमपति मनरंगे,
वृषभ रूप करी शृंग जले भरी, न्हवण करे प्रभु अंगे;
पुष्पादिक पूजीने छांटे, करी केसर रंग रोले,
मंगलदीवो आरती करतां, सुरवर जय जय बोले. ५

भेरी भुंगल ताल बजावत, वलिया जिन कर धारी,
जननी घर माताने सोंपी, एणीपरे वचन उच्चारी;
'पुत्र तुमारो, स्वामी हमारो, अम सेवक आधार;
पंच धावी रंभादिक थापी, प्रभु खेलावण हार. ६

बत्रीस कोडी कनक मणि माणेक, वस्त्रनी वृष्टि करावे,
पूरण हर्ष करेवा कारण, द्वीप नंदीसर जावे;

करीय अठ्ठाई उत्सव देवा, निज निज कल्प सधावे,
दीक्षा केवलने अभिलाषे, नित नित जिन गुण गावे. ७

तपगच्छ इसर सिंहसूरीश्वर, केरा शिष्य वडेरा,
सत्यविजय पंन्यासतणे पद, कपूरविजय गंभीरा;
खिमाविजय तस सुजसविजयना, श्री शुभविजय सवाया,
पंडित वीरविजय शिष्ये, जिन जन्म महोत्सव गाया. ८

उत्कृष्टा एकसो ने सित्तेर, संप्रति विचरे वीश,
अतीत अनागत काले अनंता, तीर्थंकर जगदीश;
साधारण ए कलश जे गावे, श्री शुभवीर सवाई,
मंगललीला सुखभर पावे, घर घर हर्ष वधाई. ९

जगचिंतामणि चैत्यवंदन (शब्दार्थ)

जगचिंतामणि - भव्य जीवों के लिए चिंतामणि रत्न के समान

जग-नाह - भव्य जीवों के नाथ

जगगुरु - सर्व लोक के हित का उपदेश देने वाले

जगरक्खण - छह जीव निकाय के रक्षक

जगबंधव - समान बोध वाले तथा संसार के सभी प्राणियों के भाई (बंधु)

जगसत्थवाह - मोक्ष की अभिलाषा रखने वाले जीवों के सार्थवाह

जगभाव - षड्द्रव्य तथा नौ तत्त्वों के स्वरूप को प्रकट करने में

विअक्खण – विचक्षण/ चतुर

अट्ठावय - अष्टापद पर्वत पर

संठवियरूव - जिनकी प्रतिमाएँ (जिनबिंब) स्थापित की गई हैं

कम्मट्ठ - आठों कर्मों का

विणासण - नाश करने वाले

जिणवर - तीर्थंकर भगवंत

जयंतु - जयवंत होवें! / विजय प्राप्त करें!

अप्पडिहय - किसी के द्वारा नष्ट या पराजित न हो सके

सासण - शासन जिनका

कम्मभूमिहिं - कर्मभूमियों में (जहाँ मोक्ष मार्ग की साधना और कर्म की प्रधानता होती है) / जहाँ कर्म क्रियाशील है, ऐसी

कम्मभूमिहिं - कर्मभूमि के क्षेत्रों में
पढमसंघयणी - प्रथम संघयण वाले
उक्कोसय - उत्कृष्ट रूप से (अधिक से अधिक)
सत्तरिसय - एक सौ सत्तर
जिणवराण - तीर्थंकर भगवंतों को
विहरंत - विचरते हुए
लब्भइ - प्राप्त होते हैं / पाते हैं
नवकोडिहिं - नौ क्रोड / करोड़
केवलीण - केवली भगवंत
कोडिसहस्स - हजार क्रोड / करोड़
नव - नौ
साहु - साधुओ / साधु भगवंत
गम्मइ - जानते हैं / जाने जाते हैं
संपइ - वर्तमान काल में
जिणवर - तीर्थंकर भगवंत
वीस - बीस
मुणि - मुनिओ / मुनिराज
बिहुं - दो
वरनाण - उत्तम ज्ञान वाले (श्रेष्ठ केवलज्ञान वाले)
समणह - श्रमणों / साधुओं को
कोडि - क्रोड / करोड़
सहस्सदुअ - दो हजार
थुणिज्जइ - हम स्तुति करते हैं

निच्चविहाणि - नित्य प्रातःकाल
जयउ सामिय - हे स्वामी! आपकी जय हो! / जयवंत होवें
रिसह - ऋषभदेव भगवान
सत्तुंजि - शत्रुंजय पर्वत पर
उज्जिंति - श्री गिरनार पर्वत पर
पहु - प्रभु
नेमिजिण - नेमिनाथ भगवान
वीर - श्री महावीर भगवान
सच्चउरि - सत्यपुरी (सांचौर) नगर के
मंडण - आभूषण रूप
भरूअच्छहिं - भरूच में
मुणिसुव्वय - मुनिसुव्रतस्वामी भगवान
महुरि - मुहरि गाँव में
पास - श्री पार्श्वनाथ भगवान
दुह – दुःख
दुरिअ – पाप के
खंडण - खंडन करने वाले (नष्ट करने वाले)
अवर - अन्य / दूसरे
विदेहिं - पाँच महाविदेह क्षेत्र में
तित्थयरा - तीर्थंकर भगवंत
चिहुं - चार
दिसि - दिशाओं में
विदिसि - विदिशाओं में (कोणों में)

जिंकेवि - जो कोई भी

तीअ - अतीत (भूतकाल) संबंधी

अणागय - अनागत (भविष्यकाल) संबंधी

संपइअ - वर्तमान काल संबंधी

वंदुं - मैं वंदना करता/करती हूँ

जिण - जिनेश्वरों को

सव्वेवि - सभी को भी / सर्व को भी

सत्ताणवइ - सत्तानवे

सहस्सा - हजार

लक्खा - लाख

छप्पन - छप्पन

अट्ठ - आठ

कोडिओ - क्रोड / करोड़

बत्तीससय - बत्तीस सौ

बासिआइं - ब्यासी

तिअलोए - तीन लोक में

चेइए - चैत्यों को

वंदे - मैं वंदना करता/करती हूँ

पनरस - पंद्रह

कोडिसयाइं - सौ करोड़ (सौ कोटि)

बायाल - बयालीस

लक्ख – लाख

अडवन्ना - अट्ठावन

छत्तीस - छत्तीस

सहस – हजार

असिइं - अस्सी

सासय - शाश्वत

बिंबाइं - बिंबों को

पणमामि - मैं प्रणाम (भावपूर्वक नमस्कार) करता/करती हूँ

जं किंचि सूत्र (शब्दार्थ)

जं किंचि - जो कोई भी

नामतित्थं - नामरूप तीर्थ हैं

सग्गे - स्वर्गलोक में

पायालि - पाताललोक में

माणुसेलोए - मनुष्यलोक में

जाइं - जितने भी

जिणबिंबाइं - जिनबिंब

ताइं - उन

सव्वाइं - सभी को / सर्व को

वंदामि - मैं वंदन करता/करती हूँ

पाक्षिक (पक्खी) प्रतिक्रमण की विधि

१ प्रथम देवसिअ प्रतिक्रमण मे वंदित्तु आए वहाँ तक सब कहना चाहिए, परंतु चैत्यवंदन सकलार्हत् और स्तुति थोय स्नातस्या की कहनी चाहिए, उसके बाद एक खमासमण दे।

२ फिर देवसिअ आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पक्खि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करें फिर दो बार वांदणा दे।

३ उसके बाद इच्छाकारेण संदिसह भग० संबुद्धा खामणेणं, अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर पक्खिअं खामेउं ? इच्छं खामेमि पक्खिअं, एक पक्खस्स, पनरस राइ - दियाणं जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं कहे।

४ फिर इच्छाकारेण संदि० भग० पक्खिअं आलोउं ? इच्छं आलोएमि जो मे पक्खिओ अईयारो कओ कहकर -

५ उसके बाद इच्छा० संदि० भग० पक्खी अतिचार आलोउं? इच्छं, यह कहकर पक्खी अतिचार संपूर्ण कहे।

६ उसके बाद सव्वस्सवि पक्खिअ दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, इच्छा० संदि० भग० इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं कहकर -

७ फिर इच्छाकारी भगवन् ! पसाय करी पक्खी तप प्रसाद करशोजी चउत्थेणं, एक उपवास, दो आयंबिल, तीन नीवि, चार एकासणां, आठ बियासणां, दो हजार स्वाध्याय यथाशक्ति तप करके पहुँचाना।

८ यदि किया हो तो 'पइट्ठिओ' कहे और करना चाहते हो तो 'तहत्ति' कहे तथा न करना हो तो मौन रहे ।

९ उसके बाद दो वांदणा देकर, इच्छा० संदि० भग० पत्तेअ खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर पक्खिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, एक पक्खस्स, पनरस राइदियाणं जं किंचि आपत्तिअं० कहकर श्री सकल संघ को मिच्छा मि दुक्कडं बोले, फिर दो वांदणा दे।

१० फिर 'देवसिअ आलोइअ पडिक्कंता इच्छा० भगवन्० पक्खिअं पडिक्कमुं ?' इच्छं सम्मं पडिक्कमामि ऐसा बोले।

११ करेमि भंते० इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ० कहकर

१२ खमासमण देकर, इच्छा० संदि० भग० पक्खि सूत्र पढुं ? इच्छं कहकर तीन नवकार गिने। (साधु भगवंत हो तो पक्खीसूत्र कहे) और साधु भगवंत न हो तो श्रावक वंदित्तु सूत्र कहे, उसके बाद सुअदेवया की थोय कहे।

१३ उसके बाद नीचे बैंठकर दाँया घुटना खडा रखकर एक नवकार गिनकर, करेमि भंते० इच्छामि पडि० कहकर वंदित्तु बोलें। फिर

१४ करेमि भंते० इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे पक्खिओ० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर १२ लोगस्स का काउस्सग्ग चंदेसु निम्मलयरा तक न आता हो तो अडतालीस नवकार का काउस्सग्ग करे।

१५ पारकर प्रगट लोगस्स कहें, मुंहपत्ति पडिलेहण करके दो वांदणा दे, फिर इच्छा० संदि० भग० समत्त खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर पक्खिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, एक पक्खस्स पनरस राइ-दियाणं जं किंचि अपत्तिअं कहेना चाहिए।

१६ उसके बाद खमासमण देकर इच्छा० पक्खि खामणा खामुं ? इच्छं, कहकर चरवले पर हाथ स्थापन करके चार खामणा खामना, पहले, दूसरे और चोथे खामणा मे इच्छामि खमासमणो कहकर १ नवकार गिनकर 'सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि' कहना। और तीसरे खामणां में इच्छामि खमासमणो कहकर १ नवकार गिनकर 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडम्' कहना।

१७ फिर देवसिअ प्रतिक्रमण में वंदित्तु बोलने के बाद दो वांदणा से लेकर सामायिक पारते है तब तक सब विधि करे, परन्तु 'सुअदेवया' तथा 'जिसे खित्ते' की थोय के बदले 'ज्ञानादि' तथा 'यस्याः क्षेत्रं' की थोय बोले। स्तवन अजितशांति का बोले। सज्झाय के स्थान पर नवकार, उवसग्गहरं तथा संसार दावानल की चार थोय बोलें। और लघु शांति के स्थान पर बड़ी शांति बोलें फिर अंत में संतिकरं बोले। फिर दैवसिक प्रतिक्रमण की विधि अनुसार सामायिक पारे।

चउमासी प्रतिक्रमण की विधि

इसमें पक्खी की विधि के अनुसार करें परन्तु इतना विशेष रूप से ध्यान रखे कि १२ लोगस्स के काउस्सग्ग के स्थान पर २० लोगस्स का काउस्सग्ग चंदेसु निम्मलयरा तक करें तथा 'पक्खि' शब्द के बदले 'चउमासी' शब्द कहें। तथा तप में छट्ठेणं, दो उपवास, चार आयंबिल, छह नीवि, आठ एकासणां, सोलह बेयासणां, चार हजार स्वाध्याय कहे। अब्भुट्ठिओ खमाने मे 'एक पक्खस्स पनरस राइदियाणं के स्थान पर चार मासाणं आठ पक्खाणं एकसोवीस राइदियाणं कहे'

कर्म की परिभाषा और उसके भेद (कर्म का स्वरूप)

३. वेदनीय कर्म : इंद्रियजन्य या मनोजन्य भौतिक सुख-दुःख का जो अनुभव कराए, वह वेदनीय कर्म है। उदाहरण: मधु-लिप्त तलवार की धार, यह कर्म मधु-लिप्त (शहद से सनी हुई) तलवार की धार के समान है। यदि तलवार की धार पर शहद लगाया गया हो और कोई उसे चाटे, तो पहले उसे मीठास का सुखद अनुभव होता है लेकिन तुरंत ही जीभ कट जाने से तीव्र दुःख और वेदना का अनुभव होता है । यह कर्म जीव को सुख और दुःख, दोनों का अनुभव कराता है ।
वेदनीय कर्म २ प्रकार का होता है:
१. शाता वेदनीय कर्म (सुख का अनुभव कराने वाला)
२. अशाता वेदनीय कर्म (दुःख का अनुभव कराने वाला)

- **कर्म का बंध :** संसार के सभी जीवों पर दया और करुणा करने से, दुःखी जीवों के दुःखों में सहभागी बनने से और उनके दुःखों को दूर करने से 'शाता वेदनीय कर्म' का बंध होता है । जीवों को त्रास और संताप देने से तथा दूसरों के दुःखों को देखकर खुश होने से 'अशाता वेदनीय कर्म' बंधता है।
- **कर्म का फल :** इस कर्म के उदय से जीवात्मा को संसार में मनचाहे और मनपसंद भोगोपभोग (अनुकूल साधन, सुख-सुविधाएँ) प्राप्त होते हैं । इस कर्म के उदय के कारण जीव को दरिद्रता, शारीरिक-मानसिक रोग और अनेक प्रकार के दुःख सहन करने पड़ते हैं ।

४. मोहनीय कर्म : जो कर्म जीव को मूढ़ (अज्ञानी) बनाकर हित और अहित (क्या सही है और क्या गलत) का विवेक न होने दे, वह मोहनीय कर्म है।
उदाहरण: यह कर्म मदिरापान (शराब के नशे) के समान है। जिस प्रकार मदिरा के

नशे में व्यक्ति अपना होश-हवास भूल जाता है, ठीक उसी प्रकार मोहनीय कर्म के उदय से जीव हित-अहित के विवेक का होश भूल जाता है। इस कर्म के कारण जीवात्मा आत्म-भान भूल जाती है और क्षणभंगुर भोग-विलास में आसक्त हो जाती है। संक्षेप में, आत्मा को विकृत और मूढ़ बनाने वाले कर्म को मोहनीय कर्म कहते हैं । धर्म के विषय में अनेक प्रकार की शंकाएँ और कुशंकाएँ पैदा करने का काम भी यही मोहनीय कर्म करता है । आठों कर्मों में यह मोहनीय कर्म सबसे भयंकर है । इसे सभी कर्मों का 'राजा' कहा जाता है। इसी के सहारे बाकी के कर्म जीव को चारों गतियों में भटकाते हैं ।

- मोहनीय कर्म के मुख्य रूप से २ भेद हैं:
  १. दर्शन मोहनीय कर्म २. चारित्र मोहनीय कर्म ।

१. दर्शन मोहनीय कर्म : परमात्मा की वाणी (वचनों) के प्रति श्रद्धा उत्पन्न न होने देना या यदि श्रद्धा उत्पन्न हो भी जाए तो शंकाओं के द्वारा उसे नष्ट कर देना-यह दर्शन मोहनीय कर्म का कार्य है ।
इसके ३ उप-प्रकार हैं: अ. सम्यक्त्व मोहनीय
ब. मिथ्यात्व मोहनीय, क. मिश्र (सम्यक्-मिथ्यात्व) मोहनीय

२. चारित्र मोहनीय कर्म : परमात्मा की वाणी के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो जाने पर भी, जीव को उस श्रद्धा के अनुसार आचरण न करने देना-यह चारित्र मोहनीय कर्म का कार्य है । चारित्र मोहनीय के २ मुख्य प्रकार हैं:

अ. कषाय मोहनीय : इसके अंतर्गत क्रोध, मान, माया और लोभ से उत्पन्न होने वाले १६ भेद आते हैं ।

ब. नोकषाय मोहनीय : इसके अंतर्गत हास्य, रति, अरति आदि से उत्पन्न होने वाले ९ भेद आते हैं । इस प्रकार चारित्र मोहनीय के कुल 16 + 9 = 25 उप-प्रकार होते हैं।

- दर्शन मोहनीय कर्म के ३ और चारित्र मोहनीय कर्म के २५ उप-भेद होते हैं। इस प्रकार मोहनीय कर्म के कुल मिलाकर 3 + 25 = 28 उत्तर प्रकृतियाँ हैं ।
- **कर्म का बंध :** यह कर्म निम्नलिखित कारणों से बंधता है: तीव्र रूप से कषाय-क्रोध, मान (अहंकार), माया (कपट) और लोभ करने से । धर्म के नाम पर अधर्म का आचरण करने से । अनाचार, दुराचार और व्यभिचार करने आदि से।
- **कर्म का फल :** इस कर्म के उदय के कारण जीवात्मा मोहांध , रागांध और विषयासक्त बन जाती है । जीव ईर्ष्यालु, झगड़ालू, मायावी (कपटी) और दंभी बन जाता है । वह बिना किसी कारण के या किसी कारण से हमेशा भयभीत और शोककुल (दुःखी) रहता है ।

जैन धर्म की मोनोपोली (एकाधिकार)

आज के इस आधुनिक युग में विज्ञान हमें केवल सुख-सुविधाएँ दे सकता है लेकिन सच्चा 'सुख' और 'शांति' तो जीवन जीने की कला में ही समाहित है । हजारों वर्ष पुराने जैन धर्म के सिद्धांत आज केवल धार्मिक मान्यताएँ मात्र नहीं हैं, बल्कि विज्ञान और मनोविज्ञान का एक अद्भुत संगम हैं । जैन धर्म की 'मोनोपोली' (एकाधिकार) सत्ता या संपत्ति पर नहीं बल्कि नीचे दिए गए सिद्धांतों पर है । हमें जैन धर्म के सिद्धांतों को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से ही नहीं बल्कि एक "Life Management Tools" (लाइफ मैनेजमेंट टूल्स)' के रूप में देखने की आवश्यकता है ।

१. **अहिंसा :** अहिंसा का अर्थ केवल 'न मारना' जैसा कोई बंधन नहीं है बल्कि यह सह-अस्तित्व का विज्ञान है।

विज्ञान: संसार के प्रत्येक जीव में पीड़ा (दर्द) का अनुभव करने की क्षमता होती है। जब प्राणियों पर हिंसा होती है, तब भय और दर्द के कारण उनके भीतर पैदा होने वाले 'विषाक्त तत्व' (Toxic elements) मानव शरीर और पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते हैं ।

मनोविज्ञान: हृदय में करुणा और दया का भाव होने से व्यक्ति का मानसिक तनाव कम होता है और उसकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता में वृद्धि होती है ।

प्रेरक उदाहरण: पशुओं के प्रति भगवान नेमिनाथ की संवेदनशीलता (जिसके कारण उन्होंने विवाह के मंडप से लौटकर दीक्षा ले ली) और एक पक्षी के प्राण बचाने के लिए मेतारज मुनि का आत्म-बलिदान; यह साबित करता है कि व्यक्तिगत सुख की तुलना में 'जीवदया' और 'स्वार्थ का त्याग' हमेशा सर्वोपरि है।

आधुनिक संदर्भ: "अहिंसा परमो धर्मः" के सूत्र को जैन धर्म ने जितनी सूक्ष्मता (गहराई) से समझाया है, उतना विश्व के किसी अन्य दर्शन में देखने को नहीं मिलता । जैन धर्म में 'छह काय के जीवों' (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति और त्रस जीव) की रक्षा का उपदेश है, जो वास्तव

में आज के आधुनिक 'पर्यावरण संतुलन' को बचाने का ही विज्ञान है।

२. **आज्ञा :** आज्ञा आत्मा को परम स्वास्थ्य और आत्म-अनुशासन की ओर ले जाने वाला मार्गदर्शन है।

विज्ञान: विज्ञान कहता है कि सूर्यास्त के बाद मानव शरीर की जठराग्नि मंद पड़ जाती है। प्रभु द्वारा दी गई 'चौविहार' (सूर्यास्त के बाद भोजन न करने) की आज्ञा वास्तव में आधुनिक 'Intermittent Fasting (इंटरमिटेंट फास्टिंग') ही है, जो कैंसर और मधुमेह (Diabetes) जैसी बीमारियों से हमारी रक्षा करती है।

मानसिक अनुशासन: जब हम गुरु या तीर्थंकर परमात्मा की आज्ञा का पालन करते हैं, तब हमारा अहंकार पिघल जाता है । यह अनुशासन जीवन में मानसिक शांति और स्थिरता लाता है ।

प्रेरक उदाहरण: गौतम स्वामी के पास अनंत लब्धियाँ होने के बावजूद, उन्होंने हमेशा भगवान महावीर की आज्ञा को ही सर्वोपरि माना। यही अनन्य श्रद्धा और अहंकार का विसर्जन उन्हें केवलज्ञान तक ले गया।

आधुनिक संदर्भ: आज के युग में स्वतंत्रता के नाम पर स्वच्छंदता बढ़ रही है, ऐसे समय में आज्ञा का पालन प्रासंगिक है । जैन दर्शन में आज्ञा का अर्थ गुलामी नहीं, बल्कि 'सुरक्षा' है । जिस प्रकार ट्रैफिक के नियमों का पालन करना हमारी अपनी भलाई के लिए है, उसी प्रकार वीतराग प्रभु की आज्ञा का पालन करना संसार के संघर्षों से बचने और आत्मा के उद्धार के लिए 'ट्रैफिक गाइडलाइंस' के समान है ।

३. **अनेकांतवाद और स्याद्वाद :** जैन दर्शन का अनेकांतवाद केवल एक सिद्धांत नहीं है बल्कि आधुनिक विज्ञान और मनोविज्ञान की दृष्टि से सत्य को समझने की सर्वोच्च पद्धति है । यदि अनेकांतवाद 'विचार' है, तो स्याद्वाद 'संवाद की कला' है ।

विज्ञान: आइंस्टीन के सापेक्षता के सिद्धांत (Theory of Relativity) की तरह अनेकांतवाद सिखाता है कि सत्य देखने वाले के दृष्टिकोण पर निर्भर

करता है। विज्ञान के 'नियम और शर्तें लागू' की तरह स्याद्वाद सिखाता है कि कोई भी कथन किसी विशेष अपेक्षा से ही सही हो सकता है

मनोविज्ञान: दूसरों के विचारों को स्वीकार करने की क्षमता मानसिक तनाव को कम करती है और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ाती है । 'स्यात्' (शायद/कदाचित्) शब्द का प्रयोग हमारी वाणी में विनम्रता लाता है ।

प्रेरक उदाहरण: प्रभु ने एक कथा के माध्यम से इसे बहुत सुंदर तरीके से समझाया है। जब छह अंधे व्यक्ति एक हाथी के अलग-अलग अंगों को छूते हैं, तो वे हाथी को खंभा, दीवार या रस्सी मान लेते है । वे अपनी-अपनी जगह सही हैं लेकिन उनका सत्य अधूरा है। पूर्ण सत्य तो तभी समझ आता है जब पूरे हाथी को देखने की समग्र दृष्टि मिले। यह कहानी हमें सीखाती है कि पूर्ण सत्य तक पहुँचने के लिए हर पक्ष को समझना अनिवार्य है।

आधुनिक संदर्भ: आज के सोशल मीडिया और वैचारिक कट्टरता के युग में यह एक 'ग्लोबल सॉल्यूशन' (वैश्विक समाधान) है । यह 'मैं ही सही हूँ' के अहंकार को तोड़कर 'संवाद' का मार्ग खोलता है । अनेकांतवाद हमें 'ओपन माइंड'(खुले विचारों वाला दिमाग) रखकर हर पहलू को समझने की दृष्टि देता है, जो वैश्विक शांति के लिए अनिवार्य है ।

४. **माध्यस्थ भाव :** जैन दर्शन में 'माध्यस्थ भाव' का अर्थ है-किसी के भी प्रति राग (आसक्ति) या द्वेष (नफरत) रखे बिना 'स्थितप्रज्ञ' बने रहना। यह आधुनिक मनोविज्ञान और विज्ञान के अनुसार सुख की चाबी है ।

विज्ञान: जब हम किसी पर गुस्सा या द्वेष करते हैं, तो हमारे मस्तिष्क में तनाव बढ़ता है। माध्यस्थ भाव मस्तिष्क को शांत रखकर हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

मनोविज्ञान: मनोविज्ञान के अनुसार किसी परिस्थिति को 'जज' करने के बजाय केवल उसका 'अवलोकन' करने से भावनात्मक उथल-पुथल को रोका जा सकता है। जहाँ परिस्थिति को बदलना संभव न हो, वहाँ अपनी मनःस्थिति को बदल लेना ही सच्चा माध्यस्थ भाव है।

प्रेरक उदाहरण: जब विषैले सर्प चंडकौशिक ने भगवान महावीर को डंसा, तब प्रभु ने उस पर क्रोध करने के बजाय 'माध्यस्थ भाव' रखा। प्रभु की इस परम शांति ने उस भयंकर सर्प का हृदय परिवर्तन कर दिया।

आधुनिक संदर्भ: सुख में बहुत अधिक अभिमान न करना और दुःख में हिम्मत न हारना; इस स्थिरता के कारण व्यक्ति जीवन में बेहतर निर्णय ले सकता है। बाहरी दुनिया चाहे कितनी भी अशांत हो यदि आप भीतर से तटस्थ हैं तो आपकी शांति कोई नहीं छीन सकता। 'माध्यस्थ भाव' का अर्थ हार मान लेना या भाग्य के भरोसे छोड़ देना (भाग्यवाद) नहीं है बल्कि यह तो मन को मजबूत रखने की एक कला है।

५. **अपरिग्रह :** जैन दर्शन का 'अपरिग्रह' केवल भौतिक वस्तुओं का त्याग नहीं है बल्कि वस्तुओं के प्रति रहने वाली 'ममत्व वृत्ति' (आसक्ति) का त्याग है ।

विज्ञान: विज्ञान की दृष्टि से यह सिद्धांत पृथ्वी के सीमित संसाधनों का संरक्षण करके ग्लोबल वार्मिंग जैसी पर्यावरण की बड़ी समस्याओं को रोकता है।

मनोविज्ञान: मनोविज्ञान के अनुसार, अत्यधिक वस्तुओं का संग्रह मानसिक बोझ और चिंता को बढ़ाता है, जबकि अपरिग्रह 'लेस इज मोर' (कम ही अधिक है) के मंत्र द्वारा मन को शांति और वैचारिक स्पष्टता देता है

प्रेरक उदाहरण: जैन साधुओं का अत्यंत सरल, अपरिग्रही और संपत्ति-विहीन त्यागी जीवन यह प्रमाणित करता है कि सच्चा सुख वस्तुओं को 'इकट्ठा करने' में नहीं बल्कि उन्हें 'त्यागने' में है।

आधुनिक संदर्भ: आज के संदर्भ में, आवश्यकता और लालच के बीच का अंतर समझकर अपरिग्रह अपनाने वाला व्यक्ति दिखावे के खर्चों से बचकर आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करता है। इस प्रकार, अपरिग्रह जमाखोरी को छोड़कर संतोषपूर्वक जीने का सर्वश्रेष्ठ विज्ञान है।

निष्कर्ष : तीर्थंकर परमात्मा के सिद्धांत हजारों वर्षों के बाद आज भी आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर पूरी तरह खरे उतरे हैं। यह केवल एक धर्म नहीं है, बल्कि २१वीं सदी में जीने का एक 'Advanced Science' (एडवांस्ड

साइंस) और 'Future Ready Survival Kit' (फ्यूचर रेडी सर्वाइवल किट) है। जब जीवन में उलझनें हों, रिश्तों में दरार पड़ रही हो या मानसिक शांति दांव पर लगी हो, तब जैन दर्शन के ये सिद्धांत मार्गदर्शक बनकर हर समस्या का सटीक समाधान देते हैं। यह सुख, शांति और सफलतापूर्वक जीने की सच्ची कला है।

- **अहिंसा:** यह हमारे शरीर, मन और पूरी पृथ्वी को प्रेम के धागे से जोड़ती है।
- **आज्ञा:** यह आत्मा की रक्षा करने वाली 'सेफ्टी गाइडलाइन' है, जो हमें निरोगी शरीर और शांत मन देती है।
- **अनेकांतवाद:** यह खुले दिमाग का विज्ञान है, जो हमारे भीतर से जिद को दूर कर उदारता लाता है।
- **माध्यस्थ भाव:** यह बुद्धि और भावनाओं का संतुलन है; यह हमें गुस्से में लड़ने के बजाय शांति से जवाब देना सीखाता है।
- **अपरिग्रह:** यह इच्छाओं को नियंत्रण में रखने का विज्ञान है, जो हमें वस्तुओं का मालिक बनाता है, उनका गुलाम नहीं।

संक्षेप में, जैन धर्म की यह 'मोनोपोली' आधुनिक मनुष्य के लिए एक शक्तिशाली 'Survival Kit' और 'Master Key' (सफलता की कुंजी) है। अब सुखी जीवन का ताला खोलने की जिम्मेदारी आपकी है!

• • •

मौखिक कक्षा ११

सूत्र	: भक्तामर स्तोत्र (सूत्र ५८)	४०
अर्थ	: नमुत्थुणं से नमोऽर्हत् सूत्र (शब्दार्थ)	३०
कर्म	: ५. आयुष्य कर्म	३०
	६. नाम कर्म	
	७. गोत्र कर्म	
	८. अंतराय कर्म	
		१००

(५८) भक्तामर स्तोत्र

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा, मुद्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम्;
सम्यक् प्रणम्य जिन-पाद-युगं युगादा, -वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम् १

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्व-बोधा-दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुर-लोक-नाथैः;
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् २

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पादपीठ! स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-त्रपोऽहम्;
बालं विहाय जल-संस्थितमिन्दुबिम्ब, -मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्! ३

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र! शशाङ्ककान्तान्, कस्ते क्षमः सुर-गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या;
कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्रं, को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्? ४

सोऽहं तथापि तव भक्तिविशान्मुनीश!, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः;
प्रीत्यात्म-वीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनाऽर्थम्. ५

अल्प-श्रुतं श्रुतवतां परिहास-धाम, त्वद्-भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम्;
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारु-चूत-कलिका-निकरैकहेतुः ६

त्वत्संस्तवेन भव-सन्तति-सन्निबद्धं, पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्;
आक्रान्त-लोकमलि-नीलमशेषमाशु, सूर्यांशु-भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ७

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद, -मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात्;
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु, मुक्ताफल-द्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ८

आस्तां तव स्तवनमस्त-समस्त-दोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति;
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि. ९

नात्यद्भुतं भुवनभूषण! भूत-नाथ!, भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः;
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा?, भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति? १०

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष-विलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः;
पीत्वा पयः शशि-करद्युति-दुग्ध-सिन्धोः, क्षारं जलं जल-निधेरशितुं क इच्छेत्? ११

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैक-ललाम-भूत!;
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति. १२

वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र-हारि, निःशेषनिर्जित-जगत्त्रितयोपमानम्?;
बिम्बं कलंक-मलिनं क्व निशाकरस्य?, यद्वासरे भवति पाण्डु-पलाश-कल्पम्. १३

संपूर्ण-मण्डल-शशांक-कला-कलाप-शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति;
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम्? १४

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि-र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम्?;
कल्पान्त-काल-मरुता चलिताचलेन, किं मंदराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्? १५

निर्धूम-वर्त्तिपवर्जित-तैल-पूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि;
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ! जगत्प्रकाशः १६

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति;
नाम्भोधरोदरनिरुद्ध-महाप्रभावः, सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र! लोके. १७

नित्योदयं दलित-मोहमहान्धकारं, गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम्;
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति, विद्योतयज्जगदपूर्व-शशांक-बिम्बम्. १८

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा?, युष्मन्मुखेन्दु दलितेषु तमस्सु नाथ!,
निष्पन्न-शालिवनशालिनि जीव लोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभार-नम्रैः? १९

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरि-हरादिषु नायकेषु;
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि. २०

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति;
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नाऽन्यः; कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि. २१

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता;
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम्. २२

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात्;
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः. २३

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनंगकेतुम्;
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति संतः. २४

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवन-त्रय-शंकरत्वात्,
धाताऽसि धीर! शिवमार्ग-विधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि. २५

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्ति-हराय नाथ!, तुभ्यं नमः क्षितितलामल-भूषणाय!;
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय!; तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय. २६

को विस्मयोऽत्र? यदि नाम गुणैरशेषै-स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश!;
दोषैरुपात्त-विविधाश्रय-जात-गर्वैः, स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि. २७

उच्चैरशोक-तरु-संश्रितमुन्मयूख-माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्;
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त-तमो-वितानं, बिम्बं रवेरिव पयोधर-पार्श्व-वर्ति. २८

सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्;
बिम्बं वियद्विलसदंशु-लता-वितानं, तुंगोदयाद्रि-शिरसीव सहस्र-रश्मेः २९

कुन्दावदात-चल-चामर-चारु-शोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम्;
उद्यच्छशांक-शुचिनिर्झर-वारि-धार-मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्. ३०

छत्रत्रयं तव विभाति शशांककान्त, मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापम्;
मुक्ताफल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभं, प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्. ३१

उन्निद्र-हेम-नव-पंकज-पुंज-कान्ति, पर्युल्लसन्नख-मयूख-शिखाभिरामौ;
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति. ३२

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र!, धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य;
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा, तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकाशिनोऽपि? ३३

श्च्योतन्मदाविल-विलोल-कपोल मूल-मत्त-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम्;
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्. ३४

भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त-मुक्ताफल-प्रकर-भूषित-भूमि-भागः;
बद्ध-क्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रम-युगाचल-संश्रितं ते. ३५

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्फुलिंगम्;
विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतन्तं, त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम्. ३६

रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्;
आक्रामति क्रम-युगेन निरस्त-शंक-स्त्वन्नाम-नागदमनी हृदि यस्य पुंसः. ३७

वल्गत्तुरंग-गज-गर्जित-भीम-नाद-माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्;
उद्यद्दिवाकर-मयूख-शिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति. ३८

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह-वेगावतार-तरणातुर-योध-भीमे;
युद्धे जयं विजितदुर्जय-जेय-पक्षा-स्त्वत्पादपंकज-वनाश्रयिणो लभन्ते. ३९

अम्भोनिधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र-पाठीन-पीठ-भय-दोल्बण-वाडवाग्नौ;
रंगत्तरंग-शिखर-स्थित-यानपात्रा-स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति. ४०

उद्भूत भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युत-जीविताशाः;
त्वत्पाद-पंकज-रजोऽमृत-दिग्धदेहा, मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्य रूपाः. ४१

आपादकण्ठमुरु शृंखल-वेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगड-कोटि-निघृष्ट-जंघाः;
त्वन्नाम मन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति. ४२

मत्त-द्विपेन्द्र-मृग-राज-दवानलाहि-संग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम्;
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते. ४३

स्तोत्र-स्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्;
धत्ते जनो य इह कण्ठ-गतामजस्रं, तं मान-तुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः. ४४

नमुत्थुणं सूत्र (शब्दार्थ)

नमुत्थुणं – नमस्कार हो
अरिहंताणं – अरिहंतों को
भगवंताणं – भगवानों को
आइगराणं – द्वादशांगी की आदि (शुरुआत) करने वाले को
तित्थयराणं – धर्मतीर्थ को चलाने वाले (प्रवर्तक) को
सयंसंबुद्धाणं – अपने आप (स्वयं) तत्व को जानने वाले को
पुरिसुत्तमाणं – पुरुषों में उत्तम को
पुरिससिहाणं – पुरुषों में सिंह के समान पराक्रमी को
पुरिस – पुरुषों में
वर – प्रधान (श्रेष्ठ)
पुंडरीआणं – कमल के समान निर्लेप को
गंधहत्थीणं – गंधहस्ती के समान सामर्थ्यवान को
लोगुत्तमाणं – लोक में उत्तम को
लोगनाहाणं – लोकों के नाथ को
लोगहियाणं – लोक का हित करने वाले को
लोगपईवाणं – लोक में दीपक के समान प्रकाश करने वाले को
लोगपज्जोअगराणं – लोक में उद्योत (उजाला) करने वाले को
अभयदयाणं – अभयदान देने वाले को
चक्खुदयाणं – अंतर-चक्षु देने वाले को
मग्गदयाणं – मोक्ष मार्ग देने वाले को
सरणदयाणं – शरण देने वाले को
बोहिदयाणं – बोधिबीज देने वाले को
धम्मदयाणं – धर्म देने वाले को
धम्मदेसयाणं – धर्म का उपदेश करने वाले को
धम्मनायगाणं – धर्म के नायक को
धम्मसारहीणं – धर्म के सारथी को
धम्मवर – धर्म रूपी
चाउरंत – चार गति का अंत करने वाले को
चक्कवट्टीणं – धर्म के चक्रवर्ती को
अप्पडिहय – जो किसी से भी नष्ट न हो सके, वैसे
वरनाण – केवलज्ञान को
दंसण – केवलदर्शन को
धराणं – धारण करने वाले को
वियट्ट – जो निवृत्त हुए हैं
छउमाणं – छद्मस्थ अवस्था से उसे
जिणाणं – जीतने वाले को
जावयाणं – जिताने वाले को
तिन्नाणं – तैरने वाले को
तारयाणं – तारने वाले को
बुद्धाणं – तत्त्व को जानने वाले को
बोहयाणं – बोध देने वाले को

मुत्ताणं – स्वयं कर्मों से मुक्त हुए को

मोअगाणं – दूसरों को कर्मों से मुक्त कराने वाले को

सव्वन्नूणं – सर्वज्ञों को

सव्वदरिसीणं – सर्वदर्शियों को

सिव – उपद्रव रहित

अयल – अचल (स्थिर)

अरुअ – रोग रहित

अणंत – अनंत

अक्खय – अक्षय

अव्वाबाह – बाधा रहित

अपुणराविति – जहाँ से दोबारा जन्म न लेना पड़े, ऐसा

सिद्धिगइनामधेयं – सिद्धगति नाम के

ठाणं – स्थान को

संपत्ताणं – प्राप्त हुए को

नमो – नमस्कार हो

जिणाणं – जिनेश्वरों को

जिअभयाणं – जिन्होंने इहलोक आदि सातों भयों को जीत लिया है, ऐसे भगवंतों को

जे अ – और जो

अईआ – अतीत काल में

सिद्धा – सिद्ध हुए

भविस्संति – सिद्ध होंगे

अणागए काले – अनागत काल में

संपइ अ – और जो वर्तमान काल में

वट्टमाणा – विद्यमान हैं

सव्वे – उन सभी (द्रव्य जिनों) को

तिविहेण – मन, वचन और काया से

वंदामि – मैं वंदना करता हूँ

जावंति चेइआइं सूत्र – शब्दार्थ

जावंति – जितने

चेइआइं – चैत्य हैं

उड्ढे अ – ऊर्ध्वलोक में

अहे अ – अधोलोक में

तिरिअलोए – तिर्यक् लोक (मध्यलोक) में

सव्वाइं – सभी को

ताइं – उनको (उन्हें)

वंदे – मैं वंदना करता हूँ

इह – यहाँ

संतो – होते हुए

तत्थ – वहाँ

संताइं – रहे हुए को

जावंत केवि साहू सूत्र – शब्दार्थ

जावंत – जितने	सव्वेसिं – सभी को
केवि – कोई भी	तेसिं – उनको (उन्हें)
साहू – साधु (साधुगण)	पणओ – नमन किया
भरह – भरत क्षेत्र में	तिविहेण – मन, वचन और काया से
ऐरवय – ऐरावत क्षेत्र में	तिदंड – तीन दंड से
महाविदेहे – महाविदेह क्षेत्र में	विरयाणं – निवृत्त हुए को

नमोऽर्हत् (संक्षिप्त पंच परमेष्ठी नमस्कार) सूत्र – शब्दार्थ

नमो – नमस्कार हो	आचार्य – आचार्य को
अर्हत् – अरिहंत को	उपाध्याय – उपाध्याय को
सिद्ध – सिद्ध को	सर्वसाधुभ्यः – सर्व साधुओं को

कर्म की परिभाषा और उसके भेद (कर्म का स्वरूप)

५. **आयुष्य कर्म :** जीवन का निर्माण करने वाले पुद्गल (जड़ तत्वों) को आयुष्य कर्म कहते हैं। यह कर्म जेल (कैदखाने) के समान है। जिस प्रकार जेल में बंद इंसान अपनी इच्छा के अनुसार आ जा नहीं सकता, उसी प्रकार इस कर्म के कारण जीवात्मा देह रूपी कैदखाने में बंद रहती है। आयुष्य कर्म के चार भेद हैं: नरक आयु, तिर्यंच आयु, मनुष्य आयु और देव आयु।

बंध के कारण और उसका फल:

- **नरक गति:** जिन कार्यों में हर पल जीवों की हिंसा होती हो, ऐसे व्यापार-धंधे करने से, संग्रहखोरी (कालाबाजारी) करने से, मांसाहार करने से और पंचेंद्रिय जीवों की हत्या करने से जीवात्मा नरक गति में जाती है।
- **तिर्यंच गति:** कपट के साथ झूठ बोलने से, विश्वासघात करने से और गलत नाप-तोल करने से जीवात्मा तिर्यंच (पशु-पक्षी) गति में जाती है।
- **मनुष्य गति:** स्वभाव से निष्कपटी (सरल), स्वभाव से विनीत (नम्र), दयालु और ईर्ष्या रहित होने पर जीव मनुष्य गति पाता है।

- **देव गति:** दीक्षा लेकर संयम का पालन करने से, गृहस्थ जीवन में बारह व्रतों का पालन करने से, तप करने से और पराधीनता में भी समताभाव से दुःख सहन करने से जीवात्मा देवगति में जाती है।

६. **नाम कर्म :** जिस पुद्गल के निमित्त से जीवन की विविध सामग्रियां (शारीरिक संरचना) मिलती हैं, उसे नाम कर्म कहते हैं । यह कर्म चित्रकार के समान है । जिस प्रकार चित्रकार पेंसिल और ब्रश से तरह-तरह के चित्र बनाता है उसी प्रकार इस कर्म के कारण जीवात्मा विभिन्न रूप और आकार के शरीर को प्राप्त करती है। नाम कर्म के दो मुख्य प्रकार कहे गए हैं: शुभ नाम कर्म और अशुभ नाम कर्म । नाम कर्म के कुल १०३ उत्तर भेद हैं ।

- **बंध के कारण:** मन, वचन और काया को सरल तथा पवित्र रखने से एवं सभी के साथ प्रेम और मित्रतापूर्ण व्यवहार करने से शुभ नाम कर्म बंधता है । इसके विपरीत, मन, वचन और काया को कुटिल (टेढ़ा) तथा अपवित्र रखने से और सभी के साथ क्लेश-झगड़ा करने से अशुभ नाम कर्म बंधता है।
- **कर्म का फल:** शुभ नाम कर्म से: मनपसंद भोगोपभोग, यश (कीर्ति), रूप, आरोग्य आदि सुख मिलते हैं । अशुभ नाम कर्म से: अभाव, दुर्भाव, पीड़ा, बदनामी, बीमारी आदि अनेक दुखों का सामना करना पड़ता है ।

७. **गोत्र कर्म :** जीव को ऊँचे या नीचे गोत्र में जन्म दिलाकर समाज में उच्चता या निम्नता प्राप्त कराने वाले कर्म को गोत्र कर्म कहते हैं। इसके दो प्रकार हैं: उच्च गोत्र और नीच गोत्र। जिस कर्म के प्रभाव से उच्च गोत्र मिले, वह उच्च गोत्र कर्म है और जिसके प्रभाव से नीच गोत्र मिले, वह नीच गोत्र कर्म है। यह कर्म कुम्हार के समान है। जैसे कुम्हार एक ही मिट्टी और एक ही चाक से अलग-अलग बर्तन बनाता है - कोई देव-पूजा का कलश बनता है, तो कोई अपवित्र वस्तुएं रखने का पात्र बनता है। वैसे ही गोत्र कर्म भी प्रत्येक आत्मा को उसके बांधे हुए कर्मों के आधार पर जाति, कुल, बल आदि की उच्चता या निम्नता दिलाकर समाज में पूजनीय (उच्च गोत्र) या निंदनीय (नीच गोत्र) बनाता है।

- **बंध के कारण:** जाति, कुल, बल, रूप, तप, ज्ञान, लाभ और ऐश्वर्य - इनमें से किसी एक का या एक से अधिक का अभिमान (घमंड) करने से नीच गोत्र कर्म बंधता है और ऐसा अभिमान न करने से (नम्र रहने से) उच्च गोत्र कर्म बंधता है।

- **कर्म का फल:** उच्च गोत्र कर्म से सुखी, संपन्न और संस्कारी परिवार में जन्म मिलता है। साथ ही रूप, बल, समृद्धि आदि उत्तम सामग्रियां प्राप्त होती हैं। नीच गोत्र कर्म से इसके विपरीत फल मिलता है, अर्थात् नीचे (हलके) कुल में जन्म मिलता है, दरिद्रता (गरीबी), रोग और कुरूपता आदि प्राप्त होते हैं।

- **अंतराय कर्म :** आत्मा की क्रियात्मक शक्ति में अवरोध (रुकावट) पैदा करने वाले कर्म को अंतराय कर्म कहते हैं। जो कर्म जीव को दान, लाभ, भोग, उपभोग या वीर्य (पराक्रम) प्रकट करने में बाधक बने, वह अंतराय कर्म है।

  यह राजा के भंडारी (खजांची) के समान है। जैसे राजा किसी याचक को दान देने की इच्छा करे, लेकिन भंडारी उसमें विघ्न डाल दे, तो राजा की इच्छा पूरी नहीं हो पाती; वैसे ही अंतराय कर्म दान आदि क्रियाओं में विघ्न डालता है। आत्मा में अनंत शक्ति और गुण मौजूद हैं, लेकिन इस कर्म के कारण वे प्रकट नहीं हो पाते। इसके ५ प्रकार हैं: दानांतराय, लाभांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतराय और वीर्यांतराय।

- **बंध के कारण:** यदि कोई दान दे रहा हो तो उसमें बाधा डालने से, किसी को लाभ मिल रहा हो तो उस लाभ को रोकने से, किसी को खान-पान करने से रोकने से और धर्म-ध्यान करने में बाधा डालने से यह अंतराय कर्म बंधता है।

- **कर्म का फल:** इस कर्म के उदय के कारण जीवात्मा चाहकर भी दान नहीं दे पाता, लाभ प्राप्त नहीं कर पाता, भोग और उपभोग की वस्तुओं का आनंद नहीं ले पाता और न ही धर्म की आराधना कर पाता है।

साधर्मिक अर्थात् सच्चे देव गुरु धर्म को माननेवाला.

निष्कर्ष : इन ८ कर्मों और उनके उप-कर्मों से आत्मा जब तक जुड़ी और बंधी रहती है, तब तक जीवात्मा का संसार चक्र चलता ही रहता है। लेकिन मनुष्य अपनी आत्मा को कर्मों से मुक्त भी कर सकता है। तप, त्याग, वैराग्य, ज्ञान, ध्यान और जप आदि धर्म-साधना करके वह अपनी आत्मा को निर्मल और मोह-रहित बना सकता है। धर्म की उत्कृष्ट और उग्र साधना से समस्त कर्मों का क्षय (नाश) करके जीवात्मा मुक्त और बुद्ध हो सकती है। जब जीवात्मा समस्त कर्मों का समूल नाश कर देती है, तब वह स्वयं परमात्मा बन जाती है।

परीक्षा लेने का उद्देश

- आज के स्कूलों (विद्यालयो) में शिक्षा मिलती है, संस्कार नहीं ।
- ऊपर से कुसंस्कारों का पोषण होता है । संस्कार दिलाने का स्थान है 'पाठशाला' ।
- बच्चों के सूत्र कंठस्थ हो जाय, उसमें मौखिक परीक्षाओं के द्वारा उच्चारण की अशुद्धियाँ दूर हो ।
- अंग्रेजी माध्यम से पढ़ते हुए बच्चों को सूत्रों द्वारा संस्कृत, प्राकृत शब्दों का ज्ञान हो ।
- गुरुभगवंतों के पास बारबार जाने से गाथा लेने के साथ साथ गुरुभगवंतों से परिचय हो तो, गुरु प्रति बहुमान बढ़े ।
- परीक्षाओं की तैयारी के लिये मोबाइल-टी.वी. जैसे दूषण छूट जाते है - जैन धर्म का अभ्यास बढ़े ।
- बच्चों में संस्कारों का सिंचन हो और तत्त्वज्ञान जीवन में उतारकर उत्तरोत्तर चारित्र ग्रहण कर परंपरा से मोक्षसुख प्राप्त हो ।

● ● ●

मौखिक कक्षा - १२

सूत्र	: तिजयपहुत्त स्तोत्र, नमिऊण स्तोत्र (सूत्र ५९, ६०)	४०
अर्थ	: उवसग्गहरं से अरिहंत चेइआणं सूत्र (शब्दार्थ)	३०
विधि	: चौदह नियम धारण करने की विधि	१०
पदार्थ	: भक्ष्याभक्ष्य भाग - १	२०
		१००

(५९) तिजयपहुत्त स्तोत्र

तिजय-पहुत्त-पयासय, अट्ठ-महापाडिहेर-जुत्ताणं;
समयक्खित्त-ठिआणं, सरेमिचक्कं-जिणिंदाणं १

पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवर समूहो;
नासेउ सयल-दुरिअं, भविआणं भत्ति-जुत्ताणं २

वीसा पणयाला विय, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा;
गहभूअरक्खसाइणि-घोरुवसग्गं पणासंतु. ३

सत्तरि पणतीसा वि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो;
वाहिजलजलणहरिकरि-चोरारिमहाभयं हरउ. ४

पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा;
रक्खंतु मे सरीरं, देवासुर-पणमिया सिद्धा. ५

ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तह य चेव सरसुंसः;
आलिहियनामगब्भं, चक्कं किर सव्वओभद्दं. ६

ॐ रोहिणी पन्नत्ती, वज्जसिंखला तह य वज्जअंकुसिआ;
चक्केसरी नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरी. ७

गंधारी महज्जाला, माणवि वइरुट्ट तहय अच्छुत्ता;
माणसि महमाणसिआ, विज्जादेवीओ रक्खंतु. ८

पंचदसकम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं;
विविहरयणाइवन्नो-वसोहिअं हरउ दुरिआइं. ९

चउतीस अइसयजुआ, अट्ठमहापाडिहेरकयसोहा;
तित्थयरा गयमोहा, झाएअव्वा पयत्तेणं. १०

ॐवरकणयसंखविद्दुम, मरगयघणसंनिहं विगयमोहं;
सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे स्वाहा. ११

ॐभवणवइवाणवंतर-जोइसवासी विमाणवासी अ;
जे के वि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा. १२

चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं;
एगंतराइगहभूअ-साइणिमुग्गं पणासेई. १३

इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं दुवारिपडिलिहिअं;
दुरिआरिविजयवंतं, निब्भंतं निच्चमच्चेह. १४

(६०) नमिऊण स्तोत्र

नमिऊण पणय-सुर-गण,-चूडा-मणि-किरण-रंजिअं मुणिणो;
चलण-जुअलं महा-भय-पणासणं संथवं वुच्छं. १

सडिय-कर-चरण-नह-मुह-निबुड्ड-नासा विवन्न-लायन्ना;
कुट्ठ-महारोगानल-फुलिंगनिद्दड्ढ-सव्वंगा. २

ते तुह चलणाराहण सलिलंजलि-सेय वुड्ढियच्छाया;
वण-दव-दड्ढा गिरि-पायवव्व, पत्ता पुणो लच्छिं. ३

दुव्वाय-खुभिय-जल-निहि-उब्भड-कल्लोल-भीसणारावे;
संभंत-भय-विसंठुल-निज्जामय-मुक्कवावारे. ४

अ-विदलिअ-जाण-वत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं;
पास जिण-चलण-जुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा. ५

खर-पवणुद्धुअ-वण-दव-जालावलि-मिलिय-सयल-दुम गहणे;
डज्झंत-मुद्ध-मय-वहु-भीसणरव-भीसणम्मि वणे. ६

जग-गुरुणो कम-जुअलं, निव्वाविअ-सयलति-हुअणाभोअं;
जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं. ७

विलसंत-भोग-भीसण-फुरिआ-ऽरुण नयण-तरल-जीहालं;
उग्ग-भुअंगं नवजलय-सत्थहं भीसणाऽऽयारं. ८

मन्नंति कीड-सरिसं, दूर-परिच्छुढ-विसम-विसवेगा;
तुह नामक्खर-फुड-सिद्ध-मंत-गुरुआ नरा लोए. ९

अडवीसु भिल्ल-तक्कर, पुलिंद सद्दुलसद्द-भीमासु; भय
विहुर-वुन्न-कायर-उल्लूरिअ-पहिअ-सत्थासु. १०

अ-विलुत्त-विहव-सारा, तुह नाह! पणाम-मत्तवावारा;
ववगय-विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय-इच्छियं ठाणं. ११

पज्जलिआनल-नयणं, दूर-वियारिय-मुहं महा-कायं;
नह कुलिस-घाय-विअलिअ-गइंद-कुंभत्थलाऽऽभोअं. १२

पणय-ससंभम-पत्थिव-नह-मणि-माणिक्क-पडिअ-पडिमस्स;
तुह वयण-पहरण-धरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति. १३

ससि-धवल-दंत-मूसलं, दीह-करुल्लाल-वुड्ढि-उच्छाहं;
महु-पिंग-नयणजुअलं, स-सलिल-नवजल-हराऽऽरावं. १४

भीमं महा-गइंदं, अच्चा-ऽऽसन्नं पि ते नवि गणंति;
जे तुम्ह चलण-जुअलं, मुणि-वई! तुंगं समल्लीणा. १५

समरम्मि तिक्ख-खग्गा-ऽभिग्घाय पविद्ध-उद्धुय-कबंधे;
कुंत-विणिभिन्न-करि-कलह-मुक्क-सिक्कार-पउरंमि. १६

निज्जिय दप्पुद्धुर-रिउ-नरिंद-निवहा भडा जसं धवलं;
पावंति पाव-पसमिण! पास-जिण! तुह प्पभावेण. १७

रोग-जल-जलण-विस-हर,-चोराऽरि-मइंद-गय-रण-भयाइं;
पास-जिण-नाम-संकित्तणेण पसमंति सव्वाइं. १८

एवं महा-भय-हरं, पास-जिणिंदस्स संथवमुआरं;
भविय-जणा-ऽऽणंद-यरं, कल्लाण-परंपर-निहाणं. १९

राय-भय-जक्ख-रक्खस-कुसुमिण-दुस्सउण-रिक्ख-पीडासु;
संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु. २०

जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स;
पासो पावं पसमेउ, सयल भुवणऽच्चिअ चलणो. २१

उवसग्गंते कमठा-ऽसुरम्मि, झाणाओ जो न संचलिओ;
सुर नर-किन्नर-जुवइहिं, संथुओ जयउ पास जिणो. २२

एअस्स मज्झयारे, अट्ठारस अक्खरेहिं जो मंतो;
जो जाणइ सो झायइ, परम पयत्थं फुडं पासं. २३

पासह समरण जो कुणइ, संतुट्ठे हियएण;
अट्ठुत्तर सय वाहि भय, नासइ तस्स दूरेण. २४

उवसग्गहरं सूत्र (शब्दार्थ)

उवसग्ग – उपसर्ग (विघ्न-बाधा) को

हरं – हरने वाले (दूर करने वाले)

पासं – पार्श्व नाम का यक्ष जिसे प्राप्त है, ऐसे

पासं – पार्श्वनाथ भगवान को

वंदामि – मैं वंदना करता हूँ

कम्मघण – कर्मों के समूह से

मुक्कं – मुक्त हुए

विसहर – विषधर (जहरीले) सर्प के

विस – विष (जहर) को

निन्नासं – नष्ट करने वाले

मंगल – मंगल और

कल्लाण – कल्याण के

आवासं – आवास (घर) रूप हैं जो

विसहरफुलिंगमंतं – विषधर स्फुलिंग नामक महामंत्र को

कंठे – कंठ में (गले में)

धारेइ – धारण करता है

जो – जो

सया – हमेशा (सदा)

मणुओ – मनुष्य

तस्स – उसके

गह – दुष्ट ग्रह

रोग – शारीरिक रोग

मारी – मरकी (महामारी/प्लेग आदि संक्रामक रोग)

दुट्ठ – अशुभ या खराब

जरा – ज्वर (बुखार)

जंति – प्राप्त होते हैं

उवसामं – उपशम को (शान्ति को)

चिट्ठउ – रहो (दूर रहे)

दुरे – दूर

मंतो – मन्त्र

तुज्झ – आपका

पणामोवि – नमस्कार भी

बहुफलो – बहुत फल देने वाला

होइ – होता है

नर – मनुष्य

तिरिएसुवि – तिर्यंचों में भी

जीवा – जीव

पावंति – पाते हैं

न – नहीं

दुक्ख – दुःख को

दोगच्चं – दुर्भाग्य को

तुह – आपका

सम्मत्ते – सम्यग्दर्शन

लद्धे – प्राप्त होने पर (मिलने पर)

चिंतामणि – चिंतामणि रत्न और

कप्पपायवब्भहिए – कल्पवृक्ष से भी अधिक

पावंति – प्राप्त करते हैं

अविग्घेणं – निर्विघ्न रूप से

जीवा – जीव

अयरामरं – अजर-अमर

ठाणं – स्थान को

इअ – इस प्रकार

संथुओ – स्तुति किए गए

महायस – हे महान यश वाले (कीर्तिवान) प्रभु!

भत्तिब्भर – भक्ति के अतिशय से।

निब्भरेण – परिपूर्ण

हियएण – हृदय से

ता – उस कारण से (इसलिए)

देव – हे देव!

दिज्ज – दीजिए

बोहिं – बोधि (सम्यक्त्व)

भवे भवे – भव-भव में (हर जन्म में)

पास जिणचंद – हे श्री पार्श्व जिनचन्द्र!

जयवीयराय (प्रार्थना) सूत्र – शब्दार्थ

जय – जय पाइए (आपकी जय हो)
वीयराय – हे वीतराग !
जगगुरु – हे जगत के गुरु!
होउ – हो (होवे)
ममं – मुझे (मेरा)
तुह – आपके
पभावओ – प्रभाव से
भयवं – हे भगवंत (हे भगवान)!
भवनिव्वेओ – भव-निर्वेद (संसार के प्रति उदासीनता/वैराग्य)
मग्गाणुसारिआ – मार्गानुसारिता
इट्ठफल – इष्ट (वांछित) फल की
सिद्धी – सिद्धि (प्राप्ति)
लोगविरुद्धच्चाओ – लोक-विरुद्ध कार्यों का त्याग
गुरुजणपूआ – गुरुजनों की पूजा
परत्थकरणं – परोपकार करना
सुहगुरुजोगो – सुगुरु का योग
तव्वयण – उनके वचनों का
सेवणा – सेवन करना
आभव – जब तक संसार में रहना पड़े तब तक
अखंडा – अखंड (निरंतर/बिना टूटे)
वारिज्जइ – निषेध किया गया है
जइ वि – यद्यपि (जो कि / भले ही)
नियाणबंधणं – नियाण-बंधन
तुह – आपके
समए – सिद्धांत में
तहवि – तो भी (तथापि)
ममं – मुझे (मेरे लिए)
हुज – होवे (हो जो)
सेवा – सेवा
भवेभवे – भव-भव में
तुम्ह – आपके
चलणाणं – चरणों की
दुक्खक्खओ – दुःखों का क्षय
कम्मक्खओ – कर्मों का क्षय
समाहिमरणं – समाधि-मरण
बोहिलाभो – बोधि-बीज का लाभ
संपज्जउ – प्राप्त हो
मह एअं – मुझे, यह
तुह – आपको
नाह – हे नाथ
पणामकरणेणं – प्रणाम करने से
सर्वमंगल – सभी मांगलिकों में
मांगल्यं – मंगल रूप
सर्वकल्याण – सभी कल्याणों का
कारणम् – कारण रूप
प्रधानं – प्रधान (श्रेष्ठ)
सर्वधर्माणां – सभी धर्मों में
जैनं – जैन
जयति – जय पाता है
शासनम् – शासन

अरिहंत चेइआणं सूत्र (शब्दार्थ)

अरिहंत – अरिहंत देव की

चेइयाणं – प्रतिमाओं की

वंदणवत्तियाए – वंदना करने के निमित्त (उद्देश्य से)

पूअणवत्तियाए – पूजा करने के निमित्त।

सक्कारवत्तियाए – सत्कार करने के निमित्त।

सम्माणवत्तियाए – सम्मान करने के निमित्त।

बोहिलाभवत्तियाए – बोधि-लाभ के निमित्त।

निरुवसग्गवत्तियाए – उपसर्ग से रहित स्थानक (मोक्ष) को प्राप्त करने के निमित्त

सद्धाए – श्रद्धा से

मेहाए – मेधा से (निर्मल बुद्धि से)

धिइए – चित्त की स्थिरता से

धारणाए – धारणापूर्वक से

अणुप्पेहाए – बार-बार चिंतन-मनन करके

वड्ढमाणीए – बढ़ते हुए शुभ परिणामों/ भावों से

ठामि – रहता हूँ / करता हूँ

काउस्सग्गं – कायोत्सर्ग

चौदह नियम धारण करने की विधि

कारण: संसार में भोगने (उपयोग करने) के लिए अनगिनत वस्तुएं हैं, लेकिन हम उन सभी का उपयोग नहीं करते हैं। जब तक हम किसी वस्तु का त्याग नहीं करते, तब तक उसका उपयोग न करने के बावजूद उसका पाप (अव्रत का पाप) हमें लगता रहता है। चौदह नियम लेने से हम अपनी आवश्यकता के अनुसार मर्यादा (सीमा) तय करते हैं और शेष सभी वस्तुओं के पाप से बच जाते हैं।

लाभ :

- भोगने की इच्छाशक्ति (तृष्णा) कम होती है।
- नए कर्मों का बंध होना रुक जाता है।
- थोड़ी वस्तुओं का उपयोग करके, पूरे संसार के पाप के भागीदार बनने से बचा जा सकता है।

नियम लेने की रीति:

- **कब लें:** दिन में दो बार (सुबह और शाम को देशावगासिक का पच्चक्खाण)।
- **समय अवधि:** यह नियम केवल १२-१२ घंटे के लिए ही होता है (सुबह लिया हुआ नियम शाम तक और शाम को लिया हुआ नियम सुबह तक रहता है)।

  विधि: रोजमर्रा की जरूरत की वस्तुओं की संख्या या सीमा निश्चित करना और शेष सभी चीजों का त्याग करना। आइए सबसे पहले हम इन चौदह नियमों को जान लेते हैं।

सचित्त-दव्व-विगई-वाणह-तंबोल-वत्थ-कुसुमेसु,
वाहण-सयण-विलेवण-बंभ-दिसि-न्हाण-भत्तेसु ।

१४ नियमों का विवरण (संख्या/मर्यादा तय करना):

- **सचित्त :** सजीव वस्तुएं, जैसे-कच्चा पानी, कोल्ड ड्रिंक्स, फल, कच्चा नमक आदि (इनकी संख्या तय करना) ।
- **द्रव्य :** मुख से ली जाने वाली अलग-अलग नाम और स्वाद वाली वस्तुएँ (कुल संख्या तय करना) ।
- **विगई :** दूध, दही, घी, तेल, गुड़ और तली हुई चीजें या महाविगई (इनका मूल से या कच्चे रूप में त्याग या मर्यादा करना) ।
- **वाणह :** जूते, चप्पल, सैंडल, स्लीपर आदि (संख्या तय करना) ।
- **तंबोल (तांबूल):** पान, सुपारी, सौंफ, मुखवास आदि (वजन या संख्या तय करना) ।
- **वत्थ:** पहनने के कपड़ों की जोड़ी (संख्या तय करना) ।
- **कुसुमेसु :** सूंघने की वस्तुएं, जैसे-इत्र, सेंट, फूल आदि (संख्या या वजन तय करना) ।
- **वाहण:** स्कूटर, मोटरसाइकिल, कार, साइकिल आदि (संख्या तय करना) ।
- **सयण :** बैठने और सोने के साधन, जैसे-बिस्तर, सोफा, कुर्सी, पलंग आदि (संख्या तय करना) ।
- **विलेवण :** शरीर पर लगाई जाने वाली चीजें, जैसे-साबुन, तेल, पाउडर, क्रीम आदि (वजन या संख्या तय करना) ।

- **बंभ (ब्रह्मचर्य):** अपनी शक्ति के अनुसार ब्रह्मचर्य व्रत की मर्यादा धारण करना
- **दिशि :** दसों दिशाओं में आने-जाने की सीमा (किलोमीटर में तय करना)
- **न्हाण :** दिन में कितनी बार स्नान करना है (उसकी संख्या तय करना)
- **भत्तेसु :** आहार (भोजन) और पानी (इसकी मर्यादा या वजन तय करना)।

इसके अतिरिक्त नीचे लिखे नियमों की भी मर्यादा तय की जाती है:

- **पृथ्वीकाय:** मिट्टी, नमक, सोना, चांदी, हीरा (डायमंड) आदि की मर्यादा।
- **अप्काय:** नहाने, धोने और पीने के पानी के लिए बाल्टी की संख्या निश्चित करना।
- **तेउकाय (अग्निकाय):** रसोई का चूल्हा, गैस, बिजली के स्विच आदि के उपयोग की संख्या तय करना।
- **वाउकाय (वायुकाय):** पंखे, एयर कंडीशनर (AC), झूले आदि की संख्या तय करना।
- **वनस्पतिकाय:** हरी सब्जियां और फलों की संख्या निश्चित करना।
- **त्रसकाय:** चलते-फिरते जीवों की यतना (रक्षा) करना।
- **असि :** सुई, चाकू, कैंची, सरोता आदि की संख्या तय करना।
- **मसि :** लिखने के लिए पेन, पेंसिल आदि की संख्या तय करना।
- **कृषि :** खेती के साधन जैसे-हल, फावड़ा, कुल्हाड़ी आदि की संख्या निश्चित करना।

पदार्थ: भक्ष्याभक्ष्य भाग - १

जैन धर्म में आहार (भोजन) को केवल शरीर टिकाए रखने का साधन नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि का मार्ग माना गया है। "जैसा आहार, वैसा ओडकार (डकार) और वैसे ही विचार।" शास्त्रों के अनुसार, अशुद्ध आहार से मन में काम, क्रोध और लोभ जैसे विकार पैदा होते हैं। सात्विक आहार मन को शांत और ध्यान के योग्य बनाता है। आधुनिक विज्ञान भी इस बात को स्वीकार करता है कि भोजन का चयन हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

जैन धर्म में आहार के चयन का मुख्य आधार 'अहिंसा' है। जिस भोजन

में कम से कम हिंसा हो (जैसे कि फल, अनाज) उसे 'भक्ष्य' (खाने योग्य) और जिसमें अधिक हिंसा या अनंत जीव हों (जैसे कि कंदमूल, मांस) उसे 'अभक्ष्य' (ना खाने योग्य) माना जाता है।

शास्त्रों में २२ प्रकार के अभक्ष्य बताए गए हैं, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :

- **चार महाविगई**

१. **मदिरा :** हर प्रकार की शराब बुद्धि को भ्रष्ट करके सभी पाप कर्म कराने वाली है।

२. **मांस :** यह क्रूरतापूर्वक जीवों को मारकर प्राप्त किया जाता है जिसमें निरंतर असंख्य सम्मूर्च्छिम जीव उत्पन्न होते रहते हैं।

३. **शहद :** यह मधुमक्खियों की लार जैसी अशुचि वस्तु है। इसे हजारों मधुमक्खियों और उनके अंडों को मारकर प्राप्त किया जाता है।

४. **मक्खन (बटर) :** जब छाछ से मक्खन अलग होता है, तब उसमें अंतर्मुहूर्त के भीतर ही असंख्य त्रस जीव उत्पन्न होने लगते हैं।

- **चार प्रकार के फल**

५. **तुच्छ फल :** जिसमें खाने योग्य भाग कम और फेंकने योग्य भाग (कचरा) ज्यादा हो, जैसे कि चणीबोर (छोटे जंगली बेर)।

६. **अंजान फल :** जिसके नाम, गुण और दोष के बारे में कोई जानकारी न हो।

७. **बहुबीज फल :** जिसमें बहुत सारे बीज एक-दूसरे से छुए हुए (सटे हुए) होते हैं, जैसे कि अंजीर, खसखस आदि।

८. **बैंगन (रींगणा) :** तामसी प्रकृति का होने के कारण यह मन में विकार पैदा करने का कारण बनता है।

- **चार पदार्थ**

९-१०. **हिम/ओले (कन्हैया/करा) :** यह पानी का ठोस रूप है, अतः इसमें अनंत जीवों वाले 'निगोद' की उत्पत्ति होने की संभावना रहती है।

साधर्मिक अर्थात् सच्चे देव गुरु धर्म को माननेवाला.

११. जहर (विष) : यह मृत्यु का कारण है।

१२. मिट्टी (माटी) : इसमें अनेक सजीव (पृथ्वीकायिक) जीव होने की संभावना होती है।

- **पांच टेटा (उदुंबर फल):**

(१३-१७) बड़ (बरगद), पीपल, प्लक्ष (पाकड़), उदुंबर (गूलर) और काकोदुंबर (कठगूलर) के फल (टेटा); इन फलों के भीतर सूक्ष्म त्रस जीवों की बहुत बड़ी संख्या होती है।

१८. अनंतकाय (कंदमूल): जमीकंद, कच्ची हल्दी, अदरक, ग्वारपाठा (एलोवेरा), लहसुन, गाजर, मूली, कुकुरमुत्ता (मशरूम), आलू, प्याज, रतालू आदि और फफूंद (फूग) आदि में अनंत जीव होते हैं।

- बाज़ार की चाय और गन्ने के रस में अदरक तथा पापड़ में अदरक-लहसुन का उपयोग हो सकता है, जो कि अनंतकाय हैं ।
- नमी या भेज़ वाले वातावरण में लड्डू आदि मिठाइयों और अचार-पापड़ के ऊपर फफूंद (फूग) लग जाती है। फफूंद भी अनंतकाय है, इसलिए बिना अच्छी तरह देखे इनका उपयोग न करें।
- कोई भी वस्तु खरीदने से पहले उसके पैकेट के पीछे लिखी सामग्री की सूची (Ingredients List) अवश्य पढ़ें। कई बार उसमें अनजाने में ही कंदमूल (आलू, प्याज, लहसुन, चुकंदर) का पाउडर या अन्य अभक्ष्य सामग्रियां मिलाई गई होती हैं।
- अक्सर तैयार सूप, सोया सॉस, चिली सॉस और इंस्टेंट नूडल्स के मसालों में स्वाद बढ़ाने और उन्हें गाढ़ा करने के लिए आलू या साबूदाने से बने स्टार्च का उपयोग किया जाता है। बाजार में मिलने वाले तैयार पापड़, चावल के पापड़ (सारेवडा / खीचिया) आदि में भी साबूदाने के पाउडर का उपयोग होता है ।

● ● ●

मौखिक कक्षा - १३

सूत्र	: कल्याणमंदिर स्तोत्र (सूत्र ६१)	४०
अर्थ	: वंदित्तु सूत्र (शब्दार्थ)	३०
विधि	: धारणा अभिग्रह, मुट्ठीसहिअं पच्चक्खाण लेने की विधि	१०
पदार्थ	: भक्ष्याभक्ष्य भाग - २	२०
		१००

(६१) कल्याण मंदिर स्तोत्र

कल्याण-मंदिरमुदारमवद्य भेदि, भीताभय-प्रदमनिन्दितमङ्घ्रि-पद्मम्;
संसार-सागर-निमज्जदशेष-जन्तु-पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य. १

यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम्;
तीर्थेश्वरस्य कमठ-स्मय-धूमकेतो, स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये (युग्मम्) २

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-मस्मादृशाः कथमधीश! भवन्त्यधीशाः?;
धृष्टोऽपि कौशिक-शिशुर्यदिवा दिवान्धो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः?. ३

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ! मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत;
कल्पान्त-वान्त-पयसः प्रकटोऽपि यस्मान् मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः?. ४

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ! जडाशयोऽपि, कर्त्तुं स्तवं लसदसंख्य-गुणाकरस्य;
बालोऽपि किं न निजबाहु-युगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्व-धियाम्बु-राशेः?. ५

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश?, वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः?;
जाता तदेवमसमीक्षित-कारितेयं, जल्पन्ति वा निज-गिरा ननु पक्षिणोऽपि. ६

आस्तामचिन्त्य-महिमा-जिन संस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति;
तीव्रातपोपहत-पान्थ-जनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि. ७

हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो! शिथिलीभवन्ति, जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः;
सद्यो भुजंगममया इव मध्यभाग-मभ्यागते वन शिखण्डिनि चन्दनस्य. ८

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र!, रौद्रैरुपद्रव शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि;
गो-स्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः. ९

त्वं तारको जिन! कथं भविनां त एव, त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः;
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून-मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः. १०

यस्मिन् हर-प्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन;
विध्यापिता हुत-भुजः पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्द्धर-वाडवेन?. ११

स्वामिन्ननल्प-गरिमाणमपि प्रपन्ना-स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः?;
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यति-लाघवेन, चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः. १२

क्रोधस्त्वया यदि विभो! प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्म-चौराः?;
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके; नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी?. १३

त्वां योगिनो जिन! सदा परमात्म-रूप-मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज-कोश-देशे;
पूतस्य निर्मल-रुचेर्यदि वा किमन्य-दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः?. १४

ध्यानाज्जिनेश! भवतो भविनः क्षणेन, देहं विहाय परमात्म-दशां व्रजन्ति;
तीव्रानलादुपल-भावमपास्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव धातु-भेदाः. १५

अंतः सदैव जिन! यस्य विभाव्यसे त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्?;
एतत्स्वरूपमथ मध्य-विवर्त्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः; १६

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेद-बुद्ध्या; ध्यातो जिनेन्द्र भवतीह भवत्प्रभावः,
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं, किं नाम नो विष-विकारमपाकरोति?. १७

त्वामेव वीत-तमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो! हरि-हरादि-धिया प्रपन्नाः;
किं काच कामलिभिरीश! सितोऽपि शंखो, नो गृह्यते विविध-वर्ण-विपर्ययेण? १८

धर्मोपदेश-समये स-विधानुभावा-दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः;
अभ्युद्गते दिनपतौ स-महीरुहोऽपि, किंवा विबोधमुपयाति न जीव-लोकः. १९

चित्रं विभो! कथमवाङ्मुख-वृन्तमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुर-पुष्प-वृष्टिः?;
त्वद्गोचरे सु-मनसां यदि वा मुनीश?, गच्छन्ति नूनमध एव हि बंधनानि. २०

स्थाने गभीर-हृदयोदधि-संभवायाः, पीयूषतां तव गिरः समुदीरयंति;
पीत्वा यतः परम-संमद-संग-भाजो; भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम्. २१

स्वामिन्! सु-दूरमवनम्य समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुर-चामरौघाः,
येऽस्मै नतिं विदधते मुनि पुंगवाय, ते नुनमूर्ध्व-गतयः खलु शुद्ध भावाः. २२

श्यामं गभीर-गिरमुज्ज्वल-हेम-रत्न-सिंहासन-स्थमिह भव्य-शिखण्डिनस्त्वाम्;
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै-श्चामीकराद्रि-शिरसीव नवाम्बुवाहम्. २३

उद्गच्छता तव शिति-द्युति-मण्डलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोक-तरुर्बभूव;
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग!, नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि. २४

भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन, मागत्य निर्वृति-पुरीं प्रति सार्थवाहम्;
एतन्निवेदयति देव! जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभि-नभः सुर-दुंदुभिस्ते. २५

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ! तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः;
मुक्ता-कलाप-कलितोच्छ्वसितातपत्र, व्याजात्त्रिधा धृत-तनुर्ध्रुवमभ्युपेतः. २६

स्वेन प्रपूरित-जगत्त्रय-पिण्डितेन, कान्ति-प्रताप-यशसामिव संचयेन;
माणिक्य-हेम-रजत प्रविनिर्मितेन, साल-त्रयेण भगवन्नभितो विभासि. २७

दिव्य-स्रजो जिन! नमत्त्रि-दशाधिपाना-मुत्सृज्य रत्न-रचितानपि मौलि-बन्धान्,
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव. २८

त्वं नाथ! जन्म-जलधेर्विपराङ्मुखोऽपि, यत्तारयस्यसुमतो निज-पृष्ठ-लग्नान्;
युक्तं हि पार्थिव-निपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो यदसि कर्म-विपाक-शून्यः. २९

विश्वेश्वरोऽपि जन-पालक! दुर्गतस्त्वं, किं वाक्षर-प्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश!;
अ-ज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व-विकाश-हेतुः. ३०

प्राग्भार-संभृतनभांसि रजांसि रोषा-दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि;
छायापि तैस्तव न नाथ! हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा. ३१

यद् गर्जदूर्जित-घनौघ-मदभ्र-भीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसल-मांसल-घोर-धारम्;
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर-वारि दध्रे; तेनैव तस्य जिन! दुस्तरवारि-कृत्यम्. ३२

ध्वस्तोर्ध्व-केशविकृताकृति-मर्त्य-मुण्ड-प्रालम्ब-भृद्-भयद-वक्त्रविनिर्यदग्निः;
प्रेत-व्रजः प्रतिभवन्तमपीरितो यः, सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भव-दुःख-हेतुः. ३३

माया सभी गुणों को निगल जानेवाली राक्षसी है.

धन्यास्त एव भुवनाधिप! ये त्रि-सन्ध्य-माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्य-कृत्याः;
भक्त्योल्लसत्पुलक-पक्ष्मल-देह-देशाः, पाद-द्वयं तव विभो! भुवि जन्म-भाजः. ३४

अस्मिन्नपार-भव-वारि-निधौ मुनीश!, मन्ये न मे श्रवण-गोचरतां गतोऽसि;
आकर्णिते तु तव गोत्र-पवित्र-मन्त्रे, किंवा विपद्विष-धरी स-विधं समेति?. ३५

जन्मान्तरेऽपि तव पाद-युगं न देव!, मन्ये मया महित-मीहित-दान-दक्षम्;
तेनेह जन्मनि मुनीश! पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम्. ३६

नूनं न मोह-तिमिरावृत-लोचनेन, पूर्वं विभो! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि;
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबन्ध-गतयः कथमन्यथैते? ३७

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या;
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव! दुःख-पात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भाव-शून्याः. ३८

त्वं नाथ! दुःखि-जन-वत्सल! हे शरण्य! कारुण्य-पुण्य-वसते! वशिनां वरेण्य!;
भक्त्या नते मयि महेश! दयां विधाय, दुःखांकुरोद्दलन-तत्परतां विधेहि. ३९

निःसंख्य-सार-शरणं शरणं शरण्य-मासाद्य सादित-रिपु प्रथितावदातम्;
त्वत्पाद-पंकजमपि प्रणिधान-वन्ध्यो, वध्योऽस्मि चेद् भुवन-पावन! हा हतोऽस्मि. ४०

देवेन्द्र-वन्द्य! विदिताखिल-वस्तु-सार!, संसार-तारक! विभो! भुवनाधिनाथ!;
त्रायस्व देव! करुणा-ह्रद! मां पुनीहि, सीदन्तमद्य भयद-व्यसनाम्बु-राशेः. ४१

यद्यस्ति नाथ! भवदंघ्रि-सरो-रुहाणां, भक्तेः फलं किमपि संतति-संचितायाः;
तन्मे त्वदेक-शरणस्य शरण्य! भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि. ४२

इत्थं समाहित-धियो विधिवज्जिनेन्द्र!, सान्द्रोल्लसत्पुलक-कंचुकितांग-भागाः;
त्वद्-बिम्ब-निर्मल-मुखाम्बुज-बद्ध-लक्ष्या, ये संस्तवं तव विभो! रचयन्ति भव्याः ४३

जन-नयन-कुमुद-चन्द्र!, प्रभा-स्वराः स्वर्ग-संपदो भुक्त्वा;
ते विगलित-मल-निचया, अ-चिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते. (युग्मम्) ४४

वंदित्तु सूत्र (शब्दार्थ)

वंदित्तु – वंदना करके

सव्वसिद्धे – सर्व सिद्ध स्वरूप ऐसे तीर्थंकर तथा सिद्ध भगवंतों को

धम्मायरिए – धर्माचार्यों को

सव्वसाहूह – आचार्य, उपाध्याय आदि सर्व साधु भगवंतों को

इच्छामि – मैं इच्छा करता हूँ

पडिक्कमिउं – प्रतिक्रमण करने की

सावगधम्माइआरस्स – श्रावक धर्म के विषय में लगे हुए अतिचारों की

जो मे – जो मेरे द्वारा

वयाइआरो – व्रतों के विषय में अतिचार लगा हो

नाणे – ज्ञान के विषय में

तह – तथा

दंसणे – दर्शन के विषय में

चरित्ते – चारित्र के विषय में

सुहुमो – सूक्ष्म

बायरो वा – अथवा बादर

तं – उसे।

निंदे – मैं निंदता हूँ (अपने मन में उसकी निंदा करता हूँ)

च – तथा

गरिहामि – गुरु की साक्षी में उसकी गर्हा (आलोचना) करता हूँ

दुविहे – दो प्रकार के

परिग्गहंमि – परिग्रह के विषय में

सावज्जे – सावद्य (पापयुक्त)

बहुविहे – बहुत प्रकार के

आरंभे – आरंभ (हिंसा आदि क्रियाएँ)

कारवणे – दूसरों से कराने से

करणे – स्वयं करने से

अ – और अनुमोदन करने से (सराहना करने से)

पडिक्कमे – मैं प्रतिक्रमण करता हूँ (पीछे हटता हूँ)

देसिअं – दिवस संबंधी (दिनभर के पापों का)

सव्वं – सर्व (सभी अतिचारों के प्रति)

बद्धं – बांधा हो (जो कर्म बांधे हों)

इंदिएहिं – इन्द्रियों द्वारा

चउहिं – चार

कसाएहिं – कषायों द्वारा (क्रोध, मान, माया, लोभ)

अप्पसत्थेहिं – अप्रशस्त (अशुभ) भावों द्वारा

रागेण – राग (आसक्ति) से

व – अथवा

दोसेण – द्वेष (नफ़रत) से

आगमणे – जाने में

निग्गमणे – आने में

ठाणे – मिथ्यात्वियों के स्थान पर खड़े रहने में

चंकमणे – इधर-उधर घूमने-फिरने में।

अणाभोगे – बिना उपयोग के (असावधानी से)

अभिओगे – राजा अथवा बहुत से लोगों के दबाव या आग्रह से

निओगे – पराधीनता (मजबूरी) के कारण से

संका – जिनवचन में शंका करना

कंख – अन्य मत की इच्छा या प्रशंसा करना

विगिच्छा – साधु-साध्वियों की मलिनता देखकर घृणा करना अथवा धर्म के फल में संदेह करना

पसंस – मिथ्यात्वियों की मन से प्रशंसा करना

तह – वैसे ही

संथवो – मिथ्यात्वियों के साथ परिचय या घनिष्ठता बढ़ाना

कुलिंगीसु – कुगुरुओं/पाखंडियों का संसर्ग

सम्मत्तस्स – सम्यक्त्व (सच्ची श्रद्धा) के

छक्काय – छह काय के जीवों की

समारंभे – समारंभ के विषय में (हिंसा की तैयारी करने में)

पयणे – स्वयं (भोजन आदि) पकाने में

पयावणे – दूसरों से पकवाने में

जे – जो

दोसा – दोष लगे हों

अत्तट्ठा – अपने स्वार्थ के लिए

परट्ठा – दूसरों के लिए

उभयट्ठा – अपने और दूसरों दोनों के लिए

चेव – निश्चय ही

पंचण्हं – पाँच

अणुव्वयाणं – अणुव्रतों के विषय में

गुणव्वयाणं – गुणव्रतों के विषय में

तिण्हं – तीन

सिक्खाणं – शिक्षाव्रतों के विषय में।

चउण्हं – चार।

पडिक्कमे – मैं प्रतिक्रमण करता हूँ।

पढमे – पहले।

अणुव्वयंमि – अणुव्रत के विषय में

थूलग – स्थूल (बड़े)

पाणाईवाय – प्राणातिपात (जीव हिंसा) की

विरइओ – विरति (नियम) का उल्लंघन करके

आयरियं – जो आचरण किया हो

अप्पसत्थे – अप्रशस्त (बुरे) भावों में रहकर

इत्थ – यहाँ पर

पमायप्पसंगेणं – प्रमाद (असावधानी) के प्रसंग से

वह – जीव को बेरहमी से मारना

बंध – रस्सी आदि से (पशु या मनुष्य को) बांधना

छविच्छेए – अंगों को काटना या घायल करना

अइभारे – क्षमता से अधिक बोझ लादना

भत्तपाण – भोजन और पानी (चारा-पानी)

वुच्छेए – रोकना या अंतराय करना

पढमवयस्स – इस पहले व्रत के

अइयारे – अतिचारों का

बीए – दूसरे

अणुव्वयंमि – अणुव्रत के विषय में

परिथूलग – अति बड़े

अलिअवयण – झूठ बोलने की

विरइओ – विरति का उल्लंघन करके

सहसा – बिना विचारे अचानक झूठ बोलना

रहस्स – किसी की गुप्त या छुपी हुई बात को प्रगट करना (राजद्रोह आदि का दोष लगाना)

दारे – पत्नी या स्त्री द्वारा कही गई गुप्त बात को बाहर प्रगट करना

मोसुवएसे – झूठा या गलत उपदेश देना

कूडलेहे – झूठे दस्तावेज या जाली हस्ताक्षर करना

बीअ – दूसरे

वयस्सइयारे – व्रत के अतिचारों को

तइए – तीसरे

अणुव्वयंमि – अणुव्रत के विषय में

थूलग – बड़े (स्थूल)

परदव्व – पराए धन/वस्तु की

हरण – चोरी करने की

विरइओ – विरति से (लगे दोष)

तेनाहडप्पओगे – चोरी का माल खरीदना या चोर की सहायता करना।

तप्पडिरूवे – मिलावट करना (खराब वस्तु को अच्छी बताकर बेचना)

विरुद्धगमणे – टैक्स की चोरी या राज्य नियमों के विरुद्ध व्यापार करना

कूडतुल – कम तोल (वजन) रखना

कूडमाणे – कम)माप (मीटर/लीटर) रखना

चउत्थे – चौथे

अणुव्वयं – अणुव्रत के विषय में

निच्चं – निरंतर

परदारगमण – परस्त्री के साथ गमन करने की (मर्यादा का उल्लंघन)

अपरिग्गहिआ – कुंवारी कन्या या अनाथ-विधवा के साथ भोग भोगना

इत्तर – वेश्या या अन्य किसी के पास अल्पकाल के लिए रखी स्त्री के पास जाना

अणंग – कामक्रीड़ा के अप्राकृतिक तरीकों का उपयोग करना

विवाह – अपने पुत्र-पुत्री के अलावा दूसरों के विवाह करवाने में जुटना

तिव्वअणुरागे – कामभोगों में अत्यधिक आसक्ति रखना

चउत्थ – चौथे (व्रत के अतिचार)

इत्तो – इसके बाद

अणुव्वए – अणुव्रत के विषय में

पंचमंमि – पाँचवें

परिमाण परिच्छेए – परिग्रह (संग्रह) की मर्यादा का उल्लंघन करने से

धण – धन (नकद, बैंक बैलेंस)

धन्न – धान्य (अनाज)

खित्त – क्षेत्र (जमीन, प्लॉट)

वत्थु – वस्तु (मकान, दुकान)

रुप्प – चांदी

सुवन्ने – सोना

कुविअ – सोना-चांदी के अलावा अन्य धातुएं (तांबा, पीतल, स्टील) और बर्तन-कपड़े आदि

परिमाणे – तय की गई मर्यादा से अधिक रखने पर

दुपए – दास-दासी (कर्मचारी) आदि दो पैर वाले

चउप्पयंमि – गाय, भैंस, घोड़े आदि चार पैर वाले पशुओं की मर्यादा बढ़ाना

गमणस्स – जाने के

परिमाणे – परिमाण (मर्यादा) से

अधिक आगे चले जाने पर

दिसासु – दिशाओं में

उड्ढं – ऊर्ध्व (ऊपर की) दिशा

अहे – अधो (नीचे की) दिशा

तिरिएं – तिर्यक (तिरछी/चारों तरफ की) दिशा

वुड्ढि – लोभ के कारण अपनी तय की हुई मर्यादा को बढ़ा लेना

सइअंतरद्धा – चलते समय मार्ग में अपनी तय की गई सीमा भूल जाने से आगे निकल जाना

पढमंमि – पहले

गुणव्वए – गुणव्रत के विषय में

मज्जंमि – मदिरा (शराब)

मंसंमि – मांस

पुप्फे – पुष्प

फले – फल

गंध – सुगंधित इत्र, केसर आदि

मल्ले – फूलों की माला

उवभोग-परिभोगे – उपभोग (एक बार काम आने वाली वस्तु) और परिभोग (बार-बार काम आने वाली वस्तु)

बीअंमि – दूसरे

गुणव्वए – गुणव्रत के विषय में

सच्चित्ते – सचित्त (सजीव) वस्तुओं का सेवन करना

पडिबद्धे – सचित्त से ढकी या जुड़ी हुई वस्तु का उपयोग करना

अपोल – पूरी तरह न पकाए गए कच्चे भोजन का सेवन

दुप्पोलिअं – आधे कच्चे, आधे पक्के भोजन का उपयोग

आहारे – भोजन करने से

तुच्छोसहि – तुच्छ औषधि या तुच्छ फल (जिनमें खाने का कम और कचरा ज्यादा हो) का भक्षण करना

भक्खणया – भक्षण करने से

इंगाली – अंगार कर्म (कोयला बनाना, ईंट-भट्टों का व्यापार, अग्नि संबंधी कार्य)

वण – वन कर्म (जंगल काटना, हरी वनस्पति बेचना, खेती का बड़ा व्यापार)

साडी – शकट कर्म (गाड़ियां, बैलगाड़ी, ट्रक आदि वाहन बनाना या बेचना)

भाडी – भाटिक कर्म (पशुओं या वाहनों को माल ढोने के लिए भाड़े पर देना)

फोडी – स्फोटक कर्म (कुएं, बावड़ी, खदानें खोदना या पहाड़ों को तोड़ना)

सुवज्जए – पूरी तरह से त्यागने योग्य।

कम्मं – पाप कर्म

वाणिज्जं – व्यापार

चेव – और निश्चय ही

दंत – हाथीदांत, कस्तूरी, चमड़ा, मोती आदि जीवों के अंगों का व्यापार

लक्ख – लाख, गोंद, मोम आदि का व्यापार (जिसमें अनंत जीवों की हिंसा हो)

रस – रस का व्यापार (घी, तेल, शराब, शहद, गुड़ आदि रसों का थोक व्यापार)

केस – केश का व्यापार (बाल, ऊन, पशुओं, दासों या पक्षियों का क्रय-विक्रय)

विसविसयं – विष (जहर), अफीम, कीटनाशक दवाइयाँ और हथियारों का व्यापार

एवं – इस प्रकार

खु – निश्चय ही

जंतपिल्लण – कोल्हू, चक्की, गन्ना पेरने की मशीन आदि यंत्रों को चलाना या चलवाना

कम्मं – कर्म

निल्लंछणं – कान-नाक छेदना, छेदाना

च – और

दवदाणं – जंगलों या खेतों में आग लगाना

सर – सरोवर

दह – गहरे कुंड या जलाशय

तलाय – तालाबों को

सोसं – अपने स्वार्थ के लिए सुखा देना

असइपोसं – वेश्याओं, हिंसक पशुओं (जैसे कुत्ता, बिल्ली) या दुष्ट लोगों का पोषण करना

वज्जिज्जा – इन सबका त्याग करना चाहिए

सत्थ – शस्त्र (तलवार, बंदूक, चाकू आदि हथियार)

अग्गि – अग्नि (माचिस, आग)

मुसल – मूसल, ओखली, कुल्हाड़ी आदि

जंतग – यंत्र (मशीनें)

तण – तृण (घास-फूस)

कट्ठे – काष्ठ (लकड़ी)

मंत – वशीकरण, मारण या सांप उतारने के खोटे मंत्र

मूल – जड़ी-बूटियाँ (दूसरों को नुकसान पहुँचाने या गर्भपात आदि के लिए देना)

भेसज्जे – दवाइयाँ (बिना प्रयोजन दूसरों को देना)

दिन्ने – स्वयं देने से

दवाविए – दूसरों से दिलवाने से

वा – अथवा

न्हाण – बिना छाने पानी से नहाना या जरूरत से ज्यादा नहाना

उव्वट्टण – उबटन या पीठिका रगड़कर शरीर का अत्यधिक श्रृंगार करना

वन्नग – मेहंदी, अलता, गुलाल आदि से शरीर को रंगना

विलेवणे – केसर, चंदन, सेंट आदि का अनावश्यक लेप (शारीरिक साज-सज्जा) करना

सद्द – शब्द

रूव – रूप

रस – रस

गंधे – गंध

वत्थ – वस्त्र

आसण – आसन

आभरणे – आभूषण

कंदप्पे – कामभोग संबंधी कथा (बातें) करना

कुक्कुइए – लोगों को हँसी आए ऐसी शारीरिक चेष्टाएँ करना

मोहरि – बड़बोलेपन में आकर अयोग्य या अमर्यादित वचन बोलना

अहिगरण – शस्त्रादि तैयार करना या उन्हें इकट्ठा करना

भोगअइरित्ते – उपभोग और परिभोग की वस्तुएँ अपनी आवश्यकता से अधिक रखना

दंडमि अणट्ठाए – अनर्थदंड विरमण नाम के

तइअंमि – तीसरे

गुणव्वए – गुणव्रत के विषय में

तिविहे – तीन प्रकार के

दुप्पणिहाणे – दुःप्रणिधान या बुरे कार्यों में व्यापार

अणवट्ठाणे – अविनयपूर्वक बर्ताव करना, अथवा दो घड़ी (४८ मिनट) का समय पूरा होने से पहले ही सामायिक पाल लेना

सइविहूणे – असावधानी या प्रमाद के कारण यह याद ही न रहना कि सामायिक ली है या नहीं

वितहकए – वितथपने से अर्थात् सामायिक की विधि को अशुद्ध या गलत तरीके से करना

पढमे – प्रथम

सिक्खावए – शिक्षाव्रत के विषय में

आणवणे – अपनी तय की हुई मर्यादा भूमि (सीमा) से बाहर से कोई वस्तु मँगाना

पेसवणे – मर्यादा की भूमि से बाहर अपने काम के लिए किसी दूसरे को भेजना

सद्दे – मर्यादा की भूमि से बाहर खड़े व्यक्ति को खाँसकर या आवाज देकर अपना काम समझाना

रूवे – अपनी मर्यादा से बाहर खड़े व्यक्ति को अपना रूप (चेहरा या शरीर) दिखाकर अपनी उपस्थिति का ज्ञान कराना

पुग्गलक्खेवे – मर्यादा से बाहर कंकड़ या कोई वस्तु फेंककर अपना प्रयोजन सिद्ध करना या ध्यान खींचना

देसावगासिअंमि – देशावकाशिक नाम के

बीए – दूसरे

सिक्खावए – शिक्षाव्रत के विषय में

संथारा – संथारा (बिछौने/बिस्तर) संबंधी दोष

उच्चारविहि – लघुशंका (पेशाब) तथा दीर्घशंका (मलत्याग) करने की भूमि की जाँच संबंधी दोष

पमाय – प्रमाद (आलस्य या असावधानी)

तह चेव – और वैसे ही

भोयणाभोए – उपवास आदि में बार-बार भोजन संबंधी चिंता या विचार करना

पोसहविहि – पौषध व्रत की विधि

विवरीए – विपरीत (गलत) तरीके से आचरण करने से

तइए – तीसरे

सिक्खावए – शिक्षाव्रत के विषय में

सच्चित्ते – सचित्त वस्तु पर (जैसे हरी घास पर)

निक्खिवणे – मुनि के लिए आहार आदि रखना

पिहिणे – मुनि को देने योग्य अचित्त वस्तु को किसी सचित्त पदार्थ (जैसे हरे पत्ते) से ढकना

ववएस – देने की इच्छा न होने पर अपनी वस्तु को दूसरों की बताना, अथवा देने के भाव से दूसरों की वस्तु को अपनी बताना

मच्छरे – क्रोध, अभिमान या ईर्ष्या का भाव रखकर दान देना

चेव – निश्चय ही

कालाईक्कमदाणे – गोचरी का सही समय बीत जाने के बाद मुनिराज को आमंत्रण देना

चउत्थे – चौथे

सुहिएसु – सम्यग्ज्ञान और चारित्र में जो लीन हैं, ऐसे सुविहित के विषय में

दुहिएसु – बीमारी से पीड़ित अथवा तपस्या के कारण कमजोर हुए दुःखी जीवों के विषय में

जा – जो

मे – मेरे द्वारा

अस्संजएसु अ – नथी

स्वं – स्वच्छंदतापूर्वक

यत – यत्नपूर्वक (अपनी मर्जी से नहीं, बल्कि गुरु की आज्ञा के अनुसार विचरने वाले)

अणुकंपा – अनुकंपा

साहूसु – उत्तम साधुओं के विषय में

संविभागो – संविभाग (अपने आहार-पानी आदि का मुनिराज के साथ प्रेमपूर्वक हिस्सा करना)

चरण – चरणसत्तरी

करण – करणसत्तरी

जुत्तेसु – इन गुणों से सहित (युक्त)

संते – सामर्थ्य होने पर भी

फासुअदाणे – प्रासुक (निर्दोष/जीव रहित) आहार-पानी का दान न देने का दोष

इहलोए – इस लोक (संसार) के सुखों की

परलोए – परलोक (स्वर्ग आदि) के सुखों की

जीविय – जीने की इच्छा

मरणे – (कष्टों से डरकर) मरने की इच्छा

आसंसपओगे – तीव्र कामना या भोगों की वांछा का मानसिक व्यापार

पंचविहो – पाँच प्रकार के

अइयारो - अतिचार

मा – मत

मज्झ – मुझे

हुज्ज – होवे

मरणंते – मरण के समय तक

काएण – कायोत्सर्ग आदि शरीर की क्रियाओं से

काइअस्स – काया द्वारा किए गए दोषों का

वाइअस्स – वचन द्वारा किए गए दोषों का

वायाए – जिनेंद्र भगवान की स्तुति आदि वचन के व्यापार से

मणसा – मन के द्वारा

माणसिअस्स – मन के द्वारा किए गए खोटे विचारों के दोषों का

वंदण – दो प्रकार के वंदन (नमन)

वय – बारह प्रकार के व्रत

सिक्खा – शिक्षा

गारवेसु – तीन प्रकार के गारव के विषय में

सन्ना – चार संज्ञाएँ (आहार, भय, मैथुन, परिग्रह की इच्छा)

कसाय – चार कषाय (क्रोध, मान, माया, लोभ)

दंडेसु – तीन दंड (मनोदंड, वचनदंड, कायदंड - शल्य)

गुत्तीसु – तीन गुप्ति (मन, वचन, काया को रोकना)

समिइसु– पाँच समिति

सम्मदिट्ठी – सम्यग्दृष्टि (सच्ची श्रद्धा वाला)

जीवो – जीव

जइवि हु – यद्यपि निश्चय ही

पावं – पाप कर्म

समायारे – आचरण करे (पाप हो जाए)

किंचि – थोड़ा भी

अप्पो – बहुत कम या अल्प

सि – उसका (उस श्रावक का)

बंधो – कर्मों का बंध होता है

जेण – क्योंकि

निद्धंधसं – क्रूरता या निर्दयतापूर्वक हिंसा का आचरण

कुणइ – करे

तंपि हु – उस लगे हुए पाप को भी निश्चय ही

सपडिक्कमणं – प्रतिक्रमण (आलोचना) करने से सहित

सप्परिआवं – सच्चे पश्चात्ताप से सहित

सउत्तरगुणं – गुरु द्वारा दिए गए प्रायश्चित को धारण करने से सहित

खिप्पं – अत्यंत शीघ्रता से

उवसामेई – शांत (नष्ट) कर देता है

वाहिव्व – किसी भयंकर बीमारी की तरह

सुसिक्खिओ – अच्छी तरह से विद्या सीखा हुआ

विज्जो – वैद्य (डॉक्टर)

जहा – जैसे

विसं – जहर को

कुट्ठगयं – पूरे शरीर में फैले हुए

मंतमूल – मंत्र और जड़ी-बूटी के

विसारया – कुशल ज्ञाता (जानकार)

विज्जा – वैद्यराज

हणंति – नष्ट कर देते हैं

मंतेहिं – अपने सामर्थ्यवान मंत्रों द्वारा

तो – वैसे ही

निव्विसं – जहर से रहित (पाप मुक्त)

अट्ठविहं – आठ प्रकार के

कम्मं – कर्मों को

रागदोष – रागद्वेष से

समज्जिअं – पूर्व में बांधे गए

आलोअंतो – गुरु के समीप अपने पापों को प्रगट करता हुआ

निंदंतो – अपनी आत्मा की गवाही से पाप की निंदा करता हुआ

खिप्पं – बहुत जल्दी

हणई – नष्ट कर देता है

सुसावओ – एक सच्चा और श्रेष्ठ श्रावक

कयपावो – यदि कोई पाप कार्य हो भी गया हो, तो ऐसा

अवि – वह भाग्यशाली मनुष्य भी

मणुस्सो – मनुष्य

आलोईय – अपने पापों की आलोचना करता हुआ

निंदिय – आत्मा की साक्षी से उसे धिक्कारता हुआ

गुरुसगासे – गुरु महाराज के चरणों के पास आकर

अइरेग – अत्यंत बहुत अधिक

लहुओ – हल्का (पाप मुक्त) हो जाता है

ओहरिअभरुव्व – जैसे कोई भारी बोझ को अपने सिर से नीचे उतार देता है

भारवहो – बोझ उठाने वाला मजदूर

आवस्सएण – यह आवश्यक क्रिया (प्रतिक्रमण) करने से

बहुरओ – आरंभ और परिग्रह के कारण बहुत पापों से भरा हुआ जीव भी

दुक्खाणं – पाप रूपी दुखों का

अंतकिरिअं – समूल नाश

काही – अवश्य करेगा

अचिरेण – बहुत थोड़े

कालेण – समय में ही

आलोयणा – पापों को गुरु के सामने स्वीकार करने की पद्धति

बहुविहा – बहुत प्रकार की है

संभरिआ – याद किए हों (जो दोष याद आए हों)

पडिक्कमणकाले– प्रतिक्रमण करने के पवित्र समय पर

मूलगुण – श्रावक के मूल गुणों (व्रतों) के विषय में

उत्तरगुणे – उत्तर गुणों (नियमों) के विषय में

निंदे – मैं अपने मन में निंदा करता हूँ

गरिहामि – गुरु महाराज की साक्षी में उनकी आलोचना करता हूँ

धम्मस्स – इस श्रावक धर्म को

केवलिपन्नत्तस्स – जो केवलज्ञानी भगवान द्वारा प्रतिपादित (कहा गया) है

अब्भुट्ठिओमि – मैं उसे स्वीकार करने के लिए तत्पर (खड़ा) हुआ हूँ

आराहणाए – धर्म की सच्ची आराधना के लिए

विरओमि – मैं पूरी तरह से पीछे हटा हूँ

विराहणाए – धर्म की विराधना (अवहेलना) करने से

पडिक्कंतो – पाप कर्मों से पीछे हटा हुआ मैं

चिर-संचिअ – लंबे समय से इकट्ठे किए गए

पणासणीई – पापों का नाश करने वाली

भव – संसार के

सयसहस्स – सौ हजार अर्थात् लाखों भवों (जन्मों) के पापों को

महणीए – नष्ट करने वाली (यह प्रतिक्रमण क्रिया है)

विणिग्गय – प्रभु के मुखारविंद से निकली हुई

कहाई – धर्मकथाओं के श्रवण और मनन से

वोलंतु – सुखपूर्वक व्यतीत (बीत) जाएँ

दिअहा – मेरे जीवन के दिन

मम – मेरे लिए

मंगलं – सदा कल्याणकारी और मंगलमय हो

अरिहंता – अरिहंत भगवान

सिद्धा – सिद्ध भगवान

साहू – पूज्य साधु भगवंत

सुअं – श्रुत धर्म (प्रभु की वाणी/शास्त्र)

धम्मो – उत्तम चारित्र धर्म

सम्मदिट्ठी – सम्यग्दृष्टि

देवा – शासन देव-देवियाँ

दिंतु – मुझे प्रदान करें

समाहिं – चित्त की परम स्थिरता (समाधि भाव)

बोहिं – बोधिबीज अर्थात् सम्यक्त्व की प्राप्ति

पडिसिद्धाणं – जिन कार्यों को करने का शास्त्रों में निषेध है, ऐसे अशुभ कार्य

करणे – करने से जो दोष लगे

किच्चाणं – जो कार्य करने योग्य हैं, ऐसे शुभ कार्य

अकरणे – न करने से जो दोष लगे

पडिक्कमणं – सच्चा प्रतिक्रमण है

असदहणे – सूक्ष्म विचारों और जिनवचनों

पर पूर्ण रूप से श्रद्धा न करने से

विवरीय – शास्त्रों से विपरीत

परूवणाए – प्ररूपणा करने से जो दोष लगा हो, उसके लिए

खामेमि – मैं क्षमा माँगता हूँ

सव्वजीवे – दुनिया के सभी जीवों से

सव्वे – सभी

जीवा – जीव

खमंतु – मुझे क्षमा करें

मे – मेरी

मित्ती – मैत्री (मित्रता) है

सव्वभूएसु – सभी प्राणियों के साथ

वेरं – वैरभाव या दुश्मनी

मज्झ – मेरी

केणई – किसी भी जीव के साथ नहीं है

अहं – मैंने

आलोईअ – अपने पापों को प्रगट किया (आलोचना की)

निंदिअ – अपनी अंतरात्मा की साक्षी से उसकी निंदा की

गरहिअ – गुरु महाराज के समक्ष अपनी भूलों को स्वीकार किया

दुगंछिअं – अपने पापों के प्रति ग्लानि या दुर्गंछा (नफ़रत) की

सम्मं – सम्यक् प्रकार से

तिविहेण – तीन प्रकार से

पडिक्कंतो – पापों से सर्वथा पीछे हटता हुआ मैं

वंदामि – भावपूर्वक वंदना करता हूँ

जिणे – जिनेंद्र भगवंतों को

चउव्वीसं – चौबीस ही तीर्थंकर देवों को

धारणा अभिग्रह पच्चक्खाण

कारण: इस पच्चक्खाण का मुख्य उद्देश्य जीवन में अनुशासन और संयम लाना है। मन में जो निश्चित धारणा या संकल्प किया हो, उसे धार्मिक विधि द्वारा दृढ़ करने के लिए यह पच्चक्खाण लिया जाता है। यह पच्चक्खाण श्रावक के जीवन में छोटे-छोटे नियमों के माध्यम से बड़े फल की प्राप्ति कराने वाला है।

लाभ :

- **संकल्प शक्ति :** इस पच्चक्खाण से व्यक्ति की इच्छाशक्ति और संकल्प शक्ति मजबूत बनती है।
- **अविरति का नाश :** जिस बात या वस्तु का त्याग किया हो, उतने समय के लिए जीव पाप कर्मों के बंध से बच जाता है।
- **धार्मिक अनुशासन :** जीवन में क्रमबद्ध (नियमबद्ध) तरीके से धर्म का पालन करने की आदत पड़ती है।

पच्चक्खाण लेने की रीति:

दोनों हाथ जोड़कर, मन में दृढ़ संकल्प करके नीचे लिखे अनुसार बोलकर पच्चक्खाण लेना चाहिए:

"धारणा अभिग्गहं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ (वोसिरामि)।"

- **लेने की पद्धति:** जहाँ तक संभव हो, कोई भी नियम या पच्चक्खाण गुरु भगवंत (साधु साध्वीजी) के पास ही लेना चाहिए। यदि गुरु भगवंत का योग न हो, तो ऊपर लिखे अनुसार (प्रभु की) साक्षी मानकर स्वयं भी नियम लिया जा सकता है। स्वयं नियम लेने के बाद, जब भी भविष्य में गुरु भगवंत का मिलाप हो, तब उनके पास इस पच्चक्खाण को फिर से विधिवत लेना चाहिए।
- **नियम का प्रकार:** इस पच्चक्खाण द्वारा किसी भी प्रकार का छोटा या बड़ा नियम लिया जा सकता है। आपने मन में जिस वस्तु या कार्य को छोड़ने का निश्चय किया हो, उतने समय तक उस वस्तु का त्याग इस पच्चक्खाण से माना जाता है।

उदाहरण : जैसे कोई ऐसा अभिग्रह (संकल्प) ले कि-"मैं एक वर्ष तक प्रत्येक महीने की पाँचों तिथियों (चौदस, आठम, पंचम आदि) को हरी सब्जी का त्याग करूँगा।"

मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाण लेने की विधि

कारण: इस पच्चक्खाण का मुख्य कारण 'अविरति' का त्याग है। जो श्रावक-श्राविका एक क्षण भी पच्चक्खाण के बिना (अव्रत की दशा में) रहना नहीं चाहते, उनके लिए यह पच्चक्खाण अत्यंत उपयोगी है। हर बार भोजन या पानी ग्रहण करके खड़े होते समय यदि 'मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाण' लेने की आदत डाल लें, तो दिन के २१-२२ घंटे विरति (संयम) का लाभ मिलता है।

लाभ : इस पच्चक्खाण को बार-बार लेने से बहुत बड़ा आत्मिक लाभ और पुण्य प्राप्त होता है:

- **एकासना करने वाले को:** यदि प्रतिदिन यह पच्चक्खाण लिया जाए, तो एक महीने में लगभग २९ उपवास जितना पुण्य मिल सकता है।
- **बिआसना करने वाले को:** एक महीने में लगभग २८ उपवास जितना लाभ मिलता है।
- **सामान्य श्रावक को:** जो कोई तपस्या नहीं करते, वे भी यदि बार-बार यह पच्चक्खाण लें तो उनका पूरा दिन विरतिपने में (संयम में) गिना जाता है और अगाध पुण्य का संचय होता है।

पच्चक्खाण लेने की रीति:

दोनों हाथ जोड़कर नीचे लिखे अनुसार बोलकर पच्चक्खाण लें:

"मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाई (पच्चक्खामि) अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ (वोसिरामि)।"

लेने का समय और नियम:

- **समय:** यह पच्चक्खाण दिन के दौरान कभी भी लिया जा सकता है
- **नियम:** यह पच्चक्खाण लेने के बाद जब तक पुनः मुट्ठी बांधकर नवकार मंत्र न गिना जाए, तब तक चारों प्रकार के आहार-अशन (भोजन), पान (पानी), खादिम (फल-मेवे), स्वादिम (मुखवास)-का पूर्ण रूप से त्याग रहता है

पच्चक्खाण पालने (पारने) की रीति : यह पच्चक्खाण दो तरीकों से पाला (पारा) जा सकता है:

1. जमीन या आसन पर बैठकर, हाथ की मुट्ठी बंद करके ३ नवकार मंत्र गिनकर इसे

पारा जा सकता है।

2. अथवा- १ नवकार मंत्र + पारने का सूत्र + १ नवकार मंत्र गिनकर पारा जा सकता है।

पारने का सूत्र:

"मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाणं फासिअं पालिअं सोहिअं तीरिअं कीट्टिअं आराहिअं, जं च न आराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं।"

पदार्थः भक्ष्याभक्ष्य भाग – २

शास्त्रों में २२ प्रकार के अभक्ष्य बताए गए हैं, जिनमें से (भाग-१ के अतिरिक्त) शेष प्रमुख अभक्ष्य नीचे दिए गए हैं:

१९. द्विदल : कच्चे (यानी अच्छी तरह से उबाले या गर्म न किए गए) दूध, दही या छाछ के साथ जब किसी भी प्रकार का दलहन (कठोल/दालें) मिलता है, तो उसमें तुरंत ही असंख्य द्वीन्द्रिय (दो इंद्रिय वाले) जीवों की उत्पत्ति हो जाती है। इसे जैन शास्त्र में 'द्विदल दोष' कहा जाता है।

- कढ़ी, गट्टे की सब्जी, मेथी के थेपले, डोसा, ढोकला, इडली आदि बनाते समय अक्सर लोग दही या छाछ को बिना गर्म किए ही सीधे आटे या बेसन में मिला देते हैं, जिससे यह भोजन द्विदल (अभक्ष्य) बन जाता है।
- रायता और दही-बड़े आदि में भी अधिकांशतः दही को गर्म नहीं किया जाता, इसलिए दाल के वड़े या बूंदी के साथ मिलकर यह तुरंत द्विदल दोष का कारण बनता है।
- बाज़ार में मिलने वाले आम के रस (मैंगो पल्प) में कच्चा दूध मिलाया जाता है। उसके साथ यदि मूँग की दाल, कढ़ी, मटर जैसी सब्ज़ियाँ या चने के आटे से बने नमकीन/फरसाण खाए जाएँ, तो पेट में जाकर द्विदल बनता है।
- कच्चे दूध को सामान्य गर्म करके उसमे इंस्टेंट कॉफी या टी-बैग मिलाकर बनाई गई चाय-कॉफी के साथ गाँठिया, पापड़ी आदि (जो चने के आटे से बनते हैं) खाने से भी द्विदल दोष लगता है।
- जैसे कच्चे दूध-दही-छाछ के साथ मूँग, चना, उड़द, तुअर दाल, चवला आदि दलहन मिलकर द्विदल बनते हैं; ठीक वैसे ही हरे मटर, हरी चवलाफली, हरी या

सूखी मेथी की भाजी, ग्वारफली, वालोर (सेम फली) और तुवर आदि के साथ मिलने पर भी द्विदल होता है।

२०. **रात्रिभोजन :** जैन परंपरा में रात्रिभोजन को 'नरक का प्रथम द्वार' माना गया है। सूर्यास्त के बाद वातावरण में अचानक बदलाव आता है और अनगिनत सूक्ष्म जीव (त्रस जीव) उत्पन्न हो जाते हैं। रात के समय भोजन करने से इन जीवों की अनजाने में भी भारी हिंसा होती है, जो तीव्र पाप कर्म के बंध का कारण बनती है। बिजली के प्रकाश में भी वे सूक्ष्म जीव आँख से दिखाई नहीं देते लेकिन भोजन में गिर जाते हैं। इससे न केवल स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान पहुँचता है, बल्कि जीवहिंसा का भारी दोष भी लगता है ।

२१. **चलित-रस (बासी भोजन) :** खाद्य पदार्थ एक निश्चित समय मर्यादा बीत जाने के बाद बिगड़ने (सड़ने) लगते हैं। जब भोजन की गंध, स्वाद या रंग बदल जाता है, तो उसे 'चलित रस' कहा जाता है। चलित रस होते ही उसमें असंख्य द्वीन्द्रिय जीव तथा सूक्ष्म काई और फफूंद (फूग) उत्पन्न हो जाती है इसलिए ऐसे चलित रस वाले पदार्थ पूर्णतः अभक्ष्य होते हैं।

- **एक दिन की मर्यादा :** रोटला, रोटी, भाकरी, थेपले, इडली, डोसा, कचौड़ी, समोसे आदि जिस दिन बनाए गए हों, उसी दिन तक भक्ष्य (खाने योग्य) रहते हैं। दूसरे दिन वे बासी (चलित रस) माने जाते हैं। इनमें पानी का अंश होने के कारण लार जैसे बेइन्द्रिय जीव पैदा हो जाते हैं इसलिए इन्हें स्वयं भी नहीं खाना चाहिए और कुत्तों या अन्य पशुओं को भी नहीं खिलाना चाहिए।

  बिना पक्की चाशनी के बने पेड़े दूसरे दिन चलित रस हो जाते हैं। यदि चटनी पीसते समय उसमें पानी डाला गया हो, या उसमें मेथी, दालिया (भुने चने), बेसन आदि मिलाया गया हो तो वह चटनी दूसरे ही दिन बासी और अभक्ष्य हो जाती है। चटनी बनाते समय यदि हरा धनिया या मिर्च पानी से धोए गए हों और उनको सुखाया न गया हो, तो चटनी में नमी रहने के कारण वह अगले दिन अभक्ष्य बन जाती है। कड़क सिकी हुयी या तली हुयी वस्तु ही दूसरे दिन चलती है ।

- विशेष ध्यान रखने योग्य बात: काल (समय मर्यादा) पूरा होने से पहले भी यदि किसी भोजन का रंग या स्वाद बदल जाए, तो वह जीवोत्पत्ति का स्पष्ट लक्षण है, अतः वह तुरंत अभक्ष्य बन जाता है।

---

२२. बोल-अचार : आम, गुंदा (लसोड़ा), खारक (छुआरा), मिर्च आदि का वह सूखा अचार जिसे धूप अच्छी तरह न दिखाई गई हो और जो आसानी से मुड़ (लचीला हो) सकता हो, वह तीन दिन के बाद ही अभक्ष्य हो जाता है। कई लोग कहते हैं कि हमने 'तीन धूप' देकर अचार बनाया है; लेकिन ध्यान रहे, गिनती की तीन धूप देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि जब तक वह पूरी तरह कड़ा (चूड़ी की तरह सख्त) न सूख जाए, तब तक ५-७ या उससे अधिक दिन भी धूप देनी चाहिए। इस प्रकार अच्छी तरह सुखाने के बाद यदि उसमें राई, गुड़ और 'तेल बुड़' (अर्थात अचार की सामग्री तेल के अंदर पूरी तरह डूबी रहे उतना पर्याप्त तेल) हो, तो वह अचार जब तक अपना वर्ण, गंध, रस और स्पर्श नहीं बदलता, तब तक भक्ष्य रह सकता है। लेकिन यदि तेल कम हो, तो वह समय से पहले ही बिगड़कर अभक्ष्य हो जाता है ।

- **अन्य अभक्ष्य पदार्थ:** सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करते ही कच्चा-पक्का आम, रायण आदि फल तुरंत अभक्ष्य हो जाते हैं। जब तक सूर्य 'स्वाति नक्षत्र' में प्रवेश नहीं करता, तब तक ये वस्तुएं अभक्ष्य ही रहती हैं।
- नींबू के फूल (साइट्रिक एसिड), साबूदाना और सिंघाड़ा आदि के औद्योगिक निर्माण की प्रक्रिया हिंसक और अशुद्ध होती है इसलिए ये अभक्ष्य हैं।
- फूलगोभी (कॉलीफ्लावर) के भीतर बहुत अधिक संख्या में त्रस जीव (कीड़े) छुपे होते हैं, जिन्हें पूरी तरह साफ करना असंभव है इसलिए इसका उपयोग नहीं करना चाहिए।
- बाज़ार का रवा (सूजी), मैदा, बेसन, बिस्कुट आदि को पीसने और बनाने की प्रक्रिया में 'जयणा' नहीं रखा जाता और न ही काल-मर्यादा का ध्यान रखा जाता है, इसलिए ये उपयोग में नहीं लेने चाहिए ।
- सिरका (विनेगर) और यीस्ट जैसे पदार्थों के निर्माण में अत्यधिक सड़न प्रक्रिया होने के कारण इनमें भारी मात्रा में जीवों की उत्पत्ति होती है, अतः ये पूर्णतः अभक्ष्य हैं।

शास्त्रों में कहा गया है कि: "आप किसी एक जीव को अभयदान दें, तो उसका फल सोने के मेरु पर्वत जितने बड़े दान से भी कहीं अधिक होता है।" इन सभी बताए गए अभक्ष्य पदार्थों का मन, वचन और काया से सर्वथा त्याग करने पर, श्रावक को एक ही स्थान पर बैठे-बैठे असंख्य और अनंत जीवों को अभयदान देने का महान फल प्राप्त होता है।

मौखिक कक्षा - १४

सूत्र	: जीवविचार	५०
प्रश्नोत्तरी	: जीवविचार प्रश्नोत्तरी	५०
		१००

मौखिक कक्षा - १५

सूत्र	: नवतत्त्व	५०
प्रश्नोत्तरी	: नवतत्त्व प्रश्नोत्तरी	५०
		१००

मौखिक कक्षा - १६

सूत्र	: प्रथम कर्मग्रंथ	५०
प्रश्नोत्तरी	: प्रथम कर्मग्रंथ प्रश्नोत्तरी	५०
		१००

मौखिक कक्षा - १७

सूत्र	: तत्त्वार्थ सूत्र - १ थी ५ अध्याय	५०
अर्थ	: तत्त्वार्थ सूत्र - १ थी ५ अध्याय अर्थ	५०
		१००

मौखिक कक्षा - १८

सूत्र	: तत्त्वार्थ सूत्र - ६ थी १० अध्याय	५०
अर्थ	: तत्त्वार्थ सूत्र - ६ थी १० अध्याय अर्थ	५०
		१००

लिखित : कक्षा - १

मूल सूत्र	: नवकार से वंदित्तु (सूत्र १ से ३६) (पृष्ठ संख्या १ से ४, १२ से १६, २६ से ३०, ४१)
अर्थ	: नवकार से सामायिक वयजुत्तो (पृष्ठ संख्या ३१, ३२, ४६, ६०, ६१, ७८, ९३, १०८)
विधि	: देववंदन की विधि
चैत्यवंदन	: श्री आदीश्वर भगवान का - आदि देव अलवेसरू
स्तवन	: श्री आदीश्वर भगवान का - जग जीवन जग वालहो
थोय	: श्री आदि जिनवर राया (पृष्ठ संख्या ८२)
रत्नाकर पच्चीसी	: १ से ५ गाथा (पृष्ठ संख्या १०)
राजनगर प्रश्नोत्तरी	: ३१ से ६०(१) (पृष्ठ संख्या ३८, ६७, ८५)

देववंदन की विधि

प्रथम इरियावही पडिक्कमामि से लोगस्स कहकर उत्तरासन डालकर, चैत्यवंदन, नमुत्थुणं कहकर, जयवियराय, आभवमखंडा तक कहना फिर दूसरा चैत्यवंदन कहकर नमुत्थुणं कहकर अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० एक नवकार का काउस्सग्ग करे. फिर नमोऽर्हत० एक थोय फिर लोगस्स० सव्वलोए० अन्नत्थ० काउस्सग्ग, दूसरी थोय, पुक्खरवरदी सुअस्स० अन्नत्थ० काउ० तीसरी थोय, सिद्धाणं० वेयावच्च० अन्नत्थ० एक नवकार का काउस्सग्ग नमोऽर्हत्० चौथी थोय, फिर नमुत्थुणं कहकर आगे जैसे फिर चार थोय कहे, फिर नमुत्थुणं तथा जावंति, खमा० और जावंत के वि साहू कहे, नमोऽर्हत्, स्तवन, आधा जय वीयराय आभवमखंडा तक कहे. फिर चैत्यवंदन करे, नमुत्थुणं कहकर संपूर्ण

जयवीयराय कहे, पौषध मे एक खमासमण देकर इच्छा० सज्झाय करुं ? इच्छं० कहकर एक नवकार गिनकर मन्नह जिणाणं की सज्झाय कहना।

मध्याह्न और शाम को देववंदन के समय सज्झाय न बोलना।

श्री आदीश्वर भगवान का चैत्यवंदन

आदिदेव अलवेसरू, विनीतानो राय;
नाभिराया कुलमंडणो, मरूदेवा माय। (१)

पांचसो धनुष्यनी देहडी, प्रभुजी परम दयाल;
चोराशी लाख पूर्वनुं, जस आयु विशाल। (२)

वृषभ लंछन जिन वृषधरू ए, उत्तम गुणमणीखाण;
तस पदपद्म सेवन थकी, लहीए अविचल ठाण। (३)

श्री आदीश्वर भगवान का स्तवन

जगजीवन जगवालहो, मरुदेवीनो नंद लाल रे,
मुख दीठे सुख उपजे, दरिशन अतिहि आनंद लाल रे। (१)

आंखडी अम्बुज पांखडी, अष्टमी शशि सम भाल लाल रे;
वदन ते शारद चंदलो, वाणी अतिहि रसाल लाल रे। (२)

लक्षण अंगे विराजतां, अडहिय सहस उदार लाल रे;
रेखा कर चरणादिके, अभ्यंतर नहि पार लाल रे। (३)

इन्द्र चन्द्र रवि गिरितणां, गुण लही घडियुं अंग लाल रे;
भाग्य किहां थकी आवियुं, अचरिज एह उत्तुंग लाल रे। (४)

गुण सघला अंगी कर्या, दूर कर्या सवि दोष लाल रे;
वाचक "जशविजये" थुण्यो, देजो सुखनो पोष लाल रे। (५)

● ● ●

लिखित : कक्षा - २

मूल सूत्र	:	आयरिय उवज्झाए से सकलतीर्थ (सूत्र ३७ से ५१) (पृष्ठ संख्या ५२ से ५९), स्नातस्या (सूत्र ५३) (पृष्ठ संख्या ७६)
अर्थ	:	जगचिंतामणि से संसारदावानल (पृष्ठ संख्या १४८, १६४ से १६६, १७३ से १७६)
विधि	:	राई प्रतिक्रमण की विधि (पृष्ठ संख्या ९७), तपचिंतवणी का काउस्सग्ग
चैत्यवंदन	:	श्री सीमंधर जगधणी (पृष्ठ संख्या ८०), श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र (पृष्ठ संख्या ९५)
स्तवन	:	सुणो चंदाजी (पृष्ठ संख्या ८१), विमलाचल नितु नंदीए (पृष्ठ संख्या ९६)
थोय	:	श्री सीमंधर जिनवर (पृष्ठ संख्या ८२), श्री शत्रुंजय मंडण (पृष्ठ संख्या ९६)
रत्नाकर पच्चीसी	:	६ से १० गाथा
राजनगर प्रश्नोत्तरी	:	६१ से ९० (पृष्ठ संख्या १००, ११६)

तप चिंतवणी के काउस्सग्ग में करने योग्य चिंतन

श्री प्रभु वीर ने ६ महीने के चोविहार उपवास किए थे - मेरी शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

चंपा श्राविका ने ६ महीने के तिविहार उपवास किए थे - मेरी शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

हे चेतन! ५ महीने का उपवास कर - मेरी शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

पौषध अर्थात् श्रावक के गुणों को पुष्ट करनेवाला अनुष्ठान.

हे चेतन! ४ महीने का उपवास कर - मेरी शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

हे चेतन! ३ महीने का उपवास कर - मेरी शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

हे चेतन! २ महीने का उपवास कर - मेरी शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

हे चेतन! डेढ़ महीने का उपवास कर - मेरी शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

इस प्रकार एक-एक कम करते हुए... ४४ दिन, ४३ दिन... उपवास कर - मेरी शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

मासक्षमण (३० उपवास) कर - मेरी शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

२९ उपवास कर - मेरी शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

२८ उपवास कर - मेरी शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

इस प्रकार एक-एक कम करते हुए... १७ उपवास कर - मेरी शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

चौंतीस-भक्त कर - मेरी शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

बत्तीस-भक्त कर - मेरी शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

इस प्रकार दो-दो कम करते हुए... दश-भक्त कर - मेरी शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

अठ्ठम (३ उपवास) कर - मेरी शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है।

इस प्रकार छठ (२ उपवास), उपवास, आयंबिल, नीवी, एकासना, बियासना, पुरिमड्ढ, साड्ढपोरिसी, पोरिसी, नवकारशी तक विचार करना।

पूर्व में अधिक से अधिक जो तप किया हो, वह तप जब आए तब "मेरी शक्ति नहीं है, परिणाम नहीं है", इसके बदले "शक्ति है, परिणाम नहीं है" ऐसा विचार करना।

आज जो तप करना हो, वह तप जब आए तब "शक्ति है, परिणाम है" ऐसा विचार करना। उसके बाद का तप चिंतवे बिना ही 'नमो अरिहंताणं' कहकर कायोत्सर्ग (काउस्सग्ग) पालना (पूरा करना)।

श्री रत्नाकर पच्चीसी

में परभवे के आ भवे पण हित कांइ कर्युं नहि,
तेथी करी संसारमां सुख अल्प पण पाम्यो नहि;
जन्मो अमारा जिनजी भव पूर्ण करवाने थया,
आवेल बाजी हाथमां अज्ञानथी हारी गया. ६

अमृत झरे तुज मुखरूपी चंद्रथी तो पण प्रभु,
भिंजाय नहि मुज मन अरेरे! शुं करुं हुं तो विभु;
पत्थर थकी पण कठण मारुं मन खरे क्यांथी द्रवे,
मरकट समा आ मन थकी हुं तो प्रभु हार्यो हवे. ७

भमतां महाभवसागरे पाम्यो पसाये आपना,
जे ज्ञान दर्शन चरणरूपी रत्नत्रय दुष्कर घणा;
ते पण गया परमादना वशथी प्रभु कहुं छुं खरूं,
कोनी कने किरतार आ, पोकार हुं जइने करूं? ८

ठगवा विभु आ विश्वने वैराग्यना रंगो धर्या,
ने धर्मनो उपदेश रंजन लोकने करवा कर्या;
विद्या भण्यो हुं वाद माटे केटली कथनी कहुं?
साधु थइने बाहरथी दांभिक अंदरथी रहुं. ९

में मुखने मेलुं कर्युं दोषो पराया गाइने,
ने नेत्रने निंदित कर्यां परनारीमां लपटाइने;
वली चित्तने दोषित कर्युं चिंती नठारूं परतणुं,
हे नाथ! मारूं शुं थशे चालाक थइ चूक्यो घणुं. १०

• • •

लिखित : कक्षा - ३

मूल सूत्र	: सकलार्हत् (सूत्र ५२) (पृष्ठ संख्या ७३), संतिकरम् (सूत्र ५४) (पृष्ठ संख्या ७७), मोटीशान्ति (सूत्र ५६) (पृष्ठ संख्या १०५)
अर्थ	: पुक्खरवरदीवड्ढे से इच्छामि पडिक्कमिउं तक
विधि	: देवसि प्रतिक्रमण की विधि (पृष्ठ संख्या ११२)
सज्झाय	: प्रणमुं तुमारा पाय प्रसन्नचंद्र (पृष्ठ संख्या ८२)
रत्नाकर पच्चीसी	: ११ से १५ गाथा
राजनगर प्रश्नोत्तरी	: ९१ से १२० (राजनगर ज्ञानमाला)

श्री रत्नाकर पच्चीशी

करे कालजाने कतल पीडा, कामनी बीहामणी,
अे विषयमां बनी अंध हुं, विडंबना पाम्यो घणी;
ते पण प्रकाश्युं आज लावी, लाज आप तणी कने,
जाणो सहुं तेथी कहुं, कर माफ मारा वांकने. ११

नवकार मंत्र विनाश कीधो, अन्य मंत्रो जाणीने,
कुशास्त्रनां वाक्यो वडे, हणी आगमोनी वाणीने;
कुदेवनी संगत थकी, कर्मो नकामां आचर्यां,
मति भ्रम थकी रत्नो गुमावी, काच कटका में ग्रह्या. १२

आवेल दृष्टिमार्गमां, मूकी महावीर आपने,
में मूढधीअे हृदयमां, ध्याया मदनना चापने;

नेत्रबाणो ने पयोधर, नाभी ने सुंदर कटी,
शणगार सुंदरीओ तणा, छटकेल थइ जोया अति. १३

मृगनयनीसम नारी तणां, मुखचंद्र नीरखवा थकी,
मुज मन विषे जे रंग लाग्यो, अल्प पण गाढो अति;
ते श्रुतरूप समुद्रमां, धोया छतां जातो नथी,
तेनुं कहो कारण तमे, बचुं केम हुं आ पापथी? १४

सुंदर नथी आ शरीर के, समुदाय गुण तणो नथी,
उत्तम विलास कला तणी, देदीप्यमान प्रभा नथी;
प्रभुता नथी तो पण प्रभु, अभिमानथी अक्कड फरूं,
चोपाट चार गति तणी, संसारमां खेल्या करूं. १५

सागरचंदो (पौषध पारने का सूत्र)

सागर चंदो कामो, चंदवडिंसो, सुदंसणो धन्नो;
जेहिं पोसह पडिमा, अखंडिया जीविअंते वि । (१)

धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा, आणंद कामदेवा य;
जस पसंसई मयणं, दढव्वयत्तं महावीरो । (२)

पौषध विधिपूर्वक लिया, विधिपूर्वक पार्या, विधि करते हुए जो कोई अविधि हुई हो वह सब मैं मन, वचन, काया से मिच्छामि दुक्कडं करता हूँ।

पौषध के अठारह दोषों में से जो कोई दोष लगा हो, वह सब मैं मन, वचन, काया से मिच्छामि दुक्कडं करता हूँ।

लिखित : कक्षा - ४

मूल सूत्र	:	अजितशांति (सूत्र ५५) (पृष्ठ संख्या ८८) और तिजयपहुत्त (सूत्र ५९) (पृष्ठ संख्या १७०)
अर्थ	:	वंदित्तु सूत्र (सूत्र ३६) (पृष्ठ संख्या १८५)
विधि	:	मुहपत्ति पडिलेहण के ५० बोल (पृष्ठ संख्या ६३)
चैत्यवंदन	:	पर्व पर्युषण गुणनीलो
स्तवन	:	सुणजो साजन संत (पृष्ठ संख्या १०९)
थोय	:	पुण्यनुं पोषण (पृष्ठ संख्या ११०)
रत्नाकर पच्चीसी	:	१६ से २० गाथा
राजनगर प्रश्नोत्तरी	:	१२१ से १३९ (राजनगर ज्ञानमाला)

काव्य विभाग - पर्युषण पर्व का चैत्यवंदन

पर्व पर्युषण गुणनीलो, नव कल्पी विहार;
चार मासान्तर थिर रहे, एही ज अर्थ उदार. १

अषाढ सुदि चौदश थकी, संवत्सरी पचास;
मुनिवर दिन सित्तेरमें, पडिक्कमतां चौमास. २

श्रावक पण समता धरी, करे गुरुना बहुमान;
कल्पसूत्र सुविहित मुखे, सांभले थइ एकतान. ३

जिनवर चैत्य जुहारीए, गुरु भक्ति विशाल;
प्राये अष्ट भवांतरे, वरीए शिव वरमाल. ४

दर्पणथी निज रूपने, जुवे सुदृष्टि रूप;
दर्पण अनुभव अर्पणो, ज्ञानरमण मुनिभूप. ५

आत्म स्वरूप विलोकतां, प्रगटे मित्र स्वभाव;
राय उदायी खामणां, पर्व पर्युषण दाव. ६

नव वखाण पूजी सुणो, शुक्ल चतुर्थी सीमा;
पंचमी दिन वांचे सुणे, होय विराधक नियमा. ७
ए नहि पर्व पंचमी, सर्व समाणी चोथे;
भवभीरु मुनि मानशे, भाख्युं अरिहा नाथे. ८
श्रुतकेवली वयणां सुणीए, लही मानव अवतार;
श्री शुभवीरने शासने, पाम्या जयजयकार. ९

श्री रत्नाकर पच्चीसी

आयुष्य घटतुं जाय तो पण पाप बुद्धि नव घटे,
आशा जीवननी जाय पण विषयाभिलाषा नव मटे;
औषध विषे करूं यत्न पण हुं धर्मने तो नव गणुं,
बनी मोहमां मस्तान हुं पाया विनाना घर चणुं. १६
आत्मा नथी परभव नथी, वली पुण्य पाप कशुं नथी,
मिथ्यात्वनी कटु वाणी में, धरी कान पीधी स्वादथी;
रवि सम हता ज्ञाने करी, प्रभु आपश्री तो पण अरे!
दीवो लइ कूवे पड्यो, धिक्कार छे मुजने खरे. १७
में चित्तथी नहि देवनी के पात्रनी पूजा चही,
ने श्रावको के साधुओनो, धर्म पण पाल्यो नहि;
पाम्यो प्रभु नरभव छतां, रणमां रड्या जेवुं थयुं,
धोबीतणा कुत्ता समुं, मम जीवन सहु एले गयुं. १८
हुं कामधेनु कल्पतरु चिंतामणिना प्यारमां,
खोटा छतां झंख्यो घणुं, बनी लुब्ध आ संसारमां;
जे प्रगट सुख देनार ताहरो धर्म ते सेव्यो नहि,
मुज मूर्ख भावोने निहाली नाथ! कर करुणा कांइ. १९
में भोग सारा चिंतव्या ते रोग सम चिंत्या नहि,
आगमन इच्छ्युं धन तणुं पण मृत्युने पीछ्युं नहि;
नहि चिंतव्युं में नर्क कारागृह समी छे नारीओ,
मधुबिंदुनी आशा महीं भयमात्र हुं भूली गयो. २०

लिखित : कक्षा - ५

मूल सूत्र	:	अतिचार (सूत्र ५७) (पृष्ठ संख्या ११८), भक्तामर (सूत्र ५८) (पृष्ठ संख्या १६०)
अर्थ	:	आयरिय उवज्झाए से सकलतीर्थ तक
विधि	:	पक्खि, चउमासी (पृष्ठ संख्या १५१, १५३), संवत्सरी और छींक के काउस्सग्ग की विधि
रत्नाकर पच्चीसी	:	२१ से २५ गाथा
राजनगर प्रश्नोत्तरी	:	१४० से १५५ (राजनगर ज्ञानमाला)

संवत्सरी प्रतिक्रमण की विधि

इसमें पक्खी की विधि के अनुसार करें परन्तु इतना विशेष ध्यान रखे कि १२ के काउस्सग्ग के स्थान पर ४० लोगस्स का काउस्सग्ग 'चंदेसु निम्मलयरा' तक तथा ऊपर एक नवकार अथवा १६० नवकार का काउस्सग्ग करे। तप के स्थान पर अट्ठम भत्तेणं, तीन उपवास, छह आयंबिल, नौ नीवि, बारह एकासणां, चौबीस वियासणां, छह हजार स्वाध्याय कहें तथा पक्खी शब्द के बदले संवत्सरी(संवच्छरी) शब्द कहें।

पक्खी, चउमासी और संवत्सरी प्रतिक्रमण में छींक आऐ तो

प्रतिक्रमण में अतिचार कें पहले छींक आई हो तो चैत्यवंदन से फिरसे शुरू करे और दुक्खक्खओ-कम्मक्खओ से पहेले छींक आए तो छींक का काउस्सग्ग सज्झाय करने के बाद करें और मांगलिक के लिए श्री सकलचंद्रजी उपाध्याय भगवंत रचित सत्तरभेदी पूजा करवानी चाहिए।

छींक के काउस्सग्ग की विधि

एक खमासमण देकर इरियावहियं से काउस्सग्ग करके लोगस्स कहे, फिर एक खमासमण देकर इच्छा० संदि० भग० क्षुद्रोपद्रव ओहड्डावणत्थं काउस्सग्ग करुं ?, इच्छं, क्षुद्रोपद्रव ओहड्डावणत्थं करोमि काउस्सग्गं, अन्नथ० कहकर चार

लोगस्स 'सागरवरगंभीरा तक (ना आए तो १६ नवकारका काउस्सग्ग करें), और नीचेकी थोय कहे।

सर्वे यक्षाम्बिकाद्या ये, वैयावृत्यकरा जिने,
क्षुद्रोपद्रवसंघातं, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥१॥

फिर लोगस्स बोलकर आगेकी विधि करें।

श्री रत्नाकर पच्चीसी

हुं शुद्ध आचारो वडे, साधु हृदयमां नव रह्यो,
करी काम पर उपकारनां, यश पण उपार्जन नव कर्या;
वली तीर्थना उद्धार आदि, कोइ कार्यो नव कर्यां,
फोगट अरे आ लक्ष, चोराशी तणा फेरा फर्या. २१

गुरुवाणीमां वैराग्य केरो, रंग लाग्यो नहि अने,
दुर्जन तणा वाक्यो महीं, शांति मले क्यांथी मने;
तरुं केम हुं संसार आ, अध्यात्म तो छे नहि जरी,
तुटेल तलीयानो घडो, जलथी भराये केम करी? २२

में परभवे नथी पुन्य कीधुं, ने नथी करतो हजी,
तो आवता भवमां कहो, क्यांथी थशे हे नाथजी;
भूत भावी ने सांप्रत त्रणे, भव नाथ! हुं हारी गयो,
स्वामी! त्रिशंकु जेम हुं, आकाशमां लटकी रह्यो. २३

अथवा नकामुं आप पासे, नाथ शुं बकवुं घणुं?
हे देवताना पूज्य! आ, चारित्र मुज पोता तणुं;
जाणो स्वरूप त्रण लोकनुं, तो म्हारूं शुं मात्र आ,
ज्यां क्रोडनो हिसाब नहि त्यां, पाइनी तो वात क्यां? २४

ताराथी न समर्थ अन्य दीननो, उद्धारनारो प्रभु!
म्हाराथी नहि अन्य पात्र जगमां, जोतां जडे हे विभु;
मुक्ति मंगल स्थान तोय मुजने, इच्छा न लक्ष्मी तणी,
आपो सम्यग्रत्न श्याम जीवने, तो तृप्ति थाये घणी. २५

लिखित : कक्षा - ६

मूल सूत्र	: नमिऊण (सूत्र ६०) (पृष्ठ संख्या १७१),
	कल्याण मंदिर (सूत्र ६१) (पृष्ठ संख्या १८१)
अर्थ	: स्नातस्या, सकलार्हत्
स्तवन	: २७ भव की ढाल पहली
	(दोहा : श्री शुभविजय सुगुरु नमी, पहेले भवे)
थोय	: मनोहर मूर्ति महावीर तणी
सज्झाय	: जुओ रे जुओ जैनो केवा व्रतधारी
राजनगर प्रश्नोत्तरी	: १५६ से १७५ (राजनगर ज्ञानमाला)

श्री महावीरप्रभु का सत्तावीशभव का स्तवन

(१)

श्रीशुभविजय सुगुरु नमी, नमी पद्मावतीमाय;
भव सत्तावीश वर्णवुं, सुणतां समकित थाय. १

समकित पामे जीवने, भव गणतीए गणाय;
जो वली संसारे भमे, तो पण मुगते जाय. २

वीर जिनेश्वर साहेबो, भमीयो काल अनंत;
पण समकित पाम्या पछी, अंते थया अरिहंत. ३

(ढाल पहेली)

पहेले भवे एक गामनो रे, राय नामे नयसार;
काष्ठ लेवा अटवी गयो रे, भोजनवेला थाय रे,
प्राणी! धरिये समकित रंग, जिम पामिये सुख अभंग रे,
प्राणी! धरिये समकित रंग. १

मन चिंते महिमा नीलो रे, आवे तपसी कोय;
दान देई भोजन करुं रे, तो वांछित फल होय रे. प्राणी० २

मारग देखी मुनिवरा रे, वंदे देई उपयोग;
पूछे केम भटको इहां रे? मुनि कहे सार्थवियोग रे. प्राणी० ३

हरखभेर तेडी गयो रे, पडिलाभ्या मुनिराज;
भोजन करी कहे चालीए रे, सार्थ भेला करुं आज रे. प्राणी० ४

पगवटीये भेला कर्या रे, कहे मुनि द्रव्य ए मार्ग
संसारे भूला भमो रे, भावमारग अपवर्ग रे. प्राणी० ५

देव गुरु ओलखावीयां रे, दीधो विधि नवकार;
पश्चिम महाविदेहमां रे, पाम्यो समकित सार रे. प्राणी० ६

शुभध्याने मरी सुर हुओ रे, पहेला स्वर्ग मोझार;
पल्योपम आयु च्यवी रे, भरत घरे अवतार रे. प्राणी० ७

नामे मरीचि यौवने रे, संयम लीये प्रभु पास;
दुष्कर चरण लही थयो रे, त्रिदंडिक शुभ वास रे. प्राणी० ८

श्री महावीरस्वामी भगवान की थोय

मनोहर मूर्ति महावीरतणी, जिणे सोल पहोर देशना पभणी,
नव मल्ली नव लच्छि नृपति सुणी, कही शिव पाम्या त्रिभुवनधणी. १

शिव पाम्यां ऋषभ चउदश भक्ते, बावीश लह्या शिव मासथिते,
छट्ठे शिव पाम्या वीर वली, कार्तिक वदि अमावास्या निरमली. २

आगामी भावी भाव कह्यां, दीवाली कल्पे जेह लह्यां,
पुण्य पाप फल अज्झयणे कह्यां, सवि तहत्ति करीने सद्दह्यां. ३

सवि देव मली उद्योत करे, परभाते गौतम ज्ञान वरे,
ज्ञानविमल सदा गुण विस्तरे, जिनशासनमां जयकार करे. ४

धर्म दृढता की सज्झाय

जुओ रे जुओ जैनो केवा व्रतधारी,
केवा व्रतधारी आगे थया नरनारी;
थया नरनारी तेने वंदना अमारी.
वंदना अमारी तेने वंदना हमारी. १

जुओ जुओ जंबूस्वामी, बाल वये बोध पामी;
तजी भोग रिद्धि जेणे, तजी आठ नारी. २

गजसुकुमाल मुनि, धखे शिर पर धूणी;
अडग रह्या ते ध्याने, डग्या ना लगारी. ३

कोश्याना मंदिर मध्ये, रह्या मुनि स्थूलीभद्र;
वेश्या संग वासो तोये, थया ना विकारी. ४

सती ते राजुलनारी, जगमां न जोडी एनी;
पतिव्रता काजे कन्या, रही ते कुंवारी. ५

जनकसुता ते सीता, बार वर्ष वनमां वीत्या;
घणुं कष्ट वेठ्युं तोये, डग्या ना लगारी. ६

धन्य धन्य नरनारी, एवी दृढ टेक धारी;
जीवित सुधार्युं जेणे, पाम्या भव पारी. ७

एवुं जाणी सुज्ञजनो, एवा उत्तम आप बनो;
वीरविजय धर्म प्रेमे, दीए गति सारी. ८

लिखित : कक्षा - ७

मूल सूत्र	:	जीवविचार
अर्थ	:	जीवविचार, संतिकरम्
स्नात्र	:	स्नात्र की विधि, सरस शांति सुधारस से शुभ लग्ने जिन... (पृष्ठ संख्या १३८)
स्तवन	:	२७ भव की ढाल दूसरी... (नवो वेष रचे)
थोय	:	जय जय भवि हितकर (पृष्ठ संख्या ३३)
सज्झाय	:	जगत है स्वार्थ का साथी (वैराग्य की)
राजनगर प्रश्नोत्तरी	:	१७६ से २१० (राजनगर ज्ञानमाला)

श्री महावीरप्रभु का सत्तावीशभव का स्तवन

(ढाल बीजी)

नवो वेष रचे तेणी वेला, विचरे आदीश्वर भेला,
जल थोडे स्नान विशेषे पग पावडी भगवे वेषे. १

धरे त्रिदंड लाकडी म्होटी, शिर मुंडण ने धरे चोटी;
वली छत्र विलेपन अंगे, थूलथी व्रत धरतो रंगे. २

सोनानी जनोई राखे, सहुने मुनिमारग भाखे;
समोसरणे पूछे नरेश, कोई आगे होशे जिनेश. ३

जिन जंपे भरतने ताम, तुज पुत्र मरिचि नाम;
वीर नामे थशे जिन छेल्ला, आ भरते वासुदेव पहेला. ४

चक्रवर्ती विदेहे थाशे, सुणी आव्या भरत उल्लासे;
मरीचिने प्रदक्षिणा देता नमी वंदीने एम कहेता. ५

तमे पुन्याईवंत गवाशो, हरि चक्री चरमजिन थाशो;
नवि वंदुं त्रिदंडिक वेष, नमुं भक्तिये वीरजिनेश. ६

एम स्तवना करी घर जावे, मरीचि मन हर्ष न मावे;
म्हारे त्रण पदवीनी छाप, दादा जिन चक्री बाप. ७

अमे वासुदेव धुर थईशुं, कुल उत्तम म्हारुं कहीशुं;
नाचे कुलमदशुं भराणो, नीचगोत्र तिहां बंधाणो. ८

एक दिन तनु रोगे व्यापे, कोई साधु पाणी न आपे;
त्यारे वंछे चेलो एक, तव मलियो कपिल अविवेक. ९

देशना सुणी दीक्षा वासे, कहे मरीचि लीयो प्रभु पासे;
राजपुत्र कहे तुम पासे, लेशुं अमे दीक्षा उल्लासे. १०

तुम दरशने धरमनो व्हेम, सुणी चिंते मरीचि एम;
मुज योग्य मल्यो ए चेलो, मूल कडवे कडवो वेलो. ११

मरीचि कहे धर्म उभयमां, लीये दीक्षा यौवन वयमां;
एणे वचने वध्यो संसार, ए त्रीजो कह्यो अवतार. १२

लाख चोराशी पूरव आय, पाली पांचमे स्वर्गे सिधाय;
दश सागर जीवित त्यांही, शुभवीर सदा सुखमांही. १३

वैराग्य की सज्झाय

जगत है स्वार्थ का साथी, समज ले कौन है अपना;
ये काया काचका कुंभा, नाहक तुं देखके फूलता,
पलकमें फुट जावेगा, पत्ता ज्युं डालसे गिरता. जगत० १

मनुष्यकी ऐसी जिंदगानी, अब तुं चेत अभिमानी;
जीवनका क्या भरोसा है, करी ले धर्म की करणी. जगत० २

खजाना माल ने मिलकत,तुं क्युं कहेता मेरा मेरा;
इहां सब छोड जाना है, न आवे साथ अब तेरा. जगत० ३

कुटुंब परिवार सुत दारा, सुपन सम देख जग सारा;
निकल जब हंस जावेगा, उसी दिन है सभी न्यारा. जगत० ४

तरे संसार सागर को, जपे जो नाम जिनवर को;
कहे खान्ति वही प्राणी, हठावे कर्म जंजीर को. जगत० ५

लिखित : कक्षा - ८

मूल सूत्र	:	नवतत्व
अर्थ	:	नवतत्व
स्नात्र	:	सांभलो कलशथी पूर्ण (पृष्ठ संख्या १४४)
स्तवन	:	२७ भव की ढाल तीसरी (पांचवें भवे)
थोय	:	जीवाजीवा पुण्य
सज्झाय	:	जोईतुं नथी जोईतुं नथी (बुढ़ापे की)
राजनगर प्रश्नोत्तरी	:	२११ से २६१ (राजनगर ज्ञानमाला)

काव्य विभाग

श्री महावीरप्रभु का सत्तावीशभव का स्तवन

(ढाल त्रीजी)

पांचमे भव कोल्लागसन्निवेश, कौशिक नामे ब्राह्मण वेष;
एंशी लाख पूरव अनुसरी, त्रिदंडीयाने वेषे मरी. १

काल बहु भमीयो संसार, थुणापुरी छट्ठो अवतार;
बहोंतेर लाख पूरवने आय, विप्र त्रिदंडी वेष धराय. २

सौधर्मे मध्यस्थितिए थयो, आठमे चैत्य सन्निवेषे गयो;
अग्निद्योत द्विज त्रिदंडीयो, पूर्व आयु लाख साठे मूओ. ३

मध्यस्थितिये सुर स्वर्ग ईशान, दशमे मंदिरपुर द्विजठाण;
लाख छप्पन पूरवायु धरी अग्निभूति त्रिदंडीक मरी. ४

त्रीजे सरगे मध्यायु धरी, बारमे भवे श्वेतांबीपुरी;
पूरवलाख चुम्मालीश आय, भारद्विज त्रिदंडीक थाय. ५

तेरमे चोथे स्वर्गे रमी, काल घणो संसारे भमी;
चउदमे भव राजगृही जाय, चोत्रीशलाख पूरवनुं आय. ६

थावर विप्र त्रिदंडी थयो, पांचमे स्वर्गे मरीने गयो;
सोलमे भव क्रोड वरसनुं आय, राजकुमार विश्वभूति थाय. ७

संभूतिमुनि पासे अणगार, दुष्करतप करी वरस हजार;
मासखमण पारणे धरी दया, मथुरामां गोचरीए गया. ८

गाये हण्या मुनि पडीया वसा, विशाखानंदी पितरिया हस्या;
गौशृंगे मुनि गरवे करी, गयण उछाली धरती धरी. ९

तप बलथी होजो बल धणी, करी नियाणुं मुनि अणसणी;
सत्तरमे महाशुक्रे सुरा, श्रीशुभवीर सत्तरसागरा. १०

नव तत्त्व की थोय

जीवाजीवा पुन्य ने पावा, आश्रव संवर तत्ता जी,
सातमे निर्जरा आठमे बंध, नवमे मोक्षपद सत्ता जी,
ए नवतत्ता समकित सत्ता, भाखे श्री अरिहंता जी,
भुजनयर मंडण रिसहेसर, वंदो ते भगवंता जी. १

धम्माधम्मागासा पुग्गल, समया पंच अजीवा जी,
नाण विनाण शुभाशुभ योगे, चेतन लक्षण जीवा जी,
इत्यादिक षट् द्रव्य प्ररूपक, लोकालोक दिणंदा जी,
प्रह ऊठी नित्यनमिये विधिशुं, सित्तेरसो जिनचंदा जी. २

सूक्ष्म बादर दोय एकेन्द्रिय, बी ती चउरिन्द्रि दुविहा जी,
तिविहा पंचिंदा पज्जता, अपज्जता ते विविहा जी,
संसारी असंसारी सिद्धा, निश्चय ने व्यवहार जी,
पन्नवणादिक आगम सुणतां, लहीए शुद्ध विचार जी. ३

भुवनपति व्यंतरज्योतिषवर, वैमानिक सुरवृन्दा जी,
चोवीश जिनना यक्ष यक्षिणि, समकितदृष्टि सुरिंदा जी,

भूजनगर महिमंडल सघले, संघ सकल सुख करजो जी,
पंडित मानविजय इम जंपे, समकितगुण चित्त धरजो जी. ४

बुढापे की सज्झाय

जोईतुं नथी जोईतु नथी, जोईतु नथी रे, अल्या जीवडा,
घडपण मारे जोईतुं नथी रे.
हाथमां छे लाकडी ने, पगमां छे पावडी,
दांत विना मोढुं साव खोखुं, अल्या जीवडा. घडपण...१

पहेरवी पडशे धाबली ने, पीवी पडशे राबडी,
शरीर थयुं साव खोखुं, अल्या जीवडा. घडपण...२

सूवा तूटेल खाटलो ने, थूंकवा फूटेल माटली,
खांसी आवे तो थाय ठुंठुं, अल्या जीवडा. घडपण...३

कर रह्यां केडे ने, पग रह्यां बापजी,
शरीर कंपे अने पग डोले, अल्या जीवडा. घडपण...४

वहुओ कहे छे, फूटो मरतो नथी डोकरो,
वहुओ कहे छे, फूटी मरती नथी डोकरी,
मरे तो घर थाय चोख्खुं, अल्या जीवडा. घडपण...५

चोराशी लाखनां फेरा फरीने, मानवभवनो देह धरीने,
हारी ना जईश तुं आज, अल्या जीवडा. घडपण...६

वीरविजयजी एणी पेरे बोले, नहीं कोई आतम सरीखो तोले,
रत्नचिंतामणि आव्युं हाथ, अल्या जीवडा. घडपण...७

• • •

लिखित : कक्षा - ९

मूल सूत्र	:	दंडक प्रकरण
अर्थ	:	दंडक प्रकरण
चैत्यवंदन	:	कल्पवृक्षनी छांयडी
स्तवन	:	२७ भव की ढाल चौथी, पांचवीं (अढारमे भवे सात, नयर महाणकुंडमां)
थोय	:	श्री आदि जिनवर राया (१ से ४)
राजनगर प्रश्नोत्तरी	:	२६२ से २८७ (राजनगर ज्ञानमाला)

काव्य विभाग

श्री आदीश्वर भगवान का चैत्यवंदन

कल्पवृक्षनी छांयडी, नानडीयो रमतो;
सोवन हिंडोले हिंचतो, माताने मनगमतो. १

सौ देवी बालक थई, ऋषभजीने तेडे;
व्हाला लागो छो कही, हैडे शुं भीडे. २

जिनपति यौवन पामीया, भावे शुं भगवान;
इन्द्रे घाल्यो मांडवो, विवाहनो मंडाण. ३

चोरी बांधी चिहुं दिशे, सुरगोरी गीत गावे;
सुनंदा सुमंगला, प्रभुजीने परणावे. ४

सकल संग छंडी करी, केवलज्ञानने पामे;
अष्टकर्मनो क्षय करी, पहोंच्या शिवपुर धामे. ५

भरते बिंब भरावीया ए, शत्रुंजय गिरिराय;
श्रीविजयप्रभसूरितणा, उदयरत्न गुण गाय. ६

श्री महावीरप्रभु का सत्तावीशभव का स्तवन

(ढाल चोथी)

अढारमे भवे सात, सुपन सूचितसती,
पोतनपुरीये प्रजापति, राणी मृगावती;
तस सुत नामे त्रिपृष्ठ, वासुदेव नीपन्या,
पाप घणुं करी, सातमी नरके उपन्या. १

वीशमे भव थई सिंह, चोथी नरके गया,
तिहांथी चवी संसारे, भव बहुलां थया;
बावीशमे नरभव लही, पुण्य दशा वर्या,
त्रेवीशमे राजधानी, मूकाए संचर्या. २

राय धनंजय धारणी राणीए जनमिया,
लाखचोराशी पूरव आयु जीविआ;
प्रियमित्र नामे चक्रवर्ती दीक्षा लही,
कोडी वरस चारित्रदशा पाली सही. ३

महाशुक्रे थई देव इणे भरते च्यवी,
छत्रिका नगरीए जितशत्रु राजवी;
भद्रामाय लख पचवीश वरस स्थिति धरी,
नंदननामे पुत्रे दीक्षा आचरी. ४

अगीयारलाखने एंशीहजार छस्सें वली,
उपर पीस्तालीश अधिक पण दिन रूली;
वीशस्थानक मासखमणे, जावज्जीव साधता,
तीर्थंकर नामकर्म तिहां निकाचता. ५

लाखवरस दीक्षापर्याय ते पालता,
छव्वीशमे भव प्राणतकल्पे देवता;
सागरवीशनुं जीवित सुखभर भोगवे,
श्रीशुभवीरजिनेश्वर भव सुणजो हवे. ६

(ढाल पांचमी)

नयर माहणकुंडमां वसे रे, महाऋद्धि ऋषभदत्त नाम;
देवानंदा द्विज श्राविका रे, पेट लीधो प्रभु विसराम रे,
पेट लीधो प्रभु विसराम. १

ब्याशी दिवसने अंतरे रे, सुर हरिणगमेषी आय;
सिद्धारथ राजा घरे रे, त्रिशलाकूखे छटकाय रे. २

नव मासांतरे जनमीया रे, देव देवीए ओच्छव कीध;
परणी यशोदा यौवने रे, नामे महावीर प्रसिद्ध रे. ३

संसारलीला भोगवी रे, त्रीस वर्षे दीक्षा लीध;
बार वरसे हुआ केवली रे, शिववहुनुं तिलक शिर दीध रे. ४

संघ चतुर्विध थापीयो रे, देवानंदा ऋषभदत्त प्यार;
संयम देई शिव मोकल्यां रे, भगवतीसूत्रे अधिकार रे. ५

चोत्रीश अतिशय शोभता रे, साथे चउद सहस अणगार,
छत्रीस सहस ते साधवी रे. बीजो देव देवी परिवार रे. ६

त्रीस वरस प्रभु केवली रे, गाम नगर ते पावन कीध;
बहोंतेर वरसनुं आउखुं रे, दिवालीये शिवपद लीध रे. ७

अगुरुलघु अवगाहने रे, कीयो सादि अनंत निवास;
मोहराय मल्ल मूलशुं रे, तन मन सुखनो होय नाश रे. ८

तुम सुख एकप्रदेशनुं रे, नवि मावे लोकाकाश;
तो अमने सुखीया करो रे, अमे धरीये तुमारी आश रे. ९

अक्षय खजानो नाथनो रे, में दीठो गुरु उपदेश;
लालच लागी साहेबा रे, नवि भजीये कुमतिनो लेश रे. १०

म्होटानो जे आशरो रे, तेथी पामीये लील विलास;
द्रव्य भाव शत्रु हणी रे, शुभवीर सदा सुखवास रे. ११

॥ कलश ॥

ओगणीश एके वरस छेके, पूर्णिमा श्रावण वरो;
में थुण्यो लायक विश्वनायक, वर्धमान जिनेश्वरो,
संवेग रंग तरंग झीले, जसविजय समता धरो;
शुभविजयपंडित चरण सेवक वीरविजयो जयकरो. १

श्री आदीश्वर भगवान की थोय

आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया;
मरुदेवी माया, घोरी लंछन पाया;
जगत स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया,
केवल सिरी राया, मोक्ष नगरे सिघाया। १

सवि जिन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी;
दुर्गति दुःख भारी, शोक संताप वारी।
श्रेणी क्षपक सुधारी, केवलानंत घारी;
नमीए नर नारी, जेह विश्वोपकारी। २

समवसरण बेठा, लागे जे जिनजी मिठा;
करे गणप पइट्ठा, इन्द्र चन्द्रादि दीठा।
द्वादशांगी वरिट्ठा, गुंथतां टाले रिट्ठा;
भविजन होय हिट्ठा, देखी पुण्ये गरिट्ठा। ३

सुर समकितवंता, जेहऋद्धे महंता;
जेह सज्जन संता, टालीए मुज चिंता।
जिनवर सेवंता, विघ्न वारे दुरंता;
जिन उत्तम थुणंता, पद्मने सुख दिंता। ४

लिखित : कक्षा - १०

मूल सूत्र	: लघुसंग्रहणी, संथारा पोरिसी
अर्थ	: लघुसंग्रहणी, संथारा पोरिसी
स्तवन	: हालरडुं (माता त्रिशला जुलावे) (पृष्ठ संख्या १३०)
राजनगर प्रश्नोत्तरी	: २८८ से ३१० (राजनगर ज्ञानमाला)

संथारा पोरिसी की विधि

सर्वप्रथम खमा० देकर 'इच्छा० बहुपडिपुन्ना पोरिसी राइय संथारए ठाईशुं ?' 'इच्छं', कहकर चउक्कसाय का चैत्यवंदन जय वीयराय पर्यंत करें। फिर खमा० 'इच्छा० संथारा पोरिसी विधि भणवा मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं' कहकर मुहपत्ति पडिलेहन करके 'निसिहि निसिहि निसिहि नमो खमासमणाणं गोयमाईणं महामुणीणं' इतना पाठ नवकार तथा करेमि भंते यह सब तीन बार कहें। फिर संथारा पोरिसी का पाठ बोलें।

संथारा पोरिसी

अणुजाणह जिट्ठिज्जा,
अणुजाणह परमगुरु, गुरुगुणरयणेहिं मंडियसरीरा,
बहुपडिपुण्णा पोरिसी, राइय संथारए ठामि ? ...१

अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेणं,
कुक्कुडी पाय पसारण, अतरंत पमज्जए भूमिं। ...२

संकोइअ संडासा, उव्वट्टंते अ कायपडिलेहा,
दव्वाई-उवओगं, उसास-निरुंभणा-लोए। ...३

जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाई रयणीए,
आहार-मुवहि-देहं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं। ...४

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं। ...५

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो। ...६

चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि,
सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि। ...७

पाणइवाय-मलिअं, चोरिक्कं मेहुणं दविणमुच्छं,
कोहं माणं मायं, लोहं पिज्जं तहा दोसं। ...८

कलहं अब्भक्खाणं, पेसुन्नं रइअरइ-समाउत्तं,
परपरिवायं माया-मोसं मिच्छत्तसल्लं च। ...९

वोसिरिसु इमाइं, मुक्ख-मग्ग-संसग्ग-विग्घभूयाइं,
दुग्गइ-निबंधणाइं, अट्ठारस पावठाणाइं। ...१०

एगोऽहं नत्थि मे कोई, नाहमन्नस्स कस्सइ,
एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासइ। ...११

एगो मे सासओ अप्पा, नाण-दंसण-संजुओ,
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोग लक्खणा। ...१२

संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्ख परंपरा,
तम्हा संजोग संबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं। ...१३

अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो,
जिण-पण्णत्तं तत्तं, इअ सम्मतं मए गहिअं। ...१४

(यह चौदहवीं गाथा तीन बार बोलनी है। फिर सात नवकार गिनने हैं।)

खमिअ खमाविअ मइ खमह, सव्वह जीवनिकाय
सिद्धह साख आलोयणह, मुज्झह वइर न भाव। ...१५

सव्वे जीवा कम्मवस, चउदह राज भमंत,
ते मे सव्व खमाविआ, मुज्झ वि तेह खमंत। ...१६

जं जं मणेण बद्धं, जं जं वाएण भासिअं पावं,
जं जं काएणं कयं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स। ...१७

लिखित : कक्षा - ११

मूल सूत्र	:	चैत्यवंदन भाष्य
अर्थ	:	चैत्यवंदन भाष्य
चैत्यवंदन	:	ॐ नमः पार्श्वनाथाय
स्तवन	:	राधा जेवा फूलडा, पंचकल्याणक की पहली ढाल (दुहा : शासननायक शिवकरण, सांभलजो ससनेहि सयणां)
थोय	:	तीन निसिही (१० त्रिक की)
राजनगर प्रश्नोत्तरी	:	३११ थी ३३१ (राजनगर ज्ञानमाला)

काव्य विभाग

श्री पार्श्वनाथ भगवान का चैत्यवंदन

ॐ नम: पार्श्वनाथाय, विश्व चिन्तामणीयते;
ह्रीँ धरणेन्द्र वैरुट्या, पद्मादेवीयुताय ते. १

शान्ति तुष्टि महापुष्टि धृति कीर्ति विधायिने;
ॐ ह्रीँ द्विड् व्याल वैताल सर्वाधि-व्याधि-नाशिने. २

जयाऽजिताख्या विजयाख्याऽपराजितयान्वित:
दिशां पालैर्ग्रहैर्यक्षै र्विद्यादेवीभिरन्वित: ३

ॐ असिआउसाय नमस्तत्र त्रैलोक्यनाथताम्;
चतु:षष्टि सुरेन्द्रास्ते, भासन्ते छत्र चामरै: ४

श्रीशंखेश्वरमण्डन! पार्श्वजिन! प्रणत कल्पतरुकल्प!
चूरय दुष्टव्रातं, पूरय मे वाञ्छितं नाथ! ५

श्री पार्श्वनाथ भगवान का स्तवन

राधा(राता) जेवा फूलडां ने, शामल जेवो रंग;
आज तारी आंगीनो कांई, रूडो बन्यो छे रंग,
प्यारा पासजी हो लाल! दीनदयाल मुजने नयणे निहाल. १

जोगीवाडे जागतो ने, मातो धिंगडमल्ल;
शामलो सोहामणो कांई, जीत्या आठे मल्ल. प्यारा० २

तुं छे मारो साहिबो ने, हुं छुं तारो दास;
आशा पूरो दासनी कांई सांभली अरदास. प्यारा० ३

देव सघला दीठां तेमां, एक तुं अवल्ल;
लाखेणुं छे लटकुं ताहरूं, देखी रीझे दिल्ल. प्यारा० ४

कोई नमे पीरने ने, कोई नमे राम;
उदयरत्न कहे प्रभुजी, मारे तुमशुं काम, प्यारा० ५

श्रीमहावीरस्वामी भगवान का पंचकल्याणक का स्तवन

दुहा

शासननायक शिवकरण, वंदुं वीरजिणंद;
पंचकल्याणक जेहना, गाशुं धरी आणंद. १

सुणतां थुणतां प्रभुतणां, गुण गिरुआ एक तार;
ऋद्धि वृद्धि सुख संपदा, सफल हुवे अवतार. २

ढाल : (१)

सांभलजो ससनेहि सयणां, प्रभुजीना चरित्र उल्लासे रे;
जे सांभलशे प्रभु गुण तेहनां, समकित निर्मल थाशे रे. सां० १

जंबूद्वीपे दक्षिणभरते, वर माहणकुंड गामे रे,
ऋषभदत्त ब्राह्मण तस नारी, देवानंदा नामे रे. सां० २

अषाढसुदि छट्ठे प्रभुजी, पुष्पोत्तरथी चवीया रे;
उत्तराफाल्गुनी योगे आवी, तस कुखे अवतरीया रे. सां० ३

तिण रयणी सा देवानंदा, सुपन गजादिक निरखे रे;
प्रभाते सुणी कंत ऋषभदत्त, हैडामांही हरखे रे. सां० ४

भाखे भोग अर्थ सुख होस्ये, होस्ये पुत्र सुजाण रे;
ते निसुणी सा देवानंदा, कीधुं वचन प्रमाण रे. सां० ५

भोग भला भोगवतां विचरे, एहवे अचरिज होवे रे;
शतक्रतु जीव सुरेसर हरख्यो, अवधि प्रभुने जोवे रे. सां० ६

करी वंदनने इन्द्र सन्मुख, सात आठ पग आवे रे;
शक्रस्तव विधिसहित भणीने, सिंहासन सोहावे रे. सां० ७

संशय पडीयो एम विमासे, जिन चक्री हरि राम रे;
तुच्छ दरिद्र माहणकुल नावे, उग्र भोग विण धाम रे. सां० ८

अंतिम जिन माहणकुल आव्या, एह अच्छेरुं कहीए रे;
उत्सर्पिणी अवसर्पिणी अनंती, जातां एहवुं लहीए रे. सां० ९

इण अवसर्पिणी दश अच्छेरां, थयां ते कहीए तेह रे;
गर्भहरण गोशाला उपसर्ग, निष्फल देशना जेह रे. सां० १०

मूलविमाने रवि शशी आव्या, चमरानो उत्पात रे;
ए श्रीवीरजिणेसर वारे, उपना पंच विख्यात रे. सां० ११

स्त्रीतीर्थ मल्लिजिन वारे, शीतलने हरिवंश रे;
ऋषभने अट्ठोत्तरसो सीध्यां, सुविधि असंजति शंस रे. सां० १२

शंखशब्द मीलीयां हरि हरिस्युं, नेमिसरने वारे रे;
तिम प्रभु नीच कुले अवतरीया, सुरपति एम विचारे रे. सां०१३

दस (१०) त्रिक की थोय

त्रण निसिही त्रण प्रदक्षिणा, त्रण प्रणाम करीजे जी,
त्रण दिशी वरजी जिन जुओ, भूमि त्रण पुंजीजे जी,
त्रण प्रकारनी पूजा करीने, त्रण अवस्था भावीजे जी,
आलंबन त्रण मुद्रा प्रणिधान, चैत्यवंदन त्रण कीजे जी. १

पहले भावजिन द्रव्यजिन बीजे, त्रीजे एकचैत्य धारो जी,
चोथे नामजिन पांचमे सर्वे, लोक चैत्य जुहारो जी,
विहरमान छठ्ठे जिन वंदो, सातमे नाण निहालो जी,
सिद्ध वीर उज्जंत अष्टापद, शासनसुर संभारो जी, २

शक्रस्तवमां दोय अधिकार, अरिहंत चेइआणं त्रीजे जी,
नामस्तवमां दोय प्रकार, श्रुतस्तव दोय लीजे जी,
सिद्धस्तवमां पांच प्रकार, ए बारे अधिकारजी,
जितनिर्युक्ति मांहे भाख्यो, तेह तणो विस्तार जी, ३

भोयण पाण तंबोल वाहन, मेहुण एक चित्त धारोजी,
थूंक सलेखम वडी लघुनीति, जुगटे रमवुं वारो जी,
ए दसे आशातना मोटी, वरजो जिनवर द्वारो जी,
क्षमाविजय जिन इणिपरे जंपे, शासनसुर संभारो जी, ४

गमणागमणे सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! गमणागमणे आलोउं ?, इच्छं, ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, आदानभंडमत्तनिक्खेवणासमिति, पारिष्ठापनिकासमिति, मनगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति ए पांच समिति, त्रण गुप्ति ए अष्ट प्रवचनमाता श्रावकतणे धर्मे सामायिक, पोषह करके रुडीपेरे पाली नहीं, (इस दौरान जो कोई भी व्रत खंडित हुआ हो) जे कांई खंडणा विराधना हुई होय ते सवि हुं मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडम्.

लिखित: कक्षा १२

मूलसूत्र	:	गुरुवंदन भाष्य
अर्थ	:	गुरुवंदन भाष्य
चैत्यवंदन	:	नेमिनाथ बावीसमा
स्तवन	:	में आज दरिसण पाया
		पंचकल्याणक की दूसरी ढाल (भव सत्तावीश स्थूलमांही)
थोय	:	सुर असुर वंदित पाय (श्री नेमिनाथ भगवान की)

काव्य विभाग

श्री नेमिनाथ भगवान का चैत्यवंदन

नेमिनाथ बावीशमां, शिवादेवी माय;
समुद्रविजय पृथ्वीपति, जे प्रभुना ताय. १

दश धनुष्यनी देहडी, आयु वर्ष हजार;
शंख लंछनधर स्वामीजी, तजी राजुल नार. २

शौरीपुरी नयरी भलीए, ब्रह्मचारी भगवान;
जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां अविचल ठाण. ३

श्री नेमिनाथ भगवान का स्तवन

में आज दरिसण पाया, श्री नेमिनाथ जिनराया,
प्रभु शिवादेवीना जाया, प्रभु समुद्रविजय कुल आया,
कर्मो के फंद छोडाया, ब्रह्मचारी नाम धराया,
जिणे तोडी जगतकी माया. जिने० में० १

रैवतगिरि मंडनराया, कल्याणक तीन सोहाया;
दीक्षा केवल शिवराया, जगतारक बिरुद धराया,
तुम बेठे ध्यान लगाया. तुम० में० २

अब सुनो त्रिभुवन राया, मैं कर्मो के वश आया;
मैं चतुर्गति भटकाया, मैं दुःख अनंता पाया,
ते गिनती नाही गणाया. तुम० में० ३

मैं गर्भावासमें आया, उंधे मस्तक लटकाया;
आहार सरस विरस भुक्ताया, एम अशुभ करम फल पाया,
इण दुःखसे नाही मूकाया. इण० में० ४

नरभव चिंतामणि पाया, तब चार चोर मिल आया;
मुजे चौटेमें लूंट खाया, अब सार करो जिनराया,
किस कारण देर लगाया. किस० में० ५

जिणे अंतरगतमें लाया, प्रभु नेमि निरंजन ध्याया;
दुःख संकट विघन हटाया, ते परमानंद पद पाया.
फिर संसारे नहीं आया. फिर० में० ६

में दूर देशसें आया, प्रभु चरणे शीश नमाया;
में अरज करी सुखदाया, तुमे अवधारो महाराया,
एम वीरविजय गुण गाया. एम० मैं ७

श्री महावीरस्वामी भगवान का पंचकल्याणक का स्तवन

ढाल (२)

भव सत्तावीश स्थूलमांही त्रीजे भवे,
मरिचि कीयो कुल मद भरत यदा स्तवे;
नीचगोत्र करम बांध्युं तिहां ते थकी,
अवतरीया माहणकुले अंतिमजिनपति. १

अति अघटतुं एह थयुं थाशे नहीं,
जे प्रसवे जिन चक्री नीचकुले नहीं;
इहां मारो आचार धरुं उत्तमकुले,
हरिणगमेषी देव तेडावे एटले. २

कहे माहणकुंडनयरे जई उचित करो,
देवानंदाकूखेथी प्रभुने संहरो,
नयरक्षत्रियकुंड रायसिद्धारथगेहिनी,
त्रिशला नामे धरो प्रभु कुखे तेहनी. ३

त्रिशलागर्भ लईने धरो माहणी उरे,
ब्यासीरात वसीने कह्युं तिम सुर करे;
माहणी देखे सुपन जाणे त्रिशला हर्या,
त्रिशला सुपन लहे तव चौद अलंकर्या. ४

हाथी वृषभ सिंह लक्ष्मी माला सुंदरुं,
शशि रवि ध्वज कुंभ पद्मसरोवर सागरुं;
देवविमान रयणपुंज अग्नि विमल हवे,
देखे त्रिशला एह के पियुने विनवे. ५

हरख्यो राय सुपनपाठक तेडावीया,
राजभोग सुत फल सुणी तेह वधावीया;
त्रिशलाराणी विधिस्युं गर्भ सुखे वहे,
माय तणे हित हेत के प्रभु निश्चल रहे. ६

माय धरे दुःख जोर विलाप घणुं करे,
कहे में कीधां पाप अघोर भवांतरे;
गर्भ हर्यो मुज कोणे हवे केम पामीए?
दुःखनुं कारण जाणी विचार्युं स्वामीए. ७

अहो अहो मोह विटंबण जालिम जगतमें,
अणदीठे दुःख एवडो उपायो पलकमें,

ताम अभिग्रहधारे प्रभु ते कहुं,
मात पिता जीवतां संयम नवि ग्रहुं. ८
करुणा आणी अंग हलाव्युं जिनपति,
बोली त्रिशला मात हैये घणुं हसती;
अहो मुज जाग्यां भाग्य गर्भ मुज सलवल्यो,
सेव्यो श्रीजिनधर्म के सुरतरुं जिम फल्यो.. ९
सखीयो कहे शिखामण स्वामिनी सांभलो,
हलवे हलवे बोलो हसो रंगे चलो;
इम आनंदे विचरतां दोहला पूरते,
नवमहिना ने साडासात दिवस थते. १०
चैत्र तणी सुद तेरस नक्षत्र उत्तरा (फा.),
जोगे जन्म्या वीर के तव विकसी धरा;
त्रिभुवन थयो उद्योत के रंग वधामणां,
सोना रूपानी वृष्टि करे घेर सुर घणा. ११
आवी छप्पनकुमारी के ओच्छव प्रभुतणे,
चल्युं रे सिंहासन इन्द्र के घंटा रणझणे;
मली सुरनी कोड के सुरपति आवीयो,
पंचरूप करी प्रभुने सुरगिरि लावीयो. १२
एक क्रोड साठ लाख कलश जलशुं भर्या,
किम सहेस्ये लघुवीर के इन्द्र संशय धर्या;
प्रभु अंगुठे मेरु चांप्यो अति गडगडे,
गडगडे पृथ्वी लोक जगतना लडथडे. १३
अनंत बली प्रभु जाणी इन्द्रे खमावीओ,
चार वृषभनां रूप करी जल नामीओ,
पूजी अरची प्रभुने माय पासे धरे,
धरी अंगूठे अमृत गया नंदीश्वरे. १४

थोय

सुर असुर वंदित पाय पंकज, मयण मल्लमक्षोभितं,
घन सुघन श्याम शरीर सुंदर, शंख लंछन शोभितं,
शिवादेवी नंदन त्रिजगवंदन, भविक कमल दिनेश्वरं,
गिरनार गिरिवर शिखर वंदो, नेमिनाथजिनेश्वरं. १

अष्टापदे श्री आदि जिनवर, वीर पावापुरीवरं,
वासुपूज्य चंपानगर सिध्या, नेम रैवतगिरिवरं,
सम्मेतशिखरे वीश जिनवर, मुक्ति पहोंच्या मुनिवरं,
चोवीश जिनवर नित्य वंदो, सकलसंघ सुखकरं. २

अग्यार अंग उपांग बार, दश पयन्ना जाणीए,
छ छेद ग्रंथ पसत्थ सत्था, मूल चार वखाणीए,
अनुयोगद्वार उदार नंदीसूत्र जिनमत गाईए,
वृत्ति, टीका, भाष्य, चूर्णि, पीस्तालीश आगम ध्याइए. ३

दोय दिशि बालक दोय जेहने, सदा भवियण सुखकरुं,
दु:खहरु अंब लुंब सुंदर, दुरित दोहग अपहरुं,
गिरनार मंडण नेमिजिनवर, चरण पंकज सेवीए,
चउविहसंघ सुप्रसन्न मंगल, करो अंबादेवीए. ४

• • •

साधर्मिक अर्थात् सच्चे देव गुरु धर्म को माननेवाला.

लिखित: कक्षा १३

मूलसूत्र	:	पच्चक्खाण भाष्य
अर्थ	:	पच्चक्खाण भाष्य
चैत्यवंदन	:	दशमे भवे शान्तिनाथ
स्तवन	:	शान्ति जिनेश्वर साहिबा रे, पंचकल्याणक की तीसरी ढाल (करी महोच्छव सिद्धारथभूप), कलश : 'इम चरम जिनवर'
थोय	:	सकलकुशलवल्ली (संस्कृत) (श्री शान्तिनाथ भगवान की)

काव्य विभाग

श्री शान्तिनाथ भगवान का चैत्यवंदन

दशमे भवे श्री शान्तिनाथ, मेघरथ राजा राय,
पोषह लीधो प्रेम शुं, आत्मस्वरूप अभिराम. १

एक दिन इन्द्रे वखाणीयो, मेघरथ महाराय,
धर्मे चलाव्यो नवि चले, जो प्राण परलोक जाय. २

देव माया धारण करी, पारेवो सिंचाणो थाय,
अणधार्युं आवी पड्युं, पारेवडुं खोलामांय. ३

शरणे आव्युं पारेवडुं, थर थर कंपे काय,
राख राख मुझ राजवी, मुजने सिंचाणो खाय. ४

जीवदया मनमां वसी, कहे सिंचाणाने एह,
नहीं आपुं रे पारेवडुं, कहे तो कापी आपुं देह. ५

एक पारेवानी दया थकी, दोय पदवी पाम्या,
पंचम चक्रवर्ति उपन्या, सोलमा शान्तिनाथ. ६

अभयदान देई करी, बांध्युं तीर्थंकर नाम,
उदयरत्न नित्य प्रणमतां, पामे अविचल ठाम. ७

श्री शान्तिनाथ भगवान का स्तवन

शान्ति जिनेश्वर साहिबा रे, शान्ति तणा दातार;
अंतरजामी छो माहरा रे, आतमना आधार. शांति० १

चित्त चाहे प्रभु चाकरी रे, मन चाहे मलवाने काज;
नयन चाहे प्रभु निरखवा रे, द्यो दरिशण महाराज. शांति० २

पलक न विसरो मन थकी रे, जिम मोरा मन मेह;
एक पखो केम राखीए रे, राज कपटनो नेह. शांति० ३

नेह नजरे निहालता रे, वाधे बमणो वान;
अखूट खजानो प्रभु ताहरो रे, दीजीए वांछित दान. शांति० ४

आश करे जे कोई आपणी रे, नवी मूकीए निराश;
सेवक जाणीने आपणो रे, दीजीए तास विलास. शांति० ५

दायकने देतां थकां रे, क्षण नवि लागे वार;
काज सरे निज दासनां रे, ए म्होटो उपकार. शांति० ६

एवुं जाणीने जगधणी रे, दिलमांही धरजो प्यार;
रूपविजय कविरायनो रे, मोहन जय जयकार. शांति० ७

श्री महावीरस्वामी भगवान की पंचकल्याणक की ढाल

ढाल : (३)

(रंग : हमचडीनी देशी)

करी महोच्छव सिद्धारथभूप, नाम धरे वर्धमान,
दिनदिन वाधे प्रभु सुरतरु, जिम रूपकला असमान रे. हमचडी० १

एक दिन प्रभुजी रमवा कारण, पुर बाहिर जब जावे;
ईंद्र मुखे प्रशंसा सुणी तिहां, मिथ्यात्वीसुर आवे रे. ह० २
अहिरूपे विंटाणो तरुस्युं, प्रभु ए नाख्यो उछाली;
सात ताडनुं रूप कर्युं तव, मुठे नाख्यो वाली रे. ह० ३
पाये लागीने ते सुर खामे, नाम धरे महावीर;
जेवो इन्द्रे वखाण्यो स्वामी, तेवो साहस धीर रे. ह० ४
माता पिता निशाले मूके, आठ वरसना जाणी;
इन्द्रतणां तिहां संशय टाल्या, नव व्याकरण वखाणी रे. ह० ५
अनुक्रमे यौवन पाम्या प्रभुजी, वर्या यशोदाराणी;
अट्ठावीश वरसे प्रभुनां मात पिता निर्वाणी रे. ह० ६
दोयवरस भाईने आग्रहे, प्रभु गृहवासे वसीया;
धर्मपंथ देखाडो इम कहे, लोकांतिक उल्लसीया रे. ह० ७
एक क्रोड आठ लाख सोनैया, दिन दिन प्रभुजी आपे;
इम संवच्छरी दान दईने जगनां दारिद्र कापे रे. ह० ८
छांड्या राज अंतेउर प्रभुजी, भाईए अनुमति दीधी;
मृगशिरवदि दशमी उत्तराये, वीरे दीक्षा लीधी रे. ह० ९
चउनाणी तिणदिनथी प्रभुजी, वरस दिवस झाझे रे;
चीवरअर्ध ब्राह्मणने आप्युं, खंड खंड बे फेरे रे. ह० १०
घोर परिषह साडाबारे, वरसे जे जे सहीया;
घोर अभिग्रह जे जे धरिया, ते नवि जाये कहीया रे. ह० ११
शूलपाणि ने संगमदेवे, चंडकोशीक गोशाले;
दीधुं दु:ख ने पायस रांधी, पग उपर गोवाले रे. ह० १२
काने गोपे खीला मार्या, काढतां मूकी राटी;
जे सांभलतां त्रिभुवन कंप्यां, पर्वत शीला फाटी रे. ह० १३

ते ते दुष्ट सहु उद्धरिया, प्रभुजी पर उपगारी;
अडदतणा बाकुला लईने, चंदनबाला तारी रे. ह० १४

दोय छ मासी नव चउमासी, अढी मासी त्रण मासी;
दोढ मासी बे बे कीधां, छ कीधां बे मासी रे. ह० १५

बार मास ने पख ब्होंतेर, छट्ठ बसें ओगणत्तीस वखाणुं;
बार अट्ठम भद्रादि प्रतिमा, दिन दोय चार दश जाणुं रे. ह० १६

इम तप कीधां बारे वरसे, विण पाणी उल्लासे;
तेमां पारणां प्रभुजीए कीधां, त्रणसें ओगणपचास रे. ह० १७

कर्म खपावी वैशाखमासे, सुद दशमी शुभ जाण;
उत्तरायोग शालिवृक्ष तले, पाम्या केवलनाण रे. ह० १८

इन्द्रभूति आदि प्रतिबोध्या, गणधरपदवी दीधी;
साधु साध्वी श्रावक श्राविका, संघ स्थापना कीधी रे. ह० १९

चउद सहस अणगार साधवी, सहस छत्रीस कहीजे;
एकलाख ने सहस गुणसट्ठि, श्रावक शुद्ध कहीजे रे. ह० २०

तीनलाख अढार सहस वली, श्राविका संख्या जाणी;
त्रणसें चौद पूरवधारी, तेरसे ओहिनाणी रे. ह० २१

सातसयां ते केवलनाणी, लब्धिधारी पण तेटला;
विपुलमतिया पांचसे कहीयां, चारसे वादी जीत्या रे. ह० २२

सातसें अंतेवासी सिध्या, साधवी चौदसें सार;
दिनदिन तेज सवाये दीपे, ए प्रभुजीनो परिवार रे. ह० २३

त्रीस वरस घरवासे वसीया, बार वरस छद्मस्थे;
त्रीस वरस केवल बेंतालीश, वरस श्रमणावस्थे रे. ह० २४

वरस ब्होंतेर केरुं आयु, वीरजिणंदनुं जाणो;
दीवाली दिन स्वाति नक्षत्रे, प्रभुजीनुं निर्वाण रे. ह० २५

पंचकल्याणक एम वखाण्या, प्रभुजीना उल्लासे;
संघतणे आग्रह हरख भरीने, सुरत रही चोमासुं रे.　　ह० २६

कलश

इम चरम जिनवर, सयल सुखकर, थुण्यो अति उलट धरी,
अषाढ उज्ज्वल पंचमी दिन, संवत शत त्रिहोत्तरे;
भादरवा सुद पडवा तणे दिन, रविवारे उलट भरे;
(विमलविजय उवज्झाय पंकज, भ्रमर सम शुभ शिष्य ए;)
रामविजय जिनवर नामे, लहे अधिक जगीश ए.

श्री शान्तिनाथ भगवान की थोय

सकल कुशल वल्ली, पुष्करावर्तमेघो मदन सदश रूप; पुर्णराकेन्दु वक्त्र:
प्रथयतु मृग लक्ष्मा, शान्ति नाथो जनानां प्रसृत भुवन कीर्ति, कामितं क्रम कांति.१

जिन पति समुदायो दायको भीप्सीतानाम् दुरित तिमिर भानु: कल्पवृक्षोपमान:
रचयतु शिवशान्तिं, प्रतिहार्य श्रियं यो विकट विषम भूमी जात हेतु र्बिभर्ति. २

प्रथयतु भविकानां ज्ञान संपत् समुहं समय ईह जगत्या माप्त वक्त्र प्रसूत:
भवजल निधि पोत: सर्व संपत्ति हेतु: प्रथित घन घटायां, सूर्यकान्त प्रकाश: ३

जयविजय मनिषा मंदिरं ब्रह्मशान्ति: सुर गिरि सम धीर: पूजीतो न्यक्षयक्षै:
हरतु सकल विघ्नं योजने चिन्त्यमान: स भवतु सततं व: श्रेयसे शान्तिनाथ: ४

• • •

लिखित: कक्षा १४

मूलसूत्र	: तत्त्वार्थ - १ से ५ अध्याय अर्थ सहित
चैत्यवंदन	: श्री सिद्धचक्र आराधीये
स्तवन	: नवपदनुं धरजो ध्यान
थोय	: अरिहंत नमो
शरणा	: १ और २

काव्य विभाग

श्री नवपदजी का चैत्यवंदन

श्रीसिद्धचक्र आराधीए, आसो चैतर मास,
नव दिन नव आंबिल करी, कीजीए ओली खास. १

केसर चंदन घसी घणां, कस्तुरी बरास,
जुगते जिनवर पूजीया, मयणा ने श्रीपाल. २

पूजा अष्टप्रकारनी, देववंदन त्रणकाल,
मंत्र जपो त्रण कालने, गणणुं तेर हजार. ३

कष्ट टल्युं उंबर तणुं, जपतां नवपद ध्यान,
श्री श्रीपाल नरींद थया, वाध्यो बमणो वान. ४

सातसें कोढी सुख लह्या ए, पाम्या निज आवास,
पुण्ये मुक्तिवधू वर्या, पाम्या लीलविलास. ५

श्री नवपदजी का स्तवन

नवपद धरजो ध्यान, भवि तुमे नवपद धरजो ध्यान;
ए नवपदनुं ध्यान करतां, पामे जीव विश्राम. भवि० १

अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु सकल गुणखाण; भ०
दर्शन ज्ञान चारित्र ए उत्तम, तप तपो धरी बहुमान. भ० २

आसो चैत्रनी सुदि सातमथी, पूनम लगी परमाण; भ०
एम एकाशी आंबिल कीजे, वरस साडाचारनुं मान. भ० ३

पडिक्कमणां दोय टंकनां कीजे, पडिलेहण बे वार; भ०
देववंदन त्रण टंकनां कीजे, देव पूजो त्रिकाल. भ० ४

बार आठ छत्रीस पचवीशनो, सत्तावीश सडसठ सार; भ०
एकावन सित्तेर पचासनो, काउस्सग्ग करो सावधान. भ० ५

एक एक पदनुं गणणुं, गणीए दोय हजार; भ०
एणी विधे जे ए तप आराधे, ते पामे भवपार. भ० ६

करजोडी सेवक गुण गावे, मोहन गुणमणिमाल; भ०
तास शिष्य मुनि हेम कहे छे, जन्म मरण दुःखटाल. भ० ७

श्री नवपदजी की थोय

अरिहंत नमो वली सिद्ध नमो, आचारज वाचक साहु नमो,
दर्शन ज्ञान चारित्र नमो, तप ए सिद्धचक्र सदा प्रणमो. १

अरिहंत अनंत थया थाशे, वली भाव निक्षेपे गुण गाशे,
पडिक्कमणां देववंदन विधिशुं, आंबिलतप गणणुं गणो विधिशुं. २

छ'रि पाली जे तप करशे, श्रीपाल तणी परे भव तरशे,
सिद्धचक्रने कुण आवे तोले, एहवा जिन आगम गुण बोले. ३

साडाचार वरसे ए तप पूरो, ए कर्मविदारण तप शूरो,
सिद्धचक्रने मनमंदिर थापो, नयविमलेसर वर आपो. ४

शरणा

(१)

मुजने चार शरणां होजो, अरिहंत सिद्ध सु साधुजी,
केवलीधर्म प्रकाशीयो, रत्न अमुलख लाधुंजी. मुजने० १

चउगति तणां दुःख छेदवा, समरथ शरणां एहोजी;
पूर्वे मुनिवरजे हुआ, तेणे कीधां शरणां तेहोजी. मुजने ०२

संसारमांही जीवने, समरथ शरणां चारोजी;
गणी समयसुंदर एम कहे, कल्याण मंगलकारोजी. मुजने ०३

(२)

लाख चोराशी जीव खमावीए, मनधरी परम विवेकजी;
मिच्छा मि दुक्कडं दीजीए, जिनवचने लहिए टेकजी. लाख० १

सातलाख भू दग तेउ वाउना, दश चौदे वनना भेदोजी;
खट विगल सुर तिरि नारकी, चउ चउ चउदे नरना भेदोजी. लाख० २

मुज वैर नहि केहशुं, सहु शुं मैत्री भावोजी;
गणी समयसुंदर एम कहे, पामीये पुण्य प्रभावोजी. लाख० ३

• • •

लिखित: कक्षा १५

मूलसूत्र	: तत्त्वार्थ - ६ से १० अध्याय अर्थ सहित
चैत्यवंदन	: आज देव अरिहंत नमुं
स्तवन	: आज मारा प्रभु सामुं जोवोने
थोय	: षड् अतिशय
शरणा	: ३ और ४

काव्य विभाग

सामान्य जिन चैत्यवंदन

आज देव अरिहंत नमुं, समरुं तारुं नाम;
ज्यां ज्यां प्रतिमा जिन तणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम. १

शत्रुंजय श्री आदि देव, नेम नमुं गिरनार;
तारंगे श्री अजितनाथ, आबु रिखव जुहार. २

अष्टापद गिरि उपरे, जिन चोवीशे जोय;
मणिमय मूरति मानशुं, भरते भरावी सोय. ३

समेतशिखर तीरथ वडुं, जिहां वीसे जिन पाय;
वैभार गिरिवर उपरे, श्री वीर जिनेसर राय. ४

मांडवगढनो राजियो, नामे देव सुपास;
ऋषभ कहे जिन समरतां, पहोंचे मननी आश. ५

सामान्य जिन स्तवन

आज मारा प्रभुजी सामुं जुओने, सेवक कहीने बोलावो रे;
एटले हुं मनगमतुं पाम्यो, रूठडां बाल मनावो मोरा सांई रे. १

पतित पावन शरणागत वत्सल, ए जश जगमां चावो रे;
मन रे मनाव्या विण नवि मूकुं, एहि ज मारो दावो. मोरा० २

कब्जे आव्यां हवे नहि मूकुं, जिहां लगे तुम सम थावो रे;
जो तुम ध्यान विना शिव लहीए, तो ते दाव बतावो. मोरा० ३

महागोप ने महानिर्यामक, एवा एवा बिरुद धरावो रे;
तो तुम आश्रितने उद्धरतां, बहु बहु शुं कहावो. मोरा० ४

ज्ञानविमलगुणनो निधि महिमा, मंगल एहि वधावो रे;
अचल अभेदपणे अवलंबी, अहोनिश एहि दिल ध्यावो. मोरा० ५

षड् अतिशय की थोय

षड् अतिशय कहुं वर्षीदान, सौधर्म इन्द्र सुगुण निधान,
अवसर पुण्य प्रधान,
दोय हाथ पर बेसे सुजाण, थाके नहीं प्रभु देतां दान,
अतिशय पहेलो जाण,
बीजो इन्द्र जे कहीए ईशान, छडीदार थइ रहे एक ध्यान,
शाश्वत एह विधान,
चोसठ इंद्र वर्जीने जाण, लेतां देतां सुर वारे ते ठाण,
अतिशय बीजो प्रमाण. १

भवनपतिमां वडा कहावे, चमर बलीन्द्र नाम सुहावे,
जिनपतिना गुण गावे,
प्रभुजी ज्यारे मुठ्ठी नमावे, याचक भाग्यथी अधिक जावे,
चमरेन्द्र हीन करावे,

भाग्याधिकने ओछा थावे, बलीन्द्र तेहमां अधिक बनावे,
भाग्य प्रमाणे पावे,
निज करणी करी आनंद पावे, त्रीजो अतिशय एह जणावे,
प्रभु भक्ति दिल लावे... २

भवनपतिना नव निकाय, तेहना इन्द्र अढार कहाय,
सूत्रसिद्धांते लखाय,
ते सहु इन्द्रना जीत गणाय, दान समय लही अवसर पाय,
करणी आप कराय,
भरतक्षेत्रना नर समुदाय, दान लेवा जस इच्छा थाय,
ते लेवा मन धाय,
ते सहु माणसने इहां लाय, ए चोथो अतिशय गवाय,
दीपविजय कविराय... ३

वाणव्यंतर ने व्यंतर एह, सहु मली इन्द्र बत्रीस गुण गेह,
समकित दृष्टि तेह,
भरतवासी मानवने एह, पाछा निज निज धाम धरेह,
अतिशय पंचम एह,
ज्योतिषी इन्द्र करणी एह, विद्याधरने जाण करेह,
छट्ठो अतिशय तेह,
'दीपविजय' कविराज सनेह, ए षड् अतिशय वरसे सदेह,
वीर जगतगुरु मेह... ४

शरणा

(३)

पाप अढारे जीव परिहरो, अरिहंत सिद्धनी शाखे जी;
आलोव्यां पाप ते छूटीए, भगवंत एणी पेरे भाखे जी. पाप० १

आश्रव कषाय दोय बंधवा, वली कलह अभ्याख्यान जी;
रति अरति पैशुन निंदना, माया मोह मिथ्यात्व जी. पाप० २

मन वचन कायाए जे कर्या, मिच्छामि दुक्कडं तेहो जी;
गणी समयसुंदर एम कहे, जैन धर्मनो मर्म एहो जी. पाप० ३

(४)

धन धन ते दिन मुज कदि होशे, हुं पामीश संजम सूधोजी;
पूर्व ऋषि पंथे चालशुं, गुरु वचने प्रतिबुद्धो जी. धन० १

आंत प्रान्त भिक्षा गोचरी, रण वने काउस्सग्ग करशुं जी;
समता शत्रु मित्र भावशुं, संवेग सूधो धरशुं जी. धन० २

संसारना संकट थकी छूटीश, जिनवचन अवधारो जी;
धन धन समयसुंदर ते घडी, हुं पामीश भवनो पारोजी. धन० ३

लिखित: कक्षा १६

मूलसूत्र	: कर्मग्रंथ - पहला कर्मग्रंथ अर्थसहित
पंचसूत्र	: पंचसूत्र - “णमो वीयरागाणं” से “मिच्छा मि दुक्कडं” तक की गाथाएँ (अर्थ सहित)

लिखित: कक्षा १७

मूलसूत्र	: कर्मग्रंथ - दूसरा कर्मग्रंथ अर्थसहित
पंचसूत्र	: पंचसूत्र - “होउ मे एसा सम्मं” से “सुहिणो भवंतु जीवा” (पूर्ण) तक की गाथाएँ (अर्थ सहित)

लिखित: कक्षा १८

मूलसूत्र	: कर्मग्रंथ - तीसरा कर्मग्रंथ अर्थसहित
सज्झाय	: अमृतवेल की सज्झाय

अमृतवेल की सज्झाय

चेतन! ज्ञान अजुवालीये, टालीये मोह संताप रे;
चित्त डमडोलतुं वालीए, पालीए सहज गुण आप रे. १

उपशम अमृतरस पीजीए, कीजीए साधु गुणगान रे;
अधम वयणे नवि खीजीए, दीजीए सज्जनने मान रे. २

क्रोध अनुबंध नवि राखीए, भाखीए वयण मुख साच रे;
समकित रत्नरूचि जोडीए, छोडीए कुमति मति काच रे. ३

शुद्ध परिणामने कारणे, चारनां शरण धरे चित्त रे;
प्रथम तिहां शरण अरिहंतनुं, जेह जगदीश जग मित्त रे. ४

जे समोसरणमां राजतां, भांजता भविक संदेह रे;
धर्मना वचन वरसे सदा, पुष्करावर्त जिम मेह रे. ५

शरण बीजुं भजे सिद्धनुं, जे करे कर्म चकचूर रे;
भोगवे राज शिवनगरनुं, ज्ञान आनंद भरपूर रे. ६

साधुनुं शरण त्रीजुं धरे, जेह साधे शिवपंथ रे;
मूल उत्तर गुणे जे वर्या, भव तर्या भाव निग्रंथ रे. ७

शरण चोथुं धरे धर्मनुं, जेहमां वर दयाभाव रे;
जेह सुख हेतु जिनवर कह्यो, पाप जल तरवा नाव रे. ८

चारनां शरण ए पडिवजे, वली भजे भावना शुद्धि रे;
दुरित सवि आपणा निंदिए, जीम होये संवर वृद्धि रे. ९

इहभव परभव आचर्या, पाप अधिकरण मिथ्यात्व रे;
जे जिनाशातनादिक घणां, निंदिए तेह गुणघात रे. १०

गुरूतणा वचन जे अवगणी, गुंथिया आप मत जाल रे;
बहुपरे लोकोने भोलव्यां, निंदिए तेह जंजाल रे. ११

जेह हिंसा करी आकरी, जेह बोल्या मृषावाद रे;
जेह परधन हरी हरखीयां, कीधलो काम उन्माद रे. १२

जेह धन धान्य मूर्छा धरी, सेविया चार कषाय रे;
राग ने द्वेषने वश हुआ, जे कीयो कलह उपाय रे. १३

जूठ जे आल परने दिया, जे कर्या पिशुनता पाप रे;
रति अरति निंद माया मृषा, वलीय मिथ्यात्व संताप रे. १४

पाप जे एहवा सेवियां, निंदिए तेह त्रिहुं काल रे;
सुकृत अनुमोदना कीजीए, जिम होय कर्म विसराल रे. १५

विश्व उपकार जे जिन करे, सार जिननाम संयोग रे;
तेह गुण तास अनुमोदिए, पुण्य अनुबंध शुभयोग रे. १६

सिद्धनी सिद्धता कर्मना, क्षय थकी उपनी जेह रे;
जेह आचार आचार्यनो, चरणवन सींचवा मेह रे. १७

जेह उवज्झायनो गुण भलो, सूत्र सज्झाय परिणाम रे;
साधुनी जेह वली साधुता, मूल उत्तर गुण धाम रे. १८

जेह विरति देशश्रावक तणी, जेह समकित सदाचार रे;
समकित दृष्टि सुरनर तणो, तेह अनुमोदिये सार रे. १९

अन्यमां पण दयादिक गुणो, जेह जिनवचन अनुसार रे;
सर्व ते चित्त अनुमोदिए, समकित बीज निरधार रे. २०

पाप नवि तीव्र भावे करे, जेहने नवि भव राग रे;
उचित स्थिति जेह सेवे सदा, तेह अनुमोदवा लाग रे. २१

थोडलो पण गुण परतणो, सांभली हर्ष मन आण रे;
दोष लव पण निज देखतां, निर्गुण निजआतमा जाण रे. २२

उचित व्यवहार अवलंबने, एम करी स्थिर परिणाम रे;
भाविये शुद्धनय भावना, पापनाशय तणुं ठाम रे. २३

देह मन वचन पुद्गल थकी, कर्मथी भिन्न तुज रूप रे;
अक्षय अकलंक छे जीवनुं, ज्ञान आनंद स्वरूप रे. २४

कर्मथी कल्पना उपजे, पवनथी जेम जलधि वेल रे;
रूप प्रगटे सहज आपणुं देखतां दृष्टि स्थिर मेल रे. २५

धारतां धर्मनी धारणा, मारतां मोहवड चोर रे;
ज्ञानरुचि वेल विस्तारतां, वारतां कर्मनुं जोर रे. २६

राग विष दोष उतारतां, जारतां द्वेष रस शेष रे;
पूर्व मुनि वचन संभारतां, वारतां कर्म निःशेष रे. २७

देखिये मार्ग शिव नगरनो, जे उदासीन परिणाम रे;
तेह अणछोडतां चालीए, पामीये जिम परमधाम रे. २८

श्री नयविजय गुरू शिष्यनी सीखडी अमृत वेल रे;
एह जे चतुर नर आदरे, ते लहे सुयश रंगरेल रे. २९

लिखित: कक्षा १९

मूलसूत्र	:	कर्मग्रंथ - चौथा कर्मग्रंथ अर्थसहित
सज्झाय	:	समकित के ६७ (सडसठ) बोल की सज्झाय ढाल १ से ५ (अर्थ सहित)

लिखित: कक्षा २०

मूलसूत्र	:	कर्मग्रंथ - पांचवां कर्मग्रंथ अर्थसहित
सज्झाय	:	समकित के ६७ (सडसठ) बोल की सज्झाय ढाल ६ से ९ (अर्थ सहित)

लिखित: कक्षा २१

मूलसूत्र : कर्मग्रंथ - छट्ठा कर्मग्रंथ अर्थसहित

सज्झाय : समकित के ६७ (सडसठ) बोल की सज्झाय

ढाल १० से १२ (अर्थ सहित)

लिखित: कक्षा २२

ज्ञानसार अष्टक (मूल तथा अर्थ सहित)

लिखित: कक्षा २३

हैमसंस्कृत प्रवेशिका भाग - १

लिखित: कक्षा २४

हैमसंस्कृत मध्यमा (दूसरी पुस्तक)

लिखित: कक्षा २५

प्राकृत विज्ञान पाठमाला

नियमावली

(१) प्रत्येक परीक्षार्थी को पहली बार अपना नाम रजिस्टर (दर्ज) करवाना होगा । जो वर्ष के दौरान कभी भी करवा सकते है और परीक्षा के लिए ओनलाईन रजिस्ट्रेशन करवाना होगा।

(२) प्रत्येक परीक्षार्थी को रजिस्ट्रेशन फीस (शुल्क) भरनी होगी। फीस भरनेवाले मौखिक कक्षा के विद्यार्थी को संस्था द्वारा प्रगतिपत्रक दिया जायेगा। जिसमें दी गई परिक्षा दर्ज की जायेगी, प्रगतिपत्रक विद्यार्थी के पास रहेगा।

(३) मौखिक परीक्षा के लिए उपस्थित होने पर प्रगतिपत्रक अपने साथ लाए। इसके बिना मार्क नही दिए जाएंगे।

(४) परीक्षा के पासींग मार्क्स ६० है। लेकिन सूत्र विभाग में ६०% मार्क्स फरजियात है।

(५) ऊत्तीर्ण विद्यार्थी वेबसाईट से प्रमाणपत्र डाउनलोड कर सकते है।

(६) मौखिक और लिखित परीक्षा एक साथ दी जा सकती है।

(७) एक ही समय में दो मौखिक परीक्षाएं नहीं दी जा सकती।

(८) छात्र को दी गई User ID, Password और रजी. ID द्वारा स्वयं वेबसाइट में (एड्रेस चेंज जैसे) सुधार सकते है। ओर परीक्षा का फोर्म भी भर सकते है।

(९) ओनलाईन परीक्षा देनेवाले विद्यार्थी इनाम और एवोर्ड के पात्र नही है। सिर्फ सर्टीफिकेट डाउनलोड कर सकते है।

(१०) एवोर्ड व्यवस्था सिर्फ अहमदाबाद तक सिमित है।

(११) प्रथम समय परीक्षा देने वाले विद्यार्थी कक्षा 1 से 7 तक किसी भी कक्षा से शुरूआत कर सकते है ।

(12) परीक्षा देने के लिए उम्र का बंधन नहीं है।

पुरस्कार (ईनाम)के लिए पात्रता (योग्यता) :

मौखिक कक्षा 1	उम्र 8 साल तक
मौखिक कक्षा 2	उम्र 10 साल तक
मौखिक कक्षा 3 से 10	उम्र 20 साल तक
मौखिक कक्षा 11 से 18	कोई भी उम्र
लिखित मे सभी इनाम के पात्र है	